# बयानुल क़ुरान

## हिस्सा सौम (तीसरा)

## तर्जुमा व मुख़्तसर तफ़सीर

## सूरह अनआम

## से

## सूरह तौबा तक

## अज़

## डॉक्टर इसरार अहमद

# तरतीब

अर्ज़े मुरत्तब ........

सूरतुल अनआम ..

सूरतुल आराफ़ ....

सूरतुल अन्फ़ाल ...

सूरतुत्तौबा .........

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

# अर्ज़े मुरत्तब

यह यक़ीनन अल्लाह तआला के लुत्फ़-ओ-करम और फ़ज़ल व अहसान का मज़हर है कि उसने हमें "बयानुल क़ुरान" हिस्सा अव्वल और हिस्सा दौम के बाद हिस्सा सौम की तरतीब व तदवीन और इशाअत व तबाअत की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमायी। فَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ! जैसा कि "बयानुल क़ुरान" के क़ारईन (पाठक) जानते हैं, यह तफ़सीरी काविश (खोज) मोहतरम डॉक्टर इसरार अहमद रहीमुल्लाह के शहरह-ए-आफाक़ (विश्व प्रसिद्ध) दौरा-ए-तर्जुमा क़ुरान को तरतीब व तस्वीद और तदवीन के मराहिल से गुज़ार कर तख़रीजे अहादीस के इज़ाफ़े के साथ जुज़अन-जुज़अन किताबी सूरत में पेश की जा रही है। दावते क़ुरानी के नशरो इशाअत के इस काम में लेफ्टिनेंट कर्नल (रिटायर्ड) आशिक़ हुसैन साहब (एजुकेशन कोर) निहायत दिलचस्पी और सरगर्मी के साथ मसरूफ़-ए-अमल हैं। अल्लाह तआला उन्हें इसकी भरपूर जज़ा-ए-खैर अता फ़रमाये। यहाँ उस अम्र का तज़किरा भी ज़रूरी मालूम होता है कि "बयानुल क़ुरान" की तरतीब व तस्वीद का बिल्कुल इब्तदाई काम यानि इसे केसेट से सुन कर सफ़ा-ए-क़रतास (वर्कशीट) पर मुन्तक़िल करना तंज़ीम-ए-इस्लामी हल्क़ा ख्वातीन ने सरअंजाम दिया है, जिस पर हमारी यह बहनें बजा तौर पर तशक्कुर व तहसीन और दुआए खैर की मुस्तहिक़ हैं।

"बयानुल क़ुरान" हिस्सा अव्वल की इशाअत के बाद उसे इल्मी व अवामी हल्क़ों में खासी पज़ीराई हासिल हो रही है और अल्लाह के फ़ज़ल-ओ-करम से नवम्बर 2008 से अब तक उसके पाँच एडिशन शाया हो चुके हैं। मोहतरम डॉक्टर इसरार अहमद रहिमुल्लाह की हयाते मुस्तआर में "बयानुल क़ुरान" का सिर्फ़ हिस्सा अव्वल ही शाया हो सका था, जबकि हिस्सा दौम प्रेस जाने के लिये तैयार था कि आप इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की तरफ़ कूच कर गये। मोहतरम डॉक्टर साहब इन्तहाई खुशक़िस्मत हैं कि इस दुनिया से रुख्सत हो जाने के बाद भी, हदीसे नबवी ﷺ में दी गयी बशारत के मिस्दाक़, आपका दफ़्तर-ए-अमल मुकम्मल तौर पर बंद नहीं हुआ। रसूल अल्लाह ﷺ का इरशादे गिरामी है:

(إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلَاثَةٍ: مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ أَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُو لَهُ) (मुस्लिम व तिरमिज़ी) "जब इन्सान फ़ौत हो जाता है तो उससे उसके आमाल का ताल्लुक़ ख़त्म हो जाता है (यानि नामा-ए-आमाल बंद हो जाता है) सिवाय तीन चीज़ों के: सदक़ा-ए-जारिया, या ऐसा इल्म जिससे नफ़ा उठाया जाता रहे, या नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करती रहे।" मोहतरम डॉक्टर साहब की खुशबख्ती का क्या कहना कि मज़कूरा बाला तीन चीज़ों में से सिर्फ़ एक या दो नहीं, पूरी तीन सआदतें उनके हिस्से में आयी हैं, जो उनके हसनात व दरजात में रोज़ अफ़ज़ों तरक्क़ी व इज़ाफ़े का बाइस हैं। मोहतरम डॉक्टर साहब अपने हिस्से का काम मुकम्मल कर गये, लेकिन हमें अपने हिस्से का काम करते रहना है।

बयानुल क़ुरान (हिस्सा सौम) सूरतुल अनआम, सूरतुल आराफ़, सूरतुल अनफ़ाल और सूरतुत्तौबा की तर्जुमानी पर मुश्तमिल है। अल्लाह तआला इस खिदमते क़ुरानी को शर्फ़े क़ुबूल अता फ़रमा कर इसे मोहतरम डॉक्टर साहब के बुलन्दी-ए-दरजात का ज़रिया बनाये, इसकी तरतीब व तदवीन और इशाअत व तबाअत में शरीक तमाम ख्वातीन व हज़रात के लिये इसे दुनयवी व उखरवी फौज़-ओ-फ़लाह का बाइस बनाये और हमें वह हिम्मत व इस्तक़ामत अता फ़रमाये जो इस अज़ीम काम की तकमील के लिये दरकार है। आमीन!

जुमातुल मुबारक
22 जौलाई, 2011

हाफिज़ खालिद महमूद खिज़र

# सूरतुल अनआम

## तम्हीदी कलिमात

जैसा कि पहले भी ज़िक्र हो चुका है, हुज्म के ऐतबार से क़ुरान मजीद का दो तिहाई हिस्सा मक्की है, जबकि लगभग एक तिहाई हिस्सा मदनी सूरतों पर मुश्तमिल है। अलबत्ता क़ुरान हकीम में मक्की और मदनी सूरतों के जो सात ग्रुप हैं, उनमें से पहले ग्रुप में मक्की सूरत सिर्फ़ एक है यानि सूरतुल फ़ातिहा। यह सूरत अगरचे हुज्म के ऐतबार से बहुत ही छोटी (कुल सात आयात पर मुश्तमिल) है, मगर मायनवी ऐतबार से बहुत अज़मत और फ़ज़ीलत की हामिल है। एक लिहाज़ से देखा जाये तो यह सूरत मक्की और मदनी तक़सीम से बहुत आला व अरफ़ा और बुलन्दतर है। बहरहाल मक्की और मदनी सूरतों के पहले ग्रुप में तो मक्की क़ुरान गोया बहुत ही थोडा है (सूरतुल फ़ातिहा की सूरत में), अलबत्ता दूसरे ग्रुप में दो बड़ी मक्की सूरतों यानि सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ का जोड़ा शामिल है। अब हम इस जोड़े की पहली सूरत यानि सूरतुल अनआम का मुताअला करने जा रहे हैं।

एक रिवायत के मुताबिक़ सूरतुल अनआम पूरी की पूरी ब-यक वक़्त, एक ही तंज़ील में नाज़िल हुई और हज़रत जिब्राइल अलै. सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के जुलू में इस सूरत को लेकर उतरे। इस सूरत से मक्की और मदनी सूरतों का दूसरा ग्रुप शुरू हो रहा है जो चार सूरतों पर मुश्तमिल है। यह ग्रुप

इस लिहाज़ से बहुत मुतवाज़िन है कि इसमें दो मक्की सूरतें (अल् अनआम और अल् आराफ़) और दो ही मदनी सूरतें (अल् अन्फ़ाल और अत्तौबा) हैं। मज़ामीन की मुनास्बत से यह चारों सूरतें भी दो-दो के जोड़ों में हैं, यानि एक जोड़ा मक्की सूरतों का जबकि दूसरा जोड़ा मदनी सूरतों का।

इससे पहले हम मदनी क़ुरान पढ़ रहे थे (सिवाय सूरतुल फ़ातिहा के), लेकिन अब मक्की क़ुरान का एक हिस्सा हमारे ज़ेरे मुताअला आ रहा है। सूरतुल बक़रह, सूरह आले इमरान, सूरतुन्निसा और सूरतुल मायदा (मदनियात) में मुनाफ़िक़ीन और यहूद व नसारा से बराहे रास्त ख़िताब था, लेकिन अब मक्की सूरतों (सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ में) मुशरिकीने अरब से गुफ्तुगू है। सूरतुल आराफ़ में अहले किताब का ज़िक्र तो है, लेकिन यहाँ उनसे बराहे रास्त कोई ख़िताब या गुफ्तुगू नहीं है।

मक्की और मदनी सूरतें अपने माहौल और पसमंज़र के ऐतबार से मज़ामीन व मौज़ूआत के दो अलग-अलग गुलदस्ते पेश करती हैं। इस लिहाज़ से मैंने मक्की और मदनी क़ुरान को दो अलग-अलग जन्नतों के नाम से मौसूम कर रखा है। क़ुरान हकीम में इरशाद है: {وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ} (अर्रहमान:46) “और जो कोई अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डर गया उसके लिये दो जन्नतें होंगी।” क़ुरान मजीद की एक मक्की जन्नत है और दूसरी मदनी जन्नत। गोया क़ब्ल अज़ हम मदनी जन्नत की सेर कर रहे थे, अब हम मक्की जन्नत में दाख़िल हो रहे हैं। लिहाज़ा सूरतुल अनआम पढ़ते हुए आप बिल्कुल नया माहौल महसूस करेंगे। यह दोनों सूरतें (सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़) चूँकि रसूल अल्लाह ﷺ के

क़ियामे मक्का के तक़रीबन आखरी दौर में नाज़िल हुई थीं इसलिये इनमें मुशरिकीने अरब (बनी इस्माइल) पर बिल्कुल उसी अंदाज़ से इत्मामे हुज्जत किया गया है जैसे मदनी सूरतों में अहले किताब पर किया गया था। फिर इन सूरतों के मौज़ूआत के अन्दर बड़ी प्यारी तक़सीम मिलती है। मक्की सूरतों का अहमतरीन मज़मून 'ईमान' है यानि ईमान बिल्लाह, ईमान बिर्रिसालत और ईमान बिल आख़िरत, वगैरह। ईमान की तरफ़ बुलाने के लिये शाह वलीउल्लाह देहलवी रहि. की इस्तलाहात के मुताबिक़ क़ुरान हकीम में दो तरह से इस्तदलाल किया जाता है: التذکیر بِاَیّامِ اللہ और التذکیر بآلاءِ اللہ

التذکیر بآلاءِ اللہ से मुराद अल्लाह तआला के अहसानात, उसकी नेअमतों, उसकी अज़मत व क़ुदरत, उसकी आयाते आफ़ाक़िया व आयाते अन्फ़ुसिया वगैरह के हवाले से याद दिहानी और तज़कीर है। यानि अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमान हमारे अन्दर पहले से बिल क़ुव्वा (potentialy) तो मौजूद है, मगर यह फ़आल (active) नहीं है, सोया हुआ (dormant) है। इसे फ़आल (active) करने और जगाने के लिये अल्लाह की क़ुदरत, उसकी नेअमतों और अनफ़ुस (self) व आफ़ाक़ में उसकी निशानियों से इस्तदलाल करके याद दिहानी करायी जाती है, जिसको शाह वलीउल्लाह रहि. ने التذکیر بآلاءِ اللہ का नाम दिया है।

दावत इलल ईमान के क़ुरानी इस्तदलाल का दूसरा पहलु या तरीक़ा शाह वलीउल्लाह रहि. के मुताबिक़

التذکیر بِاَیَّامِ اللہ है, यानि अल्लाह के दिनों के हवाले से इस्तदलाल। अल्लाह के दिनों के ऐतबार से सबसे अहम और इबरतनाक वह दिन हैं जिनमें अल्लाह तआला ने बड़ी-बड़ी क़ौमों को तहस-नहस कर दिया। इस सिलसिले में अल्लाह की सुन्नत यह रही है कि अल्लाह तआला ने जब भी किसी क़ौम की तरफ़ कोई रसूल भेजा और उसने अपनी इम्कानी हद तक मेहनत व मशक्क़त की, क़ौम के अफ़राद को हक़ की दावत पहुँचा दी, हक़ को मुबरहन (confirm) कर दिया, उन पर हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना साबित हो गया और उस क़ौम के अफ़राद को अल्लाह का पैगाम पहुँचा कर उन पर इत्मामे हुज्जत कर दिया, मगर वह क़ौम फिर भी कुफ़्र पर अड़ी रही और उसने रसूल की दावत को रद्द कर दिया तो फिर उस क़ौम के साथ रिआयत नहीं बरती गयी और बेलाग फ़ैसला सुना दिया गया, यानि वह क़ौम ख़त्म कर दी गयी। जैसे क़ौमे नूह अलै. के साथ हुआ था, हज़रत नूह अलै. और आप अलै. के मादूदे चंद अहले ईमान साथी एक कश्ती पर महफ़ूज़ रहे, बाक़ी पूरे नौए इंसानी (जो उस वक़्त तक उतनी ही थी) नेस्तो नाबूद कर दी गयी। क़ौमे आद पूरी ख़त्म करके नस्यम मन्सिया कर (भुला) दी गयी, सिर्फ़ हज़रत हूद अलै. और उन पर ईमान लाने वाले चंद लोगों को बचाया गया। हज़रत सालेह अलै. और मुट्ठी भर अहले ईमान के अलावा क़ौमे समूद को भी बर्बाद कर दिया गया। इसी तरह क़ौमे शुएब अलै. को भी सफ़ा-ए-हस्ती से मिटा दिया गया। आमूरा और सदुम की बस्तियों को भी मल्या-मेट कर दिया गया, सिर्फ हज़रत लूत अलै. अपनी बेटियों के साथ वहाँ से निकल सके, बाक़ी पूरी

क़ौम ख़त्म हो गयी। इसी तरह आले फ़िरऔन को भी ग़र्क़ कर दिया गया।

यहाँ पर रसूल और नबी की दावत के फ़र्क़ को समझना भी ज़रूरी है। रसूल की दावत का इन्कार करने की सूरत में मुताल्लिक़ा क़ौम तबाह व बर्बाद कर दी जाती है। उनके इस इन्कार से गोया साबित हो गया कि उनमें कोई खैर नहीं है, उनकी हैसियत महज़ उस झाड़-झंकाड़ की है जिसे जमा करके आग लगा दी जाती है। अल्लाह की तरफ़ से रसूल के आ जाने के बाद भी अगर किसी क़ौम की आँखें नहीं खुलती तो वह गोया ज़मीन का बोझ है, जिसका सफ़ाया ज़रूरी है। जबकि नबी का मामला यह नहीं होता। नबी की हैसियत ऐसी होती है जैसे औलिया अल्लाह हैं। जिसने उनकी बात मान ली उसको फ़ायदा हो गया, जिसने नहीं मानी उसको ज़ाती तौर पर नुक़सान हो जायेगा, लेकिन नबी के इन्कार से पूरी क़ौम की तबाही और हलाकत नहीं हुआ करती। आम औलिया अल्लाह और अम्बिया में फ़र्क़ यह है कि आम औलिया अल्लाह पर वही नहीं आती, जबकि अम्बिया पर वही आती थी।

इसके अलावा अज़्ली व अब्दी हक़ाइक़ भी अय्यामे अल्लाह में शामिल हैं, यानि अज़्ल (आदिकाल) में क्या वाक़िआत पेश आये, अब्द (अनन्तकाल) में क्या होगा, बाअसे बाद अल् मौत की तफ़सीलात, आलमे बरज़ख़ और आलमे आख़िरत के अहवाल, असहाबे जन्नत, असहाबे जहन्नम और असहाबे आराफ़ की कैफ़ियात वगैरह। इस लिहाज़ से सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ में मौज़ूआत की जो एक ख़ूबसूरत और मुतवाज़िन तक़सीम मिलती है

वह इस तरह है कि सूरतुल अनआम में जगह-जगह التذکیر بآلاء اللہ की तफ़सीलात हैं, जबकि सूरतुल आराफ़ का बड़ा हिस्सा التذکیر بِاَیّامِ اللہ पर मुश्तमिल है।

मक्की और मदनी सूरतों के मज़ामीन में जो बुनियादी फ़र्क़ है उसे एक दफ़ा फिर समझ लीजिये। मक्की सूरतों में ज़्यादातर गुफ्तुगू और बहस व नज़ा मुशरिकीने अरब के साथ है, लिहाज़ा इन सूरतों का असल मज़मून तौहीद है, यानि तौहीद का अस्बात, शिर्क की नफ़ी और ईमानियात का तज़किरा है। इन सूरतों में अहले ईमान से ख़िताब बहुत कम है, और है भी तो बराहे रास्त नहीं बल्कि बिल्वास्ता है। यानि रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم से वाहिद के सीगे में ख़िताब किया जाता है और आप صلی اللہ علیہ وسلم के ज़रिये से मुस्लमान मुख़ातिब होते हैं। इन सूरतों में निफ़ाक़ का ज़िक्र शायद ही कहीं मिले, क्योंकि मक्की दौर में निफ़ाक़ का मर्ज़ मौजूद ही नहीं था। अहले मक्का के अन्दर किरदार की पुख्तगी थी, वह वादे के पक्के थे, जिस चीज़ को मानते थे पूरे ख़ुलूस व इख्लास के साथ मानते थे और ना मानने की सूरत में उनकी मुखालफ़त भी बहुत शदीद होती थी। उनमें चालबाज़ियाँ और रेशादवानियाँ नहीं थीं। इसके अलावा मक्की सूरतों में इंसानी अख्लाक़ियात पर बड़ा ज़ोर दिया गया है, मसलन सच बोलने की ताकीद, झूठ की हौसला शिकनी, बुख्ल की मज़म्मत, सख़ावत की तारीफ़, मसाकीन को खाना खिलाने पर ज़ोर और उन लोगों पर तनक़ीद जो दौलतमन्द होने के बावजूद कठोर दिल हैं। इन सूरतों का एक ख़ास और अहम मज़मून साबक़ा क़ौमों और रसूलों के हालात व वाक़िआत पर मुश्तमिल है जो बड़ी तफ़सील और तकरार के साथ आये

हैं। इन सूरतों में इस सिलसिले में जो फ़लसफ़ा बार-बार बयान हुआ है उसका ज़िक्र "التذکیر بِاَیّٰمِ اللہ" के ज़िमन में पहले गुज़र चुका है। इस फ़लसफ़े का ख़ुलासा यह है कि रसूल का इन्कार करने वाली क़ौम को अज़ाबे इस्तेसाल (निराशा) से दो-चार होना पड़ता है। जैसे इरशाद हुआ: { فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا } (अल् अनआम:45) "पस जड़ काट कर रख दी गयी ज़ालिम क़ौम की।"

दूसरी तरफ़ मदनी सूरतों में ज़्यादातर ख़िताब या तो मुसलमानों से बहैसियत उम्मते मुस्लिमा है या फिर अहले किताब (यहूद व नसारा) से बहैसियत साबक़ा उम्मते मुस्लिमा, दावत के अंदाज़ में भी और मलामत के अंदाज़ में भी, तरगीब से भी और तरहीब से भी। इन सूरतों में निफ़ाक़ और मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र कसरत से है। औस और ख़ज़रज के जो लोग मदीना में आबाद थे वह अगरचे असल में अरब थे, लेकिन यहूदियों के ज़ेरे असर रहने की वजह से उनका मिज़ाज और किरदार बदल चुका था। जो अख्लाक़ी खराबियाँ किसी बिगड़ी हुई मुस्लमान उम्मत में होती हैं वह यहूदे मदीना में बतमाम व कमाल मौजूद थीं और उनके ज़ेरे असर औस व ख़ज़रज के लोगों में भी अख्लाक़ व किरदार की वैसी ही कमज़ोरियाँ किसी ना किसी दर्जे में पायी जाती थीं। यही वजह है कि मदीना में मुनाफ़िक़ीन का एक गिरोह पैदा हो गया था। चुनाँचे इन सूरतों का यह एक मुस्तक़िल मज़मून है। मदनी सूरतों का अहम तरीन मज़मून अहकामे शरीअत यानि जायज़ व नाजायज़, फ़राइज़, वाजिबात, अवामिर व नवाही (क्या करें और क्या नहीं) वगैरह की तफ़ासील हैं।

मक्की सूरतों के मज़ामीन की एक और तक़सीम भी समझ लें। मक्की और मदनी सूरतों के जिन सात ग्रुपों का ज़िक्र पहले हो चुका है उनके दूसरे और तीसरे ग्रुप में जो मक्की सूरतें (सूरतुल अनआम, सूरतुल आराफ़ और सूरह युनुस से लेकर सूरतुल मोमिनून तक मुसलसल चौदह सूरतें) शामिल हैं उनमें ईमानियात में से ज़्यादा ज़ोर रिसालत पर है, दरमियानी दो ग्रुप्स की सूरतों में ज़्यादा ज़ोर तौहीद पर है, जबकि आखरी दो ग्रुपों में शामिल मक्की सूरतों में ज़्यादा ज़ोर आख़िरत (बाअस बाद अल् मौत, जज़ा व सज़ा, जन्नत और जहन्नम) पर है।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# आयात 1 से 11 तक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ
الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ڛ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ
يَعْدِلُوْنَ ① هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى
اَجَلًا ۭ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ② وَهُوَ
اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ۭ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ

وَجَهۡرَكُمۡ وَيَعۡلَمُ مَا تَكۡسِبُوۡنَ ﴿۳﴾ وَمَا تَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ
اٰيَةٍ مِّنۡ اٰيٰتِ رَبِّهِمۡ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿۴﴾
فَقَدۡ كَذَّبُوۡا بِالۡحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمۡ‌ؕ فَسَوۡفَ يَاۡتِيۡهِمۡ
اَنۡۢـبٰٓـؤُا مَا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۵﴾ اَلَمۡ يَرَوۡا كَمۡ
اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ مَّكَّنّٰهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ مَا
لَمۡ نُمَكِّنۡ لَّـكُمۡ وَاَرۡسَلۡنَا السَّمَآءَ عَلَيۡهِمۡ مِّدۡرَارًا
وَّجَعَلۡنَا الۡاَنۡهٰرَ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهِمۡ فَاَهۡلَكۡنٰهُمۡ
بِذُنُوۡبِهِمۡ وَاَنۡشَاۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ قَرۡنًا اٰخَرِيۡنَ ﴿۶﴾ وَلَوۡ
نَزَّلۡنَا عَلَيۡكَ كِتٰبًا فِىۡ قِرۡطَاسٍ فَلَمَسُوۡهُ بِاَيۡدِيۡهِمۡ
لَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۷﴾
وَقَالُوۡا لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ مَلَكٌ‌ؕ وَلَوۡ اَنۡزَلۡنَا مَلَـكًا
لَّقُضِىَ الۡاَمۡرُ ثُمَّ لَا يُنۡظَرُوۡنَ ﴿۸﴾ وَلَوۡ جَعَلۡنٰهُ مَلَـكًا
لَّجَعَلۡنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسۡنَا عَلَيۡهِمۡ مَّا يَلۡبِسُوۡنَ ﴿۹﴾
وَلَقَدِ اسۡتُهۡزِئَ بِرُسُلٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيۡنَ
سَخِرُوۡا مِنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۱۰﴾ قُلۡ

سِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ ثُمَّ انۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُكَذِّبِيۡنَ ۞

## आयत 1

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوۡرَ ؕ

*"कुल तारीफ़ और तमाम शुक्र उस अल्लाह के लिये है जिसने आसमानों और ज़मीन की तख्लीक़ फ़रमायी और बनाया अंधेरों और उजाले को।"*

यहाँ एक ख़ास नुक्ता नोट कर लीजिये कि क़ुरान मजीद में तक़रीबन सात-सात पारों के वक़्फ़े से कोई सूरत "अलहम्दु" के लफ्ज़ से शुरू होती है। मसलन क़ुरान का आगाज़ {اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ} से हुआ है, फिर सातवें पारे में सूरतुल अनआम {اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوۡرَ ؕ} से शुरू हो रही है, इसके बाद पन्द्रहवें पारे में सूरतुल कहफ़ का आगाज़ {اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ عَلٰى عَبۡدِهِ الۡكِتٰبَ وَلَمۡ يَجۡعَلْ لَّهٗ عِوَجًا} से हो रहा है, फिर बाइसवें पारे में इकट्ठी दो सूरतें (सूरह सबा और सूरह फ़ातिर) {اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ} से शुरू होती हैं। गोया क़ुरान का आखरी हिस्सा भी इसके अन्दर शामिल कर दिया गया है। इस तरह

तक़रीबन एक जैसे वक़्फ़ों से सूरतों का आगाज़ अल्लाह तआला की हम्द और तारीफ़ से होता है।

दूसरी बात यहाँ नोट करने की यह है कि इस आयत में خَلَقَ और جَعَلَ दो एक जैसे अफ़आल माद्दी और ग़ैर माद्दी तख्लीक़ का फ़र्क़ वाज़ेह करने के लिये इस्तेमाल हुए हैं। आसमान और ज़मीन चूँकि माद्दी हक़ीक़तें हैं लिहाज़ा उनके लिये लफ्ज़ خَلَقَ आया है, लेकिन अँधेरा और उजाला इस तरह की माद्दी चीज़ें नहीं हैं (बल्कि अँधेरा तो कोई चीज़ या हक़ीक़त है ही नहीं, किसी जगह या किसी वक़्त में नूर के ना होने का नाम अँधेरा है)। इसलिये इनके लिये अलग फ़अल جَعَلَ इस्तेमाल हुआ है कि उसने ठहरा दिये, बना दिये, नुमाया कर दिये और मालूम हो गया कि यह उजाला है और यह अँधेरा है।

ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ①

*"फिर भी वह लोग जो अपने रब का कुफ़्र करते हैं उसके बराबर किये देते हैं (झूठे मअबूदों को)।"*

यानि "يَعْدِلُوْنَ بِهٖ شُرَكَاءَهُمْ" कि इन नाम निहाद मअबूदों को अल्लाह के बराबर कर देते हैं, जिनको इन्होंने अल्लाह तआला की ज़ात, सिफ़ात या हुक़ूक़ में शरीक समझा हुआ है, हालाँकि यह लोग अच्छी तरह जानते हैं कि आसमानों और ज़मीन का खालिक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला है, ज़ुल्मात और नूर का बनाने वाला भी तन्हा अल्लाह तआला ही है, लेकिन फिर भी इन लोगों के हाल पर तअज्जुब है कि वह अल्लाह तआला के हमसर ठहराते हैं।

शिर्क के बारे में यह बात वाज़ेह रहनी चाहिये कि शिर्क सिर्फ़ यही नहीं है कि कोई मूर्ति ही सामने रख कर उसको सज्दा किया जाये, बल्कि और बहुत सी बातें और बहुत से नज़रियात भी शिर्क के ज़ुमरे (श्रेणी) में आते हैं। यह एक ऐसी बीमारी है जो हर दौर में भेस बदल-बदल कर आती है, चुनाँचे इसे पहचानने के लिये बहुत वुसअत नज़री की ज़रूरत है। मसलन आज के दौर का एक बहुत बड़ा शिर्क नज़रिया-ए-वतनियत है, जिसे अल्लामा इक़बाल ने सबसे बड़ा बुत क़रार दिया है, *"इन ताज़ा ख़ुदाओं में बड़ा सबसे वतन है!"* यह शिर्क की वह क़िस्म है जिससे हमारे पुराने दौर के उल्मा भी वाक़िफ़ नहीं थे। इसलिये कि इस अंदाज़ में वतनियत का नज़रिया पहले दुनिया में था ही नहीं।

शिर्क के बारे में एक बहुत सख्त आयत हम दो दफ़ा सूरतुन्निसा (आयत 48 और 116) में पढ़ चुके हैं: {اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِہٖ وَیَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَاۗءُ} "अल्लाह तआला इसे हरगिज़ माफ़ नहीं फ़रमायेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाये, अलबत्ता इससे कमतर गुनाह जिसके लिये चाहेगा माफ़ फ़रमा देगा।" अल्लाह तआला शिर्क से कमतर गुनाहों में से जो चाहेगा, जिसके लिये चाहेगा, बगैर तौबा के भी बख्श देगा, अलबत्ता शिर्क से भी अगर इन्सान ताइब हो जाये तो यह भी माफ़ हो सकता है। सूरतुन्निसा की इस आयत की तशरीह के ज़िमन में तफ़सील से बात नहीं हुई थी, इसलिये कि शिर्क दरअसल मदनी सूरतों का मज़मून नहीं है। शिर्क और तौहीद के यह मज़ामीन हवामीम (वह सूरतें जिनका आगाज़ 'हा मीम' से होता है) में तफ़सील के साथ बयान होंगे। वहाँ तौहीद अमली और तौहीद नज़री के

बारे में भी बात होगी। सूरतुल फ़ुरक़ान से सूरतुल अहक़ाफ़ तक मक्की सूरतों का एक तवील सिलसिला है, जिसमें सूरह यासीन, सूरह फ़ातिर, सूरह सबा, सूरह सुआद और हवामीम भी शामिल हैं। सूरह यासीन इस सिलसिले के अन्दर मरकज़ी हैसियत रखती है। इस सिलसिले में शामिल तमाम सूरतों का मरकज़ी मज़मून ही तौहीद है। बहरहाल यहाँ तफ़सील का मौक़ा नहीं है। जो हज़रात शिर्क के बारे में मज़ीद मालूमात हासिल करना चाहते हैं वह "हक़ीक़त-ओ-अक़साम-ए-शिर्क" के मौज़ू पर मेरी तक़ारीर समाअत फ़रमायें। (यह छ: घंटों की तक़ारीर हैं, जो इसी उन्वान के तहत अब किताबी शक्ल में भी दस्तयाब हैं) बड़े-बड़े जैद उल्मा ने इन तक़ारीर को पसंद किया है।

## आयत 2

هُوَ الَّذِیۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ طِیۡنٍ ثُمَّ قَضٰۤی اَجَلًا ؕ

*"वही है जिसने तुम्हें बनाया है गारे से, फिर एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है।"*

यानि हर शख्स जिसको अल्लाह ने दुनिया में भेजा है उसका इस दुनिया में रहने का एक वक़्त मुअय्यन है। इस अज्ल से मुराद उसकी मौत का वक़्त है।

وَ اَجَلٌ مُّسَمًّی عِنۡدَهٗ ثُمَّ اَنۡتُمۡ تَمۡتَرُوۡنَ ۝۲

*"और एक और मुअय्यन वक़्त उसके पास मौजूद है, फिर भी तुम शक करते हो!"*

यानि एक तो है इन्फ़रादी (individual) मौत का वक़्त, जैसे हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ((مَنْ مَّاتَ فَقَدْ قَامَتْ قِيَامَتُهٗ))(1) "जिसको मौत आ गयी उसकी क़यामत तो क़ायम हो गयी।" जबकि एक इस दुनिया की इज्तमाई मौत का मुक़र्रर वक़्त है जिसका इल्म अल्लाह तआला ने ख़ास तौर पर अपने पास रखा है, किसी और को नहीं दिया।

## आयत 3

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ؕ

*"और वही अल्लाह है आसमानों में भी और ज़मीन में भी।"*

ऐसा नहीं है कि आसमानों का ख़ुदा कोई और हो ज़मीन का कोई और। हाँ फ़रिश्तों के मुख्तलिफ़ तबक़ात हैं। ज़मीन के फ़रिश्ते, फ़ज़ा के फ़रिश्ते और आसमानों के फ़रिश्ते मुअय्यन हैं। फिर हर आसमान के अलग फ़रिश्ते हैं। फिर मलाइका मुक़र्रबीन हैं। लेकिन ज़ाते बारी तआला तो एक ही है।

يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ③

*"वह जानता है तुम्हारा छुपा भी और तुम्हारा ज़ाहिर भी, और वह जानता है जो कुछ (नेकी या बदी) तुम कमाते हो।"*

## आयत 4

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

*“और नहीं आती उनके पास कोई निशानी उनके रब की निशानियों में से, मगर यह उससे ऐराज़ करने वाले बने हुए हैं।”*

हम नयी से नयी सूरतें भेज रहे हैं, नयी से नयी आयात नाज़िल कर रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद यह लोग ऐराज़ पर तुले हुए हैं।

## आयत 5

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ

*“तो अब इन्होंने झुठला दिया है हक़ को जबकि इनके पास आ चुका है।”*

यहाँ “فَقَدْ كَذَّبُوا” का अंदाज़ मुलाहिज़ा कीजिये और यह भी ज़हन में रखें कि यह मक्की दौर के आखरी ज़माने की सूरतें हैं। गोया हुज़ूर ﷺ को दावत देते हुए तक़रीबन बारह बरस हो चुके हैं। चुनाँचे अब तक भी जो लोग ईमान नहीं लाये वह अपनी ज़िद और हठधर्मी पर पूरे तौर से जम चुके हैं।

فَسَوۡفَ يَاۡتِيۡهِمۡ اَنۡۢبٰٓؤُا مَا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝۵

*"तो अब जल्द ही इनके पास आ जायेंगी उस चीज़ की ख़बरें जिसका यह मज़ाक उड़ाया करते थे।"*

मुशरिकीने मक्का मज़ाक उड़ाते थे कि अज़ाब की धमकियाँ सुनते-सुनते हमें बारह साल हो गये हैं, यह सुन-सुन कर हमारे कान पक गये हैं कि अज़ाब आने वाला है, लेकिन अब तक कोई अज़ाब नहीं आया। लिहाज़ा यह खाली धौंस है, सिर्फ़ धमकी है। इस तरह वह लोग अल्लाह की आयात का इस्तेहज़ा (मज़ाक) करते थे। यहाँ दो टूक अंदाज़ में वाज़ेह किया जा रहा है कि जिन चीज़ों का यह लोग मज़ाक उड़ाया करते थे उनकी हक़ीक़त अनक़रीब इन पर खुलनी शुरू हो जायेगी। यूँ समझ लीजिये कि इस ग्रुप की पहली दो मक्की सूरतें (अल् अनआम और अल् आराफ़) मुशरिकीने अरब पर इत्मामे हुज्जत की सूरतें हैं और इनके बाद दो मदनी सूरतों (अल् अन्फ़ाल और अत्तौबा) में मुशरिकीने मक्का पर अज़ाबे मौऊद (वादा किये हुए अज़ाब) का बयान है। इसलिये कि उन लोगों पर अज़ाब की पहली क़िस्त ग़ज़वा-ए-बद्र में आयी थी। चुनाँचे सूरतुल अन्फ़ाल में ग़ज़वा-ए-बद्र के हालात व वाक़िआत पर तबसिरा है और इस अज़ाब की आखरी सूरत की तफ़सील सूरतुत्तौबा में बयान हुई है। इसी मुनास्बत से दो मक्की और दो मदनी सूरतों पर मुश्तमिल यह एक ग्रुप बन गया है।

## आयत 6

اَلَمۡ يَرَوۡا كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ مَّكَّنّٰهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ مَا لَمۡ نُمَكِّنۡ لَّكُمۡ

*"क्या इन्होंने देखा नहीं कि हमने इनसे पहले कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया जिन्हें हमने ज़मीन में ऐसा तमक्कुन अता फ़रमाया था जैसा तुम्हें अता नहीं किया है"*

ऐ क़ौमे क़ुरैश! ज़रा क़ौमे आद की शान व शौकत का तसव्वुर करो! वह लोग इसी जज़ीरा नुमाए अरब में आबाद थे। उस क़ौम की अज़मत के क़िस्से अभी तक तुम्हें याद हैं। क़ौमे समूद भी बड़ी ताक़तवर क़ौम थी, अपने इलाक़े में उनका बड़ा रौब और दबदबा था। वह लोग पहाड़ों को तराश कर ऐसे आलीशान महल बनाते थे कि तुम लोग आज उस अहलियत (क्षमता) के बारे में सोच भी नहीं सकते हो। हमने उन क़ौमों को ज़मीन में वह क़ुव्वत व वुसअत दे रखी थी जो तुमको नहीं दी। तो जब हमने ऐसी अज़ीमुश्शान अक़वाम को तबाह व बर्बाद करके रख दिया तो तुम्हारी क्या हैसियत है?

وَاَرۡسَلۡنَا السَّمَآءَ عَلَيۡهِمۡ مِّدۡرَارًا وَّجَعَلۡنَا الۡاَنۡهٰرَ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهِمۡ

*"और हमने उन पर आसमान (से मेंह) बरसाया मूसलाधार और हमने नहरें बहा दीं उनके नीचे"*

हमने उन पर ख़ूब बारिशें बरसायीं और उन्हें ख़ुशहाली अता की। बारिश का पानी बरकत वाला (مَآءً مُّبٰرَكًا) होता है जिससे ज़मीन की रुईदगी ख़ूब बढ़ती है, फ़सलों और अनाज की बहुतात होती है।

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝ "*फिर उनको भी हमने उनके गुनाहों की पादाश में हलाक कर दिया और हमने उनके बाद एक और क़ौम को उठा खड़ा किया।*"

मतलब यह है कि इस क़ानून के मुताबिक़ तुम किस खेत की मूली हो? क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे मामले में अल्लाह तआला का क़ानून बदल जायेगा?

अगली आयत में इस सूरह मुबारका का मरकज़ी मज़मून मज़कूर है। जिस दौर में यह सूरतें नाज़िल हुई थीं उस दौर में हुज़ूर ﷺ पर क़ुरैशे मक्का का बेइन्तहा दबाव था कि अगर आप ﷺ रसूल हैं और हमसे अपनी रिसालत मनवाना चाहते हैं तो कोई हिस्सी मौज्ज़ा हमें दिखाइये, जिसे हम अपनी आँखों से देखें। मुर्दा को ज़िन्दा कीजिये, आसमान पर चढ़ कर दिखाइये, मक्का में कोई बाग़ बना दीजिये, कोई नया चश्मा निकाल दीजिये, सोने-चाँदी का कोई महल बना दीजिये, आसमान से किताब लेकर आप ﷺ को उतरते हुए हम अपनी आँखों से देखें, वग़ैरह। उनकी तरफ़ से इस तरह के तक़ाज़े रोज़-ब-रोज़ ज़ोर पकड़ते जा रहे थे और अवामुन्नास में यह सोच बढ़ती जा रही थी कि हमारे सरदारों के यह मुतालबात ठीक ही तो हैं। हज़रत मूसा अलै. और हज़रत ईसा अलै. ने अपनी-अपनी क़ौम को

कैसे-कैसे मौज्ज़े दिखाये थे! अगर आप ﷺ भी नबुवत के दावेदार हैं तो वैसे मौज्ज़ात क्यों नहीं दिखाते? जबकि दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला का फ़ैसला यह था कि अब कोई ऐसा हिस्सी मौज्ज़ा नहीं दिखाया जायेगा। सबसे बड़ा मौज्ज़ा क़ुरान नाज़िल कर दिया गया है। जो शख्स हक़ का तालिब है उसके लिये इसमें हिदायत मौजूद है। इन हालात में हुज़ूर ﷺ की जाने मुबारक किस क़दर ज़ीक़ (तंगी) में आ चुकी थी। गोया चक्की के दो पाट थे जिनके दरमियान हुज़ूर ﷺ की ज़ाते गिरामी आ गयी थी। यह इस सूरत का मरकज़ी मज़मून है। आगे चल कर जब यह मौज़ू अपने नुक्ता-ए-उरूज (climax) को पहुँचता है तो इसे पढ़ते हुए वाक़िअतन रोंगटे खड़े हो जाने वाली कैफ़ियत पैदा हो जाती है।

## आयत 7

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ

*"और अगर हमने उतार (भी) दी उन पर कोई किताब जो काग़ज़ों में लिखी हुई हो, फिर वह उसे छू भी लें अपने हाथों से"*

لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

*"तब भी यह काफ़िर यही कहेंगे कि यह तो एक खुला जादू है।"*

वह ऐसे मौज्ज़ात को देख कर भी यही कहेंगे कि हमारी आँखों पर जादू का असर हो गया है, हमारी नज़रबंदी कर

दी गयी है। जिसने नहीं मानना उसने सरीह मौज्ज़ात देख कर भी नहीं मानना। अलबत्ता अगर हम ऐसा मौज्ज़ा दिखा देंगे तो इनकी मोहलत ख़त्म हो जायेगी और फिर उसके बाद फ़ौरन अज़ाब आ जायेगा। अभी हमारी रहमत का तक़ाज़ा यह है कि इन्हें मज़ीद मोहलत दी जाये। अभी इस दूध को मज़ीद बिलोया जाना मक़सूद है कि शायद इसमें से कुछ मज़ीद मक्खन निकल आये। इसलिये हिस्सी मौज्ज़ा नहीं दिखाया जा रहा।

## आयत 8

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۭ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ⑧

*और वह कहते हैं क्यों नहीं उतरा इन पर (ऐलानिया) कोई फ़रिश्ता? और अगर हमने फ़रिश्ता उतार दिया होता तो फिर फ़ैसला ही चुका दिया जाता, फिर इन्हें कोई मोहलत ना मिलती।”*

यानि इस दुनिया की ज़िन्दगी में यह जो सारी आज़माइश है वह तो गैब के परदे ही की वजह से है। अगर गैब का पर्दा उठ जाये तो फिर इम्तिहान ख़त्म हो जाता है। उसके बाद तो फिर नतीजे का ऐलान करना ही बाक़ी रह जाता है।

## आयत 9

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝

*"और अगर हम इसको फ़रिश्ता बनाते तब भी आदमी ही की शक्ल में बनाते और उन्हें हम उसी शुबह में डाल देते जिस शुबह में यह अब मुब्तला हैं।"*

अगर बजाये मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के किसी फ़रिश्ते को नबी बना कर भेजा जाता तो उसे भी हमने इंसानी शक्ल में ही भेजना था, क्योंकि भेजना जो इंसानों के लिये था। इस तरह जो अल्तबास (भ्रम) इन्हें इस वक़्त हो रहा है वह अल्तबास उस वक़्त भी हो जाता। हाँ अगर फ़रिश्तों में भेजना होता तो ज़रूर कोई फ़रिश्ता ही भेजते। हदीसे जिब्राईल अलै. के हवाले से हमें मालूम है कि हज़रत जिब्राईल अलै. नबी अकरम ﷺ के पास इंसानी शक्ल में आये थे, पास बैठे हुए लोगों को भी पता ना चला कि यह जिब्राईल अलै. हैं, वह उन्हें इन्सान ही समझे।

## आयत 10

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ

*"और (ऐ नबी ﷺ!) आपसे पहले भी रसूलों का (इसी तरीक़े से) मज़ाक़ उड़ाया गया"*

नबी अकरम ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि आप दिल गिरफ़्ता ना हों, यह ऐसा पहली मरतबा नहीं हो रहा। आप ﷺ से पहले भी अम्बिया अलै. के साथ ऐसा ही सुलूक होता रहा है। जैसे सूरतुल अहक़ाफ़ (आयत 9) में आप ﷺ

की ज़बान से कहलवाया गया: {قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ} यानि आप ﷺ इन्हें कह दीजिये कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूँ, मुझसे पहले भी बहुत से रसूल आ चुके हैं। आयत ज़ेरे नज़र में अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमा रहे हैं कि इससे पहले भी अम्बिया व रुसुल अलै. के साथ उनकी क़ौमें इसी तरह गैर संजीदगी का मुज़ाहिरा करती रही हैं। हज़रत नूह अलै. साढ़े नौ सौ बरस तक ऐसा सब कुछ झेलते रहे।

فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾

*"फिर घेर लिया उन लोगों में से उनको जो मज़ाक़ उड़ाते थे उसी चीज़ ने जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे।"*

अगरचे आप ﷺ की ख्वाहिश है कि इन्हें कोई मौज्ज़ा दिखा दिया जाये ताकि इनकी ज़बानें तो बंद हो जायें, लेकिन अभी ऐसा करना हमारी हिकमत का तक़ाज़ा नहीं है, अभी इनकी मोहलत का वक़्त ख़त्म नहीं हुआ। यानि यह सारा मामला वक़्त के तअय्युन का है, time factor ही अहम है, जिसका फ़ैसला मशीयते इलाही के मुताबिक़ होना है।

## आयत 11

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

*"(ऐ नबी ﷺ!) इनसे कहिये कि घूमो-फिरो ज़मीन में फिर देखो कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का!"*

तुम्हारे इस जज़ीरा नुमाए अरब में ही क़ौमे आद और क़ौमे समूद आबाद थीं। और जब तुम शाम की तरफ़ सफ़र करते हो तो वहाँ रास्ते में क़ौमे मदयन के मसकन (आवास) भी हैं और क़ौमे लूत के शहरों के आसार भी। यह सब तुम अपनी आँखों से देखते हो, फिर तुम उनके अंजाम से इबरत क्यों नहीं पकड़ते?

## आयात 12 से 20 तक

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلْ لِّلّٰهِ ۭ كَتَبَ
عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا
رَيْبَ فِيْهِ ۭ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۭ قُلْ اِنِّىْٓ
اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾ قُلْ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ
رَحِمَهٗ ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ
بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۭ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ
عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۭ
وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾ قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۭ
قُلِ اللّٰهُ ڐ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۣ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا
الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۭ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ
اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰي ۭ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ ۧ

## आयत 12

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلْ لِّلّٰهِ

*"इनसे पूछिये किसका है जो कुछ है आसमानों और ज़मीन में? कह दीजिये अल्लाह ही का है!"*

दरअसल यह कहना इस ऐतबार से है कि मुशरिकीने मक्का भी यह मानते थे कि इस कायनात का मालिक और ख़ालिक़ अल्लाह है। वह यह नहीं कहते थे कि लात, मनात, उज्ज़ा और हुबल ने दुनिया को पैदा किया है। वह ऐसे अहमक़ नहीं थे। अपने उन मअबूदों के बारे में उनका ईमान था {هٰٓؤُلَاۗءِ شُفَعَاۗؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ} कि यह अल्लाह की जनाब में हमारी शफ़ाअत करेंगे। सूरह अनकबूत में अल्फ़ाज़ आये हैं: {وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ} (आयत:61) "(ऐ नबी ﷺ) अगर आप इनसे पूछेंगे कि आसमान और ज़मीन किसने बनाये हैं और सूरज और चाँद को किसने मुसख्खर किया है? तो यह लाज़िमन कहेंगे कि अल्लाह ने!" चुनाँचे वह लोग कायनात की तख्लीक़ को अल्लाह ही की तरफ़ मंसूब करते थे और उसका मालिक भी अल्लाह ही को समझते थे। अलबत्ता उनका शिर्किया अक़ीदा यह था कि हमारे यह मअबूद अल्लाह के बड़े चहेते और लाड़ले हैं, अल्लाह के यहाँ इनके बड़े ऊँचे मरातिब हैं, यह हमें अल्लाह की पकड़ से छुड़वा लेंगे।

كَتَبَ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ

*"उसने अपने ऊपर रहमत को लाज़िम कर लिया है।"*

यह लज़ूम (अनिवार्यता) उसने ख़ुद अपने ऊपर किया है, हम उस पर कोई शय लाज़िम क़रार नहीं दे सकते।

لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ

*"वह तुम्हें लाज़िमन जमा करके ले जायेगा क़यामत के दिन की तरफ़ जिसमें कोई शक नहीं है।"*

اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝۱۲

*"जो लोग अपने आपको ख़सारे में डालने का फ़ैसला कर चुके हैं वही हैं जो ईमान नहीं लायेंगे।"*

यहाँ एक गौरतलब नुक्ता यह है कि क़यामत का दिन तो बड़ा सख्त होगा, जिसमें अहतसाब होगा, सज़ा मिलेगी। फिर यहाँ रहमत के लज़ूम का ज़िक्र किस हवाले से आया है? इसका मफ़हूम यह है कि रहमत का ज़हूर क़यामत के दिन ख़ास अहले ईमान के लिये होगा। इस लिहाज़ से यहाँ खुशखबरी है अम्बिया व रुसुल के लिये, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालेहीन के लिये, और अहले ईमान के लिये, कि जो सख्तियाँ तुम झेल रहे हो, जो मुसीबतें तुम लोग बर्दाश्त कर रहे हो, इस वक़्त दुनिया में जो तंगी तुम्हें हो रही है, इसके बदले में तुम्हारे लिये अल्लाह तआला की रहमत का वह वक़्त आकर रहेगा जब तुम्हारी इन ख़िदमात का भरपूर सिला मिलेगा, तुम्हारी इन सारी सरफ़रोशियों के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से सरे महशर क़द्र अफज़ाई का ऐलान होगा। कभी तुम्हें यह ख्याल ना आने पाये कि हम तो अपना सब कुछ यहाँ अल्लाह के लिये लुटा बैठे हैं, पता नहीं

वह दिन आयेगा भी या नहीं, पता नहीं कोई मुलाक़ात होगी भी या नहीं, पता नहीं यह सब कुछ वाक़ई हक़ है भी या नहीं! इन वसवसों को अपने दिलो दिमाग से दूर रखो, और खुशखबरी सुनो: { كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ }।

## आयत 13

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ؀

*"और उसी का है जो कुछ साकिन हो जाता है रात में और (मुतहर्रिक हो जाता है) दिन के वक़्त। और वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।"*

यहाँ سَكَنَ के मुक़ाबिल लफ्ज़ تَحَرَّكَ महज़ूफ़ है। ऐसे मक़ाबिल के अल्फ़ाज़ को आम तौर पर क़ुरान मजीद में हज़फ़ कर दिया जाता है ताकि आदमी ख़ुद समझे। जैसे यहाँ रात के साथ सुकून का लफ्ज़ आया है और इसके साथ ही दिन का ज़िक्र कर दिया गया है, जबकि दिन का वक़्त सुकून के लिये नहीं है। लिहाज़ा बात इस तरह वाज़ेह हो जाती है: {وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَمَا تَحَرَّكَ فِي النَّهَارِ} "और उसी का है जो कुछ रात के वक़्त सुकून पकड़ता है और दिन के वक़्त मुतहर्रिक हो जाता है।"

## आयत 14

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

*"इनसे कहिये क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को अपना वली बना लूँ, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है?"*

तुम भी मानते हो कि ज़मीन व आसमान और पूरी कायनात का पैदा करने वाला वही अल्लाह है, तो ऐसे ख़ालिक़, मालिक, मौला और कारसाज़ को छोड़ कर क्या मैं किसी और को अपना वली और हिमायती बना लूँ? यह तो बड़ी हिमाकत की बात है, बड़े घाटे का सौदा है।

وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ

*"और वह खाना खिलाता है, उसे खिलाया नहीं जाता।"*

तुम बुतों के सामने नज़रें और हलवे मांडे पेश करते हो। अल्लाह को तो ऐसी चीज़ों की कोई ज़रूरत नहीं। वह तो पूरी मख्लूक़ का रब है, सबको खिलाता है, सबका राज़िक़ है।

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ

*"(ऐ नबी ﷺ! डंके की चोट) कह दीजिये मुझे तो हुक्म हुआ है कि सबसे पहला फ़रमाबरदार मैं ख़ुद बनूँ"*

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝۱۴

*"और तुम हरगिज़ ना होना मुशरिकीन में से।"*

## आयत 15

قُلۡ اِنِّیۡۤ اَخَافُ اِنۡ عَصَیۡتُ رَبِّیۡ عَذَابَ یَوۡمٍ عَظِیۡمٍ ﴿۱۵﴾

*“कह दीजिये कि अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे खौफ़ है एक बड़े (हौलनाक) दिन के अज़ाब का।”*

मैं भी अल्लाह की इबादत से मुस्तस्ना नहीं हूँ, मैं भी अल्लाह का बंदा हूँ। जैसे मैं आप लोगों से कह रहा हूँ कि अल्लाह कि बन्दगी करो, वैसे ही मुझे भी हुक्म है, मुझे भी अल्लाह की बन्दगी करनी है। जैसे मैं तुमसे कह रहा हूँ कि अल्लाह की फ़रमाबरदारी करो, वैसे ही मुझे भी उसकी फ़रमाबरदारी करनी है। और जैसे मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि अगर अल्लाह की नाफ़रमानी करोगे तो पकड़े जाओगे, ऐसे ही मैं भी अगर बिलफ़र्ज़ नाफ़रमानी करूँगा तो मुझे भी अल्लाह के अज़ाब का अन्देशा है। यह बहुत अहम आयात हैं, इन पर बहुत गौरो फ़िक्र करने की ज़रूरत है।

## आयत 16

مَنۡ یُّصۡرَفۡ عَنۡهُ یَوۡمَئِذٍ فَقَدۡ رَحِمَهٗ ؕ وَ ذٰلِکَ الۡفَوۡزُ الۡمُبِیۡنُ ﴿۱۶﴾

*“जो शख्स उस दिन उस (अज़ाब) से दूर रखा गया तो उस पर अल्लाह की बड़ी रहमत होगी, और यही होगी वाज़ेह कामयाबी।”*

दुनिया की बड़ी से बड़ी कामयाबियाँ उस दिन की कामयाबी के सामने हेच (कुछ नहीं) हैं। उस कामयाबी के सामने दुनयवी दौलत, वजाहत, इज़्ज़त, शोहरत, इक़तदार वगैरह सारी चीज़ें आरज़ी और फ़ानी हैं। असल اَلْفَوْزُ الْمُبِیْن तो आख़िरत की कामयाबी है।

## आयत 17

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ

*"और अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से पहुँचा दी जाये कोई तकलीफ़ तो कोई नहीं है उसका दूर करने वाला सिवाय उसके।"*

अब यह तौहीद का बयान है। तकलीफ़ में पुकारो तो उसी को पुकारो, किसी और को ना पुकारो। { وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ } (अल् क़सस:88)। वही मुश्किल कुशा है, वही हाजत रवा है और वही तुम्हारी तकलीफ़ों को रफ़ा करने वाला है।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿17﴾

*"और अगर उसकी तरफ़ से कोई खैर तुम्हें पहुँचा दी जाये तो यक़ीनन वह हर चीज़ पर क़ादिर है।"*

कोई उसका हाथ रोकने वाला नहीं है। उसे अपने किसी बन्दे के साथ भलाई करने के लिये किसी और से मंज़ूरी लेने की हाजत नहीं होती। वह तो عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ है।

## आयत 18

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ⑱

*"और वह अपने बन्दों पर पूरी तरह से ग़ालिब है, और वह है कमाले हिकमत वाला और हर शय की ख़बर रखने वाला।"*

वह ज़ोरआवर है, उसका इक़तदार पूरी कायनात पर मुहीत है, उसकी मख्लूक़ात में से कोई भी उसके क़ाबू से बाहर नहीं है।

## आयत 19

قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۭ قُلِ اللّٰهُ ڐ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۣ

*"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कहिये कौनसी चीज़ है जो गवाही में सबसे बड़ी है? (फिर ख़ुद ही) कहिये कि अल्लाह (की गवाही सबसे बड़ी है)! वह मेरे और तुम्हारे माबैन गवाह है।"*

وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۭ

*"और मेरी जानिब यह क़ुरान वही किया गया है ताकि मैं तुम्हें भी ख़बरदार कर दूँ इसके ज़रिये से और उसको भी जिस तक यह पहुँच जाये।"*

यह गोया सूरत के उमूद (pillar) का अक्स (पिक्चर) है। मैं पहले बता चुका हूँ कि इस सूरत का उमूद यह मज़मून है कि मुशरिकीन के मुतालबे पर हम किसी क़िस्म का हिस्सी मौज्ज़ा नहीं दिखाएँगे, क्योंकि असल मौज्ज़ा यह क़ुरान है।

ऐ नबी ﷺ हमने आप पर यह क़ुरान उतार दिया, आप तब्शीर, इन्ज़ार और तज़कीर के फ़राइज़ इसी क़ुरान के ज़रिये से सरअंजाम दें। जिसके अन्दर सलाहियत है, जो तालिबे हक़ है, जो हिदायत चाहता है, वह हिदायत पा लेगा। बाक़ी जिसके दिल में कजी है, टेढ़ है, तअस्सुब, ज़िद और हठधर्मी है, हसद और तकब्बुर है, आप ﷺ उसको दस लाख मौज्ज़े दिखा दीजिये वह नहीं मानेगा। क्या उल्माये यहूद हज़रत मसीह अलै. के मौज्ज़े देख कर आप अलै. पर ईमान ले आये थे? कैसे-कैसे मौज्ज़े थे जो उन्हें दिखाये गये! आप अलै. गारे से परिन्दे की शक्ल बना कर फूँक मरते और वह उड़ता हुआ परिन्दा बन जाता। यह अहयाए मौता और खल्क़े हयात तो वह चीज़ें हैं जो बिलख़ुसूस अल्लाह तआला के अपने (exclusive) अफ़आल हैं। अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै. के हाथ पर यह निशानियाँ भी ज़ाहिर कर दीं, लेकिन उन्हें देख कर कितने लोगों ने माना? लिहाज़ा हम ऐसा कोई मौज्ज़ा नहीं दिखाएँगे। अलबत्ता आप ﷺ मेहनत और कोशिश करते जाइये, दावत व तब्लीग़ करते जाइये।

यहाँ पर लफ्ज़ بِهٖ ख़ास तौर पर नोट कीजिये। फ़रमाया कि यह क़ुरान मेरी तरफ़ वही किया गया है ताकि मैं ख़बरदार कर दूँ तुम्हें इसके ज़रिये से (بِهٖ) यानि मेरा इन्ज़ार क़ुरान के ज़रिये से है। मज़ीद फ़रमाया: {وَمَنۢ بَلَغَ} "और जिस तक यह पहुँच जाये।" इसका मतलब यह है कि मैं तो तुम्हें पहुँचा रहा हूँ, अब जो उम्मत बनेगी वह आगे पहुँचायेगी। जिस तक यह क़ुरान पहुँच गया उस तक रसूल अल्लाह ﷺ का इन्ज़ार पहुँच गया, और यह सिलसिला

ता क़यामत चलेगा, क्योंकि हुज़ूर ﷺ अपने ही ज़माने के लिये रसूल बन कर नहीं आये थे, आप ﷺ तो ता क़यामत तक रसूल हैं। यह आप ﷺ ही की रिसालत का दौर चल रहा है। जो इन्सान भी क़यामत तक दुनिया में आयेगा वह आप ﷺ की उम्मते दावत में शामिल है, उस तक क़ुरान का पैगाम पहुँचाना अब उम्मते मुहम्मद ﷺ के ज़िम्मे है।

अब आ रहा है एक मुतजस्साना सवाल (searching question)। जैसा कि मैंने इब्तदा में अर्ज़ किया था, जब आपको मालूम हो कि आपका मुखालिफ़ जो कुछ कह रहा है वह अपने दिल के यक़ीन से नहीं कह रहा है, बल्कि ज़िद और हठधर्मी की बुनियाद पर कह रहा है, तो फिर उसकी आँखों में आँखें डाल कर मुतजस्साना (searching) अंदाज़ में उससे सवाल किया जाता है। यही अंदाज़ यहाँ इख़्तियार किया गया है: फ़रमाया:

اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ

*“क्या वाक़ई तुम लोग गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कुछ और भी इलाह हैं?”*

قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ

*“कह दीजिये (अगर तुम यह गवाही देते भी हो तो) मैं इसकी गवाही नहीं दे सकता।”*

तुम ऐसा कहो तो कहो, लेकिन मेरे लिये यह मुमकिन नहीं है कि ऐसी ख़िलाफ़े अक़्ल और ख़िलाफ़े फ़ितरत बात कह सकूँ।

قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝۱۹

*"कह दीजिये वह तो बस एक ही इलाह है और मैं बरी हूँ उन तमाम चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहरा रहे हो।"*

वाज़ेह रहे कि इस सूरत का ज़माना-ए-नुज़ूल मक्की दौर का आखिर ज़माना है। उस वक़्त तक मदीना में भी ख़बरें पहुँच चुकी थीं कि मक्का के अन्दर एक नयी दावत बड़े ज़ोर-शोर और शद्दो-मद्द के साथ उठ रही है। चुनाँचे मदीने के यहूदियों की तरफ़ से सिखाये हुए सवालात भी मक्का के लोग हुज़ूर ﷺ से इम्तिहानन करते थे। मसलन आप ज़रा बताइये कि ज़ुलक़रनैन कौन था? अगर आप नबी हैं तो बताइये कि असहाबे कहफ़ का क़िस्सा क्या था? और यह भी बताइये कि रूह की हक़ीक़त क्या है? यह सब सवालात और इनके जवाबात सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ में आयेंगे। मदीने के यहूदियों तक उनके सवालात के जवाबात से मुताल्लिक़ तमाम ख़बरें भी पहुँच चुकी थीं और उनके समझदार और अहले इल्म लोग समझ चुके थे कि यह वही नबी हैं जिनके हम मुन्तज़िर थे। मगर यह लोग यह सब कुछ समझने और जान लेने के बावजूद महरूम रह गये।

## आयत 20

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ

*"वह लोग जिन्हें हमने किताब अता फ़रमायी थी पहचानते हैं इसको जैसा कि पहचानते हैं अपने बेटों को।"*

يَعْرِفُوْنَهٗ की ज़मीर मफ़ऊली दोनों तरफ़ जा सकती है, क़ुरान की तरफ़ भी और हुज़ूर ﷺ की तरफ़ भी। अलबत्ता इससे क़ब्ल यह वज़ाहत की जा चुकी है कि क़ुरान और रसूल ﷺ मिल कर ही "बय्यिना" बनते हैं, यह दोनों एक वहादत और एक ही हक़ीक़त हैं। हुज़ूर ﷺ ख़ुद क़ुराने मुजस्सम हैं। क़ुरान एक इंसानी शख्सियत और सीरत व किरदार का जामा पहन ले तो वह मुहम्मद ﷺ हैं। जैसा कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि. ने फ़रमाया था: (كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ)(2) यानि हुज़ूर ﷺ की सीरत क़ुरान ही तो है।

اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٢٠

*"(अलबत्ता) जो लोग अपने आपको तबाह करने पर तुल गये हैं तो वही हैं जो ईमान नहीं लायेंगे।"*

# आयात 21 से 30 तक

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ
بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ
جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ
الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ
اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ
كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ
وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ
يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ
عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا
نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ
بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا

لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا
حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى
اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۭ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا
بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾

## आयत 21

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾

*"और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर कोई झूठी तोहमत लगाई या उसकी आयात को झुठलाया। यक़ीनन ऐसे ज़ालिम (कभी) फ़लाह नहीं पा सकते।"*

यानि यह दो अज़ीम तरीन जराइम हैं जो शनाअत में बराबर के हैं, अल्लाह की आयात को झुठलाना या कोई शय ख़ुद गढ़ कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर देना।

## आयत 22

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَاۗؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝۲۲

*"और जिस दिन हम जमा करेंगे उन सबको फिर कहेंगे उनसे जिन्होंने शिर्क किया था कहाँ हैं तुम्हारे वह शु'रकाअ जिनका तुम्हें घमण्ड हो गया था?"*

तुम्हारा गुमान था कि वह तुम्हें हमारी पकड़ से बचा लेंगे।

## आयत 23

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ۝۲۳

*"फिर नहीं होगी उनकी कोई और चाल सिवाय इसके कि वह कहेंगे कि अल्लाह की क़सम जो हमारा रब है हम मुशरिक नहीं थे।"*

## आयत 24

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝۲۴

*"देखो कैसे वह झूठ बोलेंगे अपने ऊपर और जो इफ़तरा (झूठी निंदा) उन्होंने किया हुआ था वह सब उनसे गुम हो जायेगा।"*

उनके यह दावे कि फलाँ देवी बचायेगी और फलाँ देवता सिफ़ारिश करेगा, सब नस्यम मन्सिया हो जाएँगे। अज़ाब को देख कर उस वक़्त उनके हाथों के तोते उड़ जाएँगे।

## आयत 25

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّسۡتَمِعُ اِلَيۡكَ‌ۚ

*“और (ऐ नबी ﷺ) इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो आपकी बात को बड़ी तवज्जोह से सुनते हैं।”*

मक्का में क़ुरैश के सरदारों के लिये जब अवाम को ईमान लाने से रोकना मुश्किल हो गया तो उन्होंने भी उल्माये यहूद की तरह एक तरकीब निकाली। वह बड़े अहतमाम के साथ आकर हुज़ूर ﷺ की मजलिस में बैठते और बड़े इनहाक (ध्यान) से कान लगा कर आप ﷺ की बातें सुनते। वह यह ज़ाहिर करते थे कि हम सब कुछ बड़ी तवज्जोह से सुन रहे हैं, ताकि आम लोग देख कर यह समझें कि वाक़ई हमारे ज़ी फ़हम सरदार यह बातें सुनने, समझने और मानने में संजीदा हैं, मगर फिर बाद में अवाम में आकर उन बातों को रद्द कर देते। आम लोगों को धोखा देने के लिये यह उनकी एक चाल थी, ताकि अवाम यह समझें कि हमारे यह सरदार समझदार और ज़हीन हैं, यह लोग शौक़ से मुहम्मद (ﷺ) की महफ़िल में जाते हैं और पूरे इनहाक से उनकी बातें सुनते हैं, फिर अगर यह लोग इस दावत को सुनने और समझने के बाद रद्द कर रहे हैं तो आख़िर इसकी कोई इल्मी और अक़्ली वजूहात तो होंगी। लिहाज़ा आयत ज़ेरे नज़र में उनकी इस साज़िश का तज़किरा करते हुए फ़रमाया गया कि ऐ नबी (ﷺ) इनमें से कुछ लोग आपके पास आते हैं और आपकी बातें बज़ाहिर बड़ी तवज्जोह से कान लगा कर सुनते हैं।

وَجَعَلْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ

*"हालाँकि हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं कि वह उनको समझ नहीं सकते और उनके कानों के अन्दर हमने सक़ल (वज़न) पैदा कर दिया है। और अगर यह सारी निशानियाँ (जो यह माँग रहे हैं) भी देख लें तब भी उन पर ईमान नहीं लाएँगे।"*

अल्लाह ने उनके दिलों और दिमागों पर यह परदे क्यों डाल दिये? यह सब कुछ अल्लाह की उस सुन्नत के मुताबिक़ है कि जब नबी के मुख़ातिबीन उसकी दावत के मुक़ाबले में हसद, तकब्बुर और तअस्सुब दिखाते हुए अपनी ज़िद पर अड़े रहते हैं तो उनकी सोचने और समझने की सलाहियतें सल्ब कर (छीन) ली जाती हैं। जैसे सूरतुल बक़रह (आयत:7) में फ़रमाया गया: {خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰی سَمْعِهِمْ ۭ وَعَلٰٓی اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ}। लिहाज़ा उनका बज़ाहिर तवज्जोह से नबी ﷺ की बातों को सुनना उनके लिये मुफ़ीद नहीं होगा।

حَتّٰٓی اِذَا جَاۗءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ

*"यहाँ तक कि (ऐ नबी ﷺ) जब वह आपके पास आते हैं तो आपसे झगड़ा (और मुनाज़रा) करते हैं (और) काफ़िर कहते हैं कि यह (क़ुरान जो आप सुना रहे हैं) कुछ भी नहीं सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियाँ हैं।"*

اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ

الۡاَوَّلِيۡنَ ۝۲۵

यह जो कुछ आप (ﷺ) हमें सुना रहे हैं यह पुरानी बातें और पुराने क़िस्से हैं, जो मालूम होता है कि अपने यहूदियों और नसरानियों से सुन रखे हैं।

## आयत 26

*"और वह इससे रोकते भी हैं और ख़ुद भी रुक जाते हैं।"*

وَهُمۡ يَنۡهَوۡنَ عَنۡهُ

وَيَنۡـَٔوۡنَ عَنۡهُ‌ۚ

यहाँ आपस में मिलते-जुलते दो अफ़आल इस्तेमाल हुए हैं, एक का माद्दा ن ه ی है और दूसरे का ن ء ی है। يَنۡهٰى نَهٰى (रोकना) तो मारूफ़ फ़अल है और "نَهٰى" का लफ्ज़ उर्दू में भी आम इस्तेमाल होता है। लिहाज़ा {يَنۡهَوۡنَ عَنۡهُ} के मायने हैं "वह रोकते हैं उससे।" किसको रोकते हैं? अपनी अवाम को। उनकी लीडरी और सरदारी अवाम के बल पर ही तो है। अवाम बरगश्ता (भटक) हो जायेंगे तो उनकी लीडरी कहाँ रहेगी। अवाम को अपने क़ाबू में करना और और उनकी अक़्ल और समझ पर अपना तसल्लुत क़ायम रखना ऐसे नाम निहाद लीडरों के लिये इन्तहाई ज़रूरी होता है। लिहाज़ा एक तरफ़ तो वह अपनी अवाम को राहे हिदायत इख़्तियार करने से रोकते हैं और दूसरी तरफ़ वह ख़ुद उससे

गुरेज़ और पहलु तही करते हैं। نَاَيَايَنْاٰى نَاى का मफ़हूम है दूर होना, कन्नी कतराना जैसे सूरतुल इसरा में फ़रमाया: { وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ } (आयत:83) "और इन्सान का हाल यह है कि जब हम उस पर ईनाम करते हैं तो मुँह फेर लेता और पहलु तही करता है।" चुनाँचे { يَنْــَٔوْنَ عَنْهُ } के मायने हैं "वह उससे गुरेज़ करते हैं, कन्नी कतराते हैं।"

وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝۲۶

*"और वह नहीं हलाक कर रहे किसी को सिवाय अपने आपके लेकिन उन्हें इसका अहसास नहीं है।"*

**आयत 27**

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا

*"और काश तुम देख पाते जब यह खड़े किये जाएँगे आग के किनारे पर तो यह कहेंगे हाय काश! किसी तरह हमें लौटा दिया जाये (तो हम तस्दीक़ करेंगे) और हम अपने रब की आयात को नहीं झुठलाएंगे"*

यहाँ पर نُرَدُّ के बाद فَنُصَدِّقُ महज़ूफ़ माना जायेगा, कि अगर हमें लौटा दिया जाये तो हम तस्दीक़ करेंगे और अपने

रब की आयात को झुठलाएंगे नहीं। काश किसी ना किसी तरह एक दफ़ा फिर हमें दुनिया में वापस भेज दिया जाये।

وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢٧

*"और हम (पक्के और सच्चे) मोमिन बन जाएँगे।"*

## आयत 28

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ

*"बल्कि यह तो इन पर वही हक़ीक़त ज़ाहिर हुई है जो इससे पहले (अपने दिल में) छुपाये हुए थे।"*

ऐसा नहीं था कि उन्हें हक़ीक़त का इल्म नहीं था। हक़ पहले ही उन पर वाज़ेह था, बात उन पर पूरी तरह खुल चुकी थी, लेकिन उस वक़्त उन पर हसद, बुग्ज़ और तकब्बुर के परदे पड़े हुए थे।

وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٢٨

*"और अगर (बिलफ़र्ज़) उन्हें लौटा भी दिया जाये तो फिर वही करेंगे जिससे उन्हें रोका जा रहा था और यक़ीनन वह झूठे हैं।"*

दुनिया में जाकर फिर वहाँ के तक़ाज़े सामने आ जाएँगे, दुनिया के माल व दौलत और औलाद की मोहब्बत और दूसरी नफ्सियाती ख्वाहिशात फिर उन्हें उसी रास्ते पर डाल देंगी।

## आयत 29

وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝۲۹

*"और वह कहते हैं कि नहीं है मगर बस हमारी दुनिया ही की ज़िन्दगी और हम (मरने के बाद) फिर ज़िन्दा नहीं किये जाएँगे।"*

जैसे आज-कल कुफ़्र व इल्हाद के मुख्तलिफ़ shades हैं, उस ज़माने में भी ऐसा ही था। आज ऐसे लोग भी दुनिया में मौजूद हैं जो अल्लाह को तो मानते हैं, आख़िरत को नहीं मानते। ऐसे लोग भी हैं जो अल्लाह और आख़िरत को मानते हैं, लेकिन रिसालत को नहीं मानते हैं। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बिल्कुल मुल्हिद और माद्दा परस्त हैं और उनका अक़ीदा है कि हम ख़ुद ही पैदा होते हैं और ख़ुद ही अपनी तबीई मौत मर जाते हैं, और हमारी ज़िन्दगी सिर्फ़ यही है, मरने के बाद उठने वाला कोई मामला नहीं। इसी तरह उस दौर में भी कुफ़्र व शिर्क के मुख्तलिफ़ shades मौजूद थे। क़ुरैश के अक्सर लोग और अरब के बेशतर मुशरिकीन अल्लाह को मानते थे, आख़िरत को मानते थे, बाअसे बाद अल् मौत को भी मानते थे, लेकिन इसके साथ वह देवी-देवताओं की सिफ़ारिश और शफ़ाअत के क़ायल थे कि हमें फलाँ छुड़ा लेगा, फलाँ बचा लेगा, फलाँ हमारा हिमायती और मददगार होगा। लेकिन एक तबक़ा उनमें भी ऐसा था जो कहता था कि ज़िन्दगी बस यही दुनिया की है, इसके बाद कोई और ज़िन्दगी नहीं है। यहाँ इस आयत में उन लोगों का तज़किरा है।

## आयत 30

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۭ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ

*"और काश कि तुम देख सकते जबकि यह खड़े किये जाएँगे अपने रब के सामने। (उस वक़्त) वह पूछेगा क्या यह हक़ नहीं है?"*

قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝

*"वह कहेंगे क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम (कि यह हक़ है)! तो वह कहेगा कि अब मज़ा चखो अज़ाब का अपने कुफ़्र की पादाश में।"*

## आयत 31 से 41 तक

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءَتْهُمُ

السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰي مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰي ظُهُوْرِهِمْ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا

يَزِرُوْنَ ۝ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ

وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۭ اَفَلَا

تَعْقِلُوْنَ ۝ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ

فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ
وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ
فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا
فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى
الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ
الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ
يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ
قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ
يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي
الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ

يَّشَاِ اللّٰهُ يُضۡلِلۡهُ ؕ وَمَنۡ يَّشَاۡ يَجۡعَلۡهُ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۳۹﴾ قُلۡ اَرَءَيۡتَكُمۡ اِنۡ اَتٰٮكُمۡ عَذَابُ اللّٰهِ
اَوۡ اَتَتۡكُمُ السَّاعَةُ اَغَيۡرَ اللّٰهِ تَدۡعُوۡنَ ۚ اِنۡ كُنۡتُمۡ
صٰدِقِيۡنَ ﴿۴۰﴾ بَلۡ اِيَّاهُ تَدۡعُوۡنَ فَيَكۡشِفُ مَا تَدۡعُوۡنَ
اِلَيۡهِ اِنۡ شَآءَ وَتَنۡسَوۡنَ مَا تُشۡرِكُوۡنَ ﴿۴۱﴾

**आयत 31**

قَدۡ خَسِرَ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ

*"बड़े घाटे में पड़ गये वह लोग जो अल्लाह से मुलाक़ात के इन्कारी हैं।"*

वह इस बात को झुठला रहे हैं कि मरने के बाद कोई पेशी, हाज़री या अल्लाह से मुलाक़ात वगैरह होगी।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتۡهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً

*"यहाँ तक कि जब आ जायेगा उन पर वह वक़्त अचानक"*

एक शख्स के लिये इन्फ़रादी तौर पर तो السَّاعَةُ (घड़ी) से मुराद उसकी मौत का वक़्त है, लेकिन आम तौर पर इससे क़यामत ही मुराद ली गयी है। चुनाँचे इसका मतलब है कि जब क़यामत अचानक आ जायेगी।

قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝

*"तो वह कहेंगे हाय अफ़सोस हमारी उस कोताही पर जो इस (क़यामत) के बारे में हमसे हुई, और वह उठाये हुए होंगे अपने बोझ अपनी पीठों पर। आगाह हो जाओ, बहुत बुरा बोझ होगा जो वह उठाये हुए होंगे।"*

जब क़यामत हक़ बन कर सामने आ जायेगी तो उनकी हसरत की कोई इन्तहा ना रहेगी। वह अपनी पीठों पर कुफ़्र, शिर्क और गुनाहों के बोझ उठाये हुए मैदाने हश्र में पेश होंगे।

## आयत 32

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ

*"और नहीं है दुनिया की ज़िन्दगी मगर खेल और कुछ जी बहला लेना।"*

इसका मतलब यह नहीं लेना चाहिये कि दुनिया की ज़िन्दगी की कोई हक़ीक़त नहीं है, बल्कि तक़ाबुल में ऐसा कहा जाता है कि आख़िरत के मुक़ाबले में इसकी यही हक़ीक़त है। एक शय अब्दी है, हमेशा-हमेश की है और एक शय आरज़ी और फ़ानी है। इन दोनों का आपस में क्या मुक़ाबला? जैसे दुआये इस्तखारा में अल्फ़ाज़ आये हैं: فَاِنَّكَ تَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ (ऐ अल्लाह! तू ही सब कुछ जानता है, मैं कुछ नहीं जानता)। इसका यह मतलब तो नहीं है कि इन्सान के पास कोई भी

इल्म नहीं है, लेकिन अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में किसी दूसरे का इल्म कुछ ना होने के बराबर है। इसी तरह यहाँ आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को लअब और लहव क़रार दिया गया है। वरना दुनिया तो एक ऐतबार से आख़िरत की खेती है। एक हदीस भी बयान की जाती है कि ((اَلدُّنْيَا مَزْرَعَةُ الْآخِرَةِ))(3) "दुनिया आख़िरत की खेती है।" यहाँ बोओगे तो वहाँ काटोगे। अगर यहाँ बोओगे नहीं तो वहाँ काटोगे क्या? यह ताल्लुक़ है आपस में दुनिया और आख़िरत का। इस ऐतबार से दुनिया एक हक़ीक़त है और एक इम्तिहानी वक़्फ़ा है। लेकिन जब आप ताक़बुल करेंगे दुनिया और आख़िरत का तो दुनिया और इसका माल व मताअ आख़िरत की अबदियत और उसकी शान व शौकत के मुक़ाबले में गोया ना होने के बराबर है। दुनिया तो महज़ तीन घंटे के एक ड्रामे की मानिन्द है जिसमें किसी को बादशाह बना दिया जाता है और किसी को फ़क़ीर। जब ड्रामा ख़त्म होता है तो ना बादशाह सलामत बादशाह हैं और ना फ़क़ीर फ़क़ीर है। ड्रामा हॉल से बाहर जाकर कपड़े तब्दील किये और सब एक जैसे बन गये। यह है दुनिया की असल हक़ीक़त। चुनाँचे इस आयत में दुनिया को खेल-तमाशा क़रार दिया गया है।

وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝۳۲

*"और यक़ीनन आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिये जो तक़वा इख़्तियार करें, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?"*

अब वह मक़ाम आ गया है जिसे मैंने इस सूरत के उमूद का ज़रवा-ए-सनाम (climax) क़रार दिया था। यहाँ तर्जुमा करते हुए ज़ुबान लड़खड़ाती है, लेकिन हमें तर्जुमानी की कोशिश तो बहरहाल करनी है।

**आयत 33**

قَدۡ نَعۡلَمُ اِنَّهٗ لَيَحۡزُنُكَ الَّذِىۡ يَقُوۡلُوۡنَ

*"(ऐ नबी ﷺ) हमें खूब मालूम है जो कुछ यह कह रहे हैं इससे आप ग़मगीन होते हैं"*

हम जानते हैं कि जो मुतालबात यह लोग कर रहे हैं, आपसे जो मौज्ज़ात का तक़ाज़ा कर रहे हैं इससे आप रंजीदा होते हैं। आपकी ज़ात गोया चक्की के दो पाटों के दरमियान आ गयी है। एक तरफ़ अल्लाह की मशीयत है और दूसरी तरफ़ इन लोगों के तक़ाज़े। अब इसका पहला जवाब तो यह है:

فَاِنَّهُمۡ لَا يُكَذِّبُوۡنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ۝۳۳

*"तो (ऐ नबी ﷺ! आप सब्र कीजिये) यक़ीनन वह आपको नहीं झुठला रहे, बल्कि यह ज़ालिम तो अल्लाह की निशानियों का इन्कार कर रहे हैं।"*

यह लोग क़ुरान का इन्कार कर रहे हैं, हमारा इन्कार कर रहे हैं, आप ﷺ का इन्कार इन्होंने कब किया है? यहाँ समझाने के इस अंदाज़ पर गौर कीजिये! क्या उन्होंने आप ﷺ को झूठा कहा? नहीं कहा! आप ﷺ पर कोई तोहमत उन्होंने लगायी? नहीं लगायी! लिहाज़ा यह लोग

जो तकज़ीब कर रहे हैं, यह आप ﷺ की तकज़ीब तो नहीं हो रही, तकज़ीब तो हमारी हो रही है, गुस्सा तो हमें आना चाहिये, नाराज़ तो हमें होना चाहिये। यह हमारा कलाम है और यह लोग हमारे कलाम को झुठला रहे हैं। आप ﷺ का काम तो हमारे कलाम को इन तक पहुँचा देना है। यह समझाने का एक बड़ा प्यारा अंदाज़ है, जैसे कोई शफ़ीक़ उस्ताद अपने शागिर्द को समझा रहा हो। लेकिन अब यह बात दर्जा-ब-दर्जा आगे बढ़ेगी। लिहाज़ा इन आयात को पढ़ते हुए यह उसूल ज़हन में ज़रूर रखिये कि اَلرَّبُّ رَبٌّ وَاِنْ تَنَزَّلَ وَالْعَبْدُ عَبْدٌ وَاِنْ تَرَقّٰی । अब इस ज़िमन में दूसरा जवाब मुलाहिज़ा हो:

## आयत 34

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ

*"और आप ﷺ से पहले भी रसूलों को झुठलाया गया तो उन्होंने सब्र किया उस पर जो उन्हें झुठलाया गया और जो उन्हें ईज़ाएँ पहुँचायी गयीं, यहाँ तक कि उन्हें हमारी मदद पहुँच गयी। और (ऐ नबी ﷺ) अल्लाह के इन कलिमात को बदलने वाला कोई नहीं।"*

हमारा एक क़ानून, एक तरीक़ा और एक ज़ाब्ता है, इसलिये आप (ﷺ) को यह सब कुछ बर्दाश्त करना पड़ेगा। आपको जिस मंसब पर फ़ाइज़ किया गया है उसके बारे में हमने

पहले ही बता दिया था कि यह बहुत भारी बोझ है: {اِنَّا سَنُلۡقِیۡ عَلَیۡکَ قَوۡلًا ثَقِیۡلًا} (अल् मुज़म्मिल:5) "बेशक हम आप पर अनक़रीब एक भारी बोझ डालने वाले हैं।"

وَلَقَدۡ جَآءَکَ مِنۡ نَّبَاِی الۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۳۴﴾

*"और आप ﷺ के पास रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं।"*

आप (ﷺ) के इल्म में है कि हमारे बन्दे नूह (अलै.) ने साढ़े नौ सौ बरस तक सब्र किया। अब इसके बाद तल्ख़ तरीन बात आ रही है।

## आयत 35

وَاِنۡ کَانَ کَبُرَ عَلَیۡکَ اِعۡرَاضُھُمۡ فَاِنِ اسۡتَطَعۡتَ اَنۡ تَبۡتَغِیَ نَفَقًا فِی الۡاَرۡضِ اَوۡ سُلَّمًا فِی السَّمَآءِ فَتَاۡتِیَھُمۡ بِاٰیَۃٍ ؕ

*"और अगर इनका ऐराज़ आप ﷺ पर बहुत शाक़ गुज़र रहा है तो अगर आप में ताक़त है कि ज़मीन में कोई सुरंग लगा लें या आसमान में कोई सीढ़ी लगा लें तो ले आयें कोई निशानी।"*

हमारा तो फ़ैसला अटल है कि हम कोई ऐसा मौज्ज़ा नहीं दिखाएँगे, आप ले आयें जहाँ से ला सकते हैं। गौर करें किस अंदाज़ में हुज़ूर ﷺ से गुफ्तुगू हो रही है।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى

*"और अगर अल्लाह चाहता तो इन सबको हिदायत पर जमा कर देता"*

अगर अल्लाह चाहता तो आने वाहिद में सबको साहिबे ईमान बना देता, नेक बना देता।

فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝۳۵

*"तो आप ﷺ जज़्बात से मग़लूब होने वालों में से ना बनें!"*

इस मामले में आप जज़्बाती ना हों। यही लफ्ज़ सूरह हूद में हज़रत नूह अलै. से ख़िताब में आया है। जब हज़रत नूह अलै. ने अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह मेरा बेटा मेरी निगाहों के सामने ग़र्क़ हो गया जबकि तेरा वादा था कि मेरे अहल को तू बचा लेगा: {اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَهْلِیْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ} (हूद:45) "मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है और तेरा वादा सच्चा है।" तो इसका जवाब भी बहुत सख्त था: {اِنِّیْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ} (हूद:46) "मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि तुम जाहिलों में से ना हो जाओ।" ज़रा गौर करें, यह अल्लाह का वह बंदा है जिसने साढ़े नौ सौ बरस तक अल्लाह की चाकरी की, अल्लाह के दीन की दावत फैलायी, उसमें मेहनत की, मशक़्क़त की और हर तरह की मुश्किलात उठाईं। लेकिन अल्लाह की शान बहुत बुलन्द है, बहुत बुलन्द है, बहुत बुलन्द है! इसी लिये फ़रमाया कि ऐ नबी (ﷺ) अगर सबको हिदायत पर लाना मक़सूद हो तो हमारे लिये क्या

मुश्किल है कि हम आने वाहिद में सबको अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि. की मानिन्द बना दें, और अगर हम सबको बिगड़ना चाहें तो आने वाहिद में सबके सब इब्लीस बन जायें। मगर असल मक़सूद तो इम्तिहान है, आज़माइश है। जो हक़ पर चलना चाहता है, हक़ का तालिब है उसको हक़ मिल जायेगा।

## आयत 36

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

*"बात तो वही क़बूल करेंगे जो (हक़ीक़तन) सुनते हैं। रहे यह मुर्दे तो अल्लाह इनको उठायेगा, फिर वह उसी की तरफ़ लौटा दिये जायेंगे।"*

## आयत 37

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ

*"और वह कहते हैं क्यों नहीं उतार दी गयी उन पर कोई निशानी उनके रब की तरफ़ से?"*

उनके पास दलील बस यही एक रह गयी थी कि अगर यह अल्लाह के रसूल हैं तो इन पर इनके परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतार दी जाती? इसी एक हुज्जत पर उन्होंने डेरा लगा लिया था। बाक़ी सारी दलीलों में वह मात खा रहे थे। दरअसल उन्हें भी अंदाज़ा हो चुका था कि

इन हालात में कोई हिस्सा मौज्ज़ा दिखाना अल्लाह तआला की मशीयत में नहीं है। इस सूरते हाल में हुज़ूर ﷺ की तबीयत की तंगी (ज़ीक़) का अंदाज़ा इससे लगायें कि क़ुरान में बार-बार इसका ज़िक्र आता है। सूरतुल हिज्र में इसी कैफ़ियत का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में आया है: {وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ} (आयत:97) "हम खूब जानते हैं कि आपका सीना भिंचता है उन बातों से जो यह कह रहे हैं...."

قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۳۷

*"कह दो, अल्लाह क़ादिर है कि वह कोई (बड़ी से बड़ी) निशानी उतार दे लेकिन इनमें से अक्सर लोग जानते नहीं हैं।"*

यह लोग नहीं जानते कि इस तरह का मौज्ज़ा दिखाने का नतीजा क्या निकलेगा। इस तरह इनकी मोहलत ख़त्म हो जायेगी। यह हमारी रहमत है कि अभी हम यह मौज्ज़ा नहीं दिखा रहे। यह बदबख्त लोग जिस मौक़फ़ पर मोर्चा लगा कर बैठ गये हैं उसकी हस्सासियत का इन्हें इल्म ही नहीं। इन्हें मालूम नहीं है कि मौज्ज़ा ना दिखाना इनके लिये हमारी रहमत का ज़हूर है और हम अभी इन्हें मज़ीद मोहलत देना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि यह दूध अभी और बिलोया जाये, शायद इसमें से कुछ और मक्खन निकल आये।

## आयत 38

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ۭ

*"और नहीं है ज़मीन पर चलने वाला कोई भी जानवर और ना कोई परिंदा जो अपने दोनों बाज़ुओं से उड़ता है, मगर वह भी तुम्हारी ही तरह की उम्मतें हैं।"*

उन तमाम जानवरों, परिंदों और कीड़ों-मकोड़ों के रहने-सहने के भी अपने-अपने तौर-तरीक़े और निज़ाम हैं, उनके अपने लीडर्स होते हैं। यह चीज़ें आज की साइंसी तहक़ीक़ से साबित शुदा हैं। चीटियों की एक मलका होती है, जिसके मा-तहत वह रहती और काम वगैरह करती हैं। इसी तरह शहद की मक्खियों की भी मलका होती है।

مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ۝٣٨

*"हमने तो अपनी किताब में किसी शय की कोई कमी नहीं रखी है, फिर यह अपने रब की तरफ़ लौटाये जाएँगे।"*

क़ुरान में हमने हर तरह के दलाइल दे दिये हैं, हर तरह के शवाहिद पेश कर दिये हैं, हर तरह से इस्तशहाद कर दिया है। इन सबको आखिरकार अपने रब के हुज़ूर पेश होना है। वहाँ पर हर एक को अपने किये का पूरा बदला मिल जायेगा।

## आयत 39

وَالَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكۡمٌ فِى الظُّلُمٰتِ‌ؕ

*"और जिन लोगों ने हमारी आयात को झुठलाया वह बहरे और गूंगे हैं (और) अंधेरों में (भटक रहे) हैं।"*

مَنۡ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضۡلِلۡهُ‌ ؕ وَمَنۡ يَّشَاۡ يَجۡعَلۡهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ‏ ﴿۳۹﴾

*"जिसको अल्लाह चाहता है गुमराह कर देता है और जिसको चाहता है सीधे रास्ते पर ले आता है।"*

"अल्लाह गुमराह कर देता है" का मफ़हूम यह है कि उसकी गुमराही पर मोहरे तस्दीक़ सब्त कर देता है, उसकी गुमराही का फ़ैसला कर देता है।

## आयत 40

قُلۡ اَرَءَيۡتَكُمۡ اِنۡ اَتٰٮكُمۡ عَذَابُ اللّٰهِ اَوۡ اَتَتۡكُمُ السَّاعَةُ اَغَيۡرَ اللّٰهِ تَدۡعُوۡنَ‌ۚ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ‏ ﴿۴۰﴾

*"इनसे कहिये, ज़रा गौर करो, अगर तुम पर (किसी वक़्त) अल्लाह का अज़ाब आ जाये या तुम पर क़यामत आ जाये तो (उस वक़्त) क्या तुम सिवाय अल्लाह के किसी और को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो (तो ज़रा जवाब दो)!"*

यह भी मुतजस्साना (searching) अंदाज़ में उनसे सवाल किया जा रहा है। यह उनका मामूल भी था और मुशाहिदा भी, कि जब भी कभी कोई मुसीबत आती, समुन्दर में सफ़र के दौरान कभी तूफ़ान आ जाता, मौत सामने नज़र आने लगती तो फिर लात, मनात, उज्ज़ा, हुबल वगैरह में से कोई भी दूसरा ख़ुदा उन्हें याद ना रहता। ऐसे मुश्किल वक़्त में वह सिर्फ़ अल्लाह ही को पुकारते थे। चुनाँचे ख़ुद उनसे सवाल किया जा रहा है कि हर शख्स ज़रा अपने दिल से पूछे, कि आख़िर मुसीबत के वक़्त हमें एक अल्लाह ही क्यों याद आता है? गोया एक अल्लाह को मानना और उस पर ईमान रखना इन्सान की फ़ितरत का तक़ाज़ा है। किसी शख्स में शराफ़त की कुछ भी रमक़ मौजूद हो तो इस तरह के सवालात के जवाब में उसका दिल ज़रूर गवाही देता है कि हाँ बात तो ठीक है, ऐसे मौक़ों पर हमारी अंदरूनी कैफ़ियत बिल्कुल ऐसी ही होती है और बेइख़्तियार "अल्लाह" ही का नाम ज़बान पर आता है।

## आयत 41

بَلۡ اِيَّاهُ تَدۡعُوۡنَ فَيَكۡشِفُ مَا تَدۡعُوۡنَ اِلَيۡهِ اِنۡ شَآءَ وَتَنۡسَوۡنَ مَا تُشۡرِكُوۡنَ ۝٤١

*"बल्कि (मुसीबत की घड़ी में) तुम उसी को पुकारते हो, फिर अगर वह चाहता है तो जिस तकलीफ़ के लिये तुम उसे पुकारते हो वह दूर कर देता है और (ऐसे मौक़ों पर) तुम भूल जाते हो उनको जिनको तुम शरीक ठहराते हो।"*

# आयात 42 से 50 तक

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ
بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَآ اِذْ
جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ
وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا
نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ
شَيْءٍ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً
فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰي
قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ۭاُنْظُرْ كَيْفَ
نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ
اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا
الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۭ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾

**आयत 42**

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾

*"और हमने भेजा है बहुत सी उम्मतों की तरफ़ आप ﷺ से क़ब्ल (रसूलों को), फिर हमने पकड़ा उन्हें सख्तियों और तकलीफ़ों से, शायद कि वह आजिज़ी करें।"*

यहाँ रसूलों के बारे में एक अहम क़ानून बयान हो रहा है (वाज़ेह रहे कि यहाँ अम्बिया नहीं बल्कि रसूल मुराद हैं।) जब भी किसी क़ौम की तरफ़ कोई रसूल भेजा जाता था तो उस क़ौम को ख़्वाबे ग़फ़लत से जगाने के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से छोटे-छोटे अज़ाब आते थे, लेकिन अगर वह क़ौम इसके बावजूद भी ना सम्भलती और अपने रसूल पर ईमान ना लाती, तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी रस्सी ढीली कर दी जाती थी, ताकि जो चंद दिन की

मोहलत है उसमें वह ख़ूब दिल खोल कर मनमानियाँ कर लें। फिर अचानक अल्लाह का बड़ा अज़ाब उनको आ पकड़ता था जिससे वह क़ौम नेस्तो नाबूद कर दी जाती थी। यह मज़मून असल में सूरतुल आराफ़ का उमूद है और वहाँ बड़ी तफ़सील से बयान हुआ है।

## आयत 43

فَلَوْلَآ اِذْ جَاۗءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۴۳

*"तो क्यों ना ऐसा हुआ कि जब हमारी तरफ़ से कोई सख्ती उन पर आयी तो वह गिडगिड़ाते, लेकिन उनके दिल तो सख्त हो चुके थे और शैतान ने मुज़य्यन किये रखा उनके लिये उन आमाल को जो वह कर रहे थे।"*

यानि अल्लाह की तरफ़ से बार-बार की तम्बीहात के बावजूद सोचने, समझने और अपने रवैय्ये पर नज़रे सानी करने के लिये आमादा नहीं हुए।

## आयत 44

فَلَمَّا نَسُوۡا مَا ذُكِّرُوۡا بِهٖ فَتَحۡنَا عَلَيۡهِمۡ اَبۡوَابَ كُلِّ شَىۡءٍ ؕ

*"फिर जब उन्होंने भुला दिया उस नसीहत को जो उनको की गयी थी तो हमने उन पर दरवाज़े खोल दिये हर चीज़ के।"*

कि अब खाओ-पियो, ऐश करो, अब दुनिया में हर क़िस्म की नेअमतें तुम्हें मिलेंगी, ताकि इस दुनिया में जो तुम्हारा नसीब है उससे ख़ूब फ़ायदा उठा लो।

حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوۡا بِمَآ اُوۡتُوۡۤا اَخَذۡنٰهُمۡ بَغۡتَةً فَاِذَا هُمۡ مُّبۡلِسُوۡنَ ﴿۴۴﴾

*"यहाँ तक कि जब वह इतराने लगे उन चीज़ों पर जो उन्हें मिल गयी थीं तो अचानक हमने उन्हें पकड़ लिया, फिर वह बिल्कुल मायूस होकर रह गये।"*

### आयत 45

فَقُطِعَ دَابِرُ الۡقَوۡمِ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ؕ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۴۵﴾

*"फिर जड़ काट दी गयी उस क़ौम की जिसने ज़ुल्म (और कुफ़्र व शिर्क) की रविश इख़्तियार की थी, और कुल शुक्र और तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।"*

### आयत 46

قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ اَخَذَ اللّٰهُ سَمۡعَكُمۡ وَاَبۡصَارَكُمۡ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوۡبِكُمۡ مَّنۡ اِلٰهٌ غَيۡرُ اللّٰهِ يَاۡتِيۡكُمۡ بِهٖ‌ؕ

*"(ऐ नबी ﷺ इनसे) पूछिये! क्या तुमने कभी गौर किया कि अगर अल्लाह तुम्हारी आँखें और तुम्हारे कान छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो अल्लाह के सिवा कौनसा मअबूद है जो दोबारा तुम्हें यह (सारी सलाहियतें) दिलायेगा?"*

اُنۡظُرۡ كَيۡفَ نُصَرِّفُ الۡاٰيٰتِ ثُمَّ هُمۡ يَصۡدِفُوۡنَ ﴿۴۶﴾

*"देखिये हम किस तरह इनके लिये अपनी आयात मुख्तलिफ़ पहलुओं से पेश करते हैं, फिर भी वह किनारा कशी करते हैं।"*

*"इक फूल का मज़मूँ हो तो सौ रंग से बाँधूं"* के मिस्दाक़ हम यह सारे मज़ामीन फिरा-फिरा कर, मुख्तलिफ़ अंदाज़ से मुख्तलिफ़ असालेब (ढंग) से इनके सामने ला रहे हैं, मगर इसके बावजूद यह लोग ऐराज़ कर रहे हैं और ईमान नहीं ला रहे।

## आयत 47

قُلۡ اَرَءَيۡتَكُمۡ اِنۡ اَتٰٮكُمۡ عَذَابُ اللّٰهِ بَغۡتَةً اَوۡ جَهۡرَةً هَلۡ

*"(इनसे) कहिये देखो तो अगर तुम पर अज़ाब आ जाये अचानक या अलल ऐलान, तो कौन हलाक होगा सिवाय ज़ालिमों के?"*

يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ

الظّٰلِمُوْنَ ۝۴۷

यह अज़ाब अचानक आये या बतदरीज, पेशगी इत्तलाअ के बगैर वारिद हो जाये या डंके की चोट ऐलान करके आये, हलाक तो हर सूरत में वही लोग होंगे जो रसूल अलै. की दावत को ठुकरा कर, अपनी जानों पर ज़ुल्म के मुरतकिब हुए हैं। अब अम्बिया व रुसुल अलै. की बेअसत का वही बुनियादी मक़सद बयान हो रहा है जो इससे पहले हम सूरतुन्निसा (आयत 165) में पढ़ चुके हैं: {رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ..... وَمُنْذِرِيْنَ}।

**आयत 48**

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ

*"हम नहीं भेजते रहे हैं अपने रसूलों को मगर खुशखबरी देने वाले और ख़बरदार करने वाले बना कर।"*

فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۴۸

*"तो जो लोग ईमान ले आये और उन्होंने अपनी इस्लाह कर ली तो उन पर ना कोई खौफ़ है और ना वह ग़मगीन होंगे।"*

यानि तमाम अम्बिया व रुसुल अहले हक़ के लिये बशारत देने वाले और अहले बातिल के लिये ख़बरदार करने वाले थे।

## आयत 49

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝۴۹

*"और वह लोग जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया उन पर अज़ाब मुसल्लत होकर रहेगा उनकी नाफ़रमानी के बाइस।"*

## आयत 50

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ

*"(ऐ नबी ﷺ इनसे) कह दीजिये कि मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे इख़्तियार में हैं अल्लाह के खज़ाने और ना (मैंने दावा किया है कि) मुझे गैब का इल्म हासिल है और ना मैंने (कभी) यह कहा है कि मैं फ़रिश्ता हूँ।"*

तुम लोग मुझसे मौज्ज़ात के मुतालबात करते हो और गैब के अहवाल पूछते हो, लेकिन किसी शख्स से मुतालबा तो किया जाना चाहिये उसके दावे के मुताबिक़। मैंने कब दावा किया है कि मैं गैब जानता हूँ और अलुहियत में मेरा हिस्सा है। मेरा दावा तो यह है कि मैं अल्लाह का एक बंदा हूँ, बशर हूँ, मुझ पर वही आती है, मुझे मामूर किया गया है कि तुम्हें ख़बरदार कर दूँ और वह काम मैं कर रहा हूँ।

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ

*"मैं तो बस इत्तेबाअ कर रहा हूँ उस शय का जो मेरी तरफ़ वही की जाती है।"*

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾

*"कहिये तो क्या अब बराबर हो जायेंगे अंधे और देखने वाले? तो क्या तुम गौरो फ़िक्र से काम नहीं लेते?"*

# आयात 51 से 55 तक

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ
لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ
يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ
حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ
شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾
وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ
اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ

بِالشّٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا
فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ
اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝

अभी पिछले रुकूअ में हमने पढ़ा: {وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ} (आयत 48) कि तमाम रसूल तब्शीर और इन्ज़ार के लिये आते रहे और इसी सूरत में हम यह भी पढ़ चुके हैं कि हुज़ूर ﷺ की ज़बाने मुबारक से कहलवाया गया: {وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ} (आयत 19) “यह क़ुरान मेरी तरफ़ वही किया गया है ताकि इसके ज़रिये से मैं ख़बरदार करूँ तुम लोगों को और उन तमाम लोगों को भी जिन तक यह पहुँचे।” यहाँ अब फिर क़ुरान के ज़रिये से (بِهٖ) इन्ज़ार का हुक्म आ रहा है कि (ऐ नबी ﷺ) आपका काम इन्ज़ार और तब्शीर है जिसे आप इस क़ुरान के ज़रिये से सरअंजाम दें।

## आयत 51

وَاَنۡذِرۡ بِهِ الَّذِيۡنَ يَخَافُوۡنَ اَنۡ يُّحۡشَرُوۡۤا اِلٰى رَبِّهِمۡ

*"और ख़बरदार कर दीजिये इस (क़ुरान) के ज़रिये से उन लोगों को जिन्हें वाक़िअतन कुछ खौफ़ है कि वह अपने रब की तरफ़ इकट्ठे किये जायेंगे"*

जैसा कि पहले भी ज़िक्र हो चुका है, मुशरिकीने मक्का में बहुत कम लोग थे जो बाअसे बाद अल् मौत के मुन्कर थे। उनमें ज़्यादातर लोगों का अक़ीदा यही था कि मरने के बाद हम उठाये जाएँगे, क़यामत आयेगी और अल्लाह के हुज़ूर पेशी होगी, लेकिन अपने बातिल मअबूदों के बारे में उनका गुमान था कि वह वहाँ हमारे छुड़ाने के लिये मौजूद होंगे और हमें बचा लेंगे।

لَيۡسَ لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ وَلِىٌّ وَّلَا شَفِيۡعٌ لَّعَلَّهُمۡ يَتَّقُوۡنَ ۝۵۱

*"इस हाल में कि उनके लिये नहीं होगा अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और ना कोई सिफ़ारिश करने वाला, शायद कि (इस तरह समझाने से) उनमें कुछ तक़वा पैदा हो जाये।"*

उनको ख़बरदार कर दें कि अपने बातिल मअबूदों और उनकी शफ़ाअत के सहारे के बारे में अपनी ग़लत फ़हमियों को दूर कर लें। शायद कि हक़ीक़ते हाल का इदराक होने के बाद उनके दिलों में कुछ खौफ़े ख़ुदा पैदा हो जाये।

**आयत 52**

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ

*"और मत धुत्कारिये आप उन लोगों को जो पुकारते हैं अपने रब को सुबह-शाम (और) उसकी रज़ा के तालिब हैं।"*

दरअसल यह इशारा है उस मामले की तरफ़ जो तक़रीबन तमाम रसूलों के साथ पेश आया। वाक़िया यह है कि आम तौर पर रसूलों की दावत पर सबसे पहले मुफ़लिस और नादार लोग ही लब्बैक कहते रहे हैं। ऐसे लोगों को नबी की महफ़िल में देख कर साहिबे सरवत व हैसियत लोग उस दावत से इसलिये भी बिदकते थे कि अगर हम ईमान लाएँगे तो हमें इन लोगों के साथ बैठना पड़ेगा। इस सिलसिले में हज़रत नूह अलै. की क़ौम का क़ुरान में ख़ुसूसी तौर पर ज़िक्र हुआ है कि आप अलै. की क़ौम के सरदार कहते थे कि ऐ नूह हम तो आपके पास आना चाहते हैं, आपके पैग़ाम को समझना चाहते हैं, लेकिन हम जब आपके इर्द-गिर्द इन घटिया क़िस्म के लोगों को बैठे हुए देखते हैं तो हमारी गैरत यह गवारा नहीं करती कि हम इनके साथ बैठें। यही बात क़ुरैश के सरदारान रसूल अल्लाह ﷺ से कहते थे कि आप ﷺ के पास हर वक़्त जिन लोगों का जमघटा लगा रहता है वह लोग हमारे मआशरे के पस्त तबक़ात से ताल्लुक़ रखते हैं, इनमें से अक्सर हमारे गुलाम हैं। ऐसे लोगों की मौजूदगी में आपकी महफ़िल में बैठना हमारे शायाने शान नहीं। उनकी ऐसी बातों के जवाब में फ़रमाया जा रहा है कि ऐ

नबी (ﷺ) आप उनकी बातों से कोई असर ना लें, आप ﷺ ख्वाह मा ख्वाह अपने इन साथियों को ख़ुद से दूर ना करें। अगर वह गरीब हैं या उनका ताल्लुक़ पस्त तबक़ात से है तो क्या हुआ, उनकी शान तो यह है कि वह सुहब-शाम अल्लाह को पुकारते हैं, अल्लाह से मुनाजात करते हैं, उसकी तस्बीह व तहमीद करते हैं, उसके रुए अनवर के तालिब हैं और उसकी रज़ा चाहते हैं। सूरतुल बक़रह में ऐसे लोगों के बारे में ही फ़रमाया गया है: {مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ} (आयत 207) कि यह वह लोग हैं जिन्होंने अपनी जानें और अपनी ज़िन्दगियाँ अल्लाह की रज़ा जोई के लिये वक़्फ़ कर दी हैं।

مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

*"आपके ज़िम्मे उनके हिसाब में से कुछ नहीं है और ना आपके हिसाब में से उनके ज़िम्मे कुछ है"*

यानि हर शख्स अपने आमाल के लिये ख़ुद जवाबदेह है और हर शख्स को अपनी कमाई ख़ुद करनी है। उनकी ज़िम्मेदारी का कोई हिस्सा आप पर नहीं है। आप ﷺ के ज़िम्मे आपका फ़र्ज़ है, वह आप अदा करते रहें। जो लोग आप ﷺ की दावत पर ईमान ला रहे हैं वह भी अल्लाह की नज़र में हैं और जो इससे पहलु तही कर रहे हैं उनका हिसाब भी वह ले लेगा। हर एक को उसके तर्ज़े अमल के मुताबिक़ बदला

दिया जायेगा। ना आप ﷺ उनकी तरफ़ से जवाबदेह हैं और ना वह आप ﷺ की तरफ़ से।

فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۵۲

*"तो अगर (बिलफ़र्ज़) आप उन्हें अपने से दूर करेंगे तो आप ज़ालिमों में से हो जाएँगे।"*

## आयत 53

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ

*"और इसी तरह हमने उनमें से बाज़ को बाज़ के ज़रिये से आज़माया है"*

यह अल्लाह की आज़माइश का एक तरीक़ा है। मसलन एक शख्स मुफ़लिस और नादार है, अगर वह किसी दौलतमन्द और साहिबे मंसब व हैसियत शख्स को हक़ की दावत देता है तो वह उस पर हक़ारत भारी नज़र डाल कर मुस्कुरायेगा कि इसको देखो और और इसकी औक़ात को देखो, यह समझाने चला है मुझको! हालाँकि उसूली तौर पर उस साहिबे हैसियत शख्स को गौर करना चाहिये कि जो बात उससे कही जा रही है वह सही है या ग़लत, ना कि बात कहने वाले के मरतबा व मंसब को देखना चाहिये। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इस तरह हम लोगों की आज़माइश करते हैं।

لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝53

*"ताकि वह कहें कि क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ख़ास ईनाम किया है हम में से? तो क्या अल्लाह ज़्यादा वाक़िफ़ नहीं है उनसे जो वाक़िअतन उसका शुक्र करने वाले हैं?"*

साहिबे हैसियत लोग तो दावा रखते हैं कि अल्लाह का ईनाम और अहसान तो हम पर हुआ है, दौलतमन्द तो हम हैं, चौधराहटें तो हमारी हैं। यह जो गिरे-पड़े तबक़ात के लोग हैं इनको हम पर फ़ज़ीलत कैसे मिल सकती है? मक्का के लोग भी इसी तरह की बातें किया करते थे कि अगर अल्लाह ने अपनी किताब नाज़िल करनी थी, किसी को नबुवत देनी ही थी तो उसके लिये कोई "رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ" मुन्तखब किया जाता। यानि यह मक्का और ताइफ़ जो दो बड़े शहर हैं इनमें बड़े-बड़े सरदार हैं, सरमायादार हैं, बड़ी-बड़ी शख्सियात हैं, उनमें से किसी को नबुवत मिलती तो कोई बात भी थी। यह क्या हुआ कि मक्का का एक यतीम जिसका बचपन मुफ़लिसी में गुज़रा है, जवानी मशक्क़त में कटी है, जिसके पास कोई दौलत है ना कोई मंसब, वह नबुवत का दावेदार बन गया है। इस क़िस्म के ऐतराज़ात का एक और मुस्कित जवाब इसी सूरत की आयत नम्बर 124 में इन अल्फ़ाज़ में आयेगा: {اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ۭ} "अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि अपनी रिसालत का मंसब किसको देना चाहिये।" और किस में इस

मंसब को सम्भालने की सलाहियत है। जैसे तालूत के बारे में लोगों ने कह दिया था कि वह कैसे बादशाह बन सकता है जबकि उसे तो माल व दौलत की वुसअत भी नहीं दी गयी: { وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ } (अल् बक़रह:247)। हम दौलतमन्द हैं, हमारे मुक़ाबले में इसकी कोई माली हैसियत नहीं। इसका जवाब यूँ दिया गया कि तालूत को जिस्म और इल्म के अन्दर कुशादगी { بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ } अता फ़रमायी गयी है। लिहाज़ा उसमें बादशाह बनने की अहलियत तुम लोगों से ज़्यादा है।

यहाँ रसूल अल्लाह ﷺ को बताया जा रहा है कि इन गरीब व नादार मोमिनीन के साथ आपका मामला कैसा होना चाहिये।

## आयत 54

وَاِذَا جَاۗءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ

*"जब आप ﷺ के पास आयें वह लोग जो हमारी आयात पर ईमान रखते हैं तो आप उनसे कहें कि तुम पर सलामती हो, तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत को लाज़िम कर लिया है"*

اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْۗءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ

*"(और तुम्हारे लिये अल्लाह की ख़ास रहमत का मज़हर यह है) कि तुम में से जो कोई किसी बुरे*

مِنۢ بَعۡدِهٖ وَاَصۡلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۵۴﴾

*काम का इरतकाब कर बैठेगा जहालत की बिना पर, फिर वह उसके बाद तौबा करेगा और इस्लाह कर लेगा तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला और मेहरबान है।"*

## आयत 55

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ وَلِتَسۡتَبِيۡنَ سَبِيۡلُ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۵۵﴾

*"और इसी तरह हम अपनी आयात की तफ़सील बयान करते हैं ताकि (लोग इन पर गौरो फ़िक्र करें और) मुजरिमों का रास्ता वाज़ेह हो जाये।"*

यहाँ पर "نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ" के बाद "لِيَتَفَكَّرُوۡا بِهَا" महज़ूफ़ माना जायेगा। यानि हम आयात की तफ़सील इसलिये बयान करते हैं कि लोग इन पर गौरो फ़िक्र करें। अगर वह इन पर गौर करेंगे, तफ़क्कुर करेंगे तो मुजरिमों का रास्ता उनके सामने खुल कर वाज़ेह हो जायेगा।

# आयात 56 से 60 तक

قُلۡ اِنِّىۡ نُهِيۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ قُلۡ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهۡوَآءَكُمۡ ۙ قَدۡ ضَلَلۡتُ اِذًا وَّمَاۤ اَنَا

مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ۭ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ۭ اِنِ الْحُكْمُ
اِلَّا لِلّٰهِ ۭ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ
اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ
وَبَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ
الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ
وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ
الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا
جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ
مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ ۧ

## आयत 56

قُلۡ اِنِّیۡ نُہِیۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ الَّذِیۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ ؕ

*"(ऐ नबी ﷺ) कह दीजिये कि मुझे तो मना कर दिया गया है उनको पूजने से जिनको तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा।"*

यह लात, मनात, उज्ज़ा वगैरह जिनको तुम लोग अल्लाह के अलावा मअबूद मानते हो, उनको मैं नहीं पुकार सकता। मुझे इससे मना कर दिया गया है। मुझे तो हुक्म दिया गया है: {فَلَا تَدۡعُوۡا مَعَ اللّٰہِ اَحَدًا} (अल् जिन:18) कि अल्लाह के साथ किसी और को मत पुकारो।

قُلۡ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَہۡوَآءَکُمۡ ۙ قَدۡ ضَلَلۡتُ اِذًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُہۡتَدِیۡنَ ﴿۵۶﴾

*"कह दीजिये कि मैं तुम्हारी ख्वाहिशात की पैरवी नहीं कर सकता, अगर ऐसा करूँगा तो मैं गुमराह हो जाऊँगा और फिर ना रहूँगा मैं हिदायत पाने वालों में।"*

## आयत 57

قُلۡ اِنِّیۡ عَلٰی بَیِّنَۃٍ مِّنۡ رَّبِّیۡ

*"कह दीजिये कि मैं तो अपने रब की तरफ़ से एक बड़ी बय्यिना पर हूँ"*

यह बय्यिना क्या है? इसकी वज़ाहत सूरह हूद में आयेगी। जैसा कि इससे पहले भी बताया जा चुका है कि एक आम इन्सान के लिये बय्यिना दो चीज़ों से मिल कर बनती है,

इन्सान की फ़ितरते सलीमा और वहिये इलाही। फ़ितरते सलीमा और अक़्ले सलीम इन्सान के अन्दर अल्लाह की तरफ़ से वदीयत कर दी गयी है जिसकी बिना पर उसको नेकी-बदी और अच्छे-बुरे की तमीज़ फ़ितरी तौर पर मिल गयी है। इसके बाद अगर किसी इन्सान तक नबी या रसूल के ज़रिये से अल्लाह की वही भी पहुँच गयी और उस वही ने भी उन हक़ाइक़ की तस्दीक़ कर दी जिन तक वह अपनी फ़ितरते सलीमा और अक़्ले सलीम की रहनुमाई में पहुँच चुका था, तो उस पर हुज्जत तमाम हो गयी। इस तरह यह दोनों चीज़ें यानि फ़ितरते सलीमा और वहिये इलाही मिल कर उस शख्स के लिये बय्यिना बन गयीं। फिर अल्लाह का रसूल और वहिये इलाही दोनों मिल कर भी लोगों के हक़ में बय्यिना बन जाते हैं। ख़ुद रसूल ﷺ के हक़ में बय्यिना यह है कि आप ﷺ अपनी फ़ितरते सलीमा और अक़्ले सलीम की रहनुमाई में जिन हक़ाइक़ तक पहुँच चुके थे वहिये इलाही ने आकर उन हक़ाइक़ को उजागर कर दिया। चुनाँचे हुज़ूर ﷺ से कहलवाया जा रहा है कि आप इनको बतायें कि मैं कोई अँधेरे में टामक-टोइयाँ नहीं मार रहा, मैं तो अपने रब की तरफ़ से बय्यिना पर हूँ। मैं जिस रास्ते पर चल रहा हूँ वह बहुत वाज़ेह और रोशन रास्ता है, और मुझ पर उसकी बातिनी हक़ीक़त भी मुन्कशिफ़ है।

وَ كَذَّبْتُمْ بِهٖ مَا عِنْدِىْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ

*"और तुमने उसे झुठला दिया है। मेरे पास वह शय मौजूद नहीं है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो।"*

वह लोग जल्दी मचा रहे थे कि ले आइये हमारे ऊपर अज़ाब। दस बरस से आप हमें अज़ाब की धमकियाँ दे रहे हैं, अब

जबकि हमने आपको मानने से इन्कार कर दिया है तो वह अज़ाब हम पर आ क्यों नहीं जाता? जवाब में हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم से फ़रमाया जा रहा है कि आप इन्हें साफ़ अल्फ़ाज़ में बता दें कि अज़ाब का फ़ैसला मेरे इख़्तियार में नहीं है, वह अज़ाब जब आयेगा, जैसा आयेगा, अल्लाह के फ़ैसले से आयेगा और जब वह चाहेगा ज़रूर आयेगा।

اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ۝۵۷

*"फ़ैसले का इख़्तियार किसी को नहीं सिवाय अल्लाह के। वह हक़ को खोल कर बयान कर देता है और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।"*

## आयत 58

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝۵۸

*"कह दीजिये अगर मेरे पास वह होता जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान (कभी का) फ़ैसला तय हो चुका होता, और अल्लाह खूब वाक़िफ़ है ज़ालिमों से।"*

इन अल्फ़ाज़ से एक हद तक तल्ख़ी और बेज़ारी ज़ाहिर हो रही है कि अगर यह फ़ैसला करना मेरे इख़्तियार में होता तो मैं तुम्हें मज़ीद मोहलत ना देता। अब मैं भी तुम्हारे रवैय्ये

से तंग आ चुका हूँ, मेरे भी सब्र का पैमाना आखरी हद तक पहुँच चुका है।

**आयत 59**

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ

*“और उसी के पास गैब के सारे खज़ाने हैं, कोई नहीं जानता उन (खज़ानों) को सिवाय उसके, और वह जानता है जो कुछ है खुश्की में और समुन्दर में।”*

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا

*“और नहीं गिरता कोई एक पत्ता भी (किसी दरख़्त से) मगर वह उसके इल्म में होता है”*

وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝59

*“और नहीं (गिरता) कोई दाना ज़मीन की तारीकियों में, और ना कोई तरो-ताज़ा और ना कोई सूखी चीज़, मगर एक किताबे मुबय्यन में (सबकी सब) मौजूद हैं।”*

यह किताबे मुबय्यन अल्लाह का इल्मे क़दीम है, जिसमें हर शय (مَا كَانَ وَمَا يَكُوْنُ) आने वाहिद की तरह मौजूद है।

## आयत 60

وَهُوَ الَّذِىۡ يَتَوَفّٰٮكُمۡ بِالَّيۡلِ

*"और वही है जो तुम्हें वफ़ात देता है रात के वक़्त"*

सूरह आले इमरान की आयत 55 की तशरीह के सिलसिले में يُوَفِّيْ, يَتَوَفّٰى और مُتَوَفِّيْ वगैरह अल्फ़ाज़ की वज़ाहत हो चुकी है, जिससे क़ादयानियों की सारी खबासत का तोड़ हो जाता है। ज़रा गौर कीजिये! यहाँ वफ़ात देने के क्या मायने हैं? क्या नींद के दौरान इन्सान मर जाता है? नहीं, जान तो बदन में रहती है, अलबत्ता शऊर नहीं रहता। इस सिलसिले में तीन चीज़ें अलग-अलग हैं, जिस्म, जान और शऊर। फ़ारसी का एक बड़ा ख़ूबसूरत शेअर है:

*जाँ निहाँ दर जिस्म, ऊ दर जाँ निहाँ*
*ऐ निहाँ, अन्दर निहाँ, ऐ जाने जाँ!*

"जान जिस्म के अन्दर पिन्हाँ है और जान में वह पिन्हाँ है। ऐ कि जो पिन्हाँ शय के अन्दर पिन्हाँ है, तू ही तो जाने जाँ है!"

इस शेअर में "ऊ" (वह) से मुराद कुछ और है, जिसकी तफ़सील का यह मौक़ा नहीं। इस वक़्त सिर्फ़ यह समझ लीजिये कि इन तीन चीज़ों (यानि जिस्म, जान और शऊर) में से नींद में सिर्फ़ शऊर जाता है जबकि मौत में शऊर भी जाता है और जान भी चली जाती है। हज़रत ईसा अलै. का "تَوَفِّيْ" मुकम्मल सूरत में वक़ूअ पज़ीर हुआ था, यानि जिस्म, जान और शऊर तीनों चीज़ों के साथ। आम आदमी की मौत की सूरत में यह "تَوَفِّيْ" अधूरा होता है, यानि जिस्म यहीं रह

जाता है, जान और शऊर चले जाते हैं, जबकि नींद की हालत में सिर्फ़ शऊर जाता है।

وَيَعۡلَمُ مَا جَرَحۡتُم بِٱلنَّهَارِ ثُمَّ يَبۡعَثُكُمۡ فِيهِ لِيُقۡضَىٰٓ أَجَلٞ مُّسَمّٗىۖ

*"और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो दिन के वक़्त, फिर वह उसमें (अगली सुबह को) तुम्हें उठाता है, ताकि (तुम्हारी) मुद्दते मुअय्यन पूरी हो जाये।"*

यानि रोज़ाना हम एक तरह से मौत की आगोश में चले जाते हैं, क्योंकि नींद आधी मौत होती है, जैसे सुबह के वक़्त उठने की मसनून दुआ में मज़कूर है: "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ أَحْیَانِیْ بَعْدَ مَا اَمَاتَنِیْ وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ" (कुल शुक्र और कुल तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे दोबारा ज़िन्दा किया, इसके बाद कि मुझ पर मौत वारिद कर दी थी और उसी की तरफ़ जी उठाना है)। इस दुआ से एक बड़ा अजीब नुक्ता ज़हन में आता है। वह यह कि हर रोज़ सुबह उठते ही जिस शख्स की ज़बान पर यह अल्फ़ाज़ आते हों: "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ أَحْیَانِیْ بَعْدَ مَا اَمَاتَنِیْ وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ" क़यामत के दिन जब वह क़ब्र से उठेगा तो दुनिया में अपनी आदत के सबब उसकी ज़बान पर ख़ुद-ब-ख़ुद यही तराना जारी हो जायेगा, जो उस वक़्त लफ्ज़ी ऐतबार से सद फ़ीसद दुरुस्त होगा, क्योंकि वह उठना हक़ीक़ी मौत के बाद का उठना होगा। इसलिये ज़रूरी है कि ज़िन्दगी में रोज़ाना इसकी रिहर्सल की जाये ताकि यह आदत पुख्ता हो जाये।

ثُمَّ اِلَيۡهِ مَرۡجِعُكُمۡ ثُمَّ
يُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ
تَعۡمَلُوۡنَ ۝٦٠

*“फिर उसी की तरफ़ तुम सबका लौटना है, फिर वह तुम्हें जितला देता जो कुछ तुम करते रहे हो।”*

## आयात 61 से 70 तक

وَهُوَ الۡقَاهِرُ فَوۡقَ عِبَادِهٖ وَيُرۡسِلُ عَلَيۡكُمۡ
حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ تَوَفَّتۡهُ
رُسُلُنَا وَهُمۡ لَا يُفَرِّطُوۡنَ ۝٦١ ثُمَّ رُدُّوۡۤا اِلَى اللّٰهِ
مَوۡلٰٮهُمُ الۡحَـقِّ ؕ اَلَا لَهُ الۡحُكۡمُ قف وَهُوَ اَسۡرَعُ
الۡحٰسِبِيۡنَ ۝٦٢ قُلۡ مَنۡ يُّنَجِّيۡكُمۡ مِّنۡ ظُلُمٰتِ الۡبَرِّ
وَالۡبَحۡرِ تَدۡعُوۡنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفۡيَةً ۚ لَـئِنۡ اَنۡجٰٮنَا مِنۡ
هٰذِهٖ لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيۡنَ ۝٦٣ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيۡكُمۡ
مِّنۡهَا وَمِنۡ كُلِّ كَرۡبٍ ثُمَّ اَنۡتُمۡ تُشۡرِكُوۡنَ ۝٦٤ قُلۡ هُوَ
الۡقَادِرُ عَلٰٓى اَنۡ يَّبۡعَثَ عَلَيۡكُمۡ عَذَابًا مِّنۡ فَوۡقِكُمۡ اَوۡ
مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِكُمۡ اَوۡ يَلۡبِسَكُمۡ شِيَعًا وَّيُذِيۡقَ

بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ
قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۶۶﴾ ؕ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ز
وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ
فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ
غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ
الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ
لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ
تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ
مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ
شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ ع

## आयत 61

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ

*"और वह अपने बन्दों पर पूरी तरह ग़ालिब है और वह तुम पर निगहबान भेजता रहता है।"*

अल्लाह तआला की मशीयत से इन्सान को अपनी अज्ले मुअय्यन तक ब-हर सूरत ज़िन्दा रहना है, इसलिये हर इन्सान के साथ अल्लाह के मुक़र्रर करदा फ़रिश्ते उसके बॉडीगार्डज़ की हैसियत से हर वक़्त मौजूद रहते हैं। चुनाँचे कभी इन्सान को ऐसा हादसा भी पेश आता है जब ज़िन्दा बच जाने का बज़ाहिर कोई इम्कान नहीं होता, लेकिन यूँ महसूस होता है जैसे किसी ने हाथ देकर उसे बचा लिया हो। बहरहाल जब तक इन्सान की मौत का वक़्त नहीं आता, यह मुहाफ़िज़ उसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

*"यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत आती है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसको क़ब्ज़े में ले लेते हैं और उसमें कोई कोताही नहीं करते।"*

अब यहाँ फिर लफ्ज़ "تَوَفّٰى" शऊर और जान दोनों के जाने के मफ़हूम में इस्तेमाल हुआ है कि अल्लाह तआला के मुक़र्रर करदा फ़रिश्ते जान निकालने में कोई कोताही नहीं करते।

उन्हें जो हुक्म दिया जाता है, जब दिया जाता है उसकी तामील करते हैं।

## आयत 62

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ۭ

*"फिर वह लौटा दिये जाते हैं अल्लाह की तरफ़ जो उनका मौला है बरहक़।"*

اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۣ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ؀

*"आगाह हो जाओ फ़ैसले का इख़्तियार उसी के हाथ में है, और वह हिसाब करने वालों में सबसे बढ़ कर तेज़ है।"*

हक़ीक़ी हाकिमियत सिर्फ़ अल्लाह ही की है। यह बात यहाँ दूसरी दफ़ा आयी है। इससे पहले आयत 57 में हम पढ़ आये हैं: {اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ} कि फ़ैसले का इख़्तियार कुल्लियतन अल्लाह के हाथ में है। मज़ीद फ़रमाया कि वह सबसे ज़्यादा तेज़ हिसाब चुकाने वाला है। उसे हिसाब चुकाने में कुछ देर नहीं लगेगी, सिर्फ़ हर्फ़े कुन कहने से आने वाहिद में वह सब कुछ हो जायेगा जो वह चाहेगा।

## आयत 63

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ

*"इनसे पूछिये कौन तुम्हें निजात देता है ख़ुश्की और समुन्दरों के अँधेरों से जबकि तुम उसी को पुकारते हो बहुत ही गिडगिडाते*

تَدۡعُوۡنَہٗ تَضَرُّعًا وَّ خُفۡیَۃً

*हुए और (दिल ही दिल में) चुपके-चुपके।"*

कभी तुमने गौर किया जब तुम समुन्दर में सफ़र करते हो, वहाँ घुप अँधेरे में जब हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता और समुन्दर की खौफ़नाक तूफ़ानी लहरें हर लम्हा मौत का पैगाम दे रही होती हैं तो ऐसे में अल्लाह के सिवा तुम्हें कौन बचाता है? कौन है जो तुम्हारी दस्तगीरी करता है और तुम्हारे लिये आफ़ियत का रास्ता निकालता है। इस तरह *"अँधेरी शब है जुदा अपने क़ाफ़िले से है तू!"* के मिस्दाक़ जब कोई क़ाफ़िला सहरा में भटक जाता है, अँधेरी रात में ना दायें का पता होता है ना बायें की ख़बर, हर दरख़्त अँधेरे में एक आसेब मालूम होता है, ऐसे खौफ़नाक माहौल और इन्तहाई मायूसी के आलम में सब ख़ुदाओं को भुला कर तुम लोग एक अल्लाह ही को पुकारते हो।

لَئِنۡ اَنۡجٰىنَا مِنۡ هٰذِهٖ لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيۡنَ ۝٦٣

*"(और कहते हो) अगर अल्लाह ने हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर शुक्रगुज़ार बन कर रहेंगे।"*

## आयत 64

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝۶۴

*"कहिये अल्लाह ही निजात देता है तुम्हें उससे और हर तकलीफ़ से, फिर तुम शिर्क करने लगते हो!"*

मुसीबत से निजात के बाद फिर से तुम्हें देवियाँ, देवता, झूठे मअबूद और अपने सरदार याद आ जाते हैं। अब अगली आयत इस लिहाज़ से बहुत अहम है कि इसमें अज़ाबे इलाही की तीन क़िस्में बयान हुई हैं।

**आयत 65**

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ

*"कह दीजिये कि वह क़ादिर है इस पर कि तुम पर भेज दे कोई अज़ाब तुम्हारे ऊपर से"*

मसलन आसमान का कोई टुकड़ा या कोई शहाबे साक़ब (meteorite) गिर जाये। आज-कल ऐसी ख़बरें अक्सर सुनने को मिलती हैं कि इस तरह की कोई चीज़ ज़मीन पर गिरने वाली है, लेकिन फिर अल्लाह के हुक्म से वह खला में ही तहलील हो जाती है। इसी तरह ओज़ोन की तह भी अल्लाह तआला ने ज़मीन और ज़मीन वालों के बचाव के लिये पैदा की है, वह चाहे तो इस हिफ़ाज़ती छतरी को हटा दे। बहरहाल आसमानों से अज़ाब नाज़िल होने की कोई भी सूरत हो सकती है और अल्लाह जब चाहे यह अज़ाब नाज़िल हो सकता है।

اَوۡ مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِكُمۡ

*"या तुम्हारे क़दमों के नीचे से"*

यह अज़ाब तुम्हारे क़दमों के नीचे से भी आ सकता है, ज़मीन फट सकती है, ज़लज़ले के बाइस शहरों के शहर ज़मीन में धंस सकते हैं। जैसा कि हदीस में ख़बर दी गयी है कि क़यामत से पहले तीन बड़े-बड़े "खस्फ़" होंगे, यानि ज़मीन वसीअ पैमाने पर तीन मुख्तलिफ़ जगहों से धंस जायेगी। अज़ाब की दो शक्लें तो यह हैं, ऊपर से या क़दमों के नीचे से।

اَوۡ يَلۡبِسَكُمۡ شِيَعًا وَّيُذِيۡقَ بَعۡضَكُمۡ بَاۡسَ بَعۡضٍ ؕ

*"या तुम्हें गिरोहों में तक़सीम कर दे और एक की ताक़त का मज़ा दूसरे को चखाये।"*

यह खाना जंगी की सूरत में अज़ाब का ज़िक्र है कि किसी मुल्क के अवाम या क़ौम के मुख्तलिफ़ गिरोह आपस में लड़ पड़ें। जैसे पंजाबी और उर्दू बोलने वाले आपस में उलझ जायें, बलोच और पख्तून एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जायें, शिया सुन्नी को मारे और सुन्नी शिया को। अल्लाह तआला को आसमान से कुछ गिराने की ज़रूरत है ना ज़मीन को धंसाने की। यह गिरोहबंदी और इसकी बुनियाद पर बाहमी खूँरेजी अज़ाबे इलाही की बदतरीन शक्ल है, जो आज मुसलमाने पाकिस्तान पर मुसल्लत है। तक़सीमे हिन्द से क़ब्ल जब हिन्दू से मुक़ाबला था तो मुस्लमान एक क़ौम थे। पाकिस्तान बना तो उसके तमाम वासी पाकिस्तानी थे। अब यही पाकिस्तानी क़ौम छोटी-छोटी क़ौमियतों और

अस्बियतों में तहलील हो चुकी है और हर गिरोह दूसरे गिरोह का दुश्मन है।

اُنۡظُرۡ كَيۡفَ نُصَرِّفُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَفۡقَهُوۡنَ ۝۶۵

*"देखो किस तरह हम अपनी आयात की तसरीफ़ करते हैं ताकि वह समझें।"*

तसरीफ़ के मायने हैं घुमाना। *"एक फूल का मज़मून हो तो सौ रंग से बाँधूं"* के मिस्दाक़ एक ही बात को असलूब बदल-बदल कर, मुख्तलिफ़ अंदाज़ में, नयी-नयी तरतीब के साथ बयान करना।

## आयत 66

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوۡمُكَ وَهُوَ الۡحَقُّ ؕ

*"और (ऐ नबी ﷺ) आपकी क़ौम ने उसे झुठला दिया हालाँकि वह हक़ है।"*

यहाँ بِهٖ से मुराद क़ुरान है। जैसा कि पहले बयान हो चुका है, इस सूरत का उमूद यह मज़मून है कि मुशरिकीन के मुतालबे पर कोई हिस्सी मौज्ज़ा नहीं दिखाया जायेगा, मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ का असल मौज्ज़ा यह क़ुरान है। इसी लिये इस मज़मून की तफ़सील में "بِهٖ" की तकरार कसरत से मिलेगी।

قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾

*"(इनसे) कह दीजिये कि (अब) मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ।"*

अब मैं नहीं कह सकता कि कब अल्लाह के अज़ाब का दरवाज़ा खुल जाये और अज़ाबे हलाकत तुम पर टूट पड़े।

**आयत 67**

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۡ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

*"हर बड़ी बात के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है, और अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जायेगा।"*

जैसा कि सूरतुल अम्बिया में फ़रमाया गया: {وَاِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ} (आयत:109) "मैं यह तो नहीं जानता कि जिस अज़ाब की तुम्हें धमकी दी जा रही है वह क़रीब आ चुका है या दूर है।" अलबत्ता यह ज़रूर जानता हूँ कि अगर तुम्हारी रविश यही रही तो यह अज़ाब तुम पर ज़रूर आकर रहेगा।

अब वह आयत आ रही है जिसका हवाला सूरतुन्निसा की आयत 140 में आया था कि "अल्लाह तआला तुम पर किताब में यह बात नाज़िल कर चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयात के साथ कुफ़्र किया जा रहा है और उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो उनके पास मत बैठो...." ईमान का कम से कम तक़ाज़ा है कि ऐसी महफ़िल से अहतजाज के तौर पर वाक आउट तो ज़रूर किया जाये।

## आयत 68

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ

*"और जब तुम देखो लोगों को कि वह हमारी आयात में मीन-मेख निकाल रहे हैं तो उनसे किनारा कश हो जाओ"*

"उर्दू में "गौरो खोज़" की तरकीब कसरत से इस्तेमाल होती है। "गौर" और "खोज़" दोनों अरबी ज़बान के अल्फ़ाज़ हैं और मायने के ऐतबार से दोनों की आपस में मुशाबेहत है। 'गौर' मुस्बत अंदाज़ में किसी चीज़ की तहक़ीक़ करने के लिये बोला जाता है जबकि 'खोज़' मनफ़ी तौर पर किसी मामले की छानबीन करने और ख्वाह मा ख्वाह में बाल की खाल उतारने के मायने देता है।

حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۭ

*"यहाँ तक कि वह किसी और बात में लग जाये।"*

जब किसी महफ़िल में लोग अल्लाह और उसकी आयात का तमस्खुर उड़ा रहे हों तो उनसे किनारा कशी कर लो, और जब वह किसी दूसरे मौज़ू पर गुफ्तुगू करने लगें तो फिर तुम उनके पास जा सकते हो।

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٦٨

*"और अगर तुम्हें शैतान भुला दे तो याद आ जाने के बाद ऐसे ज़ालिमों के साथ मत बैठो।"*

यानि किसी महफ़िल में गुफ्तुगू शुरू हुई और कुछ देर तक तुम्हें अहसास नहीं हुआ कि यह लोग किस मौज़ू पर गुफ्तुगू कर रहे हैं, लेकिन ज्यों ही अहसास हो जाये कि इनकी गुफ्तुगू और अन्दाज़े गुफ्तुगू क़ाबिले ऐतराज़ है तो अहतजाज करते हुए फ़ौरन वहाँ से वाक आउट कर जाओ। अब चूँकि दावत व तब्लीग के लिये तुम्हारा उनके पास जाना एक ज़रूरत है लिहाज़ा ऐसी महफ़िलों के बारे में किसी बेहतर सूरते हाल के मुन्तज़िर रहो, और जब उन लोगों का रवैय्या मुस्बत हो तो उनके पास दोबारा जाने में कोई हर्ज नहीं। यानि वही "قَالُوْا سَلٰمًا" वाला अंदाज़ होना चाहिये कि अलैहदा भी हों तो लठ मार कर ना हुआ जाये बल्कि चुपके से, मतानत के साथ किनारा कर लिया जाये।

## आयत 69

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

*"और यक़ीनन जो लोग तक़वा की रविश इख़्तियार करते हैं उन पर उन लोगों के हिसाब की कोई ज़िम्मेदारी नहीं है, लेकिन यह*

وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ ٦٩

*याद दिहानी है ताकि वह तक़वा इख़्तियार करें।"*

**आयत 70**

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا

*"और छोड़ दो उन लोगों को जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है"*

आज भी हमारे मआशरे में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो दीन के मामले में कभी संजीदा होते ही नहीं। वह दीन की हर बात को इस्तेहज़ा और तमस्खुर में उड़ाने के आदी होते हैं।

وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

*"और उनको धोखे में मुब्तला कर दिया है दुनिया की ज़िन्दगी ने"*

उनकी सारी तवज्जो, तमाम भाग-दौड़ दुनिया के लिये है। ज़्यादा से ज़्यादा कमाना, माल जमा करना और जायदादें बनाना ही उनका मक़सदे हयात है, ख्वाह हलाल से हो या हराम से, इसकी कोई परवाह उनको नहीं होती।

وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ

*"और आप तज़कीर कीजिये इसी (क़ुरान) के ज़रिये से, मबादा कोई जान अपने करतूतों के सबब गिरफ्तार हो जाये।"*

सूरह क़ाफ़ की आखरी आयत में हुक्म दिया गया है: {فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ} कि आप क़ुरान के ज़रिये से तज़कीर कीजिये उस शख्स को जिसके अन्दर अल्लाह की वईद का कुछ खौफ़ है। इसी तरह यहाँ भी हुज़ूर ﷺ से फ़रमाया जा रहा है कि आप इन दुनिया के परिस्तारों को छोड़िये, अलबत्ता इस क़ुरान के ज़रिये से इन्हें तज़कीर करते रहिये, इन्हें याद दिहानी कराते रहिये। ऐसा ना हो कि कोई शख्स अपने करतूतों और बदआमालियों के बवाल में गिरफ्तार हो जाये।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ

*"फिर उसके लिये नहीं होगा अल्लाह के मुक़ाबले में कोई कारसाज़ और ना कोई सिफ़ारशी।"*

शफ़ाअत के बारे में दो टूक इन्कार (categorical denial) यहाँ दूसरी दफ़ा आया है। इससे पहले आयत 51 में भी यह मज़मून आ चुका है। सूरतुल बक़रह (आयत 254) में {يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ} के दो टूक अल्फ़ाज़ के बाद अगली आयत में यह अल्फ़ाज़ भी आये हैं: {مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ} (आयतुल कुरसी) चुनाँचे शफ़ाअते हक़्क़ा का इन्कार नहीं किया जा सकता। ताहम इस मसले को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। शफ़ाअत की कुछ शराइत और कुछ हुदूद (limits) हैं। इन शराइत और हुदूद व क़ैद के बगैर मुतलक़ शफ़ाअत का तसव्वुर गोया ईमान बिलआख़िरत की नफ़ी के मुतरादिफ़ है। यानि जब आपको छुड़ाने वाले मौजूद

हैं तो फिर डर काहे का? जो चाहो करो! शराबी हैं, ज़ानी हैं, चोर हैं, डाकू हैं, हरामखोर हैं, ग़बन करते हैं, जो भी कुछ हैं, लेकिन ऐ अल्लाह तेरे महबूब ﷺ की उम्मत में हैं! तो अगर इसी तरह से कोई मामला तय होना है तो ख्वाह मा ख्वाह काहे को कोई अपना हाथ रोके, जी भर कर ऐश क्यों ना करे? बाबर बा ऐश कोश कि आलम दोबारा नीस्त!

وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ

*"और अगर वह फ़िदया देना चाहे कुल का कुल फ़िदया तो भी उससे क़ुबूल नहीं किया जायेगा।"*

यह मज़मून भी सूरतुल बक़रह में दो मर्तबा (आयत 48, 123) आ चुका है।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

*"यही लोग हैं जो गिरफ्तार हो चुके हैं अपने करतूतों की पादाश में। इनके लिये खोलता हुआ पानी पीने को और दर्दनाक अज़ाब होगा इनके कुफ़्र की पादाश में।"*

# आयत 71 से 82 तक

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا
وَنُرَدُّ عَلٰۤى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى
اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ
يَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ
الْهُدٰى ؕ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ
اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِىْۤ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ؕ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ
لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّىْۤ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ
فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُرِىْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾
فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّىْ ۚ فَلَمَّاۤ
اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ

بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَىِٕنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ
رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّاۗلِّيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ
الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ
قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اِنِّىْ وَجَّهْتُ
وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ
اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَحَاۗجَّهٗ قَوْمُهٗ ۭ قَالَ
اَتُحَاۗجُّوْۗنِّىْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۭ وَلَآ اَخَافُ مَا
تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ رَبِّيْ شَـيْـــًٔـا ۭ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ
اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ
بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا
اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ
مُّهْتَدُوْنَ ۝

## आयत 71

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا

*"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कहिये क्या हम पुकारें अल्लाह को छोड़ कर उन चीज़ों को जो हमें ना नफ़ा पहुँचा सकती हैं ना नुक़सान"*

यह बुत किसी को कुछ नफ़ा या नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। यह तो ख़ुद अणि हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। ख़ुद पर बैठी हुई मक्खी तक नहीं उड़ा सकते। इनको पुकारने का क्या फ़ायदा? इनके सामने सज्दा करने से क्या हासिल? बुतों के बारे में तो यह बात खैर बहुत ही वाज़ेह है, लेकिन इनके अलावा भी पूरी कायनात में कोई किसी के लिये खैर की कुछ क़ुदरत रखता है ना शर की। ला हवला वला क़ुव्वता इल्लाह बिल्लाह का मफ़हूम यही है। यह यक़ीन जब इन्सान के दिल की गहराइयों में पूरी तरह जागज़ीं हो जाये तब ही तो तौहीद मुकम्मल होती है, जिसके बाद इन्सान किसी के आगे सर झुका कर ख्वाह मा ख्वाह अपनी इज़्ज़ते नफ्स का सौदा नहीं करता। इसी नुक्ते की वज़ाहत रसूल अल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. को मुख़ातिब करके इस तरह फ़रमायी थी: "इस बात को अच्छी तरह जान लो कि अगर दुनिया के तमाम इन्सान मिल कर चाहें कि तुम्हें कोई फ़ायदा पहुँचा दें तो इसके सिवा कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते जो अल्लाह ने तुम्हारे मुक़द्दर में लिख दिया है, और अगर तमाम इन्सान मिल कर चाहें कि तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचा दें तो इसके सिवा कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते जो अल्लाह ने तुम्हारे मुक़द्दर में लिख दिया है"(4)। लिहाज़ा "यक दर गैरो मोहकम बगैर" के मिस्दाक़

मदद के लिये पुकारो तो उसी एक अल्लाह को पुकारो। किसी गैरुल्लाह को पुकारने, किसी दूसरे से सवाल करने, किसी और से डरने, इल्तजायें करने, इस्तगासा करने का क्या फ़ायदा?

وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ

*"और हम अपनी एड़ियों के बल लौटा दिये जाएँगे इसके बाद कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी है, उस शख्स की मानिन्द जिसे श्यातीन ने बियाबान में भटका कर हैरान व सरगर्दां छोड़ दिया हो?"*

لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ط

*"उसके साथी उसको सीधे रास्ते की तरफ़ पुकार रहे हों कि आओ हमारी तरफ़!"*

यहाँ जमाती ज़िन्दगी की बरकत और इन्फ़रादी ज़िन्दगी की क़बाहत का नक़्शा खींचा गया है। अगर आप अकेले हों, कहीं भटक गये हों, तो आपके लिये दोबारा सीधे रास्ते पर आना बहुत मुश्किल हो जाता है। लेकिन जमाती ज़िन्दगी में दूसरे साथियों के मशवरे और उनकी रहनुमाई से हर फ़र्द को अपनी सिम्त के सीधा रखने में आसानी होती है। जैसा कि सूरतुत्तौबा में फ़रमाया गया: {يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ} "ऐ अहले ईमान, अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और साथ रहो सदिक़ीन (सच्चों) के।" बाज़ अवक़ात इन्सान बड़ी आज़माइश में फँस जाता है। वह हराम

को हराम समझता है और यह भी समझता है कि इसको इख़्तियार करना इन्तहाई तबाहकुन है। दूसरी तरफ़ उसकी मजबूरियाँ हैं, बच्चों की महरूमियाँ हैं, अहले खाना का दबाव है। ऐसी हालत में उसके लिये दुरुस्त फ़ैसला करना मुश्किल हो जाता है। इस कैफ़ियत में उसके हराम में पड़ने के इम्कानात बढ़ जाते हैं। अगर ऐसे वक़्त में उसको नेक दोस्त अहबाब की मईयत (साथ) हासिल हो तो वह ना सिर्फ़ उसको सही मशवरा देते हैं बल्कि उसका हाथ थाम कर सहारा भी देते हैं।

قُلۡ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الۡهُدٰى ؕ وَاُمِرۡنَا لِنُسۡلِمَ لِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ﴿۷۱﴾

*"कह दीजिये यक़ीनन अल्लाह की हिदायत ही असल हिदायत है, और हमें तो हुक्म हुआ है कि हम तमाम जहानों के परवरदिगार की फ़रमाबरदारी इख़्तियार करें।"*

**आयत 72**

وَاَنۡ اَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوۡهُ ؕ وَهُوَ الَّذِىۡۤ اِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ﴿۷۲﴾

*"और यह कि नमाज़ क़ायम करो और अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो, और वही है जिसकी तरफ़ तुम्हें जमा कर दिया जायेगा।"*

**आयत 73**

وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ ؕ

*"और वही है जिसने आसमान और ज़मीन बनाये हैं हक़ के साथ।"*

यानि यह ज़मीन व आसमान अल्लाह तआला ने ख़ास मक़सद के तहत पैदा किये हैं। जैसा की सूरह आले इमरान में फ़रमाया गया: {رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ} (आयत:191) "ऐ रब हमारे, तूने यह सब बातिल (बेमक़सद) पैदा नहीं किया।" गोया "हक़" का लफ्ज़ यहाँ "बातिल" के मुक़ाबले में आया है।

وَيَوۡمَ يَقُوۡلُ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ؕ

*"और जिस दिन वह कहेगा हो जा तो वह हो जायेगा।"*

जब वह चाहेगा इस कायनात की बिसात को लपेट देगा। उसी ने इसे हक़ के साथ बनाया है और उसी के हुक्म के साथ यह लपेट दी जायेगी। अज़रुए अल्फ़ाज़े क़ुरानी: {يَوۡمَ نَطۡوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ لِلۡكُتُبِ ؕ} (अम्बिया:104) "जिस दिन हम (इन तमाम खलाओं, फ़ज़ाओं और) आसमानों को ऐसे लपेट देंगे जैसे किताबों का तूमार लपेट दिया जाता है।" इसी तरह सूरतुज्ज़ुमुर में इरशाद हुआ: {وَالسَّمٰوٰتُ مَطۡوِيّٰتٌۢ بِيَمِيۡنِهٖ} (आयत:67) "और (उस रोज़) आसमान अल्लाह के दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे।"

قَوۡلُهُ الۡحَقُّ ؕ

*"उसका फ़रमान ही हक़ है।"*

उसका फ़रमान शदनी (होने वाला) है। उसका 'कुन' कह देना बरहक़ है। उसे तख्लीक़ के लिये किसी और शय की ज़रूरत नहीं, माद्दा (material) या तवानाई (energy) कुछ भी उसे दरकार नहीं।

وَلَهُ الۡمُلۡكُ يَوۡمَ يُنۡفَخُ فِى الصُّوۡرِ ؕ

*"और उसी के लिये होगी बादशाही जिस दिन सूर फूँका जायेगा।"*

अगरचे हक़ीक़त में तो अब भी बादशाही उसी की है लेकिन अभी झूठे-सच्चे कई बादशाह इधर-उधर बैठे हुए हैं, जो मुख्तलिफ़ ड्रामों के मुख्तलिफ़ किरदार हैं। मगर यह सबके सब उस दिन नस्यम मन्सिया हो जाएँगे और पूछा जायेगा: {لِمَنِ الۡمُلۡكُ الۡيَوۡمَ ؕ} और फिर जवाब में ख़ुद ही फ़रमाया जायेगा: {لِلّٰهِ الۡوَاحِدِ الۡقَهَّارِ} (अल् मोमिन:16)

عٰلِمُ الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الۡحَكِيۡمُ الۡخَبِيۡرُ ۞٧٣

*"वह तमाम गैब और खुली बातों का जानने वाला है, और वह कमाले हिकमत वाला और हर शय से बाख़बर है।"*

इस सूरह मुबारका में अब हज़रत इब्राहीम अलै. और फिर उनकी नस्ल के बाज़ अम्बिया किराम अलै. का ज़िक्र आ रहा है। अम्बिया के नामों पर मुश्तमिल एक ख़ूबसूरत गुलदस्ता तो सूरतुन्निसा के आख़िर में हम देख आये हैं, वहाँ हमने 13

अम्बिया व रुसुल के नाम पढ़े थे। अब यहाँ उससे ज़रा बड़ा गुलदस्ता सजाया गया है, जिसमें 17 अम्बिया व रुसुल के नाम शामिल हैं। हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र यहाँ ज़रा तफ़सील के साथ आया है। आप अलै. की क़ौम का क्या अंजाम हुआ, उसकी तफ़सील क़ुरान में मज़कूर नहीं है। इसी लिये आप अलै. के मामले को यहाँ इस सूरत में अलग कर लिया गया है, क्योंकि इस सूरत में सिर्फ़ التذكير بآلاء الله की मिसालें शामिल हैं, जबकि सूरतुल आराफ़ में "ذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ" के तहत التذكير بِاَيَّامِ الله का ज़हूर नज़र आता है। चुनाँचे हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत शुऐब, हज़रत लूत और हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र सूरतुल आराफ़ में है। यही वह छ: रसूल हैं जिनकी क़ौमों पर अज़ाब आया और उनको इबरत का निशान बना दिया गया।

## आयत 74

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ

*"और याद करो जब कहा था इब्राहीम अलै. ने अपने बाप आज़र से क्या तुमने इन बुतों को अपना ख़ुदा बना रखा है?"*

यहाँ पर ख़ुसूसी तौर पर लफ्ज़ "आज़र" जो हज़रत इब्राहीम अलै. के वालिद के नाम के तौर पर आया है, यह मेरे नज़दीक तौरात में मन्दर्ज नाम की नफ़ी करने के लिये आया है। तौरात में आप अलै. के वालिद का नाम "तारिख" लिखा गया है और उसकी यहाँ तसहीह की गयी है, वरना यहाँ यह

फ़िक़रा लफ्ज़ "आज़र" के बगैर भी काफ़ी था। इस वाज़ेह निशानदेही के बावजूद भी बाज़ लोग मुगालते में पड़ गये हैं और उन्होंने तौरात में मज़कूर नाम ही इख़्तियार किया है। जैसे अहले तशय्य हज़रत इब्राहीम अलै. के बाप का नाम "तारिख" ही कहते हैं और आज़र जिसका ज़िक्र यहाँ आया है उसको आप अलै. का चचा कहते हैं। उन्होंने यह मौक़फ़ क्यों इख़्तियार किया है, इसकी एक ख़ास वजह है, जो फिर किसी मौक़े पर बयान होगी।

اِنِّیۡۤ اَرٰىکَ وَقَوۡمَکَ فِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۷۴﴾

*"मेरी राय में तो आप और आपकी क़ौम खुली गुमराही में मुब्तला हैं।"*

**आयत 75**

وَ کَذٰلِکَ نُرِیۡۤ اِبۡرٰہِیۡمَ مَلَکُوۡتَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ

*"और इसी तरह हम दिखाते रहे इब्राहीम अलै. को आसमानों और ज़मीन के मलाकूत"*

यहाँ मलाकूत से मुराद यह पूरा निज़ाम है जिसके तहत अल्लाह तआला इस कायनात को चला रहा है। यह निज़ाम गोया एक Universal Government है और अल्लाह तआला के मुक़र्रर करदा कारिन्दे इसे चला रहे हैं। इस निज़ाम का मुशाहिदा अल्लाह तआला अपने रसूलों को कराता है ताकि उनका यक़ीन इस दर्जे का हो जाये जैसा कि आँखों देखी चीज़ के बारे में होता है।

وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝ ‎ *"ताकि वह पूरी तरह यक़ीन करने वालों में से हो जाये।"*

इस फ़िक़रे में "वाव" की वजह से हम इससे पहले यह फ़िक़रा महज़ूफ़ मानेंगे: "ताकि वह अपनी क़ौम पर हुज्जत क़ायम कर सके" وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ "और हो जाये पूरी तरह यक़ीन करने वालों में से।"

अब आगे जो तफ़सील आ रही है यह दरहक़ीक़त हज़रत इब्राहीम अलै. की तरफ़ से अपनी क़ौम पर हुज्जत पेश करने का एक अंदाज़ है। बाज़ हज़रात के नज़दीक यह हज़रत इब्राहीम अलै. के अपने ज़हनी इरतक़ा के कुछ मराहिल हैं, कि वाक़िअतन उन्होंने यह समझा कि यह सितारा मेरा ख़ुदा है। फिर जब वह छुप गया तो उन्होंने समझा कि नहीं-नहीं यह तो डूब गया है, यह ख़ुदा नहीं हो सकता। फिर चाँद को देख कर ऐसा ही समझा। फिर सूरज को देखा तो ऐसा ही ख्याल उनके दिल में आया। यह बाज़ हज़रात की राय है और इन अल्फ़ाज़ से ऐसा कुछ मुतबादर भी होता है, लेकिन इस सिलसिले में ज़्यादा सही राय यही है कि हज़रत इब्राहीम अलै. ने अपनी क़ौम पर हुज्जत क़ायम करने के लिये यह तदरीजी तरीक़ा इख़्तियार किया। आगे आयत 83 के इन अल्फ़ाज़ से इस मौक़फ़ की ताइद भी होती है: {وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰي قَوْمِهٖ} फिर यह बात भी वाज़ेह रहे कि हज़रत इब्राहीम अलै. तो अल्लाह के नबी थे और कोई भी नबी ज़िन्दगी के किसी भी मरहले पर कभी शिर्क का इरतकाब नहीं करता। उसकी फ़ितरत और सरशत

(nature) इतनी ख़ालिस होती है कि वह कभी शिर्क में मुब्तला हो ही नहीं सकता। अम्बिया का मरतबा तो बहुत ही बुलन्द है, अल्लाह तआला ने तो सिद्दिक़ीन को यह शान अता की है कि वह भी शिर्क में कभी मुब्तला नहीं होते। हज़रत अबु बक्र और हज़रत उस्मान रज़ि. जो सहाबा किराम रज़ि. में से सिद्दिक़ीन हैं, उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ की बेअसत से पहले भी कभी शिर्क नहीं किया था।

## आयत 76

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ

*"पस जब रात ने उन (अलै.) को (अपनी तारीकी में) ढाँप लिया तो उन्होंने देखा एक (चमकदार) सितारे को, तो कहा यह मेरा रब है!"*

यह सवालिया अंदाज़ भी हो सकता है, गोया कह रहे हो क्या यह मेरा रब है? और इस्तेजाबिया अंदाज़ भी हो सकता है। गोया लोगों को चौंकाने के लिये ऐसे कहा हो।

فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۝

*"फिर जब वह गुरूब हो गया तो कहने लगे कि मैं गुरूब हो जाने वालों को पसंद नहीं करता।"*

मैं इसको अपना ख़ुदा कैसे मान लूँ? यह क़ौम जिसमें हज़रत इब्राहीम अलै. भेजे गये थे सितारापरस्त भी थी, बुतपरस्त भी थी और शाहपरस्त भी थी। तीनों क़िस्म के शिर्क उस क़ौम में मौजूद थे। हज़रत इब्राहीम अलै. बेबिलोनिया (आज का इराक़) के शहर "उर" में पैदा हुए। इस शहर के खण्डरात

भी अब दरयाफ्त हो चुके हैं। फिर वहाँ से हिजरत करके फ़लस्तीन गये, वहाँ से हिजाज़ गये और हज़रत इस्माइल अलै. को वहाँ आबाद किया। जबकि अपने दूसरे बेटे हज़रत इसहाक़ अलै. को फ़लस्तीन में आबाद किया। उस वक़्त इराक़ में शिर्क के घटा टॉप अँधेरे थे। वह लोग बुतपरस्ती और सितारापरस्ती के साथ-साथ नमरूद की परस्तिश भी करते थे, जो दावा करता था कि मैं ख़ुदा हूँ। नमरूद का हज़रत इब्राहीम अलै. के साथ मुहाज्जा (मकालमा) हम सूरह बक़रह में पढ़ चुके हैं, इसमें उसने कहा था: اَنَا اُحۡیٖ وَ اُمِیۡتُ कि मैं भी यह इख़्तियार रखता हूँ कि जिसको चाहूँ ज़िन्दा रखूँ, जिसको चाहूँ मार दूँ।

## आयत 77

فَلَمَّا رَاَ الۡقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّیۡ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنۡ لَّمۡ یَهۡدِنِیۡ رَبِّیۡ لَاَکُوۡنَنَّ مِنَ الۡقَوۡمِ الضَّآلِّیۡنَ ﴿۷۷﴾

*"फिर जब उन्होंने देखा चाँद चमकता हुआ तो कहा यह है मेरा रब! फिर जब वह भी गायब हो गया तो उन्होंने कहा अगर मेरे रब ने मुझे हिदायत ना दी तो मैं गुमराहों में से हो जाऊँगा।"*

गोया यह वह अल्फ़ाज़ हैं जिनसे मुतबादर होता है कि शायद अभी आप अलै. का अपना ज़हनी और फ़िक्री इरतक़ा हो रहा है। लेकिन इन दोनों पहलुओं पर गौरो फ़िक्र के बाद जो राय बनती है वह यही है कि आप अलै. ने अपनी क़ौम

पर हुज्जत क़ायम करने के लिये यह तदरीजी अंदाज़ इख़्तियार किया था।

## आयत 78

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

*"फिर जब देखा सूरज को बहुत चमकदार तो कहने लगे हाँ यह है मेरा रब, यह सबसे बड़ा है! फिर जब वह भी गायब हो गया तो उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं ऐलाने बराअत करता हूँ इन सबसे जिन्हें तुम शरीक ठहरा रहे हो।"*

## आयत 79

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ۚ

*"मैंने तो अपना रुख कर लिया है यकसू होकर उस हस्ती की तरफ़ जिसने आसमान व ज़मीन को बनाया है और मैं मुशरिकों में से नहीं हूँ।"*

## आयत 80

وَحَآجَّهٗ قَوۡمُهٗ ؕ

*"अब (इस पर) आप अलै. की क़ौम आप अलै. से बहस करने लगी।"*

हज़रत इब्राहीम अलै. की क़ौम ने आप अलै. से हुज्जतबाज़ी शुरू कर दी कि यह तुमने क्या कह दिया, तमाम देवी-देवताओं की नफ़ी कर दी, सारे सितारों और चाँद-सूरज की रबूहियत से इन्कार कर दिया! अब इन देवी-देवताओं सितारों की नहूसत तुम पर पड़ेगी। अब तुम अंजाम के लिये तैयार हो जाओ, तुम्हारी शामत आने वाली है।

قَالَ اَتُحَآجُّوۡٓنِّیۡ فِی اللّٰهِ وَقَدۡ هَدٰىنِ ؕ وَلَاۤ اَخَافُ مَا تُشۡرِکُوۡنَ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ یَّشَآءَ رَبِّیۡ شَیۡـًٔا ؕ

*"(इब्राहीम अलै. ने) कहा क्या तुम मुझसे हुज्जतबाज़ी कर रहे हो अल्लाह के बारे में, जबकि मुझे तो उसने हिदायत दी है। और मुझे कोई खौफ़ नहीं है उन (हस्तियों) का जिन्हें तुम उसका शरीक ठहराते रहे हो, सिवाय इसके कि मेरा रब ही कोई बात चाहे।"*

हाँ अगर अल्लाह चाहे कि मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचे, कोई आज़माइश आ जाये तो ठीक है, क्योंकि वह मेरा खालिक़ और मेरा रब है, लेकिन इसके अलावा मुझे किसी का कोई खौफ़ नहीं, ना तुम्हारी किसी देवी का, ना किसी देवता का, ना किसी सितारे की नहूसत का और ना किसी और का।

وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝۸۰

*"मेरा रब हर शय का इल्म के ऐतबार से इहाता किये हुए है, तो क्या तुम लोग नसीहत हासिल नहीं करते?"*

मेरे रब का इल्म हर शय को मुहीत है। तो क्या तुम लोग सोचते नहीं हो, अक़्ल से काम नहीं लेते हो?

## आयत 81

وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ

*"और मैं कैसे डरूँ उनसे जिन्हें तुमने शरीक ठहरा रखा है जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ शरीक ठहरा लिये हैं जिनके लिये अल्लाह ने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी।"*

अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात में शराकत की कोई सनद मौजूद ही नहीं। ना अक़्ल और फ़ितरत में इसकी कोई बुनियाद है, ना किसी आसमानी किताब में किसी दूसरे मअबूद के लिये कोई गुंजाइश है।

فَاَیُّ الۡفَرِیۡقَیۡنِ اَحَقُّ بِالۡاَمۡنِ ۚ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۱﴾

*"तो (हम दोनों) फ़रीक़ैन में से कौन अमन का ज़्यादा हक़दार है? अगर तुम इल्म रखते हो तो (बताओ!)"*

यानि एक शख्स मुवह्हिद है, एक अल्लाह पर ईमान रखता है और यक़ीन रखता है कि वह सारी कायनात का बिला शिरकते गैरे मालिक है, हर शय उसके क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है, जबकि दूसरा वह है जो अल्लाह को मानने के साथ-साथ उसके इक़तदार व इख़्तियार में बाज़ दूसरी हस्तियों को भी शरीक समझता है, कुछ छोटे मअबूदों और देवी-देवताओं को भी मानता है। तो अब ज़रा बताओ कि अमन, चैन, रूहानी इत्मिनान और हक़ीक़ी सुकूने क़ल्ब का ज़्यादा हक़दार इन दोनों में से कौन होगा? सवाल करने के बाद इसका जवाब भी ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया:

## आयत 82

اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَلَمۡ یَلۡبِسُوۡۤا اِیۡمَانَہُمۡ بِظُلۡمٍ

*"यक़ीनन वह लोग जो ईमान लाये और उन्होंने अपने ईमान को किसी तरह के शिर्क से आलूदा नहीं किया"*

यहाँ लफ्ज़ "ज़ुल्म" क़ाबिले तवज्जो है। ज़ुल्म किसी छोटे गुनाह को भी कह सकते हैं। इसी लिये इस लफ्ज़ पर सहाबा किराम रज़ि. घबरा गये थे कि हुज़ूर कौन शख्स होगा जिसने कभी कोई ज़ुल्म ना किया हो? और नहीं तो इन्सान अपने

ऊपर तो किसी ना किसी हद तक ज़ुल्म करता ही है। गोया इसका तो मतलब यह हुआ कि कोई शख्स भी इस शर्त पर पूरा नहीं उतर सकता। आप ﷺ ने फ़रमाया कि नहीं, यहाँ ज़ुल्म से मुराद शिर्क है, और फिर आप ﷺ ने सूरह लुक़मान की वह आयत तिलावत फ़रमायी जिसमें शिर्क को ज़ुल्मे अज़ीम क़रार दिया गया है:

وَإِذْ قَالَ لُقْمَٰنُ لِٱبْنِهِۦ وَهُوَ يَعِظُهُۥ يَٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِٱللَّهِ ۖ إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

चुनाँचे यहाँ पर {لَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَٰنَهُم بِظُلْمٍ} का मफ़हूम यह है कि ईमान ऐसा हो जो शिर्क की हर आलूदगी से पाक हो। लेकिन शिर्क का पहचानना आसान नहीं, यह तरह-तरह के भेस बदलता रहता है। शिर्क क्या है और शिर्क की क़िस्में कौन-कौन सी हैं और यह ज़माने और हालात के मुताबिक़ कैसे-कैसे भेस बदलता रहता है, यह सब कुछ जानना एक मुस्लमान के लिये इन्तहाई ज़रूरी है, ताकि जिस भेस और शक्ल में भी यह नमूदार हो इसे पहचाना जा सके। बक़ौल शायर:

*बहर रंगे कि ख्वाही जामा मी पोश*
*मन अन्दाज़े क़दत रा मी शनासिम!*

(तुम चाहे किसी भी रंग का लिबास पहन कर आ जाओ, मैं तुम्हें तुम्हारे क़द से पहचान लेता हूँ।)

"हक़ीक़त व अक़सामे शिर्क" के मौज़ू पर मेरी छ: घंटों पर मुश्तमिल तवील तक़ारीर ऑडियो, वीडियो के अलावा किताबी शक्ल में भी मौजूद हैं, उनसे इस्तफ़ादा करना, इंशाअल्लाह बहुत मुफ़ीद होगा।

أُولَٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾

*"वही लोग हैं जिनके लिये अमन है और वही राहयाब होंगे।"*

अमन और ईमान इस्लाम और सलामती का लफ़्ज़ी ऐतबार से आपस में बड़ा गहरा रब्त है। यह रब्त इस दुआ में बहुत नुमाया हो जाता है जो रसूल अल्लाह ﷺ हर नया चाँद देखने पर माँगा करते थे:

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ

"ऐ अल्लाह (यह महीना जो शुरू हो रहा है इस नये चाँद के साथ) इसे हम पर तुलूअ फ़रमा अमन और ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ।"

"क़ुरान और अमने आलम" के नाम से मेरा एक छोटा सा किताबचा इस मौज़ू पर बड़ी मुफ़ीद मालूमात का हामिल है।

# आयात 83 से 90 तक

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ۭ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ

قَبۡلُ وَمِنۡ ذُرِّیَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَیۡمٰنَ وَاَیُّوۡبَ وَیُوۡسُفَ
وَمُوۡسٰی وَهٰرُوۡنَ ؕ وَکَذٰلِکَ نَجۡزِی الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۸۴﴾
وَزَکَرِیَّا وَیَحۡیٰی وَعِیۡسٰی وَاِلۡیَاسَ ؕ کُلٌّ مِّنَ
الصّٰلِحِیۡنَ ﴿۸۵﴾ وَاِسۡمٰعِیۡلَ وَالۡیَسَعَ وَیُوۡنُسَ وَلُوۡطًا ؕ
وَکُلًّا فَضَّلۡنَا عَلَی الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۸۶﴾ وَمِنۡ اٰبَآئِهِمۡ
وَذُرِّیّٰتِهِمۡ وَاِخۡوَانِهِمۡ ۚ وَاجۡتَبَیۡنٰهُمۡ وَهَدَیۡنٰهُمۡ اِلٰی
صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ ﴿۸۷﴾ ذٰلِکَ هُدَی اللّٰهِ یَهۡدِیۡ بِهٖ مَنۡ
یَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوۡ اَشۡرَکُوۡا لَحَبِطَ عَنۡهُمۡ مَّا کَانُوۡا
یَعۡمَلُوۡنَ ﴿۸۸﴾ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ اٰتَیۡنٰهُمُ الۡکِتٰبَ
وَالۡحُکۡمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنۡ یَّکۡفُرۡ بِهَا هٰۤؤُلَآءِ فَقَدۡ وَکَّلۡنَا
بِهَا قَوۡمًا لَّیۡسُوۡا بِهَا بِکٰفِرِیۡنَ ﴿۸۹﴾ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ
هَدَی اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقۡتَدِهۡ ؕ قُلۡ لَّاۤ اَسۡـَٔلُکُمۡ عَلَیۡهِ
اَجۡرًا ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِکۡرٰی لِلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۹۰﴾

## आयत 83

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ

*"यह हमारी वह हुज्जत थी जो हमने इब्राहीम अलै. को अता की थी उसकी क़ौम के ख़िलाफ़।"*

इस आयत का हवाला मौज़ू के आगाज़ में आया था। पूरी सरगज़िश्त बयान करने के बाद अब फ़रमाया कि यह हमारी वह हुज्जत थी जो हमने इब्राहीम अलै. को उसकी क़ौम के ख़िलाफ़ अता की। हज़रत इब्राहीम अलै. अपनी क़ौम से जिस अंदाज़ से मुहाज्जा कर रहे थे उसको "तौरिया" कहते हैं। तौरिया से मुराद ऐसा अन्दाज़े गुफ्तुगू है जिसमें झूठ बोले बगैर मुख़ातिब को मुग़ालते में मुब्तला कर दिया जाये। मसलन हज़रत शैखुल हिन्द रहि. का मशहूर वाक़िया है कि एक ज़माने में अँगरेज़ हुकूमत की तरफ़ से उनकी गिरफ़्तारी के लिये वारंट जारी किये गये। उस ज़माने में वह मक्का मुकर्रमा में मुक़ीम थे। शरीफ़ हुसैन वालिये मक्का के सिपाही उन्हें ढूँढते फिर रहे थे कि एक सिपाही ने उन्हें कहीं खड़े हुए देखा। वह आपको पहचानता नहीं था। उसने क़रीब आकर आप रहि. से पूछा कि तुम महमूदुल हसन को जानते हो? आप रहि. ने कहा जी हाँ, मैं जानता हूँ। उसने पूछा वह कहाँ हैं? आप रहि. ने दो क़दम पीछे हट कर कहा कि अभी यहीं थे। इससे उस सिपाही को मुग़ालता हुआ और वह यह समझते हुए वहाँ से दौड़ पड़ा कि अभी इधर थे तो मैं जल्दी से यहीं-कहीं से उन्हें ढूँढ लूँ। हज़रत इब्राहीम अलै. के इस कलाम में तौरिया का अंदाज़ पाया जाता है। जैसे आप अलै. ने बुत खाने के बुतों को तोड़ा, और जिस तेशे से उनको तोड़ा था वह उस बड़े बुत की गर्दन में लटका दिया। पूछने पर आप अलै. ने जवाब दिया कि इस बड़े बुत ने ही यह काम दिखाया

होगा जो सही सालिम खड़ा है और आला-ए-वारदात भी इसके पास है। वहाँ भी यह अंदाज़ इख़्तियार करने का मक़सद यही था कि वह लोग सोचने पर मजबूर और दरूंबीनी पर आमादा हों।

نَرۡفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنۡ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيۡمٌ عَلِيۡمٌ ﴿۸۳﴾

*"हम बुलन्द करते हैं दर्जे जिनके चाहते हैं। यक़ीनन तेरा रब हकीम और अलीम है।"*

यानि हमने इब्राहीम अलै. के दर्जे बहुत बुलन्द किये हैं। अब अम्बिया व रुसुल के नामों का वह गुलदस्ता आ रहा है जिसका ज़िक्र पहले किया गया था।

## आयत 84

وَوَهَبۡنَا لَهٗۤ اِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ ؕ كُلًّا هَدَيۡنَا ۚ وَنُوۡحًا هَدَيۡنَا مِنۡ قَبۡلُ وَمِنۡ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيۡمٰنَ وَاَيُّوۡبَ وَيُوۡسُفَ وَمُوۡسٰى

*"और हमने उसे (इब्राहीम अलै. को) अता फ़रमाया इसहाक़ अलै. (जैसा बेटा) और याक़ूब अलै. (जैसा पोता), उन सबको हमने हिदायत दी। और नूह अलै. को भी हमने हिदायत दी थी उनसे पहले, और उस (इब्राहीम अलै.) की औलाद में से दाऊद अलै., सुलेमान अलै., अय्यूब अलै., युसुफ़ अलै., मूसा अलै. और हारून अलै. को भी (हिदायत*

وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۟ۙ

*बख्शी)। और इसी तरह हम बदला देते हैं मोहसिनीन को।"*

यानि यह लोग ईमान की उस बुलन्द तरीन मंज़िल पर फ़ाइज़ थे जिसके बारे में हम सूरह मायदा में पढ़ आये हैं: {ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ} (आयत 93)।

## आयत 85

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۭكُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۟ۙ

*"और (उसी की औलाद में से) ज़करिया अलै., याहया अलै., ईसा अलै. और इल्यास अलै. को भी। यह सबके सब नेकोकारों में से थे।"*

## आयत 86

وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۭ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۟ۙ

*"और इस्माइल अलै. और अल् यसाअ अलै. और युनुस अलै. और लूत अलै. को भी (राहयाब किया), और इन सबको हमने तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी।"*

## आयत 87

وَمِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۸۷

*"और उनके आबा व अजदाद में से भी, इनकी नस्लों में से भी और इनके भाइयों में से भी (हमने हिदायत याफ्ता बनाये), और इनको हमने चुन लिया और इनको हिदायत दी सीधे रास्ते की तरफ़।"*

## आयत 88

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۸۸

*"यह अल्लाह की वह हिदायत है जिसके साथ वह रहनुमाई फ़रमाता है जिसकी चाहता है अपने बन्दों में से। और अगर (बिलफ़र्ज़) वह भी शिर्क करते तो उनके भी सारे आमाल ज़ाया हो जाते।"*

यह अंदाज़ हमें समझाने की गर्ज़ से इख़्तियार किया गया है कि शिर्क कितनी बुरी शय है। वरना इसका कोई इम्कान नहीं था कि ऐसे आला मरातिब पर फ़ाइज़ अल्लाह के अज़ीमुश्शान अम्बिया व रुसुल शिर्क में मुब्तला होते। बहरहाल अल्लाह तआला के नज़दीक शिर्क ना क़ाबिले

माफ़ी जुर्म है, जिसके बारे में सूरतुन्निसा (आयत 48, 116) में दो मर्तबा यह अल्फ़ाज़ आ चुके हैं: {اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ}।

## आयत 89

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ

*"यह वह लोग हैं जिनको हमने किताब, हिकमत और नबुवत अता फ़रमायी।"*

فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَاۗءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝89

*"फिर अगर यह लोग इसका इन्कार कर रहे हैं तो (कुछ परवाह नहीं) हमने कुछ और लोग इस काम के लिये मुक़र्रर कर दिये हैं जो इसकी नाक़द्री नहीं करेंगे।"*

मक़ामे इबरत है! मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ जैसा रसूल, मुबल्लिग़, दाई, मुरब्बी, मुज़क्की और मुअल्लिम पिछले बारह साल से दिन-रात मेहनत कर रहा है और उसके नतीजे में अब तक सिर्फ़ डेढ़, पौने दो सौ अफ़राद दायरा-ए-इस्लाम में दाख़िल हुए हैं। इस पसमंज़र में आप ﷺ से फ़रमाया जा रहा है कि मक्का के यह लोग अगर इस दावत की नाक़द्री कर रहे हैं, इस क़ुरान की नाशुक्री कर रहे हैं, इसका इन्कार कर रहे हैं और आप ﷺ की दस-बारह साल की मेहनत के खातिर ख्वाह नताइज सामने नहीं आये हैं तो आप ﷺ

दिल शिकस्ता ना हों, अनक़रीब एक दूसरी क़ौम बड़े ज़ोक़ व शोक़ से इस दावत पर लब्बैक कहने जा रही है। इस खुशकिस्मत क़ौम से मुराद अन्सारे मदीना हैं। और वाक़ई इस सिलसिले में अहले मक्का पीछे रह गये और अहले मदीना बाज़ी ले गये। बक़ौले शायर: *गिरफ़्ता चीनीयाँ अहराम व मक्की खफ्ता दर बत्हा!*

दुनिया के हालात व असबाब को देखते हुए कुछ नहीं कहा जा सकता कि अल्लाह तआला दीन के काम में कैसे-कैसे असबाब पैदा फ़रमाते हैं और कहाँ-कहाँ से किस-किस तरह के लोगों के दिलों को फेर कर हिदायत की तौफ़ीक़ दे देते हैं। मुझे अपनी दावत रुजूअ इलल क़ुरान के बारे में भी इत्मिनान है कि पाकिस्तान में इसको खातिर ख्वाह पज़ीराई नहीं मिली तो क्या हुआ, यह दावत मुख्तलिफ़ ज़राय से पूरी दुनिया में फेल रही है, और कुछ नहीं कहा जा सकता कि क़ुरान की यह इन्क़लाबी दावत किस जगह ज़मीन के अन्दर जड़ पकड़ ले और एक तनावर दरख़्त की सूरत इख़्तियार कर ले।

## आयत 90

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۖ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ ۗ

*"यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत दी थी, तो आप भी इनकी हिदायत की पैरवी कीजिये।"*

यानि अभी जिन अम्बिया व रुसुल का ज़िक्र हुआ है, सत्रह नामों का ख़ूबसूरत गुलदस्ता आपने मुलाहिज़ा किया है, वह सबके सब अल्लाह तआला के हिदायत याफ्ता थे। इस

सिलसिले में हुज़ूर ﷺ को फ़रमाया जा रहा है कि आप भी उनके तरीक़े की पैरवी करें। इस आयत से एक बहुत अहम नुक्ता और उसूल यह सामने आता है कि साबिक़ अम्बिया की शरीअत का ज़िक्र करते हुए जिन अहकाम की नफ़ी ना की गयी हो, वह हमारे लिये भी क़ाबिले इत्तेबाअ हैं। मसलन रज्म की सज़ा क़ुरान में मज़कूर नहीं है, यह साबक़ा शरीअत की सज़ा है, जिसको हुज़ूर ﷺ ने बरक़रार रखा है। इसी तरह क़त्ले मुर्तद की सज़ा का ज़िक्र भी क़ुरान में नहीं है, यह भी साबक़ा शरीअत की सज़ा है, जिसको बरक़रार रखा गया है। इस नुक्ते से यह उसूल सामने आता है कि जब तक क़ुरान व सुन्नत में साबक़ा शरीअत के किसी हुक्म की नफ़ी नहीं होती वह हुक्म इस्लामी शरीअत में बरक़रार रहता है।

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭاِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ۝

*"कह दीजिये मैं तुमसे इस पर किसी अज्र का तालिब नहीं हूँ। यह नहीं है मगर तमाम जहान वालों के लिये याद दिहानी।"*

यह क़ुरान तो बस अहले आलम के लिये एक नसीहत है, याद दिहानी है, जो चाहे इससे कस्बे फ़ैज़ करे, जो चाहे इससे नूर हासिल करे, जो चाहे इससे सिराते मुस्तक़ीम की रहनुमाई अख़ज़ कर ले।

# आयात 91 से 94 तक

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدۡرِهٖۤ اِذۡ قَالُوۡا مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ عَلٰى
بَشَرٍ مِّنۡ شَىۡءٍ ؕ قُلۡ مَنۡ اَنۡزَلَ الۡكِتٰبَ الَّذِىۡ جَآءَ بِهٖ
مُوۡسٰى نُوۡرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجۡعَلُوۡنَهٗ قَرَاطِيۡسَ
تُبۡدُوۡنَهَا وَتُخۡفُوۡنَ كَثِيۡرًا ۚ وَعُلِّمۡتُمۡ مَّا لَمۡ تَعۡلَمُوۡۤا اَنۡتُمۡ
وَلَاۤ اٰبَآؤُكُمۡ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرۡهُمۡ فِىۡ خَوۡضِهِمۡ
يَلۡعَبُوۡنَ ﴿۹۱﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ
الَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَلِتُنۡذِرَ اُمَّ الۡقُرٰى وَمَنۡ
حَوۡلَهَا ؕ وَالَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ
وَهُمۡ عَلٰى صَلَاتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ ﴿۹۲﴾ وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ
افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ قَالَ اُوۡحِىَ اِلَىَّ وَلَمۡ يُوۡحَ
اِلَيۡهِ شَىۡءٌ وَّمَنۡ قَالَ سَاُنۡزِلُ مِثۡلَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوۡ
تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوۡنَ فِىۡ غَمَرٰتِ الۡمَوۡتِ وَالۡمَلٰٓئِكَةُ
بَاسِطُوۡۤا اَيۡدِيۡهِمۡ ۚ اَخۡرِجُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ ؕ اَلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ
عَذَابَ الۡهُوۡنِ بِمَا كُنۡتُمۡ تَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ غَيۡرَ الۡحَقِّ
وَكُنۡتُمۡ عَنۡ اٰيٰتِهٖ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۹۳﴾ وَلَقَدۡ جِئۡتُمُوۡنَا

فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ
وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ
زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ۭ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ
عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾

अब उस रद्दो क़दा का ज़िक्र होने जा रहा है जो मक्का के लोग यहूदियों के सिखाने-पढ़ाने पर हुज़ूर ﷺ से कर रहे थे। अब तक इस सूरत में जो गुफ्तुगू हुई है वह ख़ालिस मक्का के मुशरिकीन की तरफ़ से थी और उन्हीं के साथ सारा मकालमा और मुनाज़रा था। लेकिन जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि यह दोनों सूरतें (सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़) मक्की दौर के आखरी ज़माने में नाज़िल हुईं। उस वक़्त तक हुज़ूर ﷺ की रिसालत और नबुवत के दावे का चर्चा मदीना मुनव्वरा में भी पहुँच चुका था और अहले किताब (यहूद) ने खतरे को भाँप कर वहीं बैठे-बैठे आप ﷺ के ख़िलाफ़ साज़िशें और रेशा दवानियाँ शुरू कर दी थीं। वह ज़िद और हठधर्मी में यहाँ तक कह बैठे थे कि इन मुसलमानों से तो यह मुशरिक बेहतर हैं जो बुतों को पूजते हैं, वगैरह-वगैरह। इसी तरह की एक बात वह है जो यहाँ कही जा रही है।

## आयत 91

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰی بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ؕ

*“और उन्होंने हरगिज़ अल्लाह की क़द्र ना पहचानी जैसा कि उसका हक़ था जब उन्होंने कहा कि नहीं उतारी है अल्लाह ने किसी भी इन्सान पर कोई भी चीज़।”*

वहिये इलाही के बारे में यह साफ़ इन्कार (categorical denial) उन लोगों का था जो ख़ुद को इल्हामी किताब के वारिस समझते थे। अहले मक्का तो चूँकि आसमानी किताबों से वाक़िफ़ ही नहीं थे इसलिये उन्होंने हुज़ूर ﷺ की नबुवत और वही का ज़िक्र यहूद से किया और उनसे राय पूछी। इस पर यहूदियों का जवाब यह था कि यह सब ख्याल और वहम है, अल्लाह ने किसी इन्सान पर कभी कोई चीज़ उतारी ही नहीं। अब अहले मक्का ने यहूदियों के पढ़ाने पर क़ुरान मजीद पर जब यह ऐतराज़ किया तो उसके जवाब में मुशरिकीने मक्का से ख़िताब नहीं किया गया, बल्कि बराहेरास्त यहूद को मुख़ातिब किया गया जिनकी तरफ से यह ऐतराज़ आया था, और उनसे पूछा गया कि अगर अल्लाह ने किसी इन्सान पर कभी कुछ नाज़िल ही नहीं किया तो:

قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰی نُوْرًا وَّهُدًی لِّلنَّاسِ

*“आप ﷺ पूछिये कि फिर किसने उतारी थी वह किताब जो मूसा लेकर आये थे जो ख़ुद नूर (रोशन) थी और लोगों के लिये हिदायत भी थी?”*

तो क्या तौरात हज़रत मूसा अलै. की तरफ़ से मनघडत थी? क्या उन्होंने उसे अपने हाथ से लिख लिया था?

تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ

*"तुमने उसे वर्क़-वर्क़ कर दिया है, उस (के अहकाम) में से कुछ को ज़ाहिर करते हो और अक्सर को छुपा कर रखते हो।"*

यहूद अपनी इल्हामी किताब के साथ जो सुलूक करते रहे थे वह भी उन्हें जितला दिया। यहूदी उल्मा में तौरात के अहकाम को ना सिर्फ़ पसंद और नापसंद के खानों में तक़सीम कर दिया था बल्कि अपनी मनमानी फ़तवा फ़रोशियों के लिये उसको इस तरह छुपा कर रखा था कि आम लोगों की दस्तरस उस तक नामुमकिन होकर रह गयी थी।

وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَاۗؤُكُمْ ۭ

*"और तुम्हें सिखायी गयी थीं (तौरात के ज़रिये से) वह सब बातें जो ना तुम जानते थे और ना तुम्हारे आबा व अजदाद।"*

قُلِ اللّٰهُ ۙ

*"कहिये (यह सब नाज़िल किया था) अल्लाह ने"*

यानि फिर ख़ुद ही जवाब दीजिये कि तुम्हारी अपनी इल्हामी किताबें तौरात और इन्जील भी अल्लाह ही की तरफ़ से नाज़िल शुदा हैं और अब यह क़ुरान भी अल्लाह ही ने नाज़िल फ़रमाया है।

ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٩١

*"फिर इनको छोड़ दीजिये कि यह अपनी कज बहसों के अन्दर खेलते रहें।"*

## आयत 92

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ

*"और (इसी तरह की) यह एक किताब है जिसे हमने नाज़िल किया है, बड़ी बाबरकत है, तस्दीक़ करने वाली है उसकी जो इसके सामने मौजूद है, ताकि आप ﷺ ख़बरदार कर दें उम्मुल क़ुरा (मक्का) और उसके आस-पास के लोगों को।"*

क़ुरा जमा है क़ुरया की और उम्मुल क़ुरा का मतलब है बस्तियों की माँ, यानि किसी इलाक़े का सबसे बड़ा शहर। हर मुल्क में एक सबसे बड़ा और सबसे अहम शहर होता है, उसे दारुल ख़िलाफ़ा कहें या दारुल हुकूमत। वह बड़ा शहर पूरे मुल्क के लिये मरकज़ी हैसियत रखता है। अगरचे अरब में उस वक़्त कोई मरकज़ी हुकूमत नहीं थी जिसका कोई दारुल हुकूमत होता, लेकिन मुख्तलिफ़ वजूहात की बिना पर मक्का मुकर्रमा को पूरे अरब में एक मरकज़ी शहर की हैसियत हासिल थी। खाना काबा की वजह से यह शहर मज़हबी मरकज़ था। अरब के तमाम क़बाइल यहाँ हज के लिये आते थे। काबे ही की वजह से क़ुरैशे मक्का को ख़ित्ते की तिजारती सरगर्मियों में एक ख़ास अजारह दारी

(monopoly) हासिल थी। चुनाँचे अहले मक्का के यहाँ पैसे की रेल-पेल थी और आम लोग ख़ुशहाल थे। यहाँ तिजारती क़ाफ़िलों का आना-जाना सारा साल लगा रहता था। यमन से क़ाफ़िले चलते थे जो मक्का से होकर शाम को जाते थे और शाम से चलते थे तो मक्का से होकर यमन को जाते थे। इन वजूहात की बिना पर शहर मक्का बजा तौर पर इलाक़े में “उम्मुल क़ुरा” की हैसियत रखता था। इसलिये फ़रमाया कि ऐ नबी ﷺ हमने आप ﷺ की तरफ़ यह किताबे मुबारक नाज़िल की है ताकि आप ﷺ उम्मुल क़ुरा में बसने वालों को ख़बरदार करें और फिर उनको भी जो उसके इर्द-गिर्द बसते हैं। यहाँ पर وَمَنْ حَوْلَهَا के अल्फ़ाज़ में जो फ़साहत और वुसअत है उसे भी समझ लें। “माहौल” का दायरा बढ़ते-बढ़ते लामहदूद हो जाता है। उसका एक दायरा तो बिल्कुल क़रीबी और immediate होता है, फिर उससे बाहर ज़रा ज़्यादा फ़ासले पर, और फिर उससे बाहर मज़ीद फ़ासले पर। यह दायरा फैलते-फैलते पूरे क़ुर्रा-ए-अर्ज़ पर मुहीत हो जायेगा। अगर दौरे नबवी में क़ुर्रा-ए-अर्ज़ की आबादी को देखा जाये तो उस वक़्त बर्रे अज़ीम एक लिहाज़ से तीन ही थे, एशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ा। अमेरिका बहुत बाद में दरयाफ्त हुआ है जबकि ऑस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका भी मालूम दुनिया का हिस्सा ना थे। दुनिया के नक़्शे पर निगाह डालें तो एशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ा तीनों बर्रे अज़ीम जहाँ पर मिल रहे हैं, तक़रीबन यह इलाक़ा वह है जिसे अब “मिडिल ईस्ट” या मशरिक़े वुस्ता कहते हैं। अगरचे यह नाम (मिडिल ईस्ट) इस इलाक़े के लिये misnomer है, यानि दुरुस्त नाम नहीं है, लेकिन बहरहाल यह इलाक़ा एक

नुक्ता-ए-इत्तेसाल है जहाँ एशिया, यूरोप और अफ़्रीक़ा आपस में मिल रहे हैं और इस जंक्शन पर यह जज़ीरा नुमाए अरब वाक़ेअ है। यह इलाक़ा इस ऐतबार से पूरी दुनिया के लिये भी एक मरकज़ी हैसियत रखता है। चुनाँचे وَمَنۡ حَوۡلَهَا के दायरे में पूरी दुनिया शामिल समझी जायेगी।

وَالَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ

*"और वह लोग जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं इस (क़ुरान) पर भी ईमान ले आयेंगे"*

यानि क़ुरान के मुख़ातिब लोगों में से कुछ तो मुशरिक हैं और कुछ वह हैं जो बाअसे बाद अल् मौत के सिरे से ही मुन्कर हैं, लेकिन जिन लोगों के दिलों में मरने के बाद दोबारा जी उठने और अल्लाह के सामने जवाबदेह होने का ज़रा सा भी तसव्वुर मौजूद है वह ज़रूर इस पर ईमान ले आएँगे। यह इशारा सालेहीने अहले किताब की तरफ़ है।

وَهُمۡ عَلٰى صَلَاتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ ﴿٩٢﴾

*"और वही अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं।"*

## आयत 93

وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ قَالَ

*"और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसने कोई बात गढ़ कर अल्लाह से मंसूब कर दी या (उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा) जो यह कहे कि मुझ पर*

أُوْحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ

*वही की गयी है जबकि उस पर कुछ भी वही ना की गयी हो"*

कोई बात ख़ुद गढ़ कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर देना या यह कहना कि मुझ पर कोई शय वही की गयी है यह दोनों शनाअत के ऐतबार से बराबर के गुनाह हैं। तो ऐ अहले मक्का! ज़रा गौर तो करो कि मुहम्मद ﷺ जिन्होंने तुम्हारे दरमियान एक उम्र बसर की है क्या आप ﷺ की सीरत व किरदार, आप ﷺ की ज़िन्दगी में तुम कोई ऐसा पहलु देखते हो कि आप ﷺ इतने बड़े-बड़े गुनाहों के मुरतकिब भी हो सकते हैं? और इन दो बातों के साथ एक तीसरी बात:

وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

*"और जो कहे कि मैं भी उतार सकता हूँ जैसा कलाम अल्लाह ने उतारा है।"*

वह लोग अगरचे अच्छी तरह समझते थे कि इस कलाम की नज़ीर पेश करना किसी इन्सान के बस की बात नहीं, फिर भी ज़बान से अल्फ़ाज़ कह देने की हद तक किसी ने ऐसा कह दिया होगा। हक़ीक़त यह है कि क़ुरान ने ज़बान दानी का दावा करने वाले माहिरीन, शौअरा और उ'दबाअ समेत उस मआशरे के तमाम लोगों को एक बार नहीं, बार-बार यह चैलेंज किया कि तुम सब सर जोड़ कर बैठ जाओ और इस जैसा कलाम बना कर दिखाओ, लेकिन किसी में भी इस चैलेंज का जवाब देने की हिम्मत ना हो सकी।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓىِٕكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ

*"और काश तुम देख सकते जबकि यह ज़ालिम मौत की सख्तियों में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ आगे बढ़ा रहे होंगे (और कह रहे होंगे) कि निकालो अपनी जानें।"*

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٩٣

*"आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जायेगा बसबब उसके जो तुम कहते रहे थे अल्लाह की तरफ़ मंसूब करके नाहक़ बातें और जो तुम अल्लाह की आयात से मुतकब्बिराना ऐराज़ करते रहे थे।"*

## आयत 94

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ

*"(फिर उनसे कहा जायेगा) और अब आ गये हो ना! हमारे पास अकेले-अकेले, जैसा कि हमने तुम्हें पैदा किया था पहली मर्तबा"*

यानि आज अपने तमाम लाव लश्कर, माल व मताअ और खदम व हशम सब कुछ पीछे छोड़ आये हो, आज कोई भी, कुछ भी तुम्हारी मदद के लिये तुम्हारे साथ नहीं। यही बात सूरह मरयम (आयत 95) में इस तरह कही गयी है: {وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا} कि क़यामत के दिन हर शख्स का मुहास्बा इन्फ़रादी हैसियत में होगा। और ज़ाहिर है उसके लिये हर कोई अकेला खड़ा होगा, ना किसी के रिश्तेदार साथ होंगे, ना माँ-बाप, ना औलाद, ना बीवी, ना बीवी के साथ उसका शौहर, ना साज़ो-सामान ना खदम व हशम!

यहाँ एक और अहम बात नोट कीजिये कि خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ का मतलब है कि इन्सान की तख्लीक़ दो मर्तबा हुई है। एक तख्लीक़ आलमे अरवाह में हुई थी, वहाँ भी सब अकेले-अकेले थे, ना किसी का बाप साथ था ना किसी की माँ। तब अरवाह के माबैन कोई रिश्तेदारी भी नहीं थी। यह रिश्तेदारियाँ तो बाद में आलमे ख़ल्क़ में आकर हुई हैं। आयत ज़ेरे नज़र में आलमे अरवाह की इसी तख्लीक़ की तरफ़ इशारा है। आलमे अरवाह के उस इज्तमाअ में बनी नौए इन्सान के हर फ़र्द ने वह अहद किया था जिसे "अहदे अलस्त" कहा जाता है। जब परवरदिगार-ए-आलम ने औलादे आदम की अरवाह से सवाल किया: {اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ} "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?" तो सबने जवाब दिया" {بَلٰى} (अल् आराफ़:172) "क्यों नहीं!" आलमे अरवाह के इज्तमाअ और रोज़े महशर के इज्तमाअ में एक लिहाज़ से फ़र्क़ है और एक लिहाज़ से मुशाबेहत। फ़र्क़ यह है कि पहले इज्तमाअ में मुजर्रद अरवाह की की शुमूलियत हुई थी, उस

वक़्त तक इंसानों को जिस्म अता नहीं हुए थे, जबकि रोज़े महशर के इज्तमाअ में यह दुनियावी अज्साम भी साथ होंगे। इन इज्तमाआत में मुशाबेहत यह है कि पहले इज्तमाअ में भी हज़रत आदम अलै. से लेकर उनकी नस्ल के आखरी इन्सान तक सबकी अरवाह मौजूद थीं और क़यामत के दिन भी यह सबके सब इन्सान अपने परवरदिगार के हुज़ूर खड़े होंगे।

وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ

*"और तुम छोड़ आये हो अपने पीछे वह सब कुछ जिसमें हमने तुम्हें लपेट दिया था।"*

वह कौनसी चीज़ें हैं जिनमें यहाँ हमें लपेट दिया गया है, इस पर गौर की ज़रूरत है। असल चीज़ तो इन्सान की रूह है। इस रूह के लिये पहला गिलाफ़ यह जिस्म है, फिर इस गिलाफ़ के ऊपर कपड़ों का गिलाफ़ है, कपड़ों के ऊपर फिर मकान का गिलाफ़ और फिर दीगर अश्याये ज़रूरत। इस तरह रूह के लिये जिस्म और जिस्म की ज़रुरियात के लिये तमाम माद्दी अश्या यानि इस दुनिया का साज़ो-सामान सब कुछ इसमें शामिल है। हमारी रूह दरहक़ीक़त इन माद्दी गिलाफ़ों में लिपटी हुई है। क़यामत के दिन इरशाद होगा कि आज तुम हमारे पास अकेले हाज़िर हुए हो और दुनिया की तमाम चीज़ें अपने पीछे छोड़ आये हो।

وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ

*"और हम नहीं देख रहे तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफ़ारशी भी जिनके बारे में तुम्हें ज़अम था कि वह तुम्हारे मामले में शरीक हैं।"*

زَعَمۡتُمۡ اَنَّهُمۡ فِيۡكُمۡ
شُرَكٰٓؤُا ؕ

उन मुजरिम लोगों को जिन-जिन के बारे में भी ज़अम (आरोप) था कि वह इनके लिये क़यामत के दिन शफ़ाअत करेंगे वह सब वहाँ उनसे ऐलाने बराअत कर देंगे। लात, मनात, उज्ज़ा और दूसरे मअबूदाने बातिल तो किसी शुमार व क़तार ही में नहीं होंगे, इस सिलसिले में अम्बिया किराम अलै., मलाइका और औलिया अल्लाह से लगायी गयी इनकी उम्मीदें भी उस रोज़ बर नहीं आयेंगी।

لَقَدۡ تَّقَطَّعَ بَيۡنَكُمۡ

*"अब तुम्हारे माबैन सारे रिश्ते टूट चुके"*

وَضَلَّ عَنۡكُمۡ مَّا كُنۡتُمۡ
تَزۡعُمُوۡنَ ﴿۹۴﴾

*"और वह सब चीज़ें तुमसे गम हो गयीं जिनका तुम ज़अम किया करते थे।"*

आज उन हस्तियों में से कोई तुम्हारे साथ नज़र नहीं आ रहा जिनकी सिफ़ारिश की उम्मीद के सहारे पर तुम हराम खोरियाँ किया करते थे।

## आयात 95 से 100 तक

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الۡحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخۡرِجُ الۡحَىَّ مِنَ الۡمَيِّتِ
وَمُخۡرِجُ الۡمَيِّتِ مِنَ الۡحَىِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى

تُؤۡفَكُوۡنَ ﴿۹۵﴾ فَالِقُ الۡاِصۡبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيۡلَ سَكَنًا
وَّالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ حُسۡبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقۡدِيۡرُ الۡعَزِيۡزِ
الۡعَلِيۡمِ ﴿۹۶﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ جَعَلَ لَـكُمُ النُّجُوۡمَ لِتَهۡتَدُوۡا
بِهَا فِىۡ ظُلُمٰتِ الۡبَـرِّ وَالۡبَحۡرِ ؕ قَدۡ فَصَّلۡنَا الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ
يَّعۡلَمُوۡنَ ﴿۹۷﴾ وَهُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡشَاَكُمۡ مِّنۡ نَّفۡسٍ
وَّاحِدَةٍ فَمُسۡتَقَرٌّ وَّمُسۡتَوۡدَعٌ ؕ قَدۡ فَصَّلۡنَا الۡاٰيٰتِ
لِقَوۡمٍ يَّفۡقَهُوۡنَ ﴿۹۸﴾ وَهُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً ۚ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَىۡءٍ فَاَخۡرَجۡنَا مِنۡهُ
خَضِرًا نُّخۡرِجُ مِنۡهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخۡلِ مِنۡ
طَلۡعِهَا قِنۡوَانٌ دَانِيَةٌ ۙ وَّجَنّٰتٍ مِّنۡ اَعۡنَابٍ
وَّالزَّيۡتُوۡنَ وَالرُّمَّانَ مُشۡتَبِهًا وَّغَيۡرَ مُتَشَابِهٍ ؕ
اُنْظُرُوۡۤا اِلٰى ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثۡمَرَ وَيَنۡعِهٖ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكُمۡ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۹۹﴾ وَجَعَلُوۡا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الۡجِنَّ
وَخَلَقَهُمۡ وَخَرَقُوۡا لَهٗ بَنِيۡنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ ؕ سُبۡحٰنَهٗ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾

## आयत 95

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ

*"यक़ीनन अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ने वाला है।"*

आलमे ख़ल्क़ के अन्दर जो उमूर और मामलात मामूल के मुताबिक़ वक़ूअ पज़ीर (घटित) हो रहे हैं, यहाँ उनकी हक़ीक़त बयान की गयी है। मसलन आम की गुठली ज़मीन में दबायी गयी, कुछ देर के बाद वह गुठली फटी और उसमें से दो पत्ते निकले। इसी तरह पूरी कायनात का निज़ाम चल रहा है। बज़ाहिर यह सब कुछ ख़ुद-ब-ख़ुद होता नज़र आ रहा है, मगर हक़ीक़त में यह सब कुछ उन फ़ितरी क़वानीन के तहत हो रहा है जो अल्लाह ने इस दुनिया में फ़िज़िकल और केमिकल तब्दीलियों के लिये वज़अ (नियमबद्ध) कर दिये हैं। इसलिये इस कायनात में वक़ूअ पज़ीर (घटित) होने वाले हर छोटे-बड़े मामले का फ़ाइल हक़ीक़ी अल्लाह तआला है। यही वह हक़ीक़त है जिसका ज़िक्र शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रहि. ने अपने वसाया में किया है। वह अपने बेटे को वसीयत करते हुए फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे बच्चे इस हक़ीक़त को हर वक़्त मुस्तहज़र (ध्यान में) रखना कि "لَا فَاعِلَ فِى الحقيقة ولا مؤثِّر اِلَّا الله" यानि हक़ीक़त में फ़ाइल और मौस्सर अल्लाह के सिवा कोई नहीं। अश्या (चीज़ों) में जो तासीर है वह उसी की अता करदा है, उसी के इज़्न से है। तुम किसी फ़अल का इरादा तो कर सकते हो लेकिन फ़अल का बिलफ़अल अंजाम पज़ीर होना तुम्हारे इख़्तियार में नहीं

है, क्योंकि हर फ़अल अल्लाह के हुक्म से अंजाम पज़ीर होता है।

يُخۡرِجُ الۡحَیَّ مِنَ الۡمَیِّتِ وَ مُخۡرِجُ الۡمَیِّتِ مِنَ الۡحَیِّ ؕ ذٰلِکُمُ اللّٰہُ فَاَنّٰی تُؤۡفَکُوۡنَ ﴿۹۵﴾

*"वह निकालता है ज़िन्दा को मुर्दा में से और वही निकालने वाला है मुर्दा को ज़िन्दा में से, यही तो है अल्लाह (इसको पहचानो) लेकिन तुम किधर उल्टे जा रहे हो।"*

## आयत 96

فَالِقُ الۡاِصۡبَاحِ ۚ

*"वही है सुबह को फाड़ने वाला।"*

यह "फ़लक़" की दूसरी क़िस्म है कि अल्लाह ही रात की स्याही का पर्दा चाक करके सफ़ेदा सहर को नमूदार करता है। बज़ाहिर यह भी ख़ुद-ब-ख़ुद ज़मीन की गर्दिश के तहत होता नज़र आता है, लेकिन यह ना समझें कि अल्लाह के तसर्रुफ़ और उसकी तदबीर के बगैर हो रहा है। यह सब भी उन ही क़वानीन के तहत हो रहा है जो अल्लाह तआला ने ज़मीन, चाँद, सूरज और दूसरे अजरामे फ़लकी के बारे में बना दिये हैं। इस सब कुछ का फ़ाइल हक़ीक़ी भी वही है।

وَجَعَلَ الَّيۡلَ سَكَنًا وَّالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ حُسۡبَانًا ؕ

*"उसने बना दिया रात को सुकून का वक़्त और सूरज और चाँद को हिसाब के लिये।"*

यह التذ کیر بآلآءِ اللہ की मिसालें हैं, जिनके हवाले से अल्लाह की अज़मत उसकी सिफ़ात और उसकी क़ुदरत को नुमाया किया जा रहा है। यह एक लगा बंधा निज़ाम है जिसके तहत सूरज और चाँद चल रहे हैं। इसी निज़ाम से दिन और रात बनते हैं और इसी से महीने और साल वजूद में आ रहे हैं।

ذٰلِكَ تَقۡدِيۡرُ الۡعَزِيۡزِ الۡعَلِيۡمِ ﴿۹۶﴾

*"यह अंदाज़ा मुक़र्रर किया हुआ है उस हस्ती का जो ज़बरदस्त है और सब कुछ जानने वाला है।"*

## आयत 97

وَهُوَ الَّذِىۡ جَعَلَ لَـكُمُ النُّجُوۡمَ لِتَهۡتَدُوۡا بِهَا فِىۡ ظُلُمٰتِ الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ ؕ

*"और वही है जिसने तुम्हारे लिये सितारे बनाये ताकि तुम उनसे ख़ुश्की और समुन्दर की तारीकियों में रास्ता पाओ।"*

अँधेरी रातों में क़ाफ़िले चलते थे तो वह सितारों से सिम्त मुतअय्यन करके चलते थे। इसी तरह समुन्दर में जहाज़रानी

के लिये भी सितारों की मदद से ही रुख मुतअय्यन किया जाता था।

قَدۡ فَصَّلۡنَا الۡاٰیٰتِ لِقَوۡمٍ یَّعۡلَمُوۡنَ ﴿۹۷﴾

*"हमने तो अपनी निशानियाँ तफ़सील से बयान कर दी हैं उन लोगों के लिये जो इल्म रखते हैं।"*

## आयत 98

وَ هُوَ الَّذِیۡۤ اَنۡشَاَکُمۡ مِّنۡ نَّفۡسٍ وَّاحِدَۃٍ

*"और वही है जिसने तुम्हें उठाया एक जान से"*

ज़ाहिर है कि तमाम नौए इंसानी एक ही जान से वजूद में आयी है। इससे हज़रत आदम अलै. भी मुराद हो सकते हैं और अगर नज़रिया-ए-इरतक़ा में कोई हक़ीक़त तस्लीम कर ली जाये तो फिर तहक़ीक़ का यह सफ़र अमीबा (Amoeba) तक चला जाता है कि उस एक जान से मुख्तलिफ़ इरतक़ाई मराहिल तय करते हुए इन्सान बना। अमीबा में कोई sex यानि तज़कीर व तानीस का मामला नहीं था। दौराने इरतक़ा रफ़्ता-रफ़्ता sex ज़ाहिर हुआ तो {خَلَقَ مِنۡہَا زَوۡجَہَا} (अन्निसा:1) वाला मरहला आया। इस सिलसिले में डॉक्टर रफ़ीउद्दीन मरहूम ने अपनी किताब "क़ुरान और इल्मे जदीद" में बहुत उम्दा तहक़ीक़ की है और मौलाना अमीन अहसन इस्लाही साहब ने भी उसकी तस्वीब (प्रशंसा) की है। जिन हज़रात को दिलचस्पी हो कि

एक जान से तमाम बनी नौए इन्सान को पैदा करने का क्या मतलब है, वह इस किताब का मुताअला ज़रूर करें।

فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ

*"फिर तुम्हारे लिये एक तो मुस्तक़िल ठिकाना है और एक कुछ देर (अमानतन) रखे जाने की जगह।"*

"मुस्तक़र्र" और "मुस्तवद" के बारे में मुफ़स्सिरीन के तीन अक़वाल हैं:

पहला क़ौल यह है कि "मुस्तक़र्र" यह दुनिया है जहाँ हम रह रहे हैं और "मुस्तवद" से मुराद रहमे मादर है। दूसरी राय यह है कि "मुस्तक़र्र" आख़िरत है और "मुस्तवद" क़ब्र है। क़ब्र में इन्सान को आरज़ी तौर पर अमानतन रखा जाता है। यह आलमे बरज़ख़ है और यहाँ से इन्सान ने बिलआख़िर अपने "मुस्तक़र्र" (आख़िरत) की तरफ़ जाना है। तीसरी राय यह है कि "मुस्तक़र्र" आख़िरत है और "मुस्तवद" दुनिया है। दुनिया में जो वक़्त हम गुज़ार रहे हैं यह आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत ही आरज़ी है।

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

*"हमने तो अपनी आयात को वाज़ेह कर दिया है उन लोगों के लिये जो समझ बूझ से काम लें।"*

## आयत 99

وَهُوَ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ

*"और वही है जिसने उतारा आसमान (या बुलन्दी) से पानी।"*

فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیۡءٍ فَاَخۡرَجۡنَا مِنۡهُ خَضِرًا نُّخۡرِجُ مِنۡهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ

*"फिर हमने निकाली उसके ज़रिये से हर क़िस्म की नबातात, फिर हमने उगाये उससे सरसब्ज़ खेत, जिनमें से हम निकालते हैं दाने तह-बा-तह एक-दूसरे के ऊपर चढ़े हुए।"*

किसी भी फ़सल या अनाज का सिट्टा देखें तो उसके दाने निहायत ख़ूबसूरती और सलीक़े से बाहम जुड़े हुए और एक-दूसरे के ऊपर चढ़े हुए नज़र आते हैं।

وَمِنَ النَّخۡلِ مِنۡ طَلۡعِهَا قِنۡوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنۡ اَعۡنَابٍ وَّالزَّيۡتُوۡنَ وَالرُّمَّانَ مُشۡتَبِهًا وَّغَيۡرَ مُتَشَابِهٍ ؕ

*"और ख़जूर के गाभे में से लटकते हुए खोशे, और (हमने बना दिये) बाग़ात अंगूरों के और ज़ैतून और अनार के जो (रंग, शक्ल और ज़ायक़े के ऐतबार से) आपस में मुशाबेह भी हैं और मुख्तलिफ़ भी।"*

اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ

*"देखो इसके फ़ल को जब वह फ़ल लाता है और देखो इसके पकने को जब वह पकता है।"*

यानि मुख्तलिफ़ दरख्तों के फ़ल लाने और फिर फ़ल के पकने के अमल को ज़रा गौर से देखा करो। यहाँ पर وَيَنْعِهٖ के बाद "اِذَا اَيْنَعَ" (जब वह पक जाये) महज़ूफ़ माना जायेगा। यानि इसके पकने को देखो कि किस तरह तदरीजन पकता है। पहले फ़ल आता है, फिर तदरीजन उसके अन्दर तब्दीलियाँ आती हैं, जसामत में बढ़ता है, फिर कच्ची हालत से आहिस्ता-आहिस्ता पकना शुरू होता है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۹۹

*"यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।"*

ऐसी निशानियों पर गौर करने से कमज़ोर ईमान वालों का ईमान बढ़ जायेगा, दिल के यक़ीन में इज़ाफ़ा हो जायेगा (زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا) और जिनके दिलों में तलबे हिदायत है उन्हें ऐसे मुशाहिदे से ईमान की दौलत नसीब होगी।

## आयत 100

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ

*"और इन्होंने अल्लाह का शरीक ठहरा लिया जिन्नात को, हालाँकि उसी ने उन्हें पैदा किया है"*

अल्लाह तआला ने जैसे इंसानों को पैदा किया है इसी तरह उसने जिन्नात को भी पैदा किया है। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि जिन्नात को आग से पैदा किया गया है और वह अपनी ख़ुदादाद तबई सलाहियतों की वजह से कायनात में वसीअ पैमाने पर रसाई रखते हैं। आज इन्सान ने अरबों डॉलर खर्च करके खलाओं के जिस सफ़र को मुमकिन बनाया है, एक आम जिन के लिये ऐसा सफ़र मामूल की कार्यवाही हो सकती है, मगर इन सारे कमालात के बावजूद यह जिन हैं तो अल्लाह ही की मख्लूक़। इसी तरह फ़रिश्ते अपनी तख्लीक़ और सलाहियतों के लिहाज़ से जिन्नात से भी बढ़ कर हैं, मगर पैदा तो उन्हें भी अल्लाह ही ने किया है। लिहाज़ा इन्सान, जिन्नात और फ़रिश्ते सब अल्लाह की मख्लूक़ हैं और इनमें से किसी का भी अलुहियत में ज़र्रा बराबर हिस्सा नहीं।

وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ

*“और उसके लिये इन्होंने गढ़ लिये हैं बेटे और बेटियाँ बगैर किसी इल्मी सनद के।”*

हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर अलै. को अल्लाह के बेटे क़रार दिया गया, जबकि फ़रिश्तों के बारे में कह दिया गया कि वह अल्लाह की बेटियाँ हैं।

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ١٠٠

*“वह बहुत पाक है और बहुत बुलन्द व बाला है उन तमाम चीज़ों से जो यह बयान कर रहे हैं।”*

# आयात 101 से 110 तक

بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰی یَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ
تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ
عَلِیْمٌ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ
كُلِّ شَیْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿۱۰۲﴾
لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ یُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ
اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ ﴿۱۰۳﴾ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ
فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِیَ فَعَلَیْهَا ؕ وَمَاۤ اَنَا
عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ﴿۱۰۴﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ
وَلِیَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَیِّنَهٗ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۵﴾
اِتَّبِعْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ
اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَیْهِمْ حَفِیْظًا ۚ وَمَاۤ اَنْتَ
عَلَیْهِمْ بِوَكِیْلٍ ﴿۱۰۷﴾ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ فَیَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَیَّنَّا
لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰی رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَیُنَبِّئُهُمْ

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ
لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ
اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾
وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع

## आयत 101

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

*"वह अदम से वजूद में लाने वाला है आसमानों और ज़मीन को।"*

यह लफ्ज़ (बदीअ) सूरतुल बक़रह की आयत 117 में भी आ चुका है। यह अल्लाह तआला का सिफ़ाती नाम है और इसके मायने हैं अदम महज़ से किसी चीज़ की तख्लीक़ करने वाला।

اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۭ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

*"उसके औलाद कैसे हो सकती है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं, और उसने तो हर शय को पैदा किया है, और वह हर चीज़ का इल्म रखता है।"*

अल्लाह तआला की औलाद बताने वाले यह भी नहीं सोचते कि जब उसकी कोई शरीके हयात ही नहीं है तो औलाद कैसे होगी? दरअसल कायनात और उसके अन्दर हर चीज़ का ताल्लुक़ अल्लाह के साथ सिर्फ़ यह है कि वह एक खालिक़ है और बाक़ी सब मख्लूक़ हैं। और वह ऐसी अलीम और खबीर हस्ती है कि उसकी मख्लूक़ात में से कोई शय उसकी निगाहों से एक लम्हे के लिये भी ओझल नहीं हो पाती।

## आयत 102

*"वह है अल्लाह तुम्हारा रब"* ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ

यह अन्दाज़े ख़िताब समझने की ज़रूरत है। मुशरिकीने मक्का और अहले अरब अल्लाह के मुन्किर नहीं थे। वह अल्लाह को मानते तो थे लेकिन अल्लाह की सिफ़ात, उसकी क़ुदरत, उसकी अज़मत के बारे में उनका ज़हन कुछ महदूद था। इसलिये यहाँ यह अंदाज़ इख़्तियार किया गया है कि देखो जिस अल्लाह को तुम मानते हो वही तो तुम्हारा रब और परवरदिगार है। वह अल्लाह बहुत बुलन्द शान वाला है। तुमने उसकी असल हक़ीक़त को नहीं पहचाना। तुमने उसको कोई ऐसी शख्सियत समझ लिया है जिसके ऊपर कोई दबाव डाल कर भी अपनी बात मनवाई जा सकती है। तुम फ़रिश्तों को उसकी बेटियाँ समझते हो। तुम्हारे ख्याल में यह जिसकी सिफ़ारिश करेंगे उसको बख्श दिया जायेगा। इस तरह तुमने अल्लाह को भी अपने ऊपर ही क़यास कर लिया है कि जिस तरह तुम अपनी बेटी की बात रद्द नहीं करते, इसी तरह तुम समझते हो कि अल्लाह भी फ़रिश्तों की बात

नहीं टालेगा। अल्लाह तआला की हक़ीक़ी क़ुदरत, उसकी अज़मत, उसका वरा उल वरा होना, उसका बिकुल्ली शयइन अलीम होना, उसका अला कुल्ली शयइन क़दीर होना, उसका हर जगह पर हर वक़्त मौजूद होना, उसकी ऐसी सिफ़ात हैं जिनका तसव्वुर तुम लोग नहीं कर पा रहे हो। लिहाज़ा अगर तुम समझना चाहो तो समझ लो: {ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ} वह है अल्लाह तुम्हारा रब जिसकी यह शान और क़ुदरत बयान हो रही है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝١٠٢

*"उसके सिवा कोई मअबूद नहीं है, वह हर शय का पैदा करने वाला है, पस तुम उसी की बन्दगी करो, और वह हर शय का कारसाज़ है।"*

उसके सिवा कोई तुम्हारे लिये कारसाज़ नहीं। ख़ुद उसका हुक्म है (बनी इसराइल 2): {اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا} कि मेरे सिवा किसी और को अपना कारसाज़ ना समझा करो।

## आयत 103

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ

*"उसे निगाहें नहीं पा सकतीं जबकि वह तुम्हारी निगाहों को पा लेता है, और वह लतीफ़ भी है और हर चीज़ से बाख़बर भी।"*

وَهُوَ اللَّطِيْفُ

الْخَبِيْرُ ۝١٠٣

वह इस हद तक लतीफ़ है, इस क़दर लतीफ़ है कि इंसानी निगाहें उसका इदराक नहीं कर सकतीं। चुनाँचे इससे एक सवाल पैदा होता है कि शबे मेराज में क्या रसूल अल्लाह ﷺ ने अल्लाह को देखा या नहीं देखा? इसमें कुछ इख्तलाफ़ है। हज़रत अली रज़ि. की राय यह है कि हुज़ूर ﷺ ने अल्लाह को देखा था, लेकिन हज़रत उमर और हज़रत आयशा रज़ि. की राय है कि नहीं देखा था। इस ज़िमन में हज़रत आयशा रज़ि. का क़ौल है: نُورٌ اَنّٰى يُرٰى यानि वह तो नूर है उसे देखा कैसे जायेगा? चुनाँचे हज़रत मूसा अलै. ने जब कोहे तूर पर इस्तदआ की थी: {رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ} (अल् आराफ़:143) "परवरदिगार, मुझे यारा-ए-नज़र दे कि मैं तेरा दीदार करूँ!" तो साफ़ कह दिया गया था कि {لَنْ تَرٰىنِيْ} "तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते।" अल्लाह इतनी लतीफ़ हस्ती है कि उसका देखना हमारी निगाहों से मुमकिन नहीं। हाँ दिल की आँख से उसे देखा जा सकता है। मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ दुनिया में बैठ कर भी दिल की आँख से उसे देख सकते थे।

## आयत 104

قَدۡ جَآءَكُمۡ بَصَآئِرُ مِنۡ رَّبِّكُمۡ ۚ

*"(देखो) तुम्हारे पास आ चुकी हैं बसीरत अफ़रोज़ बातें तुम्हारे रब की तरफ़ से।"*

فَمَنۡ اَبۡصَرَ فَلِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ عَمِیَ فَعَلَیۡهَا ؕ

*"तो अब जो कोई बीनाई से काम लेगा तो अपने ही भले के लिये, और जो कोई अँधा बन जायेगा तो उसका वबाल उसी पर होगा।"*

अब जो इन बसाइर को आँखें खोल कर देखेगा, चश्मे बसीरत वा करेगा, हक़ाइक़ का मुवाजहा करेगा, हक़ीक़त को तस्लीम करेगा तो वह ख़ुद अपना ही भला करेगा और जो इनकी तरफ़ से जानबूझ कर आँखें बंद कर लेगा, किसी तास्सुब, हठधर्मी और ज़िद की वजह से हक़ीक़त को नहीं देखना चाहेगा तो उसका सारा वबाल उसी पर आयेगा।

وَمَاۤ اَنَا عَلَیۡكُمۡ بِحَفِیۡظٍ ﴿۱۰۴﴾

*"और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरान नहीं हूँ।"*

यह बात पैगम्बर ﷺ की तरफ़ से अदा हो रही है कि हर कोई अपने अच्छे-बुरे आमाल का ख़ुद ज़िम्मेदार है, मेरी ज़िम्मेदारी तुम तक अल्लाह का पैगाम पहुँचाना है, मैं तुम्हारी तरफ़ से जवाबदेह नहीं हूँ।

**आयत 105**

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ

*"और इसी तरह हम अपनी आयात को गर्दिश दिलाते हैं ताकि यह पुकार उठें कि (ऐ नबी ﷺ) आपने समझा दिया"*

हम अपनी आयात बार-बार मुख्तलिफ़ तरीक़ों से बयान करते हैं, अपनी दलीलें मुख्तलिफ़ असालेब से पेश करते हैं ताकि इन पर हुज्जत क़ायम हो और यह तस्लीम करें कि आप ﷺ ने समझाने का हक़ अदा कर दिया है। دَرَسَ, يَدْرُسُ के मायने हैं लिखना और लिखने के बाद मिटाना, फिर लिखना, फिर मिटाना। जैसे बच्चे शुरू में जब लिखना सीखते हैं तो मश्क़ के लिये बार-बार लिखते हैं। (इस मक़सद के लिये हमारे यहाँ तख़्ती इस्तेमाल होती थी जो अब मतरूक हो गयी है।) यहाँ तदरीजन बार-बार पढ़ाने के मायने में यह लफ्ज़ (دَرَسْتَ) इस्तेमाल हुआ है।

وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝١٠٥

*"और ताकि हम वाज़ेह कर दें इसको हर तरह से उन लोगों के लिये जो इल्म रखते हैं (या जो इल्म हासिल करना चाहते हैं)।"*

## आयत 106

اِتَّبِعۡ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ مِنۡ رَّبِّکَ ۚ

*"आप ﷺ पैरवी किये जायें उसकी जो वही किया जा रहा है आप ﷺ पर आप ﷺ के रब की तरफ़ से।"*

इस सूरत में आप देख रहे हैं कि नबी अकरम ﷺ को बार-बार मुख़ातिब किया जा रहा है। लेकिन जैसा कि पहले बताया गया है यह ख़िताब दरअसल हुज़ूर ﷺ की वसातत से उम्मत के लिये भी है। मक्की सूरतों (दो तिहाई क़ुरान) में मुसलमानों से बराहे रास्त ख़िताब बहुत कम मिलता है। इसकी हिकमत यह है कि मक्की दौर में मुस्लमान बाक़ायदा एक उम्मत नहीं थे। उम्मत की तशकील तो तहवीले क़िब्ला के बाद हुई। इसी लिये तहवीले क़िब्ला के हुक्म के फ़ौरन बाद यह आयत नाज़िल हुई है (अल् बक़रह 143): {وَكَذٰلِكَ جَعَلۡنٰكُمۡ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوۡنُوۡا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوۡنَ الرَّسُوۡلُ عَلَيۡكُمۡ شَهِيۡدًا} अब जबकि मुसलमानों को बाक़ायदा उम्मत का दर्जा दे दिया गया तो फिर उनसे ख़िताब भी बराहे रास्त होने लगा। चुनाँचे सूरतुल हुजरात जो 18 आयात पर मुश्तमिल मदनी सूरत है, उसमें पाँच दफ़ा {يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا} के अल्फ़ाज़ से अहले ईमान को बराहे रास्त मुख़ातिब फ़रमाया गया है। लेकिन दूसरी तरफ़ मक्की सूरतों में अहले ईमान से जो भी कहा गया है वह हुज़ूर ﷺ को मुख़ातिब करके वाहिद के सीगे में कहा गया है। चुनाँचे आयत ज़ेरे नज़र में यह जो फ़रमाया गया है कि पैरवी करो उसकी जो आप ﷺ पर वही किया जा रहा है आप ﷺ के रब की तरफ़ से, तो यह हुक्म सिर्फ़

हुज़ूर ﷺ के लिये ही नहीं बल्कि तमाम मुसलमानों के लिये भी है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٠٦

*"उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, और इन मुशरिकों से किनारा कशी कर लीजिये।"*

## आयत 107

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۭ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ

*"और अगर अल्लाह चाहता तो यह शिर्क ना करते। और (ऐ नबी ﷺ) हमने आपको इन पर निगरान नहीं बनाया है।"*

अगर अल्लाह को अपना जब्र ही नाफ़िज़ करना होता और बिलजब्र इन सब को ईमान पर लाना होता तो अल्लाह के लिये यह कुछ मुश्किल नहीं था। इस सिलसिले में आप ﷺ पर इनकी ज़िम्मेदारी डाली ही नहीं गयी। आप ﷺ को इन पर दरोगा या निगरान मुक़र्रर नहीं किया गया। आप ﷺ का काम है हक़ को वाज़ेह कर देना। आप ﷺ इस क़ुरान के ज़रिये इन्हें ख़बरदार करते रहिये, इसके ज़रिये इन्हें तज़कीर करते रहिये, इसके ज़रिये इन्हें खुशखबरियाँ देते रहिये। आप ﷺ की बस यह ज़िम्मेदारी है (अल् गाशिया): {فَذَكِّرْ ڜ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١ۭ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢ۙ} "पस आप ﷺ इन्हें याद दिहानी कराइये,

इसलिये कि आप ﷺ तो याद दिहानी ही कराने वाले हैं। आप ﷺ इनके ऊपर निगरान नहीं हैं।

وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝١٠٧

*"और ना ही आप ﷺ इनके ज़ामिन हैं।"*

## आयत 108

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ

*"और मत गालियाँ दो (या मत बुरा-भला कहो) उनको जिन्हें यह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा, तो वह अल्लाह को गालियाँ देने लगेंगे ज़्यादती करते हुए बगैर सोचे-समझे।"*

यानि कहीं जोश में आकर इनके बुतों को बुरा-भला मत कहो, क्योंकि वह उनको अपने मअबूद समझते हैं, इनके ज़हनों में उनकी अज़मत और दिलों में उनकी अक़ीदत है, इसलिये कहीं ऐसा ना हो कि वह गुस्से में आकर जवाबन अल्लाह को गालियाँ देने लग जायें। लिहाज़ा तुम कभी ऐसा इश्तेआल आमेज़ (भड़काऊ) अंदाज़ इख़्तियार ना करना। यहाँ एक दफ़ा फिर नोट कीजिये कि यह ख़िताब मुसलमानों से है, लेकिन इन्हें "يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا" से मुख़ातिब नहीं किया गया।

كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠

*"इसी तरह हमने हर क़ौम के लिये उसके अमल को मुज़य्यन कर दिया है"*

जिस तरह हर कोई अपने अक़ीदे में खुश है इसी तरह यह मुशरिकीन भी अपने बुतों की अक़ीदत में मगन हैं। ज़ाहिर बात है वह उनको अपने मअबूद समझते हैं तो उनके बारे में उनके जज़्बात भी बहुत हस्सास हैं। इसलिये आप ﷺ उन्हें मुनासिब अंदाज़ से समझायें, इन्ज़ार, तब्शीर, तज़कीर और तब्लीग वगैरह सब तरीक़े आजमायें, लेकिन उनके मअबूदों को बुरा-भला ना कहें।

ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

*"फिर अपने रब ही की तरफ़ उन सबको लौटना है तो वह उनको जितला देगा जो कुछ वह करते रहे थे।"*

## आयत 109

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۭ

*"और वह अल्लाह की क़समें खा रहे हैं शद्दो-मद्द के साथ कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाये तो वह लाज़िमन ईमान ले आयेंगे।"*

फिर उनके उसी मुतालबे का ज़िक्र आ गया कि किस तरह वह अल्लाह की क़समें खा-खा कर कहते थे कि अगर उन्हें

मौज्ज़ा दिखा दिया जाये तो वह लाज़िमन ईमान ले आयेंगे। जैसा कि पहले भी बताया गया है कि यह मज़मून इस सूरह मुबारका का उमूद है। उनका यह मुतालबा था कि जब आप (صلى الله عليه وسلم) नबुवत व रिसालत का दावा करते हैं तो फिर मौज्ज़ा क्यों नहीं दिखाते? इससे पहले तमाम अम्बिया मौज्ज़ात दिखाते रहे हैं। आप ख़ुद कहते हैं कि हज़रत मूसा अलै. ने अपनी क़ौम को मौज्ज़ात दिखाये, हज़रत ईसा अलै. ने भी मौज्ज़ात दिखाये, हज़रत सालेह अलै. ने अपनी क़ौम को मौज्ज़ा दिखाया, तो फिर आप मौज्ज़ा दिखा कर क्यों हमें मुत्मईन नहीं करते? उनके सरदार अपने अवाम को मुतास्सिर करने के लिये बड़ी-बड़ी क़समें खा कर कहते थे कि आप (صلى الله عليه وسلم) दिखाइये तो सही एक दफ़ा मौज्ज़ा, उसे देखते ही हम लाज़िमन लाज़िमन ईमान ले आयेंगे।

قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ

*"कह दीजिये कि निशानियाँ तो सब अल्लाह के इख़्तियार में हैं"*

आप صلى الله عليه وسلم इन्हें साफ़ तौर पर बतायें कि यह मेरे इख़्तियार में नहीं है। यह अल्लाह का फ़ैसला है कि वह इस तरह का कोई मौज्ज़ा नहीं दिखाना चाहता। उनकी इस तरह की बातों का चूँकि मुसलमानों पर भी असर पड़ने का इम्कान था इसलिये आगे फ़रमाया:

وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠٩

*"(और ऐ मुसलमानों!) तुम्हें क्या मालूम कि जब वह निशानी आ जायेगी तब भी यह ईमान नहीं लायेंगे।"*

यह लोग ईमान तो मौज्ज़ा देख कर भी नहीं लायेंगे, लेकिन मौज्ज़ा देख लेने के बाद इनकी मोहलत ख़त्म हो जायेगी और वह फ़ौरी तौर पर अज़ाब की गिरफ़्त में आ जायेंगे। इसलिये इनकी भलाई इसी में है कि इन्हें मौज्ज़ा ना दिखाया जाये। चुनाँचे उनकी बातें सुन-सुन कर जो तंगी और घुटन तुम लोग अपने दिलों में महसूस कर रहे हो उसको बर्दाश्त करो और उनके इस मुतालबे को नज़र अंदाज़ कर दो। अब जो आयत आ रही है वह बहुत ही अहम है।

**आयत 110**

وَنُقَلِّبُ اَفۡـِٕدَتَهُمۡ وَاَبۡصَارَهُمۡ كَمَا لَمۡ يُؤۡمِنُوۡا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ

*"और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को उलट देंगे जिस तरह वह ईमान नहीं लाये थे पहली मर्तबा"*

इस क़ायदे और क़ानून को अच्छी तरह समझ लें। इस फ़लसफ़े का ख़ुलासा यह है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को जो सलाहियतें दी हैं अगर वह उनको इस्तेमाल करता है तो उनमें मज़ीद इज़ाफ़ा होता है। अगर आप लोगों को इल्म सिखाएँगे तो आपके इल्म में इज़ाफ़ा होगा। आप आँख का इस्तेमाल करेंगे तो आँख सेहतमन्द रहेगी, उसकी बसारत बरक़रार रहेगी। अगर आँख पर पट्टी बाँध देंगे तो दो-चार महीने के बाद बसारत ज़ाइल हो जायेगी। इंसानी जोड़ों को हरकत करने के लिये बनाया गया है, अगर आप किसी जोड़ पर प्लास्तर चढ़ा देंगे तो कुछ महीनों के बाद उसकी हरकत ख़त्म हो जायेगी। चुनाँचे जो सलाहियत अल्लाह ने इन्सान को दी है अगर वह उसका इस्तेमाल नहीं

करेगा तो वह सलाहियत तदरीजन ज़ाइल हो जायेगी। इसी तरह हक़ को पहचानने के लिये भी अल्लाह तआला ने इन्सान को बातिनी तौर पर सलाहियत वदीयत की है। अब अगर एक शख्स पर हक़ मुन्कशिफ़ हुआ है, उसके अन्दर उसे पहचानने की सलाहियत मौजूद है, उसके दिल ने गवाही भी दी है कि यह हक़ है, लेकिन अगर किसी तास्सुब की वजह से, किसी ज़िद और हठधर्मी के सबब उसने उस हक़ को देखने, समझने और मानने से इन्कार कर दिया, तो उसकी वह सलाहियत क़द्रे कम हो जायेगी। अब इसके बाद फिर दोबारा कभी हक़ की कोई चिंगारी उसके दिल में रोशन हुई तो उसका असर उस पर पहले से कम होगा और फिर तदरीजन वह नौबत आ जायेगी कि हक़ को पहचानने की वह बातिनी सलाहियत ख़त्म हो जायेगी। यह फ़लसफ़ा सूरह बक़रह आयत 7 में इस तरह बयान हुआ है: {خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوۡبِهِمۡ وَعَلٰی سَمۡعِهِمۡ ؕ وَعَلٰۤی اَبۡصَارِهِمۡ غِشَاوَةٌ وَّلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِیۡمٌ} "अल्लाह ने मोहर लगा दी है उनके दिलों पर और उनकी समाअत पर, और उनकी आँखों के आगे परदे डाल दिये हैं, और उनके लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।" इसलिये कि जब ज़िद और तास्सुब की बिना पर वह लोग समझते-बूझते हक़ का मुसलसल इन्कार करते रहे तो उनकी हक़ को पहचानने की सलाहियतें सल्ब हो गईं। अब वह उस इन्तहा को पहुँच चुके हैं जहाँ से वापसी का कोई इम्कान नहीं। इसको "point of no return" कहते हैं। हर मामले में वापसी का एक वक़्त होता है, लेकिन वह वक़्त गुज़र जाने के बाद ऐसा करना मुमकिन नहीं रहता।

यही फ़लसफ़ा यहाँ दूसरे अंदाज़ में पेश किया जा रहा है कि जब पहली मर्तबा उन लोगों पर हक़ मुन्कशिफ़ हुआ, अल्लाह ने हुज्जत क़ायम कर दी, उन्होंने हक़ को पहचान लिया, उनके दिलों, उनकी रूहों और बातिनी बसीरत ने गवाही दे दी कि यह हक़ है, इसके बाद अगर वह उस हक़ को फ़ौरन मान लेते तो उनके लिये बेहतर होता। लेकिन चूँकि उन्होंने नहीं माना तो अल्लाह ने फ़रमाया कि इसकी सज़ा की तौर पर हम उनके दिलों को और उनकी निगाहों को उलट देंगे, अब वह सौ मौज्ज़े देख कर भी ईमान नहीं लाएँगे।

وَّنَذَرُهُمْ فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

*"और हम उनको छोड़ देंगे कि अपनी सरकशी के अन्दर भटकते रहें।"*

यही लफ्ज़ "یَعْمَهُوْنَ" हम सूरतुल बक़रह की आयत 15 में पढ़ चुके हैं, जबकि वहाँ आयत 18 में "عُمْیٌ" भी आया है। یَعْمَهُ عَمِہَ बसीरत से महरूमी यानि बातिनी अंधेपन के लिये आता है और یَعْمٰی عَمِیَ बसारत से महरूमी यानि आँखों से अँधा होने के लिये इस्तेमाल होता है। यहाँ फ़रमाया कि हम छोड़ देंगे उनको उनकी बातिनी, ज़हनी, नफ्सियाती और अख्लाक़ी गुमराहियों के अँधेरों में भटकने के लिये।

# आयत 111 से 121 तक

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى
وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا
اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ
وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُوْرًا ۭ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا
يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ
مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ
اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۭ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

يَخۡرُصُوۡنَ ﴿۱۱۶﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ مَنۡ يَّضِلُّ عَنۡ
سَبِيۡلِهٖ‌ۚ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿۱۱۷﴾ فَكُلُوۡا مِمَّا ذُكِرَ
اسۡمُ اللّٰهِ عَلَيۡهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ بِاٰيٰتِهٖ مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾ وَمَا
لَكُمۡ اَلَّا تَاۡكُلُوۡا مِمَّا ذُكِرَ اسۡمُ اللّٰهِ عَلَيۡهِ وَقَدۡ فَصَّلَ
لَكُمۡ مَّا حَرَّمَ عَلَيۡكُمۡ اِلَّا مَا اضۡطُرِرۡتُمۡ اِلَيۡهِ‌ؕ وَاِنَّ
كَثِيۡرًا لَّيُضِلُّوۡنَ بِاَهۡوَآئِهِمۡ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ‌ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ
اَعۡلَمُ بِالۡمُعۡتَدِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾ وَذَرُوۡا ظَاهِرَ الۡاِثۡمِ
وَبَاطِنَهٗ‌ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَكۡسِبُوۡنَ الۡاِثۡمَ سَيُجۡزَوۡنَ بِمَا
كَانُوۡا يَقۡتَرِفُوۡنَ ﴿۱۲۰﴾ وَلَا تَاۡكُلُوۡا مِمَّا لَمۡ يُذۡكَرِ اسۡمُ
اللّٰهِ عَلَيۡهِ وَاِنَّهٗ لَفِسۡقٌ‌ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيۡنَ لَيُوۡحُوۡنَ اِلٰٓى
اَوۡلِيٰٓـئِهِمۡ لِيُجَادِلُوۡكُمۡ‌ۚ وَاِنۡ اَطَعۡتُمُوۡهُمۡ اِنَّكُمۡ
لَمُشۡرِكُوۡنَ ﴿۱۲۱﴾

## आयत 111

وَلَوۡ اَنَّنَا نَزَّلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ الۡمَلٰٓـئِكَةَ

*"और अगर हम इन पर फ़रिश्ते उतार देते"*

यानि हम इनके मुतालबे के मुताबिक़ एक फ़रिश्ता तो क्या फ़रिश्तों की फ़ौजें उतार सकते हैं, उन फ़रिश्तों को आसमान से उतरते हुए दिखा सकते हैं, लेकिन अगर हम वाक़िअतन फ़रिश्ते उतार भी देते और इनको दिखा भी देते....

وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا

*"और मुर्दे भी इनसे गुफ्तुगू करते और हम तमाम चीज़ें लाकर इनके रू-ब-रू जमा कर देते"*

مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ

*"तब भी यह ईमान लाने वाले ना थे मगर यह कि अल्लाह चाहे"*

अगर अल्लाह चाहे और अगर किसी के अन्दर हक़ की तलब हो तो अल्लाह तआला मौज्ज़ों के बगैर भी ऐसे लोगों की आँखें खोल देता है। जो लोग भी मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ पर ईमान लाये थे वह मौज्ज़े देख कर तो नहीं लाये थे। वह तालिबाने हक़ थे लिहाज़ा उन्हें हक़ मिल गया।

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ۝١١١

*"लेकिन इनकी अक्सरियत जाहिलों पर मुश्तमिल है।"*

यहाँ जाहिल से मुराद जज़्बाती लोग हैं, जो अक़्ल से काम नहीं लेते बल्कि अपने जज़्बात के आलाकार बन जाते हैं। अगली आयत फ़लसफ़ा-ए-दावत व तहरीक के ऐतबार से बहुत अहम है।

## आयत 112

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ

*"और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन बना दिये इंसानों और जिन्नों में से श्यातीन"*

सोचने और गौर करने का मक़ाम है, अम्बिया को तो मदद की ज़रूरत थी, अल्लाह ने श्यातीन को उनके ख़िलाफ़ क्यों खड़ा कर दिया? बहरहाल यह अल्लाह का क़ानून है जो राहे हक़ के हर मुसाफ़िर को मालूम होना चाहिये। इसमें हिकमत यह है कि हक़ व बातिल में इस नौइयत की कशाकश नहीं होगी तो फिर खरे और खोटे की पहचान भी नहीं हो सकेगी। कैसे मालूम होगा कि कौन वाक़ई हक़परस्त है और कौन झूठा दावेदार। कौन अल्लाह से सच्ची मोहब्बत करता है और कौन दूध पीने वाला मजनून है। यह दुनिया तो आज़माइश के लिये बनायी गयी है। यहाँ अगर शर का वजूद ही ना हो, हर जगह खैर ही खैर हो तो खैर के तलबगारों की आज़माइश कैसे होगी? लिहाज़ा फ़रमाया कि यह कशमकश की फ़ज़ा हम ख़ुद पैदा करते हैं। हम ख़ुद हक़ पर चलने वालों को तलातुम ख़ेज़ मौजों के सुपुर्द करके उनकी इस्तक़ामत को परखते हैं और फिर साबित क़दम रहने वालों को नवाज़ते हैं। इस मैदान में जो जितना आज़माया जाता है, जो जितनी इस्तक़ामत दिखाता है, जो जितना ईसार करता है, उतना ही उसका मरतबा बुलन्द होता चला जाता है। चुनाँचे राहे हक़ के मुसाफ़िरों को मुत्मईन रहना चाहिये:

*तुन्दी-ए-बाद-ए-मुखालिफ़ से ना घबरा ऐ उक़ाब*
*यह तो चलती है तुझे ऊँचा उड़ाने के लिये!*

يُوۡحِىۡ بَعۡضُهُمۡ اِلٰى بَعۡضٍ زُخۡرُفَ الۡقَوۡلِ غُرُوۡرًا‌ ؕ

*"वह एक-दूसरे को इशारों-किनायों में पुर फ़रेब बातें पहुँचाते रहते हैं गुमराह करने के लिये।"*

मसलन एक जिन शैतान आकर अपने साथी इन्सान शैतान के दिल में ख्याल डालता है कि शाबाश अपन मौक़फ़ पर डटे रहो, इसी का नाम इस्तक़ामत है। देखो कहीं फिसल ना जाना और अपने मुखालिफ़ के मौक़फ़ को क़ुबूल ना कर लेना। उनका आपस में इस तरह का गठजोड़ चलता रहता है। इसलिये कि अल्लाह तआला ने ख़ुद उनको यह छूट दे रखी है।

وَلَوۡ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوۡهُ

*"और अगर आपका रब चाहता तो वह यह ना कर सकते"*

ज़ाहिर बात है कि इस कायनात में कोई पत्ता भी अल्लाह के इज़्न के बगैर नहीं हिल सकता। अबु जहल की क्या मजाल थी कि हज़रत सुमैय्या रज़ि. को शहीद करता। वह बरछा उठाता तो उसका हाथ शल हो जाता। लेकिन यह तो अल्लाह की तरफ़ से छूट थी कि ठीक है, तुम हमारी इस बंदी को जितना आज़माना चाहते हो आज़मा लो। इन आज़माइशों से हमारे यहाँ इसके मरातिब बुलन्द से बुलन्दतर होते चले जा रहे हैं। जैसा कि सूरह यासीन (आयत

26 व 27) में अल्लाह तआला के एक बन्दे पर ईनामात का ज़िक्र हुआ है: {قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ} {بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ} "उसने कहा काश कि मेरी क़ौम को मालूम हो जाये कि किस तरह मेरे रब ने मुझे बख्श दिया और मुझे मौज़्ज़ीन में से बना दिया।" इधर तो मेरी शहादत के बाद सफ़े मातम बिछी होगी, बीवी शौहर की जुदाई में निढ़ाल होगी, बच्चे रो-रो कर हल्कान हो रहे होंगे, लेकिन काश वह जान सकते कि मुझे मेरे रब ने किस-किस तरह से नवाज़ा है, कैसे-कैसे ईनामात यहाँ मुझ पर किये गये हैं और मैं यहाँ किस ऐश व आराम में हूँ! अगर उन्हें मेरे इस ऐज़ाज़ व इकराम की कुछ भी ख़बर हो जाती तो रोने-धोने की बजाये वह खुशियाँ मना रहे होते।

فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

*"तो छोड़िये आप ﷺ इनको और इनकी इफ़तरा परदाज़ियों को।"*

यह हमारी सुन्नत है, हमारा तरीक़ा है, हमने ख़ुद इनको यह सब कुछ करने की ढील दे रखी है, लिहाज़ा आप ﷺ इनसे ऐराज़ फ़रमाइये और इनको इनकी इफ़तरा परदाज़ियों में पड़े रहने दीजिये।

.

**आयत 113**

وَلِتَصۡغٰۤى اِلَيۡهِ اَفۡـِٕدَةُ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ

*"और (ऐसा इसलिये है) ताकि माइल हो जायें इसकी तरफ़ उन लोगों के दिल जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते"*

وَلِيَرۡضَوۡهُ وَلِيَقۡتَرِفُوۡا مَا هُمۡ مُّقۡتَرِفُوۡنَ ﴿۱۱۳﴾

*"और ताकि वह इसको पसंद भी करें और फिर वह अपने बुरे आमाल का जो भी अम्बार जमा करना चाहते हैं जमा कर लें।"*

इस फ़लसफ़े को एक मिसाल से समझिये। पानी का electrolysis करें तो negative और positive चार्ज वाले आइन्ज़ (ions) अलग-अलग हो जाते हैं। इसी तरह अल्लाह तआला ने दुनिया में हक़ व बातिल की जो कशाकश रखी है, उसका लाज़मी नतीजा यह निकलता है कि खरे और खोटे की ionization हो जाती है। अहले हक़ निखर कर एक तरफ़ हो जाते हैं और अहले बातिल दूसरी तरफ़। इस तरह इंसानी मआशरे में अच्छे और बुरे की तमीज़ हो जाती है। जैसे कि हम सूरह आले इमरान (आयत 179) में पढ़ चुके हैं: {حَتّٰى يَمِيۡزَ الۡخَبِيۡثَ مِنَ الطَّيِّبِ} "ताकि वह नापाक को पाक से अलग कर दे।" मआशरे के अन्दर आम तौर पर पाक और नापाक अनासिर गडमड हुए होते हैं, लेकिन जब आज़माइशें और तकलीफ़ें आती हैं, इम्तिहानात आते हैं तो यह ख़बीस और तय्यब अनासिर वाज़ेह तौर पर अलग-अलग हो जाते हैं, मुनाफ़िक़ अलैहदा और अहले ईमान अलैहदा हो जाते हैं। आयत ज़ेरे नज़र में यही फ़लसफ़ा बयान हुआ है कि श्यातीने

इन्स व जिन्न को खल-खेलने की मोहलत इसी हिकमत के तहत फ़राहम की जाती है और मुन्किरीने आख़िरत को भी पूरा मौक़ा दिया जाता है कि वह उन श्यातीन की तरफ़ से फैलाये हुए बे सर व पाँव नज़रियात की तरफ़ माइल होना चाहें तो बेशक हो जायें।

## आयत 114

*"क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और हाकम ढूँढू?"* اَفَغَيۡرَ اللّٰهِ اَبۡتَغِىۡ حَكَمًا

अब फिर यह मुतजस्साना सवाल (searching question) इसी पसमंज़र में किया गया है कि मुशरिकीने मक्का अल्लाह को मानते थे। चुनाँचे उनसे पूछा जा रहा है कि वह अल्लाह जिसको तुम मानते हो, मैंने भी उसी को अपना रब माना है। तो क्या अब तुम चाहते हो कि मैं उस मअबूदे हक़ीक़ी को छोड़ कर किसी और को अपना हाकम तस्लीम कर लूँ, और वह भी उनमें से जिनको तुम लोगों ने अपनी तरफ़ से गढ़ लिया है, जिनके बारे में अल्लाह ने कोई सनद या दलील नाज़िल नहीं की है। सूरतुल ज़ुख़रफ़ में इसी नुक्ते को इस अंदाज़ में पेश किया गया है: {قُلۡ اِنۡ كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الۡعٰبِدِيۡنَ} (आयत:81) "आप ﷺ कहिये कि अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो सबसे पहले उसको मैं पूजता।" यानि जब मैं अल्लाह की परस्तिश करता हूँ तो अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो क्या मैं उसकी परस्तिश ना करता? चुनाँचे मैं जो अल्लाह को अपना मअबूद समझता हूँ और किसी को उसका बेटा नहीं मानता

तो जान लें कि उसका कोई बेटा है ही नहीं। समझाने का यह अंदाज़ जो क़ुरान में इख़्तियार किया गया है बड़ा फ़ितरी है। इसमें मन्तिक़ के बजाये जज़्बात से बराहेरास्त अपील है। दरूंबीनी (introspection) की तरफ़ दावत है कि अपने दिल में झाँको, गिरेबान में मुँह डालो और सोचो, हक़ीक़त तुम्हें ख़ुद ही नज़र आ जायेगी।

وَّهُوَ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ اِلَیْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ

*"और वही तो है जिसने तुम्हारी तरफ़ एक बड़ी मुफ़स्सल किताब नाज़िल की है।"*

وَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِیْنَ ۝۱۱۴

*"और (ऐ नबी ﷺ) जिन्हें हमने (पहले) किताब दी थी वह जानते हैं कि यह नाज़िल की गयी है आप के रब की तरफ़ से हक़ के साथ, तो हरगिज़ ना हो जाना शक करने वालों में से।"*

अहले किताब ज़बान से इक़रार करें ना करें, अपने दिलों में ज़रूर यक़ीन रखते हैं कि यह क़ुरान अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल करदा है।

## आयत 115

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ

*"और आप ﷺ के रब की बात तो सच्चाई और अद्ल पर मब्नी होने के ऐतबार से दर्जा-ए-कमाल तक पहुँच चुकी है।"*

आपके रब की बात उसकी मशीयत के मुताबिक़ मुकम्मल हो चुकी है, जैसे सूरह मायदा में फ़रमाया: {اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۭ} (आयत 3)।

لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ١١٥

*"उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।"*

## आयत 116

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

*"और अगर तुम पैरवी करोगे ज़मीन में बसने वालों की अक्सरियत की तो वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से लाज़िमन गुमराह कर देंगे।"*

जदीद जम्हूरी निज़ाम के फ़लसफ़े की नफ़ी के लिये यह बड़ी अहम आयत है। जम्हूरियत में असाबते राय के बजाये तादाद को देखा जाता है। बक़ौल इक़बाल:

*जमहूरियत एक तर्ज़े हुकूमत है कि जिसमें*
*बन्दों को गिना करते हैं, तौला नहीं करते!*

इस हवाले से क़ुरान का यह हुक्म बहुत वाज़ेह है कि अगर ज़मीन में बसने वालों की अक्सरियत की बात मानोगे तो

वह तुम्हें गुमराह कर देंगे। दुनिया में अक्सरियत तो हमेशा बातिल परस्तों की रही है। दौरे सहाबा रज़ि. में सहाबा किराम रज़ि. की तादाद दुनिया की पूरी आबादी के तनाज़ुर में देखें तो लाख के मुक़ाबले में एक की निस्बत भी नहीं बनती। इसलिये अक्सरियत को कुल्ली इख़्तियार देकर किसी खैर की तवक़्क़ो नहीं की जा सकती। हाँ एक सूरत में अक्सरियत की राय को अहमियत दी जा सकती है। वह यह कि अगर अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के अहकाम को क़तई उसूलों और land marks के तौर पर मान लिया जाये तो फिर उनकी वाज़ेह करदा हुदूद के अन्दर रहते हुए मुबाहात के बारे में अक्सरियत की बिना पर फ़ैसले हो सकते हैं। मसलन किसी दावत के ज़िमन में अगर यह फ़ैसला करना मक़सूद हो कि मेहमानों को कौनसा मशरूब पेश किया जाये तो ज़ाहिर है कि शराब के बारे में तो राय शुमार नहीं हो सकती, वह तो अल्लाह और रसूल ﷺ के हुक्म के मुताबिक़ हराम है। हाँ रूह अफ्ज़ा, कोका कोला, स्प्राइट वगैरह के बारे में आप अक्सरियत की राय का अहतराम करते हुए फ़ैसला कर सकते हैं। लेकिन इख़्तियारे मुतलक़ (absolute authority) और इक़तदार-ए-आला (sovereignty) अक्सरियत के पास हो तो इस सूरते हाल पर "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" ही पढ़ा जा सकता है। चुनाँचे कुल्ली इख़्तियार और इक़तदार-ए-आला तो बहरहाल अल्लाह के पास रहेगा, जो इस कायनात और इसमें मौजूद हर चीज़ का खालिक़ और मालिक है। अक्सरियत की राय पर फ़ैसले सिर्फ़ उसके अहकाम की हुदूद के अन्दर रहते हुए ही किये जा सकते हैं।

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾

*"यह नहीं पैरवी कर रहे मगर ज़न व तख़मीन की और यह नहीं कुछ कर रहे सिवाय इसके कि इन्होंने कुछ अन्दाज़े मुक़र्रर कर रखे हैं।"*

यानि यह महज़ गुमान की पैरवी करते हैं और अटकल के तीर तुक्के चलाते हैं, क़यास आराइयाँ करते हैं।

## आयत 117

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

*"यक़ीनन आप ﷺ का रब खूब जानता है उनको जो उसके रास्ते से भटके हुए हैं, और वह खूब वाक़िफ़ है उनसे भी जो हिदायत की राह पर हैं।"*

## आयत 118

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

*"पस खाओ उन चीज़ों में से जिन पर अल्लाह का नाम लिया गया है अगर तुम उसकी आयात पर ईमान रखते हो।"*

यहाँ खाने-पीने की चीज़ों की हिल्लत व हुरमत के बारे में मुशरिकीने अरब के जाहिलाना नज़रियात और तोहमात का रद्द किया गया है।

## आयत 119

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ

*"और तुम्हें क्या है कि तुम नहीं खाते वह चीज़ें जिन पर अल्लाह का नाम लिया गया हो"*

यह बहीरा, सायबा, वसीला और हाम वगैरह (बहवाला अल् मायदा:103) के बारे में तुम्हारे तमाम अक़ीदे मनघडत हैं। अल्लाह ने ऐसी कोई पाबन्दियाँ अपने बन्दों पर नहीं लगायीं। लिहाज़ा हलाल जानवरों को अल्लाह का नाम लेकर ज़िबह किया करो और बिला कराहत उनका गोश्त खाया करो।

وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ

*"जबकि अल्लाह तफ़सील बयान कर चुका है तुम्हारे लिये उन चीज़ों की जो हराम की गयी हैं तुम पर"*

यह तफ़सील सूरतुन्नहल के अन्दर आयी है। सूरतुन्नहल चूँकि सूरतुल अनआम से पहले नाज़िल हुई है इसलिये यहाँ फ़रमाया गया कि हलाल चीज़ों की तफ़सील तुम्हारे लिये पहले ही बयान की जा चुकी है।

اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ

*"सिवाय उस चीज़ के कि तुम मजबूर हो जाओ उस (के खाने) के लिये।"*

इसमें भी तुम्हारे लिये गुंजाइश है कि अगर इज़तरार है, जान पर बनी हुई है, भूख से जान निकल रही है तो इन

हराम चीज़ों में से भी कुछ खाकर जान बचायी जा सकती है।

وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَاۗىِٕهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ١١٩

*"और यक़ीनन बहुत से लोग़ ऐसे हैं जो बगैर इल्म के अपनी ख्वाहिशात की बिना पर लोगों को गुमराह करते फिरते हैं। यक़ीनन आप ﷺ का रब ख़ूब जानता है उन हद से तजावुज़ करने वालों को।"*

## आयत 120

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ۭ

*"और छोड़ दो (हर तरह के) गुनाह को, वह खुला हो या छुपा हुआ।"*

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ١٢٠

*"यक़ीनन जो लोग गुनाह कमाते हैं उन्हें जल्द ही बदला मिलेगा उसका जो वह जमा कर रहे हैं।"*

## आयत 121

وَلَا تَأْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ

*"और मत खाओ उसमें से जिस पर अल्लाह का नाम ना लिया गया हो, और यक़ीनन यह (इसका खाना) गुनाह है।"*

इस आयत का ताल्लुक़ भी मुशरिकीने अरब के ख़ुद साख्ता एतक़ादात और तोहमात से है। वह कहते थे कि बाज़ जानवरों को ज़िबह करते हुए अल्लाह का नाम सिरे से लेना ही नहीं चाहिये। यह हुक्म एक ख़ास मसले के हवाले से है, जिसकी वज़ाहत आगे आयत 138 में आयगी।

وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـِٕهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾

*"और यक़ीनन यह श्यातीन अपने साथियों को वही करते रहते हैं ताकि वह तुमसे झगड़ा करें, और अगर तुम इनका कहना मानोगे तो तुम भी मुशरिक हो जाओगे।"*

मुशरिकीने मक्का अपने ग़लत एतक़ादात की हिमायत में तरह-तरह की हुज्जत बाज़ी करते रहते थे, मसलन यह क्या बात हुई कि जो जानवर अल्लाह ने मारा है यानि अज़ ख़ुद मर गया है वह तो हराम क़रार दे दिया जाये और जिसको तुम ख़ुद मारते हो यानि ज़िबह करते हो उसको हलाल माना जाये? इसी तरह व सूद के बारे में भी दलील देते थे कि {اِنَّمَا

الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ} (अल् बक़रह:275) "कि यह बय (व्यापार) भी तो रिबा (सूद/ब्याज) ही की तरह है।" जैसे तिजारत में नफ़ा होता है ऐसे ही सूदी लेन-देन में भी नफ़ा होता है। यह क्या बात हुई कि दस लाख किसी को क़र्ज़ दिये, उससे चार हज़ार रूपये महीना मुनाफ़ा ले लिया तो वह नाजायज़ और दस लाख का मकान किसी को किराये पर देकर चार हज़ार रूपये महीना उससे किराया लिया जाये तो वह जायज़! इस तरह के अश्कालात बज़ाहिर बड़े दिलनशी होते हैं, जिनके बारे में यहाँ बताया जा रहा है कि इस तरह की बातें इनके श्यातीन इन्हें सिखाते रहते हैं ताकि वह तुमसे मुजादला करें, ताकि तुम्हें भी अपने साथ गुमराही के रास्ते पर ले चलें। लिहाज़ा तुम इनकी इस तरह की बातों को नज़रअंदाज़ करते रहा करो।

## आयत 122 से 140 तक

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ
بِهٖ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ
مِّنْهَا ۭ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ١٢٢
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا
فِيْهَا ۭ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا
يَشْعُرُوْنَ ١٢٣ وَاِذَا جَاۗءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ

حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ
حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا
صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ
صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ
ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ
اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَهٰذَا
صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ
وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ
جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ
وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا
بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ
مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ

بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ
اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا
عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ
رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾
وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ
يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ
اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِنَّ مَا
تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ
اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ
مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ
وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا

لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ
وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا
يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا
عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا
يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا
يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ
ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً
عَلَيْهِ ۗ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوْا مَا
فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ
عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۗ
سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۗ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ
الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا
مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۗ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا
مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ ع

## आयत 122

اَوَمَنۡ كَانَ مَيۡتًا فَاَحۡيَيۡنٰهُ

*"भला जो कोई था मुर्दा, फिर हमने उसे ज़िन्दा कर दिया"*

इससे मायनवी हयात व ममात मुराद है, यानि एक शख्स जो अल्लाह से वाक़िफ़ नहीं था, सिर्फ़ दुनिया का बंदा बना हुवा था, उसकी इंसानियत दरहक़ीक़त मुर्दा थी, वह हैवान की हैसियत से तो ज़िन्दा था लेकिन बहैसियत इंसान वह मुर्दा था, फिर अल्लाह ताआला ने उसे ईमान की हिदायत दी तो अब गोया वह ज़िन्दा हो गया।

وَجَعَلۡنَا لَهٗ نُوۡرًا يَّمۡشِىۡ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنۡ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيۡسَ بِخَارِجٍ مِّنۡهَا ؕ

*"और हमने उसके लिये रोशनी कर दी, अब इसके साथ वह चल रहा है लोगों के माबैन, क्या वह उस शख्स की तरह हो जायेगा जो अँधेरों में (भटक रहा) हो और उससे वह निकलने वाला भी ना हो।"*

كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلۡكٰفِرِيۡنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۲﴾

*"इसी तरह मुज़य्यन कर दिया गया है इन काफ़िरों के लिये जो कुछ यह कर रहे है।"*

मिसाल के तौर पर एक वह शख्स था जिसे पहले होश नहीं था, कभी उसने नज़रियाती मामलात की पेचीदगियों की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं की थी, लेकिन फिर उसको अल्लाह ने हिदायत दे दी, नूर-ए-क़ुरान से उसके सीने को मुनव्वर

कर दिया, अब वह उस नूर में आगे बढ़ा और बढ़ता चला गया। जैसे हज़रत उमर रज़ि. को हक़ की तरफ मुतवज्जह होने में छ: साल लग गये। हज़रत हमज़ा रज़ि. भी छ: साल बाद ईमान लाये। लेकिन अब उन्होंने क़ुरान को मशाले राह बनाया और अल्लाह के रास्ते में सरफ़रोशी की मिसालें पेश कीं। दूसरी तरफ़ वह लोग भी थे जो सारी उम्र उन्हीं अँधेरों में ही भटकते रहे और इसी हालत में उन्हें मौत आयी। तो क्या यह दोनों तरह के लोग बराबर हो सकते है?

## आयत 123

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ۭ

*"और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े मुजरिम खड़े किये ताकि वह उसमें खूब साज़िशें करे।"*

यह वही फ़लसफ़ा है जो क़ब्ल अज़ आयत 112 में बयान हुआ है। वहाँ फ़रमाया गया था कि श्याातीने इंस व जिन्न को हम खुद ही अम्बिया की दुश्मनी के लिये मुक़र्रर करते हैं। यहाँ पर इससे मिलती-जुलती बात कही गयी कि हम हर बस्ती के अन्दर वहाँ के सरदारों और बड़े-बड़े चौधरियों को ढील देते हैं कि वह हक़ के मुक़ाबले में खड़े हों, लोगों को सीधे रास्ते से रोकें, अपनी चालबाज़ियों और मक्कारियों से हक़परस्तों को आज़माइश में डालें ताकि इस अमल से साहिबे सलाहियत लोगों की सलाहियतें मज़ीद उजागर हों, उनके जौहर खुलें और उनकी ग़ैरते ईमानी को जिला मिले।

وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

*"हालांकि वह मकर नहीं करते मगर अपनी जानों के साथ, लेकिन उन्हें इसका शऊर नहीं है।"*

उन्हें यह शऊर ही नहीं कि उनकी चालबाज़ियों का सारा वबाल तो बिल आख़िर खुद उन्हीं पर पड़ेगा। जैसे हज़रत यासिर और हज़रत सुमैय्या रज़ि. के साथ अबु जहल ने जो कुछ किया था इसका वबाल जब उसके सामने आयेगा तब उसकी आँख खुलेगी और उस वक़्त तो यह आलम होगा कि *"जब आँख खुली गुल की तो मौसम था ख़िज़ां का!"*

## आयत 124

وَاِذَا جَاۗءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ۘ

*"और जब इनके पास (क़ुरान की) कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे जब तक कि हमें भी वही चीज़ ना दे दी जाये जो अल्लाह के (दूसरे) रसूलों को दी गयी थी।"*

आयाते क़ुरानिया मुख्तलिफ़ अंदाज़ से इनके सामने हक़ाइक़ व रमूज़ पेश करती हैं मगर इन दलाइल और बराहीन का तजज़िया करने और इन्हें मान लेने के बजाय यह लोग फिर वही बात दोहराते हैं कि जैसे पहले अम्बिया की क़ौमों को मौजज़े दिखाये गए थे हमें भी वैसे ही मौजज़ात दिखाये

जायें तो तब हम ईमान लाएँगे। इस सिलसिले में हक़ीकत यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत के मुताबिक़ जैसे मुनासिब समझा हर क़ौम और उम्मत के साथ मामला फ़रमाया। पुरानी उम्मतों को हिस्सी मौजज़े दिखाये गये थे, इसलिये कि वह नौए इंसानियत का दौरे तफ़ूलियत (बचपना) था। जब तक इंसानियत का मज्मुई फ़हम व शऊर हद्दे बलूगत को नहीं पहुँचा था तब तक हिस्सी मौजज़ात का ज़हूर ही मुनासिब था। जैसे बच्चे को बहलाने के लिये खिलौने दिये जाते हैं, लेकिन शऊर की उमर को पहुँच कर उसके लिये अक़ल और हिकमत की तालीम ज़रूरी होती है। लिहाज़ा अब जबकि बनी नौए इंसान बहैसियत मज्मुई संजीदगी और शऊर की उमर को पहुँच चुकी है, इसको हिस्सी और वक़्ती मौजज़ों के बजाय एक ऐसा मौजज़ा दिया जा रहा है जो दायमी भी है और इल्म व हिकमत का मिम्बा व शाहकार भी।

اَللّٰهُ اَعۡلَمُ حَيۡثُ يَجۡعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ

*"अल्लाह बेहतर जानता है कि वह अपनी रिसालत का काम किस से ले और किस तरह ले!"*

سَيُصِيۡبُ الَّذِيۡنَ اَجۡرَمُوۡا صَغَارٌ عِنۡدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيۡدٌۢ بِمَا كَانُوۡا يَمۡكُرُوۡنَ ﴿۱۲۴﴾

*"अनक़रीब पहुँचेगी उन मुजरिमों (गुनाह-गारों) को बहुत ही ज़िल्लत अल्लाह के यहाँ से और सख्त अज़ाब उनकी चालबाज़ियों के सबब जो वह कर रहे है।"*

## आयत 125

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ

*"तो अल्लाह जिस किसी को हिदायत से नवाज़ना चाहता है, उसके सीने को इस्लाम के लिये खोल देता है।"*

यह एक गौरतलब मअनवी हक़ीकत है। "शरह सद्र" अल्लाह की वह नेअमत और ख़ास इनायत है जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने सूरतुल नशरह की पहली आयत में हुज़ूर ﷺ के लिये एक बहुत बड़े अहसान के तौर पर किया है। {اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ}। लिहाज़ा हर मुस्लमान को इस शरह सद्र के लिये दुआ करनी चाहिये: اَللّٰھُمَّ نَوِّرْ قُلُوْبَنَا بِالْاِیْمَانِ وَاشْرَحْ صُدُوْرَنَا لِلْاِسْلَامِ "ऐ अल्लाह, ऐ हमारे रब! तू हमारे दिलों को नूरे ईमान से मुनव्वर फ़रमा दे और हमारे सीनों को इस्लाम के लिये खोल दे।" यानि अल्लाह तआला से ऐसी बातिनी बसीरत माँगनी चाहिये जिसकी वजह से इस्लाम की हर चीज़ हमें ठीक नज़र आये। और जब एक बंदा-ए-मोमिन में ऐसी बसीरत पैदा हो जाती है तो हर क़दम और हर मोड़ पर उसको अपने अन्दर से एक आवाज़ सुनाई देती है जो उसके हर अमल पर उसकी ताईद करती है। यह इंसान की ऐसी अन्दरूनी कैफ़ियत है जिसमें उसकी फ़ितरते सलीमा और नेकी के जज़्बे की आपस में ख़ुशगवार मुताबक़त पैदा हो जाती है और फिर उसे दीन के किसी हुक्म से किसी

क़िस्म की कोई अजनबियत महसूस नहीं होती। बक़ौल ग़ालिब:

*देखना तक़रीर की लज़्ज़त कि जो उसने कहा*
*मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है!*

وَمَنۡ يُّرِدۡ اَنۡ يُّضِلَّهٗ يَجۡعَلۡ صَدۡرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ‌ؕ

*"और जिसको गुमराह करना चाहता है उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है, घुटा हुआ (वह ऐसे महसूस करता है) गोया उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा है।"*

जैसे ऊँचाई पर चढ़ते हुए इंसान की साँस फूल जाती है और उसे महसूस होता है कि उसका दिल शायद धड़क-धड़क कर बाहर ही निकल आयेगा, ऐसे ही अगर अल्लाह की तरफ़ से इंसान को हिदायत की तौफ़ीक़ अता ना हुई हो तो उसके लिये राहे हक़ पर चलना दुनिया का मुश्किल तरीन काम बन जाता है। ज़रा सी कहीं आज़माइश आ जाये तो गोया उसके लिये क़यामत टूट पड़ती है और एक-एक कदम उठाना उसके लिये दूभर हो जाता है। दूसरी तरफ़ वह शख्स जिसको अल्लाह ने शरह सद्र की नेअमत से नवाज़ा है उसके लिये ना सिर्फ़ हक़ को क़ुबूल करना आसान होता है बल्कि इस राह की हर तकलीफ़ और हर मुश्किल को वह शौक और खंदहपेशानी से बर्दाश्त करता है।

كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾

*"इस तरह अल्लाह नापाकी मुस्सल्लत कर देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते।"*

**आयत 126**

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

*"और यह है तेरे रब का सीधा रास्ता। हमने अपनी आयात खूब तफ़सील से बयान कर दी हैं उन लोगों के लिये जो नसीहत हासिल करना चाहें।"*

**आयत 127**

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾

*"उनके लिये सलामती वाला घर है उनके रब के पास और वही उनका मददगार (दोस्त) है, बसबब उनके (नेक) अमाल के।"*

"दारुस्सलाम" जन्नत का दूसरा नाम है। उन्होंने अपनी मेहनतों, क़ुर्बानियों, मशक्क़तों और अपने ईसार (त्याग) के

सबब अल्लाह की दोस्ती कमाई है और हमेशा के लिये दारुस्सलाम के मुस्तहिक़ ठहरे हैं।

## आयत 128

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ

*"और जिस दिन वह जमा करेगा उन सबको (और फ़रमाएगा) ऐ जिन्नों की जमाअत! वाक़िअतन तुमने तो इन्सानों में से बहुतों को हथिया लिया।"*

वह जो तुम्हारे बड़े जिन्न अज़ाज़ील ने कहा था: {وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ} (सूरह आराफ़:17) "और तू इनकी अक्सरियत को शुक्र करने वाला नहीं पायेगा।" तो वाक़ई बहुत से इन्सानों को तुमने हथिया लिया है। यह गोया एक तरह की शाबाशी होगी जो अल्लाह की तरफ़ से उनको दी जायेगी।

وَقَالَ اَوْلِيٰۗؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ

*"और इन्सानों में से जो उनके साथी होंगे वह कहेंगे"*

इस पर जिन्नों के साथी इन्सानों की ग़ैरत ज़रा जागेगी कि अल्लाह तआला ने यह क्या कह दिया है कि जिन्नात ने हमें हथिया लिया है, शिकार कर लिया है। इस पर वह बोल उठेंगे:

رَبَّنَا اسۡتَمۡتَعَ بَعۡضُنَا بِبَعۡضٍ

*"ऐ हमारे परवरदिगार! हम आपस में एक-दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे"*

हम इनसे अपने काम निकलवाते रहे और यह हमसे मफ़ादात (फ़ायदे) हासिल करते रहे। हमने जिन्नात को अपना मुवक्किल बनाया, इनके ज़रिये से ग़ैब की ख़बरें हासिल कीं और कहानत की दुकानें चमकाईं।

وَّبَلَغۡنَاۤ اَجَلَنَا الَّذِیۡۤ اَجَّلۡتَ لَنَا ؕ

*"और अब हम अपनी इस मुद्दत को पहुँच चुके जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर कर दी थी।"*

قَالَ النَّارُ مَثۡوٰٮكُمۡ خٰلِدِیۡنَ فِیۡهَاۤ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ

*"अल्लाह फ़रमाएगा अब आग है तुम्हारा ठिकाना, तुम इसमें हमेशा-हमेश रहोगे, सिवाय इसके जो अल्लाह चाहे।"*

اِنَّ رَبَّكَ حَكِیۡمٌ عَلِیۡمٌ ﴿۱۲۸﴾

*"यक़ीनन आपका रब हकीम और अलीम है।"*

**आयत 129**

وَ كَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾

*"और इसी तरह हम ज़ालिमों को एक-दूसरे का साथी बना देते हैं उनकी करतूतों की वजह से।"*

## आयत 130

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ

*"ऐ जिन्नों और इन्सानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास नहीं आ गये थे रसूल तुम्ही में से, जो सुनाते थे तुम्हें मेरी आयात"*

अब चूँकि यह बात जिन्न व इंस दोनों को जमा करके कही जा रही है तो इस से यह साबित हुआ कि जो इन्सानों में से रसूल हैं वही जिन्नात के लिये भी रसूल हैं।

وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا

*"और तुम्हे ख़बरदार करते थे तुम्हारे इस दिन की मुलाक़ात से। वह कहेंगे कि हम गवाह हैं अपनी जानों पर"*

यहाँ पर عَلٰی के मायने मुख़ालिफ़ गवाही के हैं। यानि हम अपनी जानों के खिलाफ़ खुद गवाह हैं।

وَغَرَّتۡهُمُ الۡحَیٰوةُ الدُّنۡیَا وَشَهِدُوۡا عَلٰۤی اَنۡفُسِهِمۡ اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰفِرِیۡنَ ۝۱۳۰

*"और उन्हें धोखे में डाले रखा दुनियावी ज़िन्दगी ने, और वह खुद गवाही देंगे अपने खिलाफ़ कि वह यक़ीनन कुफ़्र की रविश पर चलते रहे।"*

क़ुरान मजीद में मैदाने हश्र के जो मकालमात आए हैं वह मुख्तलिफ़ आयात में मुख्तलिफ़ क़िस्म के हैं। मसलन यहाँ तो बताया गया है कि वह अपने खिलाफ़ खुद गवाही देंगे कि बेशक हम कुफ़्र करते रहे हैं। मगर इसी सूरत में पीछे हमने पढ़ा है: {ثُمَّ لَمۡ تَكُنۡ فِتۡنَتُهُمۡ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشۡرِكِیۡنَ} "उस वक़्त उनकी कोई चाल नहीं चल सकेगी सिवाय इसके कि वह अल्लाह की क़समें खा-खा कर कहेंगे कि ऐ हमारे रब हम तो मुशरिक नहीं थे।" चुनाँचे मालूम होता है कि मैदाने हश्र में बहुत से मराहिल होंगे और बेशुमार गिरोह मुवाखज़े के लिये पेश होंगे। यह मुख्तलिफ़ मराहिल में, मुख्तलिफ़ मौक़ों पर, मुख्तलिफ़ जमाअतों और गिरोहों के साथ होने वाले मुख्तलिफ़ मकालमात नक़ल हुए हैं।

## आयत 131

ذٰلِكَ اَنۡ لَّمۡ يَكُنۡ رَّبُّكَ مُهۡلِكَ الۡقُرٰى بِظُلۡمٍ وَّاَهۡلُهَا غٰفِلُوۡنَ ۝١٣١

*"यह इसलिये कि आपके रब की यह सुन्नत नहीं है कि वह बस्तियों को बर्बाद कर दे ज़ुल्म के साथ जबकि उसके रहने वाले बेख़बर हों।"*

इससे मुराद यह है कि मुख्तलिफ़ क़ौमों की तरफ़ रसूलों को भेजा गया और उन्होंने अपनी क़ौमों में रह कर इन्ज़ार, तज़कीर और तबशीर का फर्ज़ अदा कर दिया। फिर भी अगर उस क़ौम ने क़ुबूले हक़ से इन्कार किया तो तब उन पर अल्लाह का अज़ाब आया। ऐसा नहीं होता कि अचानक किसी बस्ती या क़ौम पर अज़ाब टूट पड़ा हो, बल्कि अल्लाह ने सूरह बनी इसराइल में यह क़ायदा कुल्लिया इस तरह बयान फ़रमाया है: {وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيۡنَ حَتّٰى نَبۡعَثَ رَسُوۡلًا} (आयत 15) यानि वह अज़ाबे इस्तेसाल जिससे किसी क़ौम की जड़ काट दी जाती है और उसे तबाह कर के नस्यम मंसिया कर दिया जता है, वह किसी रसूल की बेअसत के बगैर नहीं भेजा जाता, बल्कि रसूल आकर अल्लाह तआला की तरफ़ से हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना बिल्कुल मुबरहन कर देता है। इसके बावजूद भी जो लोग कुफ़्र पर अड़े रहते हैं उनको फिर तबाह व बर्बाद कर दिया जता है।

## आयत 132

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ

*"और हर एक के लिये दरजात हैं उनके अमल के ऐतबार से।"*

ज़ाहिर बात है कि सब नेकोकार भी एक जैसे नहीं हो सकते और ना ही सब बदकार एक जैसे हो सकते हैं, बल्कि आमाल के लिहाज़ से मुख्तलिफ़ अफ़राद के मुख्तलिफ़ मक़ामात और मरातिब होते हैं।

وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ١٣٢

*"और आपका रब बेख़बर नहीं है उससे जो यह लोग कर रहे हैं।"*

## आयत 133

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ

*"और आपका रब तो ग़नी है, रहमत वाला है।"*

उसे किसी को अज़ाब देकर कोई फ़ायदा नहीं होता और किसी की बंदगी और इताअत से उसका कोई रुका हुआ काम चल नहीं पड़ता। वह इन सब चीज़ों से बेनियाज़ है।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۗءُ

*"अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाये (ख़त्म कर दे) और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे ले आये।"*

वह इस पर क़ादिर है कि एक नई मख्लूक़ को तुम्हारा जानशीन बना दे, कोई नई species ले आये। अल्लाह का इख्तियार मुतलक़ है, वह चाहे तो एक नयी नस्ले आदम पैदा कर दे।

كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝۱۳۳

*"जिस तरह उसने तुम्हें उठाया है किसी और क़ौम की नस्ल में से।"*

जैसे क़ौमे आद अरब की बड़ी ज़बरदस्त और ताक़तवर क़ौम थी, लेकिन जब उसको तबाह बर्बाद कर दिया गया तो उन्ही में से कुछ अहले ईमान लोग जो हज़रत हूद अलै. के साथी थे वहाँ से हिजरत करके चले गये और उनके ज़रिये से बाद में क़ौमे समूद वजूद में आई। फिर क़ौमे समूद को भी हलाक कर दिया गया और उनमें से बच रहने वाले अहले ईमान से आगे नस्ल चली और मुख्तलिफ़ इलाक़ों में मुख्तलिफ़ क़ौमें आबाद हुईं। चुनाँचे जैसे तुम्हें हमने उठाया है किसी दूसरी क़ौम की नस्ल से, इसी तरीक़े से हम तुम्हें हटा कर किसी और क़ौम को ले आयेंगे।

## आयत 134

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝۱۳۴

*"यक़ीनन जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है (या धमकी दी जा रही है) वह आकर रहेगी, और तुम आजिज़ कर देने वाले नहीं हो।"*

तुम अपनी शाज़िशों से अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते, उसके क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते। अल्लाह के तमाम वादे पूरे होकर रहेंगे।

## आयत 135

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ

*"कह दीजिये ऐ मेरी क़ौम के लोगों! कर लो जो कुछ कर सकते हो अपनी जगह पर, मैं भी कर रहा हूँ (जो मुझे करना है)।"*

यह गोया चैलेंज करने का सा अंदाज़ है कि मुझे तुम लोगों को दावत देते हुए बारह बरस हो गए हैं। तुमने इस दावत के ख़िलाफ़ ऐडी-चोटी का ज़ोर लगाया है, हर-हर तरह से मुझे सताया है, तीन साल तक शअबे बनी हाशिम में महसूर रखा है, मेरे साथियों पर तुम लोगों ने तशद्दुद का हर मुमकिन हरबा आज़माया है। गर्ज़ तुम मेरे ख़िलाफ़ जो कुछ कर सकते थे करते रहे हो, अभी मज़ीद भी जो कुछ तुम कर सकते हो कर लो, जो मेरा फ़र्ज़े मंसबी है वह मैं अदा कर रहा हूँ।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝۱۳۵

*"तो अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जायेगा कि किसके लिये है आक़बत का घर। यक़ीनन ज़ालिम कभी फ़ला नहीं पायेंगे।"*

आक़बत की दाइमी कामयाबी किसके लिये है? किसके लिये वहाँ जन्नत है, रूह व रय्हान है और किसके लिये दोज़ख़ का अज़ाब है? यह अनक़रीब तुम लोगों को मालूम हो जायेगा।

## आयत 136

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا

*"और इन्होंने अल्लाह के लिये रखा है खुद उसी की पैदा की हुई खेती और मवेशियों में से एक हिस्सा"*

एक बड़े ख़ुदा को मान कर छोटे ख़ुदाओं को उसकी अलुहियत में शरीक कर देना ही दरअसल शिर्क है। इसमें बड़े ख़ुदा का इन्कार नहीं होता। जैसे हिन्दुओं में "महादेव" तो एक ही है जबकि छोटी सतह पर देवी-देवता बेशुमार हैं। इसी तरह अंग्रेज़ी में भी बड़े G से लिखे जाने वाला God हमेशा एक ही रहा है। वह Omnipotent है, Omniscient है, Omnipresent है, عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ है, वह بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ है, वह हर जगह मौजूद है। यह उसकी सिफ़ात हैं, यह उसके attributes हैं। लिहाज़ा उसके लिये तो G बड़ा (capital) ही आयेगा, लेकिन छोटे g से लिखे जाने वाले gods और goddesses बेशुमार हैं। इसी तरह अहले अरब का अक़ीदा था कि अल्लाह तो एक ही है, कायनात का ख़ालिक़ भी वही है, लेकिन ये जो देवियाँ और देवता हैं, इनका भी उसकी ख़ुदाई में कुछ दख़ल और इख्तियार है, ये अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिश करते हैं, अल्लाह तआला ने अपने

इख्तियारात में से कुछ हिस्सा इनको भी सौंप रखा है, लिहाज़ा अगर इनकी कोई दंडवत की जाये, नज़राने दिये जाएँ, इन्हें खुश किया जाये, तो इससे दुनिया के काम चलते रहते हैं।

अहले अरब के मारूफ़ ज़राए मआश दो ही थे। वह बकरियां पालते थे या खेतीबाड़ी करते थे। अपने अक़ीदे के मुताबिक़ उनका तरीक़ा यह था कि मवेशियों और फ़सल में से वह अल्लाह के नाम का एक हिस्सा निकाल कर सदक़ा करते थे जबकि एक हिस्सा अलग निकाल कर बुतों के नाम पर देते थे। यहाँ तक तो वह अपने तय इन्साफ़ से काम लेते थे कि खेतियों की पैदावार और मवेशियों में से अल्लाह के लिये भी हिस्सा निकाल लिया और अपने छोटे ख़ुदाओं के लिये भी। अब इसके बाद क्या तमाशा होता था वह आगे देखिये:

فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ

*"फिर कहते हैं अपने ख्याल से कि यह तो है अल्लाह के लिये और यह है हमारे शरीकों के लिये। तो जो हिस्सा इनके शरीकों का होता है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँच सकता और जो हिस्सा अल्लाह का होता है वह इनके शरीकों तक पहुँच जाता है।"*

अब अगर कहीं किसी वक़्त कोई दिक्क़त आ गयी, कोई ज़रुरत पड़ गयी तो अल्लाह के हिस्से में से कुछ निकाल कर काम चला लेते थे मगर अपने बुतों के हिस्से को हाथ नहीं लगाते थे। गोया बुत तो हर वक़्त उनके सरों पर खड़े होते थे। वह समझते थे कि अगर यह बुत नाराज़ हो गए तो फ़ौरन उनकी शामत आ जायेगी, लेकिन अल्लाह तो (मआज़ अल्लाह) ज़रा दूर था, इसलिये उसके हिस्से को अपने इस्तेमाल में लाया जा सकता था। उनकी इस सोच को इस मिसाल से समझा जा सकता है कि हमारे यहाँ देहात में एक आम देहाती पटवारी को डी. सी. के मुक़ाबले में ज़्यादा अहम समझता है। इसलिये कि पटवारी से उसे बराहेरास्त साबक़ा पड़ता है, जबकि डी. सी. की हैसियत का उसे कुछ अंदाज़ा नहीं होता। बहरहाल यह थी वह सूरतेहाल जिसमें उनके शरीकों के लिये मुख्तस किया गया हिस्सा अल्लाह को नहीं पहुँच सकता था, जबकि अल्लाह का हिस्सा उनके शरीकों तक पहुँच जाता था।

سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝١٣٦

*“क्या ही बुरा फ़ैसला है जो यह करते है।”*

## आयत 137

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ

*“और इसी तरह मुज़य्यन कर दिया है बहुत से मुशरिकीन के लिये उनके शुरकाअ ने अपनी औलाद को क़त्ल करना”*

قَتۡلَ اَوۡلَادِهِمۡ

شُرَكَآؤُهُمۡ

इसमें इशारा है मुशरिकीन के उन ऐतक़ादात (आस्थाओं) की तरफ़ जिनके तहत वह अपने बच्चों को जिन्नों या मुख्तलिफ़ बुतों के नाम पर क़ुर्बान कर देते थे। आज भी हिन्दुस्तान में इस तरह के वाक़िआत सुनने में आते हैं कि किसी ने अपने बच्चे को देवी को भेंट चढ़ा दिया।

لِيُرۡدُوۡهُمۡ وَلِيَلۡبِسُوۡا عَلَيۡهِمۡ دِيۡنَهُمۡ ؕ

*"ताकि वह उन्हें बरबाद करें और उनके दीन को इन पर मुश्तबा (doubtful) कर दें।"*

وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوۡهُ فَذَرۡهُمۡ وَمَا يَفۡتَرُوۡنَ ﴿۱۳۷﴾

*"और अगर अल्लाह चाहता तो वह यह सब कुछ ना कर सकते, तो छोड़ दीजिये इनको भी और उसको भी जो यह इफ़तरापरदाज़ी (बदनामी) कर रहे है।"*

दीन को मुश्तबा करने का एक तरीक़ा यह भी है कि ऐसे अक़ाइद और ऐसी चीज़ें भी दीन में शामिल कर दी जाएँ जिनका दीन से दूर का भी वास्ता नहीं है। यह क़त्ले औलाद भी इसकी मिसाल है। ज़ाहिर है यह सब कुछ वह दीन और मज़हब के नाम पर ही करते थे। फ़रमाया कि उन्हें छोड़ दें कि अपनी इफ़तरापरदाज़ियों (slanders) में लगे रहें।

## आयत 138

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ڰ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَاۗءُ بِزَعْمِهِمْ

*"और कहते हैं कि यह जानवर और यह खेती ममनूअ (probihited) हैं, इनको नहीं खा सकते मगर वही जिनके बारे में हम चाहें, अपने गुमान के मुताबिक"*

यानि यह सारी ख़ुद साख्ता पाबन्दियाँ वह बज़अमे ख्वेश दुरुस्त समझते थे।

وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَاۗءً عَلَيْهِ ۭ

*"और कुछ चौपाये हैं जिनकी पीठें हराम ठहराई गयी हैं, और कुछ चौपाये हैं जिन पर वह अल्लाह का नाम नहीं लेते, यह सब कुछ झूट गढ़ते हैं उस पर।"*

यानि अपने मुशरिकाना तोहमात के तहत बाज़ जानवरों को सवारी और बार बरदारी के लिये ममनूअ क़रार देते थे और कुछ हैवानात के बारे में तय कर लेते थे कि इनको जब ज़िबह करना है तो अल्लाह का नाम हरगिज़ नहीं लेना। लिहाज़ा इससे पहले आयत 121 में जो हुक्म आया था कि मत खाओ उस चीज़ को जिस पर अल्लाह तआला का नाम ना लिया

जाये वह दरअसल उनके इस अक़ीदे और रस्म के बारे में था, वह आम हुक्म नहीं था।

سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾

*"अल्लाह अनक़रीब उन्हें सज़ा देगा उनके इस इफ़्तरा की।"*

यह झूठी चीज़ें जो इन्होंने अल्लाह के बारे में गढ़ ली हैं, अल्लाह ज़रूर इन्हें इस झूठ की सजा देगा।

## आयत 139

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ

*"और वह कहते हैं जो कुछ इन चौपायों के पेटों में है वह ख़ास हमारे मर्दों के लिये है और हमारी औरतों पर वह हराम है।"*

यानि किसी हामला मादा जानवर (ऊँटनी या बकरी वगैरह) के पेट में जो बच्चा है उसका गोश्त सिर्फ़ मर्दों के लिये होगा, औरतों के लिये उसका खाना जायज़ नहीं है।

وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَاۗءُ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ

*"और अगर वह मुर्दा हो तो फिर वह सब उसमें हिस्सेदार होंगे। अल्लाह अनक़रीब उन्हें सज़ा देगा उनकी इन बातों की जो उन्होंने गढ़ली हैं, वह यक़ीनन हकीम और अलीम है।"*

وَصْفَهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ

عَلِيْمٌ ١٣٩

इन सारी रस्मों और खुद साख्ता अक़ाइद के बारे में वह दावा करते थे कि यह हमारी शरीअत है जो हज़रत इब्राहीम अलै. से चली आ रही है और हमारे आबा व अजदाद भी इसी पर अमल करते थे।

## आयत 140

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَاۗءً عَلَي اللّٰهِ ۭ

*"यक़ीनन ना मुराद हुए वह लोग जिन्होंने अपनी औलाद को क़त्ल किया बेवक़ूफ़ी से, बगैर इल्म के, और उन्होंने हराम कर लिया (अपने ऊपर) वह रिज़्क़ जो अल्लाह ने उन्हें दिया था अल्लाह पर इफ़तरा करते हुए।"*

यानि इन सारी गलत रसूमात का इंतसाब (दावा) वह लोग अल्लाह के नाम करते थे। दूसरी तरफ़ वह बुतों के नाम पर क़ुर्बानियाँ देते और स्थानों पर नज़राने भी चढ़ाते थे। इसी तरह के नज़राने वह अल्लाह के नाम पर भी देते थे। यह सारे मामलात उनके यहाँ अल्लाह तआला और बुतों के लिये मुश्तरका (संयुक्त) तौर पर चल रहे थे। इस तरह उन्होंने सारा दीन मुश्तबा और गडमड कर दिया था।

قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا
مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾

*"वह गुमराह हो चुके हैं और अब हिदायत पर आने वाले नहीं हैं।"*

# आयत 141 से 144 तक

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ
مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا
مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا
تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ وَمِنَ
الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا
تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾
ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ
اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ

الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ اَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَاۗءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِھٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرٰي عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭاِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ١٤٤ۧ

**आयत 141**

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ

*"और वही है (अल्लाह) जिसने पैदा किये बाग़ात वह भी जो टहनियों पर चढ़ाये जाते हैं और वह भी जो नहीं चढ़ाये जाते"*

"**معروشات**" के ज़ुमरे में बेल नुमा पौधे आते हैं, जिनका अपना तना नहीं होता जिस पर खुद वह खड़े हो सकें। इसलिये ऐसे पौधों को सहारा देकर खड़ा करना पड़ता है, जैसे अंगूर की बेल वगैरह। दूसरी तरफ "**غیرمعروشات**" में आम दरख्त शामिल हैं जो खुद अपने मज़बूत तने पर खड़े होते हैं, जैसे अनार या आम का दरख्त है।

وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ

*"और खजूर और खेती, जिसके ज़ायक़े मुख्तलिफ़ हैं, और ज़ैतून और अनार, एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी और मुख्तलिफ़ भी।"*

وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا

وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ

यह अल्लाह तआला की सनाई की मिसालें हैं कि उसने मुख्तलिफ़ अल नौ दरख्त, खेतियाँ और फ़ल पैदा किये, जो आपस में मिलते-जुलते भी हैं और मुख्तलिफ़ भी। जैसे Citrus Family के फलों में कैनोए, फ्रूटर और माल्टा वगैरह शामिल हैं। बुनियादी तौर पर यह सब एक ही क़िस्म या खानदान से ताल्लुक़ रखते हैं और शक्ल, जायक़ा वगैरह में एक-दूसरे के मुशाबेह होने के बावजूद सबकी अपनी-अपनी अलग पहचान है।

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ

*"खाया करो उनके फलों में से जबकि वह फ़ल दें और अल्लाह का हक़ अदा करो उनके काटने (और तोड़ने) के दिन"*

यानि जैसे ज़मीन की पैदावार में से उश्र का अदा करना फ़र्ज़ है, ऐसे ही इन फ़लों पर भी ज़कात देने का हुक्म है। लिहाज़ा खेती और फ़लों की पैदावार में से अल्लाह तआला का हक़ निकाल दिया करो।

وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾

*"और बेजा (फ़ुज़ूल) खर्च ना करो, यक़ीनन अल्लाह को बेजा खर्च करने वाले पसंद नहीं हैं।"*

## आयत 142

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ

*"और चौपायों में से (उसने पैदा किये हैं) कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन से लगे हुए।"*

حَمُوْلَةً वह जानवर हैं जो क़द-काठ और डील-डौल में बड़े-बड़े हैं और जिनसे बार-बरदारी का काम लिया जा सकता है, मसलन घोड़ा, खच्चर, ऊँट वगैरह। इनके बरअक्स कुछ ऐसे जानवर हैं जो इस तरह की ख़िदमत के अहल नहीं हैं और छोटी जसामत की वजह से इसतआरतन उन्हें (फर्श) ज़मीन से मंसूब किया गया है, गोया ज़मीन से लगे हुए हैं, मसलन भेड़-बकरी वगैरह। यह हर तरह के जानवर अल्लाह तआला ने इन्सानों के लिये पैदा किये हैं।

كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ١٤٢

*"खाओ उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें रिज़्क़ दिया है और शैतान के नक्शेकदम क़दम की पैरवी ना करो, यक़ीनन वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।"*

## आयत 143

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ

*"यह आठ क़िस्म के चौपाये हैं (जो तुम्हारे यहाँ आम तौर पर पाए जाते हैं)।"*

यह उस बात का जवाब है जो उन्होंने हामला मादाओं के बारे में कही थी कि उनके पेटों में जो बच्चे हैं उनका गोश्त सिर्फ़ मर्द ही खा सकते हैं, जबकि औरतों पर यह हराम है। हाँ अगर मरा हुआ बच्चा पैदा हो तो उसका गोश्त मर्दों के साथ औरतें भी खा सकती हैं।

مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۭ

*"भेड़ में से दो (नर व मादा) और बकरी में से दो (नर व मादा)।"*

قُلْ ءٰۗالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ

*"(ऐ नबी ﷺ) इनसे पूछिये कि अल्लाह ने इन दोनों मुज़क्करों को हराम किया है या दोनों मौअन्नसों को? या जो कुछ इन दोनों मौअन्नसों के रहमों में है (उसे हराम किया है)?"*

गौरतलब नुक्ता है कि इसमें हुरमत आखिर कहाँ से आई है। अल्लाह ने इनमें से किसको हराम किया है? नर को, मादा को, या बच्चे को? फिर यह कि अगर कोई शय हराम है तो सबके लिये है और अगर हराम नहीं है तो किसी के लिये भी नहीं है। यह जो तुमने नये-नये क़वानीन बना लिये हैं वह कहाँ से ले आये हो?

نَبِّـُٔوْنِیْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿١٤٣﴾

*"मुझे बताओ किसी भी सनद के साथ अगर तुम सच्चे हो।"*

**आयत 144**

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَیْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَیْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَیْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَیَیْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَیْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَیَیْنِ ؕ

*"और (इसी तरह) ऊँट में से दो (नर और मादा), और गाय में से दो (नर और मादा)। इनसे पूछिये क्या उसने इन दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादाओं को? या जो कुछ इन मादाओं के रहमों में है (उसे हराम किया है)?"*

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ

*"क्या तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें यह नसीहतें कीं?"*

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ

*"तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो झूठ गढ़ कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर दे ताकि लोगों को गुमराह करे बग़ैर किसी इल्म के।"*

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾

*"यक़ीनन अल्लाह ऐसे जालिमों को राहयाब नहीं करेगा।"*

## आयत 145 से 150 तक

قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِىْ مَاۤ اُوْحِىَ اِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ
اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ
فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ
غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَعَلَى
الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ
وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ اِلَّا مَا حَمَلَتْ
ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ
جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ٘ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ فَاِنْ

كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ
بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٧﴾ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ
اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا
مِنْ شَيْءٍ ۭ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى
ذَاقُوْا بَاْسَنَا ۭ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ
لَنَا ۭ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا
تَخْرُصُوْنَ ﴿١٤٨﴾ قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ
لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ
يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا
تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ
يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٠﴾ ع

## आयत 145

قُلۡ لَّاۤ اَجِدُ فِیۡ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰی طَاعِمٍ یَّطۡعَمُهٗۤ

*"कह दीजिये मैं तो नहीं पाता इस (क़ुरान) में जो मेरी तरफ़ वही किया गया है, कोई चीज़ हराम किसी खाने वाले पर कि वह उसे खाता हो"*

यहाँ फिर वह क़ानून दोहराया जा रहा है कि शरीअत में किन चीज़ों को हराम किया गया है।

اِلَّاۤ اَنۡ یَّکُوۡنَ مَیۡتَةً

*"सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो"*

इस मुर्दार की क़िस्में {الۡمُنۡخَنِقَةُ وَالۡمَوۡقُوۡذَةُ وَالۡمُتَرَدِّیَةُ} और तफ़सील सूरतुल मायदा की आयत 3 में हम पढ़ चुके हैं। यानि जानवर किसी भी तरह से मर गया हो वह मुर्दार के ज़ुमरे में शुमार होगा। लेकिन अगर मरने से पहले उसे ज़िबह कर लिया जाये और ज़िबह करने से उसके जिस्म से खून निकल जाये तो उसका खाना जायज़ होगा।

اَوۡ دَمًا مَّسۡفُوۡحًا

*"या खून हो बहता हुआ"*

यानि एक खून तो वह है जो मज़बूह जानवर के जिस्म के सुकेड और खिंचाव (rigormortis) की इन्तहाई कैफ़ियत के बावजूद भी किसी ना किसी मिक़दार में गोश्त में रह जाता है। इसी तरह तिली के खून का मामला है। लिहाज़ा यह चीज़ें हराम नहीं हैं, लकिन जो खून बहाया जा सकता हो और जो ज़िबह करने के बाद जानवर के जिस्म से निकल कर बह गया हो वह खून हराम है।

اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ

*"या खंज़ीर का गोश्त कि वह तो है ही नापाक, या कोई नाजायज़ (गुनाह की) शय, जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो।"*

यानि सुअर के गोश्त की वजह-ए-हुरमत तो यह है कि वह असलन नापाक है। इसके अलावा कुछ चीज़ों की हुरमत हुक्मी है, जो फ़िस्क़ (अल्लाह की नाफ़रमानी) के सबब लाज़िम आती है। चुनाँचे {اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ} इसी वजह से हराम क़रार पाया, यानि जिस पर गैरुल्लाह का नाम लिया गया हो। इस हुक्म में वह क़ुर्बानी भी शामिल है जो अल्लाह के अलावा किसी और के तक़र्रुब की नीयत पर दी गयी हो। मसलन ऐसा जानवर जो किसी क़ब्र या किसी ख़ास स्थान पर जाकर ज़िबह किया जाये, अगरचे उसे ज़िबह करते वक़्त अल्लाह ही का नाम लिया जाता है मगर दिल के अन्दर किसी गैरुल्लाह के तक़र्रुब की ख्वाहिश का चोर मौजूद होता है।

فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٤٥

*"लेकिन (इन सूरतों में भी अगर) कोई मजबूर हो जाये, ना तो उसके अन्दर इनकी तलब हो और ना हद से बढ़े, तो यक़ीनन आपका रब बख्शने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।"*

किसी गैर मामूली सूरते हाल में इन हराम चीज़ों में से कुछ खा कर अगर जान बचाई जा सके तो मशरूत तौर पर इसकी इजाज़त दी गयी है।

## आयत 146

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ

*"और हमने उन पर जो यहूदी हुए थे हराम कर दिये थे एक नाख़ून (खुर) वाले तमाम जानवर।"*

कुछ जानवरों के पाँव फटे हुए होते हैं, जैसे गाय, बकरी वगैरह, जबकि कुछ जानवरों का एक ही पाँव (खुर) होता है। ऐसे एक खुर वाले जानवर मसलन घोड़ा, गधा वगैरह यहूदियों पर हराम कर दिये गये थे। जैसा कि हम पढ़ आये हैं, यहूदियों पर जो चीज़ें हराम की गयीं थीं, उनमें से बाज़ तो असलन हराम थीं मगर कुछ चीज़ें उनकी शरारतों और नाफ़रमानियों की वजह से बतौर सज़ा उनके लिये हराम कर दी गयी थीं।

وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۭ

*"और गाय और बकरी (वगैरह) में से हमने हराम कर दी थी उन पर उनकी चर्बी सिवाय उसके कि जो उनकी पीठ या अंतड़ियों या हड्डियों के साथ लगी हुई हो।"*

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ

*"यह हमने उन्हें सजा दी थी उनकी सरकशी की वजह से"*

यानि इस क़िस्म के जानवरों की आम खुली चर्बी उनके लिये हराम थी। लेकिन यह हुक्म आसमानी शरीअत का मुस्तक़िल हिस्सा नहीं था, बल्कि उनकी शरारतों और नाफ़रमानियों की वजह से यह तंगी उन पर बतौर सज़ा की गयी थी।

وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝١٤٦

*"और यक़ीनन हम सच कहने वाले हैं।"*

## आयत 147

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ

*"तो अगर यह लोग आप ﷺ को झुठला दें तो कह दीजिये कि तुम्हारा रब बड़ी वसीअ रहमत वाला है।"*

यानि इस जुर्म की पादाश में वह तुम्हें फ़ौरन नहीं पकड रहा और ना फ़ौरन मौज्ज़ा दिखा कर तुम्हारी मुद्दत या मोहलते अमल ख़त्म करने जा रहा है, बल्कि उसकी रहमत का तक़ाज़ा यह है कि अभी तुम्हें मज़ीद मोहलत दी जाये।

وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝۱۴۷

*"और उसका अज़ाब टाला नहीं जा सकेगा मुजरिमों की क़ौम से।"*

जब उसकी तरफ से गिरफ्त होगी तो {اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ} (अल् बुरूज:12) के मिस्दाक़ यक़ीनन बड़ी सख्त होगी और फिर किसी की मजाल ना होगी कि उस गिरफ़्त की सख्ती को टाल सके।

## आयत 148

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَاۗؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۭ

*"अनक़रीब कहेंगे यह मुशरिक लोग कि अगर अल्लाह चाहता तो ना हम शिर्क करते ना हमारे आबा व अजदाद और ना ही हम किसी चीज़ को हराम ठहराते।"*

यानि मुशरिकीने मक्का इस तरह के दलाइल देते थे कि जिन चीज़ों के बारे में हमें बताया जा रहा है कि वह हराम नहीं हैं और हमने ख्वाह मा ख्वाह उनको हराम ठहरा दिया है, ऐसा करना हमारे लिये मुमकिन नहीं था। आखिर अल्लाह तो عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ, उसका तो हमारे इरादे और अमल पर कुल्ली इख़्तियार था। लिहाज़ा यह सब काम अगर गलत थे तो वह हमें यह काम ना करने देता और गलत रास्ता

इख़्तियार करने से हमें रोक देता। इस तरह की कट हुज्जतियाँ करना इंसान की फ़ितरत है।

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ

*"इसी तरह झुठलाया था उन लोगों ने जो इनसे पहले थे यहाँ तक कि उन्होंने हमारे अज़ाब का मज़ा चख लिया।"*

قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ۱۴۸

*"(आप ﷺ इनसे) कहिये कि क्या तुम्हारे पास कोई सनद है जिसे तुम हमारे सामने पेश कर सको? तुम तो महज़ गुमान की पैरवी कर रहे हो और सिर्फ़ अंदाज़ों और अटकल की बातें करते हो।"*

## आयत 149

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ

*"कह दीजिये कि बस अल्लाह के हक़ में साबित हो चुकी है पूरी-पूरी पहुँच जाने वाली हुज्जत।"*

तुम्हारी इस कट हुज्जती के मुक़ाबले में हक़ीक़त तक पहुँची हुई हुज्जत सिर्फ़ अल्लाह की है। उसने हर तरह से तुम पर इत्मामे हुज्जत कर दिया है, तुम्हारी हर नामाक़ूल बात को माक़ूल तरीक़े से रद्द कर दिया है, मुख्तलिफ़ अंदाज़ से तुम्हें हर बात समझा दी है। इमामुल हिन्द शाह वलीउल्लाह देहलवी रहि. ने अपनी शहरा-ए-आफ़ाक़ किताब

"हुज्जतुलाह अल् बालगा" का नाम इसी आयत से अखज़ किया है।

فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٤٩﴾

*"पस अगर वह चाहता तो तुम सबको हिदायत पर ले आता।"*

अगर अल्लाह के पेशे नज़र सबको नेक बनाना ही मक़सूद होता तो आने वाहिद में तुम सबको अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि. जैसा नेक बना देता, लेकिन उसने दुनिया का यह मामला अमल और इख़्तियार के तहत रखा है, और इसका मक़सद सूरतुल मुल्क (आयत 2) में इस तरह बयान किया गया है: {خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا} "उसने मौत व हयात को पैदा ही इसलिये किया है कि तुम्हें आज़माये और जाँचे कि तुम में से कौन है जो नेक अमल इख़्तियार करता है।"

## आयत 150

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ

*"कहिये ज़रा लाओ तो सही अपने वह गवाह जो यह गवाही दे सकें कि अल्लाह ने इन चीज़ों को हराम किया है।"*

क्या तुम्हारे पास कोई किताब या इल्मी सनद मौजूद है जिसे तुम अपने मौक़फ़ के हक़ में बतौर गवाही पेश कर सको?

अगर इस तरह की कोई ठोस शहादत है तो उसे हमारे सामने पेश करो।

فَإِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ

*"पस अगर यह लोग (कट हुज्जती में) गवाही दे भी दें तो आप ﷺ इनके साथ गवाही मत दीजिये।"*

وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝١٥٠

*"और मत पैरवी कीजिये उन लोगों की ख्वाहिशात की जिन्होंने हमारी आयात को झुठला दिया है और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और वही हैं जो दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं।"*

इस सूरह मुबारका की पहली आयत भी {ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ} के अल्फ़ाज़ पर ख़त्म हुई थी और अब यह आयत भी {وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ} के अल्फ़ाज़ पर ख़त्म हो रही है। यानि आख़िरत के यह मुन्किर इतना कुछ सुनने के बावजूद भी किस क़द्र दीदा दिलेरी के साथ शिर्क पर डटे हुए हैं। इन्हें अल्लाह के हुज़ूर हाज़री का कुछ भी खौफ़ महसूस नहीं हो रहा और जिसको चाहते हैं अल्लाह के बराबर कर देते हैं।

# आयत 151 से 154 तक

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا
بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
مِّنْ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا
النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ١٥١ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا
بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ
اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ١٥٢ۙ
وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا
السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ
بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ١٥٣ ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
تَمَامًا عَلَي الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ
وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ١٥٤ۧ

## आयत 151

قُلۡ تَعَالَوۡا اَتۡلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمۡ عَلَيۡكُمۡ

*“कहिये आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम पर क्या चीज़ें हराम की हैं”*

तुम लोग जब चाहते हो किसी बकरी को हराम क़रार दे देते हो, कभी ख़ुद ही किसी ऊँट को मोहतरम ठहरा लेते हो, और इस पर मुस्तज़ाद (रिझाना) यह कि फिर अपनी इन ख़ुराफ़ात को अल्लाह की तरफ मंसूब कर देते हो। आओ मैं तुम्हें वाज़ेह तौर पर बताऊँ कि अल्लाह ने असल में किन चीज़ों को मोहतरम ठहराया है, ममनूअ और हराम चीज़ों के बारे में अल्लाह के क्या अहकाम हैं और इस सिलसिले में उसने क्या-क्या हुदूद व क़ैद मुक़र्रर की हैं। यह मज़मून तफ़सील के साथ सूरह बनी इसराइल में आया है। वहाँ इन अहकाम की तफ़सील में पूरे दो रुकूअ (तीसरा और चौथा) नाज़िल हुए हैं। एक तरह से उन्ही अहकाम का खुलासा यहाँ इन आयात में बयान हुआ है। शरीअत के बुनियादी अहकाम दरअसल ज़रूरत और हिकमते इलाही के मुताबिक़ क़ुरान हकीम में मुख्तलिफ़ जगहों पर मुख्तलिफ़ अन्दाज़ में वारिद हुए हैं। सूरतुल बक़रह (दसवें रुकूअ) में जहाँ बनी इसराइल से मीसाक़ (क़सम) लेने का ज़िक्र आया है वहाँ दीन के असासी निकात भी बयान हुए हैं। फिर इसके बाद शरई अहकाम की कुछ तफ़सील हमें सूरतुन्निसा में मिलती है। उसके बाद यहाँ इस सूरत में और फिर इन्ही अहकाम की तफ़सील सूरह बनी इसराइल में है।

اَلَّا تُشۡرِكُوۡا بِهٖ شَيۡـًٔـا وَّبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا‌ ۚ

*"यह कि किसी शय को उसका शरीक ना ठहराओ और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करो।"*

यानि सबसे पहले तो अल्लाह तआला ने अपने साथ शिर्क को हराम ठहराया है और दूसरे नंबर पर वालिदैन के हुक़ूक़ में कोताही हराम क़रार दी है। क़ुरान हकीम में यह तीसरा मक़ाम है जहाँ हुक़ूक़ अल्लाह के फ़ौरन बाद हुक़ूक़ुल वालिदैन का तज़किरा आया है। इससे पहले सुरतूल बक़रह आयत 83 और सूरतुन्निसा आयत 36 में वालिदेन के हुक़ूक़ का ज़िक्र अल्लाह के हुक़ूक़ के फ़ौरन बाद किया गया है।

وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَوۡلَادَكُمۡ مِّنۡ اِمۡلَاقٍ‌ؕ نَحۡنُ نَرۡزُقُكُمۡ وَاِيَّاهُمۡ‌ ۚ

*"और अपनी औलाद को क़त्ल ना करो तंगदस्ती के खौफ़ से, हम तुम्हें भी रिज़्क़ देते हैं और उन्हें भी (देंगे)।"*

وَلَا تَقۡرَبُوا الۡفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنۡهَا وَمَا بَطَنَ‌ ۚ

*"और बेहयाई के कामों के क़रीब भी मत जाओ, ख्वाह वह ज़ाहिर हों या ख़ुफ़िया।"*

وَلَا تَقۡتُلُوا النَّفۡسَ الَّتِىۡ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالۡحَـقِّ‌ ؕ

*"और मत क़त्ल करो उस जान को जिसे अल्लाह ने मोहतरम ठहराया है मगर हक़ के साथ।"*

बुनियादी तौर पर अल्लाह तआला ने हर इंसानी जान को मोहतरम ठहराया है। लिहाज़ा किसी उसूल, हक़ और क़ानून के तहत ही इंसानी जान का क़त्ल हो सकता है। क़त्ले अम्द के बदले में क़त्ल, क़त्ले मुर्तद, मुस्लमान ज़ानी या ज़ानिया (अगर शादीशुदा हों) का क़त्ल, हर्बी (जंगी) काफ़िर वग़ैरह का क़त्ल। यह इंसानी क़त्ल की चंद जायज़ और क़ानूनी सूरतें हैं।

ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝١٥١

*"यह बातें हैं जिनकी अल्लाह तुम्हें वसीयत कर रहा है ताकि तुम अक़्ल से काम लो।"*

## आयत 152

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ

*"और यतीम के माल के करीब मत फटको, मगर बेहतरीन तरीक़े से (उसके माल की हिफ़ाज़त करो) यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए।"*

यतीम के माल को हड़प करना या अपना रद्दी माल उसके माल में मिला कर उसके अच्छे माल पर क़ब्ज़ा करने का हीला (छल-कपट) करना भी हराम है। बुनियादी तौर पर तो यह मक्की दौर के अहकाम हैं, लेकिन यतीमों के हुक़ूक़ की अहमियत के पेशेनज़र मदनी सूरतों में भी इस बारे में अहकाम आये हैं, मसलन सूरतुल बक़रह आयात 220 और सूरतुन्निसा आयात 2 में भी यतीमों के अमवाल का ख्याल

रखने की ताकीद की गयी है, जो इससे क़ब्ल हम पढ़ चुके हैं।

وَاَوۡفُوا الۡكَيۡلَ وَالۡمِيۡزَانَ بِالۡقِسۡطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَهَا ۚ

*"और पूरा करो नाप और तोल को अद्ल के साथ। हम नहीं ज़िम्मेदार ठहराएँगे किसी भी जान को मगर उसकी वुसअत (हिम्मत) के मुताबिक़।"*

यानि बगैर किसी इरादे के अगर कोई कमी-पेशी हो जाये तो इस पर गिरफ़्त नहीं। जैसे दुआ के लिये हमें यह कलिमात (सूरतुल बक़रह, 286) सिखाये गये हैं: {رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذۡنَاۤ اِنۡ نَّسِيۡنَاۤ اَوۡ اَخۡطَاۡنَا} "ऐ हमारे रब! अगर हम भूल जाएँ या हमसे खता हो जाये तो हमसे मुवाख्ज़ा ना करना।" लेकिन अगर जान-बूझ कर ज़रा सी भी डंडी मारी तो वह क़ाबिले गिरफ़्त है। इसलिये कि अमलन मअसियत का इरतकाब करना दरहक़ीक़त इस बात का सबूत है कि या तो तुम्हें आख़िरत का यक़ीन नहीं है या फिर यह यक़ीन नहीं है कि अल्लाह तुम्हें देख रहा है। गोया अम्दन ज़रा सी मनफ़ी जम्बिश में भी ईमान की नफ़ी का अह्तमाल है।

وَاِذَا قُلۡتُمۡ فَاعۡدِلُوۡا وَلَوۡ كَانَ ذَا قُرۡبٰى ۚ وَبِعَهۡدِ اللّٰهِ اَوۡفُوۡا ؕ

*"और जब भी बात करो तो अद्ल (की बात) करो, ख्वाह क़राबतदार ही (का मामला) हो, और अल्लाह के अहद को पूरा करो।"*

तुम्हारी बात-चीत खरी और इन्साफ़ पर मब्नी हो। इसमें जानबदारी नहीं होनी चाहिये, चाहे क़राबतदारी ही का मामला क्यों ना हो। इसी तरह अल्लाह के नाम पर, अल्लाह के हवाले से, अल्लाह की क़सम खाकर जो भी अहद किया जाये उसको भी पूरा करो। जैसे اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ भी एक अहद है जो हम अल्लाह से करते हैं। हर इन्सान ने दुनिया में आने से पहले भी अल्लाह से एक अहद किया था, जिसका ज़िक्र सूरतुल आराफ़ (आयात 127) में मिलता है। इस तरह रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में भी बहुत से अहद होते हैं जिनको पूरा करना ज़रूरी है।

ذٰلِكُمۡ وَصّٰىكُمۡ بِهٖ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ﴿١٥٢﴾

*"यह हैं (वह चीज़ें) जिनका अल्लाह तुम्हें हुक्म कर रहा है ताकि तुम नसीहत अखज़ (हासिल) करो।"*

यह वह चीज़ें हैं जो दीन में अहमियत की हामिल और इंसानी किरदार की अज़मत की अलामत हैं। यह इंसानी तमद्दुन और अख्लाक़ियात की बुनियादें हैं।

## आयत 153

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِىۡ مُسۡتَقِيۡمًا فَاتَّبِعُوۡهُ‌ ۚ

*"और यह कि यही मेरा सीधा रास्ता है, पस तुम इसकी पैरवी करो।"*

दीन के असल उसूल तो वह हैं जो हम बयान कर रहे हैं। तुम्हारे खुद साख्ता तौर-तरीक़े तो गोया ऐसी पगडंडियाँ हैं जिनका सिराते मुस्तक़ीम से कोई ताल्लुक़ नहीं। सिराते

मुस्तक़ीम तो सिर्फ़ वह है जिस पर हमारा रसूल ﷺ हमारे बताये हुए तरीक़े के मुताबिक़ चल रहा है।

وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ؕ

*"और (इस सिराते मुस्तक़ीम को छोड़ कर) दूसरे रास्तों पर ना पड़ जाओ कि वह तुम्हें अल्लाह की राह से भटका कर मुन्तशिर कर देंगे।"*

यानि अगर तुम खुद साख्ता मुख्तलिफ़ पगडंडियों पर चलने की कोशिश करोगे तो सीधे रास्ते से भटक जाओगे। लिहाज़ा तुम सब रास्तों को छोड़ कर स्वाअस्सबील पर क़ायम रहो।

ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

*"यह हैं वह बातें जिनकी अल्लाह तुम्हें वसीयत कर रहा है ताकि तुम तक़वा इख्तियार करो।"*

## आयत 154

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً

*"फिर हमने मूसा को किताब दी थी अपनी नेअमत पूरी करने के लिये अहसान की रविश इख्तियार करने वाले पर और (उसमें थी) हर शय की तफ़सील और हिदायत और रहमत"*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. के नज़दीक सूरह बनी इसराइल के तीसरे और चौथे रुकूअ में जो अहकाम हैं वह

तौरात के "अहकामे अशरा" (Ten Commandments) का ही खुलासा है।

لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ١٥٤

*"ताकि वह अपने रब के हुज़ूर हाज़िरी पर पूरा यक़ीन रखें।"*

## आयत 155 से 165 तक

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ١٥٥ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰي
طَاۗىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ
لَغٰفِلِيْنَ ١٥٦ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ
لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا
سُوْۗءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ١٥٧ هَلْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ
يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا

يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ
كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۭ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا
مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۭ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ
يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ مَنْ جَاۗءَ بِالْحَسَنَةِ
فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَاۗءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى
اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ
رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ڬ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۶۱﴾ قُلْ اِنَّ
صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۲﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا
اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۶۳﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ
كُلِّ شَيْءٍ ۭ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

جَعَلَكُمْ خَلٰٓىِٕفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ
بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ
سَرِيْعُ الْعِقَابِ ڮ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞١٦٥

## आयत 155

وَھٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۞١٥٥

*"और (अब) यह किताब हमने नाज़िल की है बड़ी बा-बरकत, तो तुम इसकी पैरवी करो और तक़वा इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाये।"*

## आयत 156

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰي طَاۗىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠

*"मबादा तुम यह कहो कि किताब तो बस उतारी गयी थी हमसे पहले के दो गिरोहों पर"*

यह बिल्कुल सूरतुल मायदा की आयत 19 वाला अंदाज़ है। वहाँ फ़रमाया गया था: {اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَاۗءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ} "मबादा तुम यह कहो कि हमारे पास तो कोई बशीर और नज़ीर आया ही नहीं था।" और इस अह्तमाल को रद्द करने के लिये फ़रमाया गया: {فَقَدْ جَاۗءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۭ} "पस आ

गया है तुम्हारे पास बशीर और नज़ीर।" कि हमने अपने आखरी रसूल ﷺ को भेज दिया है आखरी किताबे हिदायत देकर ताकि तुम्हारे ऊपर हुज्जत तमाम हो जाये। लेकिन वहाँ इस हुक्म के मुख़ातिब अहले किताब थे और अब वही बात यहाँ मुशरिकीन को इस अंदाज़ में कही जा रही है कि हमने यह किताब उतार दी है जो सरापा खैर व बरकत है, ताकि तुम रोज़े क़यामत यह ना कह सको कि अल्लाह की तरफ़ से किताबें तो यहूदियों और ईसाइयों पर नाजिल हुई थीं, हमें तो कोई किताब दी ही नहीं गयी, हमसे मुआख़ज़ा काहे का?

وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾

*"और हम तो इसके पढ़ने-पढ़ाने से गाफ़िल ही रहे।"*

और वहाँ यह ना कह सको कि तौरात तो इब्रानी ज़बान में थी, जबकि हमारी ज़बान अरबी थी। आखिर हम कैसे जानते कि इस किताब में क्या लिखा हुआ था। लिहाज़ा ना तो हम पर कोई हुज्जत है और ना ही हमारे मुहासबे का कोई जवाज़ है।

## आयत 157

أَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ أَنَّآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ أَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ

*"या तुम यह कहो कि अगर हम पर किताब नाज़िल की गयी होती तो हम इनसे कहीं बढ़ कर हिदायत याफ़ता होते।"*

यानि तुम रोज़े क़यामत यह दावा लेकर ना बैठ जाओ कि इन बेवक़ूफों ने तो अल्लाह की किताबों (तौरात और इंजील) की क़दर ही नहीं की। हमें अल्लाह ने किताब दी होती तो फिर हम बताते कि किताबुल्लाह की क़दर कैसे की जाती है।

فَقَدۡ جَآءَكُمۡ بَيِّنَةٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَهُدًى وَّرَحۡمَةٌ

*"तो (ऐ बनी इस्माईल) तुम्हारे पास आ गयी है बय्यिना तुम्हारे रब की तरफ से, और हिदायत और रहमत।"*

यानि तुम्हारे पास अल्लाह का रसूल उसकी किताब लेकर आ चुका है जिसमें वाज़ेह और मुस्तहकम अहकाम मौजूद हैं। इस बय्यिना की वज़ाहत सूरतुल बय्यिना की आयात 2 व 3 में इस तरह की गई है: {رَسُوۡلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً} {فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ} "अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो मुक़द्दस सहीफ़े पढ़ कर सुनाता है, जिनमें बिल्कुल दुरुस्त अहकाम है।"

فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنۡهَا

*"तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयात को झुठलाये और उनसे पहलु तहि करे।"*

سَنَجۡزِى الَّذِيۡنَ يَصۡدِفُوۡنَ عَنۡ اٰيٰتِنَا

*"हम अनक़रीब सज़ा देंगे उन लोगों को जो हमारी आयात से पहलु तहि करते हैं बहुत ही बुरे अज़ाब की, बसबब उनके इस पहलु तहि करने के।"*

سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا
يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

**आयत 158**

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ
تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ اَوْ يَاْتِيَ
رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ
اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ

*"यह लोग किस चीज़ का इन्तेज़ार कर रहे हैं सिवाय इसके कि इनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ, या आप ﷺ का रब खुद आ जाये या फिर आप ﷺ के रब की कोई निशानी आ जाए!"*

दरअसल यह उन वाक़िआत या अलामात का ज़िक्र है जिनका ज़हूर क़यामत के दिन होना है। जैसे सूरतुल फज्र में फ़रमाया: {وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا} (आयत 22) व {وَجِايْٓءَ يَوْمَىِٕذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى} (आयत 23) "क़िस्सा-ए-ज़मीन बरसरे ज़मीन" के मिस्दाक़ रोज़े महशर फ़ैसला यहीं इसी ज़मीन पर होगा। यहीं पर अल्लाह का नुज़ूल होगा, यहीं पर फ़रिश्ते परे बाँधे खड़े होंगे और यहीं पर सारा हिसाब-किताब होगा। चुनाँचे इस हवाले से फ़रमाया गया कि क्या यह लोग उस वक़्त का इन्तेज़ार कर रहे हैं जब यह सब अलामात ज़हूर पज़ीर हो जाएँ? लेकिन इन्हें मालूम होना चाहिये:

يَوْمَ يَأْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا

*"जिस दिन आप ﷺ के रब की बाज़ (मखसूस) निशानियाँ ज़ाहिर हो गईं तो फिर किसी ऐसे शख्स को उसका ईमान लाना कुछ फायदा ना देगा"*

لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۭ

*"जो पहले से ईमान नही ला चुका था या उसने अपने ईमान में कुछ खैर नहीं कमा लिया था।"*

दरअसल जब तक गैब का परदा पड़ा हुआ है तब तक ही इस इम्तिहान का जवाज़ है। जब गैब का परदा हट जायेगा तो यह इम्तिहान भी ख़त्म हो जायेगा। उस वक़्त जो सूरतेहाल सामने आयेगी उसमें तो बड़े से बड़ा काफ़िर भी आबिद व ज़ाहिद बनने की कोशिश करेगा। लेकिन जो शख्स यह निशानियाँ ज़ाहिर होने से पहले ईमान नहीं लाया था और ईमान की हालत में आमाले सालेह का कुछ तोशा उसने अपने लिये जमा नहीं कर लिया था, उसके लिये बाद में ईमान लाना और नेक आमाल करना कुछ भी सौदमंद नहीं होगा।

قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ١٥٨

*"(तो ऐ नबी ﷺ!) कह दीजिये तुम भी इंतेज़ार करो, हम भी इंतेज़ार करते है।"*

अब इंतेज़ार करो कि अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हारे बारे में क्या फ़ैसला होता है।

## आयत 159

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ

*"(ऐ नबी ﷺ!) जिन लोगों ने अपने दीन के टुकड़े कर दिये और वह गिरोहों में तक़सीम हो गये आपका उनसे कोई ताल्लुक़ नहीं।"*

यह वही "वहदते अदयान" का तस्सवुर है जो सूरतुल बक़रह की आयात 213 में दिया गया है: {كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً} कि पहले तमाम लोग एक ही दीन पर थे। फिर लोग सिराते मुस्तक़ीम से मुनहरिफ़ होते गये और मुख्तलिफ़ गिरोहों ने अपने-अपने रास्ते अलग कर लिये। चुनाँचे हुज़ूर ﷺ से फ़रमाया जा रहा है कि जो लोग सिराते मुस्तक़ीम को छोड़ कर अपनी-अपनी खुद साख्ता पगडंडियों पर चल रहे हैं वह सब ज़लालत और गुमराही में पड़े हैं और आप ﷺ का उन गुमराह लोगों से कोई ताल्लुक़ नहीं।

إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

*"उनका मामला अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें जितला देगा जो कुछ कि वह करते रहे थे।"*

## आयत 160

مَنۡ جَآءَ بِالۡحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشۡرُ اَمۡثَالِهَا ۚ

*"जो शख्स कोई नेकी लेकर आयेगा तो उसे उसका दस गुना अजर मिलेगा।"*

وَمَنۡ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجۡزٰٓى اِلَّا مِثۡلَهَا

*"और जो कोई बदी कमा कर लायेगा तो उसे सज़ा नहीं मिलेगी मगर उसी के बराबर"*

यह अल्लाह का ख़ास फ़ज़ल है कि बदी की सज़ा बदी के बराबर ही मिलेगी, लेकिन नेकी का अजर बढ़ा-चढ़ा कर दिया जाएगा, दो-दो गुना, चार गुना, दस गुना, सात सौ गुना या अल्लाह तआला इससे भी जितना चाहे बढ़ा दे: {وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنۡ يَّشَآءُ} (आयत 261)

وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۱۶۰﴾

*"और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।"*

उस दिन किसी के साथ ज़्यादती नहीं होगी और किसी की हक़तल्फ़ी नहीं की जायेगी।

अगली दो आयात जो "क़ुल" से शुरू हो रही हैं बहुत अहम हैं। यह हम में से हर एक को याद रहनी चाहिये।

## आयत 161

قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْٓ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۚ

*"(ऐ नबी ﷺ!) कहिये कि मेरे रब ने तो मुझे हिदायत दे दी है सीधे रास्ते की तरफ़।"*

دِیْنًا قِیَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿١٦١﴾

*"वह दीन है सीधा जिसमें कोई टेढ़ नहीं और मिल्लत है इब्राहीम की, जो यक्सु था (अल्लाह की तरफ़) और वह मुशरिकों में से ना था।"*

यह खिताब वाहिद के सीगे में बराहेरास्त हुज़ूर ﷺ से है और आप ﷺ की वसातत (माध्यम) से पूरी उम्मत से। ज़रा गौर करें 20 रुकुओं पर मुश्तमिल इस सूरत में एक दफ़ा भी یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا के अल्फ़ाज़ के साथ अहले ईमान से खिताब नहीं किया गया। काश कि हम में से हर शख्स इस आयात का मुखातिब बनने की सआदत हासिल कर सके और यह ऐलान कर सके कि मुझे तो मेरे रब ने सीधी राह की तरफ़ हिदायत दे दी है। लेकिन यह तो तभी मुमकिन होगा जब कोई अल्लाह की राहे हिदायत को सिद्क़े दिल से इख़्तियार करेगा। اللھم ربنا اجعلنا منھم۔ आमीन!

## आयत 162

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦٢

*"आप ﷺ कहिये मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत अल्लाह ही के लिये है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।"*

यहाँ दो बार क़ुल कह कर हुज़ूर ﷺ को मुखातिब फ़रमाया गया है और आप ﷺ ही को यह ऐलान करने के लिये कहा जा रहा है, लेकिन आप ﷺ की वसातत से हम में से हर एक को यह हुक्म पहुँच रहा है। काश हम में से हर एक यह ऐलान करने के क़ाबिल हो सके कि मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिये है जो रब्बुल आलामीन है। लेकिन यह तब मुमकिन है जब हम अपनी ज़िन्दगी वाक़िअतन अल्लाह के लिये वक़्फ़ कर दें। दुनियवी ज़िन्दगी की कम से कम ज़रूरियात को पूरा करने के लिये नागुज़ेर हद तक अपना वक़्त और अपनी सलाहियतें ज़रूर सर्फ़ करें, लेकिन इस सारी तगो-दौ (मेहनत) को असल मक़सूदे ज़िन्दगी ना समझें, बल्कि असल मक़सूदे ज़िन्दगी अल्लाह की इताअत और अक़ामते दीन की जद्दो-जहद ही को समझें।

## आयत 163

لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾

*"उसका कोई शरीक नहीं, और मुझे तो इसी का हुक्म हुआ है और सबसे पहला फ़रमा बरदार मैं खुद हूँ।"*

## आयत 164

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۭ

*"कहिये क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूँ जबकि वही हर शय का रब है।"*

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ

*"और नहीं कमाती कोई जान (कुछ भी) मगर उसी के ऊपर होगा उसका वबाल, और नहीं उठाएगी कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरे के बोझ को।"*

उस दिन हर एक को अपनी-अपनी गठरी खुद ही उठानी होगी, कोई दूसरा वहाँ मदद को नहीं पहुँचेगा। यहाँ पर लफ़्ज़ नफ्स "जान" के मायने में आया है, यानि कोई जान किसी दूसरी जान के बोझ को नहीं उठाएगी, बल्कि हर एक को अपनी ज़िम्मेदारी और अपने हिसाब-किताब का सामना ब-नफ्से नफ़ीस खुद करना होगा।

ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمۡ مَّرۡجِعُكُمۡ فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ فِيۡهِ تَخۡتَلِفُوۡنَ ۝١٦٤

*“फिर अपने रब ही की तरफ़ तुम सबका लौटना है, फिर वह तुम्हे जतला देगा जिन चीज़ों में तुम इख्तिलाफ़ करते रहे थे।”*

## आयत 165

وَهُوَ الَّذِىۡ جَعَلَكُمۡ خَلٰٓئِفَ الۡاَرۡضِ

*“और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन का खलीफ़ा बनाया”*

खलीफ़ा बनाना एक तो इस मफ़हूम में है कि जो खिलाफ़त हज़रत आदम अलै. को दी गयी थी उसका हिस्सा बिल्क़ुव्वत (potentially) तमाम इन्सानों को मिला है, और जो भी शख्स अल्लाह का मुतीअ और फ़रमाबरदार होकर अल्लाह को अपना हाकिम और बादशाह मान ले तो वह गोया उसकी खिलाफ़त का हक़दार हो गया। خَلٰٓئِفَ الۡاَرۡضِ का दूसरा मफ़हूम यह है कि तुम्हें ज़मीन में एक-दूसरे का जानशीन बनाया। एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल और एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम आती है और इंसानी विरासत नस्ल दर नस्ल और क़ौम दर क़ौम मुन्तक़िल होती जाती है। यही फ़लसफ़ा इस सूरत की आयात 133 में भी बयान हुआ है।

وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ

*“और उसने तुम में से बाज़ के दरजों को बाज़ पर बुलंद कर दिया”*

इस दुनियवी ज़िन्दगी में अल्लाह ने अपनी मशीयत के मुताबिक़ किसी को इल्म दिया है, किसी को हिकमत दी है, किसी को ज़हानत में फ़ज़ीलत दी है, किसी को जिस्मानी ताक़त में बरतरी दी है, किसी को सेहत-ए-जिस्मानी बेहतर दी है और किसी को हुस्ने जिस्मानी में दूसरों पर फौक़ियत दी है। यानि मुख्तलिफ़ अंदाज़ में उसने हर एक को अपने फ़ज़ल से नवाज़ा है और मुख्तलिफ़ इन्सानों के दरजात व मरातिब में अपनी हिकमत के तहत फ़र्क़ व तफ़ावत भी बरक़रार रखा है।

لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ

*“ताकि तुम्हें आज़माए उसमें जो कुछ उसने तुम्हें बख्शा है।”*

यानि दुनिया की तमाम नेअमतें इन्सान को बतौर आज़माइश दी जाती हैं। بَلَا, يَبْلُوْ के मायने हैं आज़माना और जाँचना। ابتلاء (ब-मायने इम्तिहान और आज़माइश) इसी से बाब इफ़्तिआल है।

اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ڮ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٦٥ۧ

*“यक़ीनन आपका रब सज़ा देने में भी बहुत तेज़ है और यक़ीनन वह गफ़ूर और रहीम भी है।”*

بارک اللہ لی ولکم فی القرآن العظیم ونفعنی وایاکم بالآیات والذکر الحکیم۔

# सूरतुल आराफ़

## तम्हीदी कलिमात

सूरतुल आराफ़ क़ुरान हकीम की तवील तरीन मक्की सूरह है। इस सूरह का सूरतुल अन्आम के साथ क्योंकि जोड़े का ताल्लुक़ है इसलिये इसके मज़ामीन का तआरुफ़ सूरतुल अन्आम के आग़ाज़ में आ चुका है। वहाँ पर التذکیر بآلاءِ اللہ और التذکیر بِاَیّامِ اللہ के फ़लसफ़े पर भी तफ़सीली बहस हो चुकी है और दोनों सूरतों में मज़ामीन की इस तक़सीम का ज़िक्र भी हो चुका है कि सूरह अन्आम में تذکیر بآلاءِ اللہ पर ज़ोर है जबकि सूरह आराफ़ में تذکیر بِاَیّامِ اللہ पर। सूरतुल आराफ़ के मौज़ूआत की तरतीब इस तरह से है कि सबसे पहले किस्सा आदम व इब्लीस बयान करके इंसानी तख़्लीक़ के आग़ाज़ का ज़िक्र किया गया है। फिर हयाते दुनियवी के इख़्तताामी दौर का तज़किरा किया गया है। इस इख़्तताामी दौर में तीन क़िस्मों के लोगों की तफ़सील आ गई है। पहले अहले जहन्नम का तज़किरा है, इसके बाद अहले जन्नत का और फिर असहाबे आराफ़ का, यानि वो लोग जिनके जन्नत व दोज़ख़ में दाख़िले के बारे में अभी फ़ैसला नहीं हुआ होगा। इस तरह हयाते इंसानी की इब्तदा और उसकी इन्तहा के तज़किरे के बाद हयाते इंसानी के "दरमियानी दौर" का तज़किरा تذکیر بِاَیّامِ اللہ (अम्बिया व

रुसुल और उनकी क़ौमों के हालात) के तौर पर आ गया है, जो इस सूरत के मज़ामीन का अमूद (main theme) है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

## आयात 1 से 9 तक

الٓـمّٓصٓ ۚ﴿۱﴾ کِتٰبٌ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ فَلَا یَکُنۡ فِیۡ صَدۡرِکَ
حَرَجٌ مِّنۡہُ لِتُنۡذِرَ بِہٖ وَ ذِکۡرٰی لِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۲﴾
اِتَّبِعُوۡا مَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکُمۡ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ وَ لَا تَتَّبِعُوۡا مِنۡ
دُوۡنِہٖۤ اَوۡلِیَآءَ ؕ قَلِیۡلًا مَّا تَذَکَّرُوۡنَ ﴿۳﴾ وَ کَمۡ مِّنۡ
قَرۡیَۃٍ اَہۡلَکۡنٰہَا فَجَآءَہَا بَاۡسُنَا بَیَاتًا اَوۡ ہُمۡ قَآئِلُوۡنَ
﴿۴﴾ فَمَا کَانَ دَعۡوٰىہُمۡ اِذۡ جَآءَہُمۡ بَاۡسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡۤا
اِنَّا کُنَّا ظٰلِمِیۡنَ ﴿۵﴾ فَلَنَسۡـَٔلَنَّ الَّذِیۡنَ اُرۡسِلَ اِلَیۡہِمۡ
وَ لَنَسۡـَٔلَنَّ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ۙ﴿۶﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَیۡہِمۡ بِعِلۡمٍ
وَّ مَا کُنَّا غَآئِبِیۡنَ ﴿۷﴾ وَ الۡوَزۡنُ یَوۡمَئِذِ ۣالۡحَقُّ ۚ فَمَنۡ
ثَقُلَتۡ مَوَازِیۡنُہٗ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۸﴾ وَ مَنۡ

خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝۹

## आयत 1

*“अलिफ़, लाम, मीम, सुआद।*

الٓمّٓصٓ ۝۱

यह हुरूफ़े मुक़त्तआत हैं, और जैसा कि पहले भी बयान हो चुका है, हुरूफ़े मुक़त्तआत का हक़ीकी और यक़ीनी मफ़हूम किसी को मालूम नहीं और यह कि इन तमाम हुरूफ़ के मफ़ाहीम व मतालब अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के दरमियान राज़ का दर्जा रखते हैं। अलबत्ता यह नोट कर लीजिये कि क़ुरान मजीद की दो सूरतें ऐसी हैं जिनके शुरू में चार-चार हुरूफ़े मुक़त्तआत आए हैं। उनमें से एक तो यही सूरतुल आराफ़ है और दूसरी सूरतुल राद है, जिसका आग़ाज़ अलिफ़ लाम मीम रा से हो रहा है। इससे पहले तीन हुरूफ़े मुक़त्तआत (अलिफ़ लाम मीम) सूरतुल बक़रह और सूरह आले इमरान में आ चुके हैं।

## आयत 2

*“यह किताब है (ऐ नबी ﷺ) जो आप पर नाज़िल की गई है, तो नहीं होनी चाहिये आपके दिल में कुछ तंगी इसकी वजह से”*

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ

रसूल अल्लाह ﷺ दावत के लिये हर मुमकिन तरीक़ा इस्तेमाल कर रहे थे, मगर आप ﷺ की सालों साल की जद्दो-जहद के बावजूद मक्का के सिर्फ़ चंद लोग ईमान लाये। यह सूरते हाल आप ﷺ के लिये बाइसे तशवीश (चिंता का विषय) थी। एक आम आदमी तो अपनी ग़लतियों की ज़िम्मेदारी भी दूसरों के सिर पर डालने की कोशिश करता है और अपनी कोताहियों को भी दूसरों के ख़ाते में डाल कर ख़ुद को साफ़ बचाने की फ़िक्र में रहता है, लेकिन एक शरीफ़ुल नफ़्स इंसान हमेशा यह देखता है कि अग़र उसकी कोशिश के ख़ातिर ख़्वाह नतीजे सामने नहीं आ रहे हैं तो उसमें उसकी तरफ़ से कहीं कोई कोताही तो नहीं हो रही। इस सोच और अहसास की वजह से वह अपने दिल पर हर वक़्त एक बोझ महसूस करता है। लिहाज़ा जब हुज़ूर ﷺ की मुसलसल कोशिश के बावजूद अहले मक्का ईमान नहीं ला रहे थे तो बशरी तक़ाज़े के तहत आप ﷺ को दिल में बहुत परेशानी महसूस होती थी। इसलिये आप ﷺ की तसल्ली के लिये फ़रमाया जा रहा है कि इस क़ुरान की वजह से आप ﷺ के ऊपर कोई तंगी नहीं होनी चाहिये।

لِتُنۡذِرَ بِهٖ وَذِكۡرٰى لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝٢

*"(यह तो इसलिये है) ताकि इसके ज़रिये से आप ﷺ ख़बरदार करें और यह याद दिहानी है अहले ईमान के लिये।"*

"لِتُنۡذِرَ بِهٖ" वही लफ़्ज़ है जो हम सूरतुल अन्आम की आयत 19 में भी पढ़ आये हैं। वहाँ फ़रमाया गया था: {وَاُوۡحِىَ اِلَىَّ

{هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ} "और यह क़ुरान मेरी तरफ़ इसलिये वही किया गया है कि इसके ज़रिये से तुम्हें भी ख़बरदार करूँ और जिस-जिस को यह पहुँचे।" यहाँ मजीद फ़रमाया कि यह अहले ईमान के लिये ज़िकरा (याददिहानी) है। यानि जिन सलीमुल फ़ितरत लोगों के अंदर बिल् क़ुव्वत (potentially) ईमान मौजूद है उनके इस सोए हुए (dormant) ईमान को बेदार (activate) करने के लिये यह किताब एक तरह से याद दिहानी है। जैसे आपको कोई चीज़ भूल गई थी, अचानक कहीं उसकी कोई निशानी देखी तो फ़ौरन वह शय याद आ गई, इसी तरह अल्लाह तआला ने अपनी मारफ़त के हुसूल के लिये इस कायनात की निशानियों को याददिहानी (ज़िकरा) बना दिया है।

## आयत 3

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ

*"पैरवी करो उसकी जो नाज़िल किया गया तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की जानिब से"*

पिछली आयत में हुज़ूर से सीगा वाहिद में ख़िताब था {فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ} जबकि यहाँ "اِتَّبِعُوْا" जमा का सीगा है। यानि यहाँ ख़िताब का रुख़ आम लोगों की तरफ़ है और उन्हें वही-ए-इलाही की पैरवी का हुक्म दिया जा रहा है।

وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ③

*"और मत पैरवी करो उसके सिवा दूसरे सरपरस्तों की। कम ही है जो नसीहत तुम हासिल करते हो।"*

यानि अपने रब को छोड़ कर कुछ दूसरे औलिया (दोस्त, सरपरस्त) बना कर उनकी पैरवी मत करो।

## आयत 4

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَاۗءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَاۗىِٕلُوْنَ ④

*"और कितनी ही बस्तियाँ ऐसी हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया, तो उन पर आ पड़ा हमारा अज़ाब जब वो रात को सो रहे थे या जब दोपहर को क़ैलूला (दोपहर के खाने के बाद की नींद) कर रहे थे।"*

चूँकि इस सूरह मुबारका के मौज़ू का उमूद तज़कीर बिअय्यामिल्लाह है, लिहाज़ा शुरू में ही अक़वामे गुज़िश्ता पर अज़ाब और उनकी बस्तियों की तबाही का तज़किरा आ गया है। यह क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह, क़ौमे समूद और क़ौमे शुऐब अस्सलातु वस्सलाम की बस्तियों और आमूरा और सदूम के शहरों की तरफ़ इशारा है।

## आयत 5

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

*"तो फिर उनकी पुकार इसके सिवा कुछ नहीं थी जब उन पर हमारा अज़ाब आ पड़ा कि (हाय हमारी शामत) बेशक हम ही ज़ालिम थे।"*

वाक़िअतन हमारे रसूलों ने तो हमारी आँखें खोलने की पूरी कोशिश की थी मग़र हमने ही अपने जानों पर ज़्यादती की जो उनकी दावत को ना माना।

## आयत 6

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

*"पस हम लाज़िमन पूछ कर रहेंगे उनसे भी जिनकी तरफ़ हमने रसूलों को भेजा और लाज़िमन पूछ कर रहेंगे रसूलों से भी।"*

यह फ़लसफ़ा-ए-रिसालत का बहुत अहम मौज़ू है जो इस आयत में बड़ी जलाली शान के साथ आया है। अल्लाह तआला किसी क़ौम की तरफ़ रसूल को इसलिये भेजता है ताकि वह उसे ख़बरदार कर दे। यह एक बहुत भारी और हस्सास ज़िम्मेदारी है जो रसूल पर डाली जाती है। अब अग़र बिल् फ़र्ज़ रसूल की तरफ़ से इसमें ज़रा भी कोताही होगी तो क़ौम से पहले उसकी पकड़ हो जायेगी। इसकी मिसाल यूँ है कि आपने एक अहम पैग़ाम देकर किसी आदमी को अपने किसी दोस्त के पास भेजा कि वह यह काम कल

तक ज़रूर कर दे वरना बहुत नुक़सान होगा, लेकिन आपके उस दोस्त ने वह काम नहीं किया और आपका नुक़सान हो गया। अब आप गुस्से से आग बबूला अपने दोस्त के पास पहुँचे और कहा कि तुमने मेरे पैग़ाम के मुताबिक़ बरवक़्त मेरा काम क्यों नहीं किया? अब आपका दोस्त अग़र जवाबन यह कह दे कि उसके पास तो आपका पैग़ाम लेकर कोई आया ही नहीं तो अपने दोस्त से आपकी नाराज़गी फ़ौरन ख़त्म हो जायेगी, क्योंकि उसने कोताही नहीं की, और आपको शदीद गुस्सा उस शख़्स पर आयेगा जिसको आपने पैग़ाम देकर भेजा था। अब आप उससे बाज़पुर्स करेंगे कि तुमने मेरा इतना अहम पैग़ाम क्यों नहीं पहुँचाया? तुमने ग़ैर ज़िम्मेदारी का सबूत देकर मेरा इतना बड़ा नुक़सान कर दिया। इसी तरह का मामला है अल्लाह, रसूल और क़ौम का। अल्लाह ने रसूल को पैग़ाम्बर बना कर भेजा। बिल् फ़र्ज उस पैग़ाम के पहुँचाने में रसूल से कोताही हो जाये तो वह जवाबदेह होगा। हाँ अग़र वह पैग़ाम पहुँचा दे तो फिर वह अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो जायेगा। फिर अग़र क़ौम उस पैग़ाम पर अमल-दर-आमद नहीं करेगी तो वह ज़िम्मेदार ठहरेगी। चुनाँचे आख़िरत में उम्मतों का भी मुहासबा होना है और रसूलों का भी। उम्मत से जवाब तलबी होगी कि मैंने तुम्हारी तरफ़ अपना रसूल भेजा था ताकि वह तुम्हें मेरा पैग़ाम पहुँचा दे, तुमने उस पैग़ाम को क़ुबूल किया या नहीं किया? और मुरसलीन से यह पूछा जायेगा कि तुमने मेरा पैग़ाम पहुँचाया या नहीं? इसकी एक झलक हम सूरतुल मायदा आयत 109 में {مَاذَآ اُجِبۡتُمۡ} के सवाल में और फिर अल्लाह तआला के हज़रत ईसा अलै. के साथ क़यामत के दिन होने वाले मकाल्मे (conversation) के इन अल्फ़ाज़

(आयत 116) में भी देख आये हैं: { وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ } "और जब अल्लाह पूछेगा ऐ ईसा इब्ने मरियम क्या तुमने कहा था लोगों से कि मुझे और मेरी माँ को भी इलाह बना लेना अल्लाह के अलावा?"

अब ज़रा हज्जतुलविदा (10 हिजरी) के मंज़र को ज़हन में लाइये। मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ एक जमे ग़फ़ीर से मुख़ातिब हैं। इस तारीखी मौक़े के पसमंज़र में आप ﷺ की 23 बरस की मेहनते शाक़्क़ा थी, जिसके नतीजे में आप ﷺ ने जज़ीरा नुमाए अरब के लोगों पर इत्मामे हुज्जत करके दीन को ग़ालिब कर दिया था। लिहाज़ा आपने उस मजमे को मुख़ातिब करके फ़रमाया: اَلَا هَلْ بَلَّغْتُ؟ लोगो सुनो! क्या मैंने पहुँचा दिया? इस पर पूरे मजमे ने एक ज़बान होकर जवाब दिया: نَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ وَ اَدَّيْتَ وَ نَصَحْتَ(5) एक रिवायत में अल्फ़ाज़ आते हैं: اِنَّا نَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَ اَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ وَنَصَحْتَ الْاُمَّةَ وَ كَشَفْتَ الْغُمَّةَ कि हाँ हम गवाह हैं आप ﷺ ने रिसालत का हक़ अदा कर दिया, आपने अमानत का हक़ अदा कर दिया (यह क़ुरान आपके पास अल्लाह की अमानत थी जो आपने हम तक पहुँचा दी), आप ﷺ ने उम्मत की ख़ैरख़्वाही का हक़ अदा कर दिया और आपने गुमराही और ज़लालत के अंधेरों का पर्दा चाक कर दिया। हुज़ूर ﷺ ने तीन दफ़ा यह सवाल किया और तीन दफ़ा जवाब लिया और तीनों दफ़ा शहादत की ऊँगली आसमान की तरफ़ उठा कर पुकारा: اَللّٰهُمَّ

اَللّٰھُمَّ اشْھَدْ! اَللّٰھُمَّ اشْھَدْ! اشْھَدْ! ऐ अल्लाह तू भी गवाह रह, ये मान रहे हैं कि मैंने तेरा पैग़ाम इन्हें पहुँचा दिया। और फिर फ़रमाया: فَلْیُبَلِّغِ الشَّاھِدُ الْغَائِبَ(6) कि अब पहुँचाएँ वो लोग जो यहाँ मौजूद हैं उन लोगों को जो यहाँ मौजूद नहीं हैं। गोया मेरे कंधे से यह बोझ उतर कर अब तुम्हारे कन्धों पर आ गया है। अग़र मैं सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ रसूल बन कर आया होता तो बात आज पूरी हो गई होती, मग़र मैं तो रसूल हूँ तमाम इंसानों के लिये जो क़यामत तक आएँगे। चुनाँचे अब इस दावत और तब्लीग़ को उन लोगों तक पहुँचाना उम्मत के ज़िम्मे है। यही वह ग़वाही है जिसका मंज़र सूरतुन्निसा में दिखाया गया है: {فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍۭ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ شَهِيدًا} (आयत:41) फिर उस रोज़ हज्जतुल विदा के मौक़े वाली ग़वाही का हवाला भी आयेगा कि ऐ अल्लाह मैंने तो इन लोगों को तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था, अब यह ज़िम्मेदार और जवाबदेह हैं। चूँकि मामला उन पर खोल दिया गया था, लिहाज़ा अब यह लोग लाइल्मी के बहाने का सहारा नहीं ले सकते।

## आयत 7

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ ۖ وَمَا كُنَّا غَآئِبِينَ ۝

*"फिर हम उनके सामने अहवाल (स्थिति) बयान करेंगे इल्म की बुनियाद पर और हम कहीं ग़ायब तो नहीं थे।"*

अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ फ़रीज़ा-ए-रिसालत की अदायगी में किस क़द्र जद्दो-

जहद कर रहे थे और आप ﷺ के सहाबा रज़ि. किस तरह के मुश्किल हालात में आपका साथ दे रहे थे। इसी तरह अल्लाह तआला अबुजहल और अबुलहब की कार्यवाहियों को भी देख रहा था कि वो किस-किस तरीज़े से हुज़ूर ﷺ को अज़ीयतें पहुँचा रहे थे और इस्लाम की मुख़ालफ़त कर रहे थे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन हम उनके सामने अपने इल्म की बुनियाद पर तमाम अहवाल बयान कर देंगे, क्योंकि जब यह सब कुछ हो रहा था तो हम वहाँ से ग़ैर हाज़िर तो नहीं थे। सूरतुल हदीद (आयत:4) में इस हक़ीक़त को इस तरह बयान किया गया है: {وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ} कि वह (अल्लाह) तुम्हारे साथ ही होता है जहाँ कहीं भी तुम होते हो।

## आयत 8

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۚ

*"और उस रोज़ वज़न होगा हक़ ही में (या वज़न ही फ़ैसलाकुन होगा)"*

उस रोज़ अल्लाह तआला तराज़ू नुमा कोई ऐसा निज़ाम क़ायम करेगा, जिसके ज़रिये से आमाल का ठीक-ठीक वज़न होगा, मग़र उस दिन वज़न सिर्फ़ हक़ ही में होगा, यानि सिर्फ़ आमाले सालेहा ही का वज़न होगा, बातिल और बुरे कामों में सिरे से कोई वज़न नहीं होगा, रियाकारी की नेकियाँ तराज़ू में बिल्कुल बे हैसियत होंगी। {وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۚ} का दूसरा मफ़हूम यह भी है कि उस दिन वज़न ही हक़ होगा, वज़न ही फ़ैसलाकुन होगा। अग़र दो पलड़ों वाली

तराज़ू का तसव्वुर करें तो जिसका निकियों वाला पलड़ा भारी होगा निजात बस उसी के लिये होगी।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑧

*"तो जिसके पलड़े भारी होंगे तो वही होंगे फ़लाह पाने वाले।"*

### आयत 9

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ⑨

*"और जिसके पलड़े हल्के होंगे तो यही वह लोग होंगे जिन्होंने अपने आप को हलाक कर लिया बसबब इसके कि वो हमारी आयतों से नाइंसाफ़ी करते रहे।"*

आयत 6 {فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ} की तरह अगली आयत भी अपने मौज़ू के ऐतबार से बहुत अहम है।

## आयात 10 से 25 तक

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ⑩ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ

صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا
اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۱۱﴾ قَالَ مَا
مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ
خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾ قَالَ فَاهْبِطْ
مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ
الصّٰغِرِيْنَ ﴿۱۳﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴﴾
قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۱۵﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ
لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۶﴾ ۙ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ
مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ
وَعَنْ شَمَاۗىِٕلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ قَالَ
اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۭ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ
لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ
اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا
تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾
فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ
عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ

هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ
الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّىْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾
فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا
سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ۭ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا
الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ
﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا
وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا
بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ
وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا
تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ ۧ

## आयत 10

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ

*“और (देखो इंसानों!) हमने तुम्हें ज़मीन में तमक्कुन अता फ़रमाया और इसमें तुम्हारे लिये मआश के सारे सामान रख दिये, (लेकिन) बहुत ही कम है जो शुक्र तुम करते हो।”*

فِيهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿١٠﴾

तुम लोगों को तो हर वक़्त यह धड़का लगा रहता है कि ज़मीन के वसाइल (resources) इंसान के मुसलसल इस्तेमाल से ख़त्म ना हो जायें, इंसानी व हैवानी ख़ुराक का क़हत ना पड़ जाये। मग़र तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अल्लाह के ख़जाने ख़त्म होने वाले नहीं हैं। हमने तुम्हें इस ज़मीन में बसाया है तो तुम्हारे मआश का पूरा-पूरा बंदोबस्त भी किया है। इस दुनयवी ज़िन्दगी में तुम्हारी और तुम्हारी आइंदा नस्लों की हर क़िस्म की जिस्मानी ज़रूरतें यहीं से पूरी होंगी। इस मौज़ू की अहमियत के पेशेनज़र अगले (दूसरे) रुकूअ में भी इसी मज़मून यानि तमक्कुन फ़िल् अर्ज़ की तफ़सील बयान हुई है।

## आयत 11

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ

*"और हमने तुम्हें तख़्लीक़ किया, फिर तुम्हारी तस्वीर कशी की, फिर हमने कहा फ़रिश्तों से कि झुक जाओ आदम के सामने"*

नज़रिया-ए-इरतक़ाअ (Evolution Theory) के हामी इस आयत से भी किसी हद तक अपनी नज़रियाती ग़िज़ा

हासिल करने की कोशिश करते हैं। क़ुरान हकीम में इंसान की तख़्लीक़ के मुख़्तलिफ़ मराहिल के बारे में मुख़्तलिफ़ नौईयत की तफ़सीलात मिलती हैं। एक तरफ़ तो इंसान को मिट्टी से पैदा करने की बात की गई है। मसलन सूरह आले इमरान आयत 59 में बताया गया है कि इंसाने अव्वल को मिट्टी से बना कर 'कुन' कहा गया तो वह एक ज़िन्दा इंसान बन गया (फ़-यकून)। यानि यह आयत एक तरह से इंसान की एक ख़ास मख़्लूक़ के तौर पर तख़्लीक़ की ताईद करती है। जबकि आयत ज़ेरे नज़र में इस ज़िमन में तदरीजी मराहिल (step by step process) का ज़िक्र हुआ है। यहाँ जमा के सीगे {وَلَقَدۡ خَلَقۡنٰكُمۡ ثُمَّ صَوَّرۡنٰكُمۡ} से यूँ मालूम होता है कि जैसे इस सिलसिले की कुछ अन्वाअ (species) पहले पैदा की गई थीं। गोया नस्ले इंसानी पहले पैदा की गई, फिर उनकी शक्ल व सूरत को फिनिशिंग टच दिये गये। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि आदम तो एक था, फिर यह जमा के सीगे क्यों इस्तेमाल हो रहे हैं? इस सवाल के जवाब के लिये सूरह आले इमरान की आयत 33 भी एक तरह से हमें दावते ग़ौरो फ़िक्र देती है, जिसमें फ़रमाया गया है कि हज़रत आदम अलै. को भी अल्लाह तआला ने चुना था: {اِنَّ اللّٰهَ اصۡطَفٰۤى اٰدَمَ وَنُوۡحًا وَّاٰلَ اِبۡرٰهِيۡمَ وَاٰلَ عِمۡرٰنَ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ}। गोया यह आयत भी किसी हद तक इरतक़ाई अमल की तरफ़ इशारा करती हुई महसूस होती है। बहरहाल इस क़िस्म की theories के बारे में जैसे-जैसे जो-जो अमली इशारे दस्तयाब हों उनको अच्छी तरह समझने की कोशिश करनी चाहिये और आने वाले वक़्त के लिये अपने options खुले रखने चाहिये। हो सकता है जब वक़्त

के साथ-साथ कुछ मज़ीद हक़ाइक अल्लाह तआला की हिकमत और मशीयत से इंसानी इल्म में आयें तो इन आयतों के मफ़ाहीम ज़्यादा वाज़ेह होकर सामने आ जाएँ।

فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ⑪

*"तो सज्दा किया सबने सिवाय इब्लीस के, ना हुआ वह सज्दा करने वालों में।"*

## आयत 12

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ

*"(अल्लाह तआला ने) फ़रमाया किस चीज़ ने तुम्हें रोका कि तुमने सज्दा नहीं किया, जबकि मैंने तुम्हें हुक्म दिया था।"*

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ⑫

*"उसने कहा मैं इससे बेहतर हूँ, मुझे तूने बनाया है आग से और इसको बनाया है मिट्टी से।"*

उसने अपने इस्तकबार (तकब्बुर) की बुनियाद पर ऐसा कहा। यहाँ उसका जो क़ौल नक़ल किया गया है उसके एक एक लफ़्ज से तकब्बुर झलकता है।

## आयत 13

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ⑬

*"(अल्लाह तआला ने) फ़रमाया पस उतर जाओ इससे, तुम्हें यह हक़ नहीं था कि तुम इसमें तकब्बुर करो, पस निकल जाओ, यक़ीनन तुम ज़लील व ख़्वार हो।"*

## आयत 14

قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ⑭

*"उसने कहा (ऐ अल्लाह) मुझे मोहलत दे उस दिन तक जिस दिन इन्हें (ज़िन्दा करके) उठाया जायेगा।"*

## आयत 15

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ⑮

*"फ़रमाया (ठीक है जाओ) तुम्हें मोहलत दी गई।"*

## आयत 16

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ⑯

*"उसने कहा (परवरदिग़ार!) तूने जो मुझे (आदम की वजह से) गुमराह किया है तो अब मैं लाज़िमन उनके लिये घात में बैठूँगा तेरी सीधी राह पर।"*

तेरी तौहीद की शाहराह पर डेरे जमा कर, घात लगा कर, मोर्चाबंद होकर बैठूँगा और तेरे बंदों को शिर्क की पगडँडियों की तरफ़ मोड़ता रहूँगा।

## आयत 17

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ
وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَاۤئِلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ
اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾

*"फिर मैं उन पर हमला करूँगा उनके सामने से और उनके पीछे से, उनके दाएँ और बाएँ जानिब से, और तू नहीं पायेगा उनकी अक्सरियत को शुक्र करने वाला।"*

## आयत 18

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا
مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۭ لَمَنْ
تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ
جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ
﴿١٨﴾

*"(अल्लाह तआला ने) फ़रमाया निकल जाओ इसमें से बुरे हाल में मरदूद होकर। उनमें से जो तेरी पैरवी करेंगे तो मैं (उन्हें और तुम्हें इकट्ठा करके) तुम सबसे जहन्नम को भर कर रहूँगा।"*

## आयत 19

وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾

*"और (फिर हमने आदम से कहा कि) ऐ आदम अलै. रहो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीवी, और खाओ-पियो इसमें से जहाँ से तुम दोनों चाहो, (हाँ) उस दरख़्त के क़रीब मत जाना, वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे।"*

## आयत 20

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا

*"तो शैतान ने उन दोनों को वसवसे में डाला ताकि ज़ाहिर कर दे उन पर जो उनसे पोशीदा थीं उनके शर्मगाहें"*

क़िस्सा आदम अलै. व इब्लीस की तफ़सील हम सूरतुल बक़रह के चौथे रुकूअ में भी पढ़ चुके हैं। यहाँ यह क़िस्सा दूसरी मरतबा बयान हुआ है। पूरे क़ुरान मजीद में यह वाक़्या सात मरतबा आया है, छः मरतबा मक्की सूरतों में और एक मरतबा मदनी सूरत (अल् बक़रह) में। लेकिन हर

जगह मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से बयान हुआ है और हर बार किसी ना किसी नई बात का इसमें इज़ाफ़ा हुआ है। हुज़ूर صلى الله عليه وسلم की दावती तहरीक जैसे-जैसे आगे बढ़ रही थी, हर दौर के मख़्सूस हालात के सबब इस वाक़िये में हर दफ़ा मज़ीद तफ़सीलात शामिल होती गईं। इस रुकूअ के शुरू में जब इस क़िस्से का ज़िक्र आया है तो वहाँ जमा का सीगा इस्तेमाल करके तमाम इंसानों को मुख़ातिब किया गया है: {وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ڰ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ}

सूरतुल बक़रह की मुतल्लक़ा आयतों की वज़ाहत करते हुए इस ज़िमन में बाज़ अहम निकात ज़ेरे बहस आ चुके हैं। यहाँ मज़ीद कुछ बातें तशरीह तलब हैं। एक तो शैतान के हज़रत आदम और हज़रत हव्वा अलै. को वरगलाने और उनके दिलों में वसवसे डालने का सवाल है कि उसकी कैफ़ियत क्या थी। इस सिलसिले में जो बातें और मकालमात (discussions) क़ुरान में आये हैं उनसे यह गुमान हरग़िज़ ना किया जाये कि वह इसी तरह उनके दरमियान वक़ूअ पज़ीर भी हुए थे और वह एक-दूसरे को देखते और पहचानते हुए एक-दूसरे से बातें करते थे। ऐसा हरग़िज़ नहीं था, बल्कि शैतान जैसे आज हमारी निगाहों से पोशीदा है इसी तरह हज़रत आदम अलै. और हज़रत हव्वा अलै. की नज़रों से भी पोशीदा था और जिस तरह आज हमारे दिलों में शैतानी वसवसे जन्म लेते हैं इसी तरह उनके दिलों में भी वसवसे पैदा हुए थे। दूसरा अहम नुक्ता एक ख़ास ममनुआ (मना किया) फल के चखने और उसकी एक ख़ास तासीर के बारे में है। क़ुरान मजीद में हमें इसकी तफ़सील इस तरह मिलती

है कि उस फल के चखने पर उनकी शर्मगाहें नुमाया हो गईं। जहाँ तक इस कैफ़ियत की हक़ीक़त का ताल्लुक़ है तो इसे मालूम करने के लिये हमारे पास हत्मी और क़तई इल्मी ज़राए नहीं हैं, इसलिये इसे मुतशाबेहात में ही शुमार किया जायेगा। अलबत्ता इसके बारे में मुफ़स्सरीन ने क़यास आराइयाँ की हैं। मसलन यह कि उन्हें अपने इन आज़ा (body parts) के बारे में शऊर नहीं था, मग़र वह फल चखने के बाद यह शऊर उनमें बेदार हो गया, या यह कि पहले उन्हें जन्नत का लिबास दिया गया था जो इस वाक़िये के बाद उतर गया। बाज़ लोगों के नज़दीक यह नेकी और बदी का दरख़्त था जिसका फल खाते ही उनमें नेकी और बदी की तमीज़ पैदा हो गई। बाज़ हज़रात का ख़्याल है कि यह दरअसल आदम अलै. और हव्वा अलै. के दरमियान पहला जिन्सी इख़तलात (sexual act) था, जिसे इस अंदाज़ में बयान किया गया है। यह मुख़्तलिफ़ आरा (opinions) हैं, लेकिन सही बात यही है कि यह मुतशाबेहात में से हैं और ठोस इल्मी मालूमात के बग़ैर इसके बारे में कोई क़तई और हक़ीकी राय क़ायम करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये कि वह दरख़्त कौनसा था और उसे चखने की असल हक़ीक़त और कैफ़ियत क्या थी।

وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝۲۰

*“और उसने कहा (वसवसा अंदाज़ी की) कि नहीं रोका है आप दोनों को आपके रब ने इस दरख़्त से मगर इसलिये कि कहीं आप फ़रिश्ते ना बन जायें या कहीं हमेशा-हमेशा रहने वाले ना बन जायें।”*

यह तो सीधी सी बात है कि फ़रिश्तों को तो आदम अलै. के सामने झुकाया गया था तो इसके बाद आप अलै. के लिये फ़रिश्ता बन जाना कौनसी बड़ी बात थी, लेकिन बाज़ अवक़ात यूँ भी होता है कि इंसान को निस्यान हो जाता है और वह अपनी असल हक़ीक़त, असल मक़ाम को भूल जाता है, चुनाँचे यह बात गोया शैतान ने वसवसे के अंदाज़ से उनके ज़हनों में डालने की कोशिश की कि इस शजर-ए-ममनुआ (Probihited Tree) का फ़ल खाकर तुम फ़रिश्ते बन जाओगे या हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहोगे और तुम पर मौत तारी ना होगी।

## आयत 21

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّىْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝۲۱

*"और उसने क़समें खा-खा कर उनको यक़ीन दिलाया कि मैं आप दोनों के लिये बहुत ही ख़ैरख़्वाह हूँ।"*

## आयत 22

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ

*"तो उसने धोखा देकर उन्हें माइल (राज़ी) कर ही लिया।"*

فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

*"तो जब उन दोनों ने चख लिया उस दरख़्त के फल को तो ज़ाहिर हो गईं उन पर उनकी शर्मगाहें और वह लगे गाँठने जन्नत के (दरख़्तों के) पत्तों को अपने ऊपर (लिबास बनाने के लिये)"*

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۭ

अपनी उरयानी का अहसास होने के बाद वह जन्नत के दरख़्तों के पत्तों को आपस में सी कर या जोड़ कर अपने-अपने सतर को छुपाने का अहतमाम करने लगे।

وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝۲۲

*"और अब आवाज़ दी उन दोनों को उनके रब ने कि क्या मैंने तुम्हें मना नहीं किया था उस दरख़्त से और क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि शैतान तुम दोनों का खुला दुश्मन है।"*

## आयत 23

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝۲۳

*"(इस पर) वह दोनों पुकार उठे कि ऐ हमारे रब हमने ज़ुल्म किया अपनी जानों पर, और अग़र तूने हमें माफ़ ना फ़रमाया और हम पर रहम ना फ़रमाया तो हम तबाह होने वालों में से हो जायेंगे।"*

यानि हम अपनी ग़लती का ऐतराफ़ (स्वीकार) करते हैं कि हमने अपनी जानों पर ज़्यादती की है। यह वही कलिमात हैं जिनके बारे में हम सूरतुल बक़रह (आयत:37) में पढ़ आये हैं: {فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ} यानि आदम अलै. ने अपने रब से कुछ कलिमात सीख लिये और उनके ज़रिये से माफ़ी माँगी तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़ुबूल कर ली। वहाँ इस ज़िमन में सिर्फ़ इशारा किया गया था, यहाँ वह कलिमात बता दिये गये हैं। इस सारे वाक़िये में एक बात यह भी क़ाबिले ग़ौर है कि क़ुरान में कहीं भी कोई ऐसा इशारा नहीं मिलता जिससे यह साबित हो कि इब्लीस ने यह वसवसा इब्तदा में अम्मा हव्वा के दिल में डाला था। इस सिलसिले में आमतौर पर हमारे यहाँ जो कहानियाँ मौजूद हैं उनकी रू से शैतान के बहकावे में पहले हज़रत हव्वा आयीं और फिर वह हज़रत आदम अलै. को गुमराह करने का ज़रिया बनी। लेकिन क़ुरान इस इम्कान की नफ़ी करता है। आयत ज़ेरेनज़र के मुताअले से तो उन दोनों का बहकावे में आ जाना बिल्कुल वाज़ेह हो जाता है क्योंकि यहाँ क़ुरान मुसलसल तसनिया का सीगा (द्विवचन) इस्तेमाल कर रहा है यानि शैतान ने उन दोनों को वरग़लाया, दोनो उसके बहकावे में आ गये फिर दोनों ने अल्लाह से माफ़ी माँगी और अल्लाह ने दोनों को माफ़ कर दिया।

हज़रत हव्वा अलै. के शैतान के बहकावे में आने वाली कहानियों की तरवीज दरअसल ईसाइयत के ज़ेरे असर हुई है। ईसाइयत में औरत को गुनाह और बुराई की जड़ समझा जाता है यही वजह है कि Eve (हव्वा) से लफ़्ज़ evil उनके यहाँ बुराई का हम मायने क़रार पाया है। ईसाइयत में शादी करना और औरत से क़ुरबत का ताल्लुक़ एक घटिया फ़अल

(काम) तसव्वुर किया जाता था, जबकि तज्जरुद (अविवाहित) की ज़िन्दगी गुज़ारना और रहबानियत के तौर तरीक़ों को उनके यहाँ रुहानियत की मैराज समझा जाता था। नतीजतन उनके यहाँ इस तरह की कहानियों ने जन्म लिया, जिनसे साबित होता है कि आदम अलै. को जन्नत से निकलवाने और उनकी आज़माईशों और मुसीबतों का बाइस बनने वाली दरअसल एक औरत थी। बहरहाल ऐसे तसव्वुरात और नज़रियात की ताईद क़ुरान मजीद से नहीं होती।

## आयत 24

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ

*"(अल्लाह ने) फ़रमाया तुम सब उतर जाओ (अब) तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो।"*

हुबूत के बारे में सूरतुल बक़रह आयत 36 में वज़ाहत हो चुकी है कि यह लफ़्ज़ सिर्फ़ बुलंदी से नीचे उतरने के मायने के लिये ही ख़ास नहीं बल्कि एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होने का मफ़हूम भी इसमें शामिल है। जिस दुश्मनी का ज़िक्र यहाँ किया गया वह हज़रत आदम के हुबूते अरज़ी के वक़्त से आज तक शैतान की ज़ुर्रियत और आदम की औलाद के दरमियान मुसलसल चली आ रही है और क़यामत तक चलती रहेगी। इसके अलावा इससे बनी नौए इंसानी की बाहमी दुश्मनियाँ भी मुराद हैं जो मुख्तलिफ़ अफ़राद और अक़वाम के दरमियान पायी जाती हैं।

وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٤﴾

*"और तुम्हारे लिये ज़मीन में ठिकाना है और (ज़रुरत का) साज़ो सामान भी एक वक़्ते मुअय्यन तक।"*

यह ठिकाना और माल-ओ-मताअ अब्दी नहीं है, बल्कि एक ख़ास वक़्त तक के लिये है। अब तुम्हें इस ज़मीन पर रहना-बसना है और यहाँ रहने-बसने के लिये जो चीज़ें ज़रूरी हैं वह यहाँ पर फ़राहम कर दी गई हैं।

## आयत 25

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿٢٥﴾

*"फिर फ़रमाया कि (अब) तुम इसी (ज़मीन) में ज़िन्दगी गुज़ारोगे, इसी में मरोगे और इसी में से तुम्हें निकाल लिया जायेगा।"*

# आयात 26 से 31 तक

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ
سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۭ ذٰلِكَ
مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا
يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ

يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ
هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا
فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا
بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۟ وَاَقِيْمُوْا
وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
الدِّيْنَ ۬ ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَرِيْقًا هَدٰى
وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ
مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ ع

## आयत 26

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ

*"ऐ आदम अलै. की औलाद, हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारी शर्मगाहों को ढ़ाँपता है और आराईश व ज़ेबाईश का सबब भी है।"*

अरबों के यहाँ ज़माना-ए-जाहिलियत के गलत रस्मों रिवाज और नज़रियात में से एक राहबाना नज़रिया या तसव्वुर यह भी था कि लिबास इंसानी जिस्म के लिए ख़्वाह मख़्वाह का तकल्लुफ़ है और यह शर्म का अहसास जो इंसान ने अपने ऊपर ओढ़ रखा है यह भी इंसान का ख़ुद अपना पैदा करदा है। इस नज़रिये के तहत उनके मर्द और औरतें मादारज़ाद नंगे होकर काबातुल्लाह का तवाफ़ करते थे। उनके नज़दीक यह नफ़ी ज़ात (self annihiliation) का बहुत बड़ा मज़ाहिर था और यूँ अल्लाह तआला के क़ुर्ब का एक ख़ास ज़रिया भी। इस तरह के ख़्यालात व नज़रियात बाज़ मआशरों में आज भी पाए जाते हैं, हमारे यहाँ भी बाज़ मलन्ग क़िस्म के लोग लिबास पर उरयानी को तरजीह देते हैं, जबकि अवामुन्नास आमतौर पर ऐसे लोगों को अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे समझते हैं। इस आयत में दरअसल ऐसे जाहिलाना नज़रियात की नफ़ी की जा रही है कि तुम्हारे लिये लिबास का तसव्वुर अल्लाह का वदीयत करदा है। यह ना सिर्फ़ तुम्हारी सतरपोशी करता है बल्कि तुम्हारे लिये ज़ेबो ज़ीनत का बाइस भी है।

وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ

*"और (इससे बढ़ कर) तक़वे का लिबास जो है वह सबसे बेहतर है।"*

सबसे बेहतर लिबास तक़वे का लिबास है, अग़र यह ना होता तो बसा अवक़ात इंसान लिबास पहन कर भी नंगा होता है, जैसा कि इन्तहाई तंग लिबास, जिसमें जिस्म के नशेब-ओ-फ़राज़ ज़ाहिर हो रहे हों या औरतों का इस क़द्र बारीक लिबास जिसमें जिस्म झलक रहा हो। ऐसा लिबास पहनने वाली औरतें के बारे में हुज़ूर ﷺ ने "كَاسِيَاتٌ عَارِيَاتٌ" के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल फ़रमाये हैं, यानि जो लिबास पहन कर भी नंगी रहती हैं। उनके बारे में फ़रमाया कि यह औरतें जन्नत में दाख़िल होना तो दरकिनार, जन्नत की हवा भी ना पा सकेंगी, जबकि जन्नत की हवा पाँच सौ साल की मुसाफ़त से भी महसूस हो जाती है।(7) चुनाँचे وَلِبَاسُ التَّقْوٰى से मुराद एक तरफ़ तो यह है कि इंसान जो लिबास ज़ेबतन करे वह हक़ीक़ी मायनों में तक़वे का मज़हर हो और दूसरी तरफ़ यह भी कि इंसानी शख़्सियत की असल ज़ीनत वह लिबास है जिसका ताना-बाना शर्म व हया और ख़ुदा ख़ौफ़ी से बनता है।

ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ ٢٦

*"यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि यह लोग नसीहत अख़ज़ (हासिल) करें।"*

## आयत 27

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ

*"ऐ बनी आदम (देखो अब) शैतान तुम्हें फ़ितने में ना डालने पाये, जैसे कि तुम्हारे वालिदैन को उसने जन्नत से निकलवा दिया था (और उसने उतरवा दिया था उनसे उनका लिबास, ताकि उन पर अयाँ (ज़ाहिर) कर दे उनकी शर्मगाहें।"*

اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ

*"यक़ीनन वह और उसकी ज़ुर्रियत (औलाद) वहाँ से तुम पर नज़र रखते हैं जहाँ से तुम उन्हें देख नहीं सकते।"*

चूँकि इब्लीस को अल्लाह की तरफ़ से क़यामत तक छूट मिली हुई है लिहाज़ा वह ना सिर्फ़ मुसलसल ज़िन्दा है, बल्कि उसने अपनी औलाद और अपने नुमाइन्दों को अपने एजेंडे की तकमील के लिये इंसानों के दरमियान फैला रखा है। यह जिन्न श्यातीन चूँकि ग़ैर मरई (invisible) मख्लूक़ हैं इसलिये ऐसी-ऐसी जगहों पर हमारी घात में बैठे होते हैं और ऐसे-ऐसे तौर तरीक़ों से हमलावर होते हैं जिसका हल्का सा अंदाज़ा भी हम नहीं कर सकते।

اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝27

*"हमने तो श्यातीन को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते।"*

जैसे गंदगी और मक्ख़ी का फितरी साथ है ऐसे ही शैतान और मुन्करीने हक़ का याराना है। जिस दिल में ईमान नहीं होगा और वह अल्लाह के ज़िक्र से महरूम होगा, वह "ख़ाना-ए-खाली राद यूमी दीगर" के मिस्दाक़ शैतान ही का अड्डा बनेगा।

## आयत 28

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَاۗءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ

*"और जब यह लोग कोई बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैं कि हमने पाया है यही कुछ करते हुए अपने अबा व अजदाद को, और अल्लाह ने हमें इसका हुक्म दिया है।"*

यह लोग जब नंगे होकर ख़ाना काबा का तवाफ़ करते तो इस शर्मनाक फ़अल का जवाज़ पेश करते हुए कहते कि हमने अपने अबा व अजदाद को ऐसे ही करते देखा है और यक़ीनन अल्लाह ही ने इसका हुक्म दिया होगा। यह गोया उनके नज़दीक एक ठोस, क़राइनी शहादत (circumstantial evidence) थी कि जब एक रीत और रस्म चली आ रही है तो यक़ीनन यह सब कुछ अल्लाह की मर्ज़ी और उसके हुक्म के मुताबिक़ ही हो रहा होगा।

قُلۡ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَاۡمُرُ بِالۡفَحۡشَآءِ ؕ اَتَقُوۡلُوۡنَ عَلَی اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸﴾

*"(ऐ नबी ﷺ इनसे) कह दीजिये कि अल्लाह तआला बेहयाई का हुक्म नहीं देता, तो क्या तुम अल्लाह की तरफ़ मन्सूब कर रहे हो वह कुछ जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं।"*

## आयत 29

قُلۡ اَمَرَ رَبِّیۡ بِالۡقِسۡطِ ۟ وَ اَقِیۡمُوۡا وُجُوۡهَكُمۡ عِنۡدَ كُلِّ مَسۡجِدٍ

*"आप ﷺ कहिये कि मेरे रब ने तो हुक्म दिया है इंसाफ़ (अद्ल व तवाज़ुन) का, और अपने रुख़ सीधे कर लिया करो हर नमाज़ के वक़्त"*

मस्जिद इस्मे ज़र्फ़ है और यह ज़र्फ़े ज़मान भी है और ज़र्फ़े मकान भी। बतौर ज़र्फ़े मकान सज्दे की जगह मस्जिद है और बतौर ज़र्फ़े ज़मान सज्दे का वक़्त मस्जिद है।

وَّ ادۡعُوۡهُ مُخۡلِصِیۡنَ لَهُ الدِّیۡنَ ۬ؕ

*"और उसी को पुकारा करो उसी के लिये अपनी इताअत को ख़ालिस करते हुए।"*

यानि अल्लाह को पुकारने, उससे दुआ करने की एक शर्त है और वह यह कि उसकी इताअत को अपने ऊपर लाज़िम किया जाये। जैसा कि सूरतुल बक़रह आयत 186 में रोज़े के

अहकाम और हिकमतों को बयान करने के बाद फ़रमाया: { أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ } कि मैं तो हर पुकारने वाले की पुकार सुनता हूँ, उसकी दुआ को क़ुबूल करता हूँ, लेकिन उन्हें भी तो चाहिये कि मेरा कहना मानें। और यह कहना मानना या इताअत जुज़्वी (partially) तौर पर क़ाबिले क़ुबूल नहीं, बल्कि इसके लिये { ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً } (अल् बक़रह:208) का मैयार सामने रखना होगा, यानि अल्लाह तआला की इताअत में पूरे-पूरे दाख़िल होना होगा। लिहाज़ा इस हवाले से यहाँ फ़रमाया गया कि अपनी इताअत को उसी के लिये ख़ालिस करते हुए उसे पुकारो। यानि उसकी इताअत के दायरे के अन्दर कुल्ली तौर पर दाख़िल होते हुए उससे दुआ करो। यहाँ यह नुक्ता भी क़ाबिले तवज्जोह है कि इंसान को अपनी ज़िन्दगी में बेशुमार इताअतों से साबक़ा पड़ता है, वालिदैन की इताअत, उस्तादों की इताअत, ऊलुल अम्र की इताअत वग़ैरह। तो इसमें बुनियादी तौर पर जो उसूलकार फ़रमा है वह यह है कि "لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوْقٍ فِيْ مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ"। यानि मख्लूक़ में से किसी की ऐसी इताअत नहीं की जायेगी जिसमें ख़ालिक़े हक़ीक़ी की मअसियत लाज़िम आती हो। अल्लाह की इताअत सबसे ऊपर और सबसे बरतर है। उसकी इताअत के दायरे के अंदर रहते हुए बाक़ी सब इताअतें हो सकती हैं, मग़र जहाँ किसी की इताअत में अल्लाह के किसी हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी होती हो तो ऐसी इताअत ना क़ाबिले क़ुबूल और हराम होगी।

كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝۲۹

*“जैसे उसने तुम्हें पहले पैदा किया था इसी तरह तुम दोबारा भी पैदा हो जाओगे।”*

## आयत 30

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ

*“एक ग़िरोह को उसने हिदायत दे दी है और एक ग़िरोह वह है जिसके ऊपर गुमराही मुसल्लत हो चुकी है।”*

यानि जिन्होंने इन्कार किया और फिर उस इन्कार पर डट गए वो अपनी इस मुतअस्सुबाना रविश की वजह से, अपनी ज़िद और अपनी हठधर्मी के सबब, अपने हसद और तकब्बुर के बाइस ग़ुमराही के मुस्तहिक़ हो चुके हैं।

اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝۳۰

*“(और यह इसलिये कि) इन्होंने शैतानों को अपना साथी बना लिया अल्लाह को छोड़ कर और समझते यह हैं कि हम हिदायत पर हैं।”*

## आयत 31

يٰبَنِيۡٓ اٰدَمَ خُذُوۡا زِيۡنَتَكُمۡ عِنۡدَ كُلِّ مَسۡجِدٍ

*“ऐ आदम अलै० की औलाद, अपनी ज़ीनत इस्तवार किया करो हर नमाज़ के वक़्त”*

यहाँ अच्छे लिबास को ज़ीनत कहा गया है, जैसा कि आयत 26 में लिबास को رِيۡشًا फ़रमाया गया था, यानि लिबास इंसान के लिये ज़ेबो ज़ीनत का ज़रिया है। यहाँ एक नुक्ता यह भी क़ाबिले ग़ौर है कि अभी जिन तीन आयात (26, 27 और 31) में लिबास का ज़िक्र हुआ है, उन तीनों में बनी आदम को मुख़ातिब किया गया है। इसका मतलब यह है कि लिबास का मामला पूरी नौए इंसानी से मुताल्लिक़ है। बहरहाल इस आयत में जो अहम हुक्म दिया जा रहा है वह नमाज़ के वक़्त बेहतर लिबास ज़ेबतन करने के बारे में है। हमारे यहाँ इस सिलसिले में आमतौर पर उल्टी रविश चलती है। दफ़्तर और आम मेल मुलाक़ात के लिये तो अमूमन बहुत अच्छे लिबास का अहतमाम किया जाता है, लेकिन मस्जिद जाना हो तो मैले-कुचैले कपड़ों से ही काम चला लिया जाता है। लेकिन यहाँ अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि जब तुम्हें मेरे दरबार में आना हो तो पूरे अहतमाम के साथ आया करो, अच्छा और साफ़-सुथरा लिबास पहन कर आया करो।

وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝۳۱

*"और खाओ और पियो अलबत्ता इसराफ़ (फ़ुज़ूल खर्ची) ना करो, यक़ीनन वह इसराफ़ करने वालों को पसंद नहीं करता।"*

बनी आदम से कहा जा रहा है कि यह दुनिया की चीज़ें तुम्हारे लिये ही बनाई गयीं हैं और इन चीज़ों से जायज़ और मारूफ़ तरीक़ों से इस्तफ़ादा करने पर कोई पाबंदी नहीं, लेकिन अल्लाह तआला की अता करदा इन नेअमतों के बेजा इस्तेमाल और इसराफ़ से इज्तनाब भी ज़रूरी है, क्योंकि इसराफ़ अल्लाह तआला को पसंद नहीं। यहाँ एक तरफ़ तो उसी रहबानी नज़रिये की नफ़ी हो रही है जिसमें अच्छे खाने, अच्छे लिबास और ज़ेब व ज़ेबाइश को सिरे से अच्छा नहीं समझा जाता और मुफ़्लिसाना वज़ा-क़तअ और तर्के लज़्ज़ात को रुहानी इरतक़ाअ के लिये ज़रूरी ख़्याल किया जाता है, जबकि दूसरी तरफ़ दुनियवी नेअमतों के बेजा इसराफ़ और ज़िया (बर्बादी) से सख़्ती से मना कर दिया गया है।

इस सिलसिले में इफ़रात व तफ़रीत से बचने के लिये ज़रूरियाते ज़िन्दगी के इकतसाब व तसर्रुफ़ के मैयार और फ़लसफ़े को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। एक मुसलमान जहाँ कहीं भी रहता-बसता है उसको दो सूरतों में से एक सूरते हाल दरपेश हो सकती है। उसके मुल्क में या तो दीन ग़ालिब है या मग़लूब। अब अग़र आपके मुल्क में अल्लाह का दीन मग़लूब है तो आपका पहला फ़र्ज़ यह है कि आप अल्लाह के दीन के गलबे की जद्दोजहद करें और इसके

लिये किसी बाक़ायदा तन्ज़ीम में शामिल होकर अपना बेशतर वक़्त और सलाहियतें इस जद्दोजहद में लगाएँ। ऐसी सूरते हाल में दुनियवी तौर पर तरक़्क़ी करना और फलना-फूलना आपकी तरजीहात में शामिल ही नहीं होना चाहिये, बल्कि आपकी पहली तरजीह दीन के ग़लबे के लिये जद्दोजहद होनी चाहिये और आपका मोटो { قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ } (अनआम:162) होना चाहिये। इसका मन्तक़ी नतीजा यह होगा कि आप माद्दी लिहाज़ से बहुत बेहतर मैयारे ज़िन्दगी को बरक़रार नहीं रख सकेंगे। यह इसलिये नहीं होगा कि आप रहबानियत या तर्के लज़्ज़ात के क़ायल हैं बल्कि इसकी वजह यह होगी कि दुनिया और दुनियवी आसाईशें कमाने के लिये ना आप कोशां है और ना ही उसके लिये आपके पस वक़्त है। आप तो शऊरी तौर पर ज़रूरियाते ज़िन्दगी को कम से कम मैयार पर रख कर अपनी तमाम तर सलाहियतें, अपना वक़्त और अपने वसाइल दीन की सरबुलंदी के लिये खपा रहे हैं। यह रहबानियत नहीं है बल्कि एक मुसबत जिहादी नज़रिया है। जैस नबी अकरम ﷺ और सहाबा किराम रज़ि. ने सख़्तियाँ झेलीं और अपने घर-बार इसी दीन की सरबुलंदी के लिये छोड़े। क्योंकि इस काम के लिये अल्लाह तआला आसमान से फ़रिश्तों को नाज़िल नहीं करेगा, बल्कि यह काम इंसानों ने करना है, मुसलमानों ने करना है। इंसानी तारीख़ ग़वाह है कि जो लोग इन्क़लाब के दाई बने हैं, उन्हें क़ुर्बानियाँ देनी पड़ी हैं, उन्हें सख़्तियाँ उठानी पड़ी हैं। क्योंकि कोई भी इन्क़लाब क़ुर्बानियों के बग़ैर नहीं आता। लिहाज़ा अग़र आप वाक़ई अपने दीन को ग़ालिब करने के

लिये इन्क़लाब के दाई बन कर निकले हैं तो आप का मैयारे ज़िन्दगी ख़ुद ब ख़ुद कम से कम होता चला जायेगा।

अलबत्ता अगर आपके मुल्क में दीन ग़ालिब हो चुका है, निज़ामें ख़िलाफ़त क़ायम हो चुका है, इस्लामी फ़लाही रियासत वजूद में आ चुकी है तो दीन की मज़ीद नशरो इशाअत, दावत व तब्लीग़ और निज़ामे ख़िलाफ़त की तौसीअ (विस्तार), अवामी फ़लाह् व बहबूद (कल्याण) की निग़रानी, अमन व अमान का क़याम, मुल्की सरहदों की हिफ़ाजत, यह सब हुकूमत और रियासत की ज़िम्मेदारियाँ हैं। ऐसी इस्लामी रियासत में एक फ़र्द की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ इसी हद तक है जिस हद तक हुकूमत की तरफ़ से उसे मुकल्लफ़ किया जाये। वह किसी टैक्स की सूरत में हो या फिर किसी और नौइयत की ज़िम्मेदारी हो। लेकिन ऐसी सूरते हाल में एक फ़र्द, एक आम शहरी आज़ाद है कि वह दीन के दायरे में रहते हुए अपनी ज़ाती ज़िन्दगी अपनी मर्ज़ी से गुज़ारे। अच्छा कमाये, अपने बच्चों के लिये बेहतर मैयारे ज़िन्दगी अपनाये, दुनियवी तरक्क़ी के लिये मेहनत करे, इल्मी व तहक़ीक़ी मैदान में अपनी सलाहियतों को आज़माये या रूहानी तरक्क़ी के लिये मुजाहदा करे, तमाम रास्ते उसके लिये खुले हैं।

## आयात 32 से 39 तक

قُلۡ مَنۡ حَرَّمَ زِیۡنَۃَ اللّٰہِ الَّتِیۡۤ اَخۡرَجَ لِعِبَادِہٖ
وَالطَّیِّبٰتِ مِنَ الرِّزۡقِ ؕ قُلۡ ہِیَ لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا فِی

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا
وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ
اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا
يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۴﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ
مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۳۶﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ
الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا
اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا
وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ قَالَ
ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ

وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ
حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ
لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا
مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۝۳۸
وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ
فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝۳۹ ۧ

## आयत 32

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

*"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कहें कि किसने हराम की है वह ज़ीनत जो अल्लाह ने निकाली है अपने बंदों के लिये? और (किसने हराम की हैं) पाकीज़ा चीज़ें खाने की? आप कह दीजिये ये तमाम चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में भी अहले ईमान के लिये हैं और क़यामत के दिन तो यह ख़ालिसतन उन्हीं के लिये होंगी।"*

दुनिया में रहते हुए तो बेशक अल्लाह के मुन्करीन भी उसकी नेअमतों में से खा-पी लें, इस्तफ़ादा कर लें मग़र आख़िरत में यह तमाम पाक़ीज़ा नेअमतें अहले ईमान और अहले जन्नत

के लिये मुख़्तस (allocated) होंगी और कुफ्फ़ार को इनमें से कोई चीज़ नहीं मिलेगी।

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣٢

*"इसी तरह हम अपनी आयात की वज़ाहत करते हैं उन लोगों के लिये जो इल्म रखते हैं।"*

**आयत 33**

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

*"कह दीजिये कि मेरे रब ने तो हराम क़रार दिया है बेहयाई की बातों को ख़्वाह वह ऐलानिया हों और ख़्वाह छुपी हुई हों।"*

बेहयाई ख़्वाह छुपी हुई भी हो, अल्लाह तआला को पसंद नहीं है।

وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ

*"और (हराम किया है उसने) गुनाह को और नाहक़ ज़्यादती को"*

وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا

*"और यह (भी हराम ठहराया है) कि तुम अल्लाह के साथ शरीक ठहराओ (किसी ऐसी चीज़ को) जिसके लिये उसने कोई सनद नहीं उतारी है और यह भी कि तुम अल्लाह की तरफ़ मन्सूब*

وَّاَنۡ تَقُوۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝۳۳

*करो वह चीज़ जिसका तुम इल्म नहीं रखते।"*

## आयत 34

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ

*"और हर क़ौम के लिये एक वक़्त मुअय्यन है।"*

यानि जब भी कभी किसी क़ौम की तरफ़ कोई रसूल आता, तो एक मुक़र्रर मुद्दत तक उस क़ौम को मोहलत मयस्सर होती कि वह उस मुद्दते मोहलत से फ़ायदा उठाते हुए अपने रसूल अलै. की दावत पर लब्बैक कहे और सही रास्ते पर आ जाये। उस मुक़र्रर मुद्दत के दौरान उस क़ौम की नाफ़रमानियों को नज़रअंदाज़ किया जाता और उन पर अज़ाब नहीं आता था। हुज़ूर ﷺ की बेअसत के बाद मक्के में भी यही मामला दरपेश था। अहले मक्का को मशीयते ख़ुदावंदी के तहत मोहलत दी जा रही थी। दूसरी तरफ़ हक व बातिल की थका देने वाली कशमकश में अहले ईमान की ख़्वाहिश थी कि कुफ्फ़ार का फ़ैसला जल्द से जल्द चुका दिया जाये। अहले ईमान के ज़हनों में लाज़िमन यह सवाल बार-बार आता था कि आख़िर कुफ्फ़ार को इस क़द्र ढ़ील क्यों दी जा रही है! इस पसमंज़र में इस फ़रमान का मफ़हूम यह है कि अहले ईमान का ख़्याल अपनी जगह दुरुस्त सही, लेकिन हमारी हिकमत का तकाज़ा कुछ और है। हमने अपने रसूल ﷺ को मबऊस फ़रमाया है तो साथ ही इस क़ौम के लिये मोहलत की एक ख़ास मुद्दत भी मुक़र्रर की है। इस

मुक़र्रर घड़ी से पहले इन पर अज़ाब नहीं आयेगा। हाँ जब वह घड़ी (अजल) आ जायेगी तो फिर हमारा फ़ैसला मुअख़्खर नहीं होगा। सूरह अल् अनआम की आयत 58 में इसी हवाले से फ़रमाया गया कि ऐ नबी (ﷺ) आप कुफ्फ़ार पर वाज़ेह कर दें कि अग़र मेरे इख़्तियार वह चीज़ होती जिसकी तुम लोग जल्दी मचा रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान यह फ़ैसला कब का चुकाया जा चुका होता।

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝۳۴

*“फिर जब उनका वह मुक़र्रर वक़्त आ जायेगा तो ना एक घड़ी पीछे हट सकेंगे, ना आगे की तरफ़ सरक सकेंगे।”*

अब वह बात आ रही है जो हम सूरतुल बक़रह में भी पढ़ आये हैं। वहाँ आदम अलै. को ज़मीन पर भेजते हुए फ़रमाया गया था:

فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۳۸ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۳۹

इसी बात को यहाँ एक दूसरे अंदाज़ से बयान किया गया है।

## आयत 35

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ ٣٥

*"ऐ बनी आदम! जब भी तुम्हारे पास आएँ रसूल तुम ही में से जो तुम्हें मेरी आयात सुनाएँ, तो जो कोई भी (उनकी दावत के जवाब में) तक़्वा की रविश इख़्तियार करेगा और इस्लाह कर लेगा तो उनके लिये ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वो किसी ग़म से दो-चार होंगे।"*

## आयत 36

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ ٣٦

*"और जो हमारी आयात को झुठलाएँगे और तकब्बुर की बिना पर उन्हें रद्द कर देंगे वही जहन्नमी होंगे, उसी में वो हमेशा रहेंगे।"*

## आयत 37

فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا اَوۡ کَذَّبَ بِاٰیٰتِہٖ ؕ

*"फिर उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की तरफ़ कोई ग़लत बात मन्सूब करे या उसकी आयात को झुठलाए।"*

اُولٰٓئِکَ یَنَالُہُمۡ نَصِیۡبُہُمۡ مِّنَ الۡکِتٰبِ ؕ

*"(लेकिन दुनिया में) उनको मिलता रहेगा उनका हिस्सा, उसमें से जो (उनके लिये) लिखा गया है।"*

दुनिया में रिज़्क़ वग़ैरह का जो मामला है वो उनके कुफ़्र की वजह से मुन्क़तअ (disconnect) नहीं होगा, बल्कि दुनियवी ज़िन्दगी में वह उन्हें मामूल के मुताबिक़ मिलता रहेगा। यह मज़मून सूरह बनी इस्राईल में दोबारा आयेगा।

حَتّٰۤی اِذَا جَآءَتۡہُمۡ رُسُلُنَا یَتَوَفَّوۡنَہُمۡ ۙ قَالُوۡۤا اَیۡنَ مَا کُنۡتُمۡ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ ؕ

*"यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) आ जायेंगे उन (की रूहों) को क़ब्ज़ करने के लिये तो वो कहेंगे कि कहाँ हैं वो जिनको तुम पुकारा करते थे अल्लाह के सिवा?"*

अब कहाँ है वो तुम्हारे ख़ुद साख़्ता मअबूद जिनके सामने तुम माथे रगड़ते थे और जिनके आगे गिड़गिड़ाते हुए दुआएँ करते थे?

قَالُوۡا ضَلُّوۡا عَنَّا وَشَهِدُوۡا عَلٰۤى اَنۡفُسِهِمۡ اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰفِرِيۡنَ ۝۳۷

*"वो कहेंगे कि वो सब तो हमसे गुम हो गये, और वो ख़ुद अपने ख़िलाफ़ यह गवाही देंगे कि वाक़िअतन वो काफिर थे।"*

## आयत 38

قَالَ ادۡخُلُوۡا فِىۡۤ اُمَمٍ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ مِّنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ فِى النَّارِ‌ؕ

*"कहा जाएगा अच्छा शामिल हो जाओ जिन्नों और इंसानों की उन उम्मतों में जो तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं आग मे (दाख़िल होने के लिये)"*

यानि एक-एक क़ौम का हिसाब होता जाएगा और मुजरिमीन जहन्नम के अंदर झोंके जाते रहेंगे। पहली नस्ल के बाद दूसरी नस्ल, फिर तीसरी नस्ल व अला हाज़ल क़यास। अब वहाँ उनमें मुकालमा (discussion) होगा। बाद में आने वाली हर नस्ल के मुक़ालबे में पहली नस्ल के लोग बड़े मुजरिम होंगे, क्योंकि जो लोग बिदआत और ग़लत अक़ाइद के मौजद (आविष्कारक) होते हैं असल और बड़े मुजरिम तो वही होते हैं, उन्हीं की वजह से बाद में आने वाली नस्लें भी गुमराह होती हैं। लिहाज़ा क़ुरान मजीद में अहले जहन्नम के जो मकालमात मज़कूर हैं उनके मुताबिक़ बाद में आने वाले लोग अपने पहले वालों पर लानत करेंगे और कहेंगे कि तुम्हारी वजह से ही हम गुमराह हुए, लिहाज़ा तुम लोगों को तो दोगुना अज़ाब मिलना चाहिये। इस तरीक़े

से वो आपस में एक-दूसरे पर लअन-तअन करेंगे और झगड़ेंगे।

كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ

*"जब भी कोई उम्मत (जहन्नम में) दाख़िल होगी तो वह अपने जैसी दूसरी उम्मत पर लानत करेगी।"*

حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا

*"यहाँ तक कि जब उसमें गिर चुकेंगे सबके सब तो उनके पिछले कहेंगे अपने अगलों के बारे में कि ऐ हमारे रब! यही लोग हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया था"*

दुनिया में तो ये लोग अपनी नस्लों के बारे में कहते थे कि वो हमारे आबा व अजदाद थे, हमारे क़ाबिले अहतराम अस्लाफ़ थे। यह तौर-तरीक़े उन्हीं की रीतें हैं, उन्हीं की रिवायतें हैं और उनकी इन रिवायतों को हम कैसे छोड़ सकते हैं? लेकिन वहाँ जहन्नम में अपने उन्हीं आबा व अजदाद के बारे में वो अलल ऐलान कह देंगे कि ऐ अल्लाह! यही हैं वो बदबख़्त जिन्होंने हमें गुमराह किया था।

فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ

*"तो इनको दुगना अज़ाब दे आग में से।"*

قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

*"अल्लाह फ़रमायेगा (तुम) सबके लिये ही दुगना (अज़ाब) है, लेकिन तुम्हें इसका शऊर नहीं है।"*

जैसे ये लोग तुम्हें गुमराह करके आये थे वैसे ही तुम भी अपने बाद वालों को गुमराह करके आये हो और यह सिलसिला दुनिया में इसी तरह चलता रहा। यह तो हर एक को उस वक़्त चाहिये था कि अपनी अक़्ल से काम लेता। मैंने तुम सबको अक़्ल दी थी, देखने और सुनने की सलाहियतें दी थी, नेकी और बदी का शऊर दिया था। तुम्हें चाहिये था कि इन सलाहियतों से काम लेकर बुरे-भले का ख़ुद तजज़िया (analysis) करते और अपने आबा व अजदाद और लीडरों की अंधी तक़लीद ना करते। लिहाज़ा तुम में से हर शख़्स अपनी तबाही व बर्बादी का ख़ुद ज़िम्मेदार है।

## आयत 39

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾

*"और उनके अगले अपने पिछलों से कहेगे कि तुम्हें भी तो हम पर कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं हो सकी, लिहाज़ा अब चखो मज़ा अज़ाब का अपनी करतूतों के बदले में।"*

# आयात 40 से 43 तक

إِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ
لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ
الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ۝٤٠
لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٤١ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٤٢ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ
صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِھٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا
لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٤٣

**आयत 40**

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ

*"यक़ीनन जिन लोगों ने हमारी आयात को झुठलाया और तकब्बुर की बिना पर उनको रद्द किया, उनके लिये आसमान के दरवाज़े कभी नहीं खोले जायेंगे"*

अग़रचे यह बात हतमियत (निश्चितता) से नहीं कही जा सकती, ताहम (फिर भी) क़ुरान मजीद में कुछ इस तरह के इशारात मिलते हैं जिनसे मालूम होता है कि जहन्नम इसी ज़मीन पर बरपा होगी और इब्तदाई नुज़ुल (महमानी) वाली जन्नत भी यहीं पर बसाई जायेगी। {وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ} (सूरतुल इनशिक़ाक़:3) की अमली कैफ़ियत को ज़हन में लाने से यह नक़्शा तसव्वुर में यूँ आता है कि ज़मीन को जब ख़ींचा जायेगा तो यह पिचक जायेगी, जैस रबड़ की की गेंद को खींचा जाये तो वह अंदर को पिचक जाती है। इस अमल में ज़मीन के अंदर का सारा लावा बाहर निकल आयेगा जो जहन्नम की शक़्ल इख़्तियार कर लेगा (वल्लाहु आलम)। अहादीस में मज़कूर है कि रोज़े महशर मैदाने अराफ़ात को खोल कर वसीअ कर दिया जायेगा और यहीं पर हशर होगा। क़ुरान हकीम में { وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا} (सूरतुल फ़ज्र:22) के अल्फ़ाज़ भी इस पर दलालत करते हैं कि परवरदिग़ार शाने अजलाल के साथ नुज़ूल फ़रमाएँगे, फ़रिश्ते भी फ़ौज दर फ़ौज आएँगे और यहीं पर हिसाब-किताब होगा। गोया "क़िस्सा-ए-ज़मीन बरसरे

ज़मीन" वाला मामला होगा। अहले बहिश्त की इब्तदाई मेहमान नवाज़ी भी यहीं होगी, लेकिन फिर अहले जन्नत अपने मरातिब के ऐतबार से दर्जा-ब-दर्जा ऊपर की जन्नतों में चढ़ते चले जायेंगे, जबकि अहले जहन्नम यहीं कहीं रह जायेंगे, उनके लिये आसमानों के दरवाज़े खोले ही नहीं जायेंगे।

وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ

*"और वो जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे यहाँ तक कि ऊँट सुई के नाके में से गुज़र जाये।"*

इसे कहते हैं "तालीक़ बिल् महाल।" ना यह मुमकिन होगा कि सुई के नाके से ऊँट गुज़र जाये और ना ही कुफ्फ़ार के लिये जन्नत में दाख़िल होने की कोई सूरत पैदा होगी। बिल्कुल यही मुहावरा हज़रत ईसा अलै. ने भी एक जगह इस्तेमाल किया है। आप अलै. के पास एक दौलतमंद शख़्स आया और पूछा कि आप अलै. की तालीमात क्या हैं? जवाब में आप अलै. ने नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने, ग़रीबों पर माल ख़र्च करने और दूसरे नेक कामों के बारे में बताया। उस शख़्स ने कहा कि नेकी के यह काम तो मैं सब करता हूँ, आप बताइये और मैं क्या करूँ? आप अलै. ने फ़रमाया कि ठीक है तुमने यह सारी मंज़िलें तय कर ली हैं तो अब आख़री मंज़िल यह है कि अपनी सलीब उठाओ और मेरे साथ चलो! यानि हक़ व बातिल की कशमकश में जान व माल से मेरा साथ दो। यह सुन कर उस शख़्स का चेहरा लटक गया और वह चला गया। इस पर आप अलै. ने फ़रमाया कि ऊँट का

सुई के नाके में से ग़ुजरना मुमकिन है मगर किसी दौलतमंद शख़्स का अल्लाह की बादशाहत में दाख़िल होना मुमकिन नहीं है। यहाँ यह वाक़िया क़ुरान में मज़कूर मुहावरे के हवाले से बर सबील तज़किरा आ गया है, हज़रत ईसा अलै. के इस फ़रमान को किसी मामले में बतौरे दलील पेश करना मक़सद नहीं।

وَ كَذٰلِكَ نَجۡزِی الۡمُجۡرِمِیۡنَ ﴿۴۰﴾

*"और इसी तरह हम बदला देते हैं मुजरिमों को।"*

## आयत 41

لَهُمۡ مِّنۡ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنۡ فَوۡقِهِمۡ غَوَاشٍ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجۡزِی الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۴۱﴾

*"उनके लिये जहन्नम ही का बिछौना होगा और ऊपर से उसी का ओढ़ना होगा। और इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देगें।"*

आग के गद्दे होंगे बिछाने के लिये और उसी के लिहाफ़ होगें ओढ़ने के लिये। और उसी आग के अंदर उनका गुज़र-बसर होगा।

## आयत 42

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۴۲

*"और वो लोग जो ईमान लाये और जिन्होंने नेक अमल किये--- हम किसी जान को ज़िम्मेदार नहीं ठहराएँगे मग़र उसकी वुसअत के मुताबिक़--- वही होंगे जन्नत वाले, उसमें रहेंगे हमेशा-हमेश।"*

यह मज़मून सूरतुल बक़रह की आख़री आयत में भी आ चुका है। अब यहाँ फिर दोहराया गया है कि आख़िरत का मुहासबा इन्फ़रादी तौर पर होगा और हर फ़र्द की सलाहियतों और उसको वदीयत की गई नेअमतों के ऐन मुताबिक़ होगा। किसी की इस्तताअत से ज़्यादा की ज़िम्मेदारी उस पर नहीं डाली जायेगी।

## आयत 43

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ

*"और हम निकाल देंगे जो कुछ उनके सीनों में होगा (एक-दूसरे की तरफ़ से) कोई मैल"*

अहले ईमान भी आख़िर इंसान हैं। बाहमी मामलात में उनको भी एक-दूसरे से गिले और शिकवे हो सकते हैं और दिलों में शुकूक व शुबहात जन्म ले सकते हैं। दीनी जमाअतों के अंदर भी किसी मामूर को अमीर से, अमीर को मामूर से या एक रफ़ीक़ से दूसरे रफ़ीक़ से शिकायत हो सकती है। कुछ ऐसे गिले-शिकवे भी हो सकते हैं जो दुनिया की ज़िन्दगी

में ख़त्म ना हो सके होंगे। ऐसे गिले-शिकवों के ज़िमन में क़ुरान हकीम में कई मरतबा फ़रमाया गया कि अहले जन्नत को जन्नत में दाख़िल करने से पहले उनके दिलों को ऐसी तमाम आलाइशों से पाक कर दिया जायेगा और वो लोग बाहम भाई-भाई बन कर एक-दूसरे के रू-ब-रू बैठेंगे: {وَنَزَعۡنَا مَا فِيۡ صُدُوۡرِهِمۡ مِّنۡ غِلٍّ اِخۡوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيۡنَ} (हिज्र: 47) इसी लिये अहले ईमान को सूरह हश्र में यह दुआ भी तल्क़ीन की गई है: { رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا وَلِاِخۡوَانِنَا الَّذِيۡنَ سَبَقُوۡنَا بِالۡاِيۡمَانِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِيۡ قُلُوۡبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ} "ऐ हमारे परवरदिगार! तू हमारे और हमारे उन भाईयों के गुनाह माफ़ फ़रमा दे जो हमसे पहले ईमान लाये और अहले ईमान में से किसी के लिये भी हमारे दिलों में कोई कदूरत बाक़ी ना रहने दे, बेशक तू रऊफ़ और रहीम है।" इन मज़ामीन की आयात के बारे में हज़रत अली रज़ि. का यह क़ौल भी (ख़ासतौर पर सूरतुल हिज्र, आयत 47 के शाने नुज़ूल में) मन्क़ूल है कि यह मेरा और मुआविया रज़ि. का ज़िक्र है कि अल्लाह तआला हमें जन्नत में दाख़िल करेगा तो दिलों से तमाम कदूरतें साफ़ कर देगा। ज़ाहिर बात है कि हज़रत अली और हज़रत अमीर मुआविया रज़ि. के दरमियान जंगे हुई हैं तो कितनी कुछ शिकायतें बाहमी तौर पर पैदा हुई होंगी। ऐसी तमाम शिकायतें और कदूरतें वहाँ दूर कर दी जायेंगी।

تَجۡرِيۡ مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ ۚ

*"और उनके (बाला ख़ानों) के नीचे नहरें बहती होंगी।"*

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ

*"और वो कहेंगे कुल शुक्र और कुल तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने हमें यहाँ तक पहुँचा दिया, और हम यहाँ तक नहीं पहुँच सकते थे अग़र अल्लाह ही ने हमें ना पहुँचा दिया होता। यक़ीनन हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आये थे।"*

وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

*"और (तब) उन्हें पुकारा जायेगा कि यह है वह जन्नत जिसके तुम वारिस बना दिये गये हो अपने आमाल की वजह से।"*

बंदे का मक़ामे अब्दियत इसी बात का तक़ाज़ा करता है कि वह अल्लाह के ईनाम व इकराम पर सरापा शुक्र बन कर पुकार उठे कि ऐ अल्लाह मैं इस लायक़ नहीं था, मेरे आमाल ऐसे नहीं थे, मैं अपनी कोशिश की बुनियाद पर कभी भी इसका मुस्तहिक़ नहीं हो सकता था, यह सारा तेरा फ़ज़्ल व करम, तेरी अता और तेरी देन है, जबकि अल्लाह तआला बंदे के हुस्ने नीयत और आमाले सालेह की क़द्र अफ़ज़ाई करते हुए इर्शाद फ़रमायेगा कि मेरे बंदे, तूने दुनिया में जो मेहनत की थी, यह मक़ाम तेरी मेहनत का ईनाम हैं, तेरी कोशिश का समर (फल) है, तेरे ईसार (त्याग) का सिला है। तूने खुलूसे नीयत से हक़ का रास्ता चुना था, उसमें तूने नुक़सान भी बर्दाश्त किया, बातिल का मुक़ाबला करने में तकालीफ़

भी उठाईं। चुनाँचे बंदे की कोशिश व मेहनत और अल्लाह तआला का फ़ज़ल व करम दोनों चीज़ें मिल कर ही बंदे की दाइमी फ़लाह को मुमकिन बनाती हैं। हम एक नेक काम का इरादा करते हैं तो अल्लाह तआला नीयत के ख़ुलूस को देखते हुए उस काम की तौफ़ीक़ दे देता है और उसे हमारे लिये आसान कर देता है। अग़र हम इरादा ही नहीं करेंगे तो अल्लाह की तरफ़ से तौफ़ीक़ भी नहीं मिलेगी। इसी तरह अल्लाह की तौफ़ीक़ व तैसीर के बग़ैर महज़ इरादे से भी हम कुछ नहीं कर सकते।

## आयात 44 से 53 तक

وَنَادٰٓی اَصۡحٰبُ الۡجَنَّۃِ اَصۡحٰبَ النَّارِ اَنۡ قَدۡ وَجَدۡنَا مَا
وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلۡ وَجَدۡتُّمۡ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمۡ
حَقًّا ؕ قَالُوۡا نَعَمۡ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَیۡنَهُمۡ اَنۡ لَّعۡنَةُ اللّٰهِ
عَلَی الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۴۴﴾ الَّذِیۡنَ یَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ
وَیَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ كٰفِرُوۡنَ ﴿۴۵﴾
وَبَیۡنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَی الۡاَعۡرَافِ رِجَالٌ یَّعۡرِفُوۡنَ
كُلًّاۢ بِسِیۡمٰهُمۡ ۚ وَنَادَوۡا اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ سَلٰمٌ
عَلَیۡكُمۡ ۟ لَمۡ یَدۡخُلُوۡهَا وَهُمۡ یَطۡمَعُوۡنَ ﴿۴۶﴾ وَاِذَا
صُرِفَتۡ اَبۡصَارُهُمۡ تِلۡقَآءَ اَصۡحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوۡا رَبَّنَا

لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ۧ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ
الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَآ
اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾
اَهٰٓؤُلَاۗءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ
اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾
وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا
عَلَيْنَا مِنَ الْمَاۗءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ
حَرَّمَهُمَا عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ۙ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ
لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ
نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَاۗءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ
عَلٰي عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ هَلْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ
نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ
لَّنَا مِنْ شُفَعَاۗءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ

الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ۧ

## आयत 44

وَنَادٰٓي اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا

*“और जन्नती लोग पुकार कर कहेंगे जहन्नमियों से कि हमने तो वह वादा बिल्कुल सच्चा पाया है जो हमारे रब ने हमसे किया था”*

जिन नेअमतों का अल्लाह ने हमसे वादा किया था वह हमें मिल गईं। अल्लाह का वादा हमारे हक़ में सच साबित हुआ।

فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۭ قَالُوْا نَعَمْ ۚ

*“तो क्या तुमने भी सच्चा पाया है वह वादा जो तुम्हारे रब ने तुमसे किया था? वो कहेंगे कि हाँ!”*

अहले जहन्नम जवाब देंगे कि हाँ! हमारे साथ भी जो वादे किये गए थे वो भी सब पूरे हो गए। जो वईदें (चेतावनियाँ) हमें दुनिया में सुनाई जाती थीं, अज़ाब की जो मुख़्तलिफ़ शक्लें बताई जाती थीं, वो सबकी सब हक़ीक़त का रूप धार कर हमारे सामने मौजूद हैं और इस वक़्त हम उनमें घिरे हुए हैं।

فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيۡنَهُمۡ اَنۡ لَّعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيۡنَ ۙ﴿۴۴﴾

*"तो (उस वक़्त) पुकारेगा एक पुकारने वाला उनके माबैन (बीच) कि अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर।"*

## आयत 45

الَّذِيۡنَ يَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَيَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ۚ

*"वो लोग जो रोकते थे (और ख़ुद भी रुकते थे) अल्लाह के रास्ते से और उस (रास्ते) में कजी (टेढ़) निकालते थे"*

ना सिर्फ़ यह कि वो ख़ुद ईमान नहीं लाये थे, बल्कि दूसरे लोगों को भी उस रास्ते से रोकने की हत्ता वसीअ कोशिश करते थे। अग़र किसी शख़्स को मुहम्मह रसूल अल्लाह ﷺ की महफ़िल की तरफ़ जाते देखते तो उसे बरगलाने और बहकाने के दर पे हो जाते थे कि कहीं आप ﷺ की बातों से मुतास्सिर होकर ईमान ना ले आये।

وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ كٰفِرُوۡنَ ﴿۴۵﴾

*"और यह लोग आख़िरत के मुन्कर थे।"*

## आयत 46

وَبَيۡنَهُمَا حِجَابٌ ۚ

*"और उन (जन्नतियों और जहन्नमियों) के माबैन एक पर्दे की दीवार होगी।"*

अहले जन्नत और अहले जहन्नम के दरमियान होने वाली इस नौइयत की गुफ़्तगु का नक़्शा ज़्यादा वाज़ेह तौर पर सूरतुल हदीद में खींचा गया है। वहाँ (आयत नम्बर 13 में) फ़रमाया गया है: {فَضُرِبَ بَيۡنَهُمۡ بِسُوۡرٍ لَّهٗ بَابٌ} यानि एक तरफ़ जन्नत और दूसरी तरफ़ दोज़ख होगी और दरमियान में फ़सील होगी जिसमें एक दरवाज़ा भी होगा।

وَعَلَى الۡاَعۡرَافِ رِجَالٌ يَّعۡرِفُوۡنَ كُلًّا ۢ بِسِيۡمٰهُمۡ ۚ

*"और दीवार की बुर्जियों (top) पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी निशानी से पहचानते होगे।"*

यह असहाबे आराफ़ अहले जन्नत को भी पहचानते होंगे और अहले जहन्नम को भी। क़िलों की फ़सीलों के ऊपर जो बुर्जियाँ और झरोखे बने होते हैं जहाँ से तमाम ऐतराफ़ व जवानिब (चारों तरफ़) का मुशाहिदा हो सके, उन्हें "अर्फ़" (जमा आराफ़) कहा जाता है। दोज़ख़ और जन्नत की दरमियानी फ़सील पर भी कुछ बुर्जियाँ और झरोखे होंगे जहाँ से जन्नत व दोज़ख़ के मनाज़िर का मुशाहिदा हो सकेगा। उन पर वो लोग होंगे जो दुनिया में बैन-बैन (in between) के लोग थे, यानि किसी तरफ़ भी यक्सू होकर नहीं रहे थे। उनके आमाल नामों मे नेकियाँ और बद्आमालियाँ बराबर हो जायेंगी, जिसकी वजह से अभी

उन्हें जन्नत में भेजने या जहन्नम में झोंकने का फ़ैसला नहीं हुआ होगा और उन्हें आराफ़ पर ही रोका गया होगा।

وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۣ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۝

*"और वो (असहाबे आराफ़) जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि आप पर सलामती हो! वो उस (जन्नत में) अभी दाख़िल नहीं हुए होंगे, मग़र उन्हें उसकी बहुत ख़्वाहिश होगी।"*

वो अहले जन्नत को देख कर उन्हें बतौर मुबारकबाद सलाम कहेंगे और उनकी अपनी शदीद ख़्वाहिश और आरज़ू होगी कि अल्लाह तआला उन्हें भी जल्द से जल्द जन्नत में दाख़िल कर दे, जो आख़िरकार पूरी कर दी जायेगी।

**आयत 47**

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَاۗءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

*"और जब उनकी निगाहें फेरी जायेंगी अहले जहन्नम की तरफ़ तो (उस वक़्त) वो कहेंगे ऐ हमारे परवरदिग़ार! हमें इन ज़ालिमों के साथ शामिल अ कर दीजियो।"*

जन्नत के नज़ारे के बाद उनको जहन्नम का मंज़र भी दिखाया जायेगा, कि अब ज़रा जहन्नमियों की कैफ़ियत का भी

मुशाहिदा कर लो। यह लोग अभी तक “बैयनल खौफ़ वर्रिजा” की कैफ़ियत में होंगे। उन्हें जन्नत में दाख़िले की उम्मीद भी होगी और जहन्नम में झोंके जाने का ख़ौफ़ भी। इसलिये जब वो अहले जन्नत की तरफ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेगें और साथ ही उनके दिलों में उमंगे और तमन्नायें जाग जायेंगी कि अल्लाह हमें भी इनके साथ शामिल कर दे। लेकिन दूसरी तरफ़ जब अहले जहन्नम पर नज़र पड़ेगी तो फ़रियाद करेंगे कि पवरदिगार! हम पर रहम फ़रमाइयो और हमें इन ज़ालिम लोगों का साथी ना बनाइयो!

## आयत 48

وَنَادٰٓى اَصۡحٰبُ الۡاَعۡرَافِ رِجَالًا يَّعۡرِفُوۡنَهُمۡ بِسِيۡمٰىهُمۡ قَالُوۡا مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡكُمۡ جَمۡعُكُمۡ وَمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ۝٤٨

*“और पुकारेंगे अहले आराफ़ (अहले जहन्नम से) उन लोगों को जिन्हें वो पहचानते होंगे उनकी निशानी से, कहेंगे कि तुम्हारे कुछ काम ना आई तुम्हारी जमीअत और (ना वो) जो कुछ तुम तकब्बुर किया करते थे।”*

वो उन्हें याद दिलाएँगे कि वो तुम्हारे हाशियानशीन, तुम्हारे वो लाव लश्कर, तुम्हारा वह ग़ुरूर व तकब्बुर, वो जाह व हशम सब कहाँ गये? ऐ अबु जहल! यह तेरे साथ क्या हुआ? और ऐ वलीद बिन मुगीरह! यह तेरा क्या अंजाम हुआ?

## आयत 49

اَهٰٓؤُلَاۗءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ

*"क्या यही वो लोग हैं जिनके बारे में तुम क़समें खाया करते थे कि नहीं नवाज़ेगा इन्हें अल्लाह अपनी किसी रहमत से!"*

असहाबे आराफ़ को जन्नत वालों में फ़ुक़रा-ए-सहाबा रज़ि. भी नज़र आएँगे, वहाँ वो हज़रत बिलाल रज़ि. को भी देखेंगे, वहाँ उनकी नज़र सुहेब रूमी रज़ि. और हज़रत यासिर रज़ि. पर भी पड़ेगी। चुनाँचे वो उन असहाबे जन्नत की तरफ़ इशारा करके जहन्नमियों से पूछेंगे कि क्या यही वो लोग थे जिनके बारे में तुम क़समें खा-खाकर कहा करते थे कि इन लोगों को अल्लाह तआला किसी तरह भी हम पर फ़ज़ीलत नहीं दे सकता, इन तक अल्लाह की कोई रहमत पहुँच ही नहीं सकती, क्योंकि तुम्हारे ज़अम (ख्याल) में तो वो मुफ़लिस और नादार थे, घटिया तबके से ताल्लुक़ रखते थे और गिरे-पड़े लोग थे! और तुम थे कि उस वक़्त इनके मुक़ाबले में अपनी दौलत, हैसियत, वजाहत और ताक़त के बल पर अकड़ा करते थे।

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝

*"(उनसे तो कह दिया गया है कि) दाख़िल हो जाओ जन्नत में, ना तुम पर कोई ख़ौफ़ है और ना तुम किसी ग़म से दो-चार होगे।"*

## आयत 50

وَنَادٰۤی اَصۡحٰبُ النَّارِ اَصۡحٰبَ الۡجَنَّۃِ اَنۡ اَفِیۡضُوۡا عَلَیۡنَا مِنَ الۡمَآءِ اَوۡ مِمَّا رَزَقَکُمُ اللّٰہُ ؕ

*“और जहन्नम वाले आवाज़ देंगे जन्नत वालों को कि कुछ तो बहा दो हमारी तरफ़ पानी में से या उस रिज़्क़ में से (कुछ दे दो) जो अल्लाह ने तुम्हें दे रखा है।”*

قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَہُمَا عَلَی الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿ۙ۵۰﴾

*“वो कहेंगे कि अल्लाह ने हराम कर दी हैं यह दोनों चीज़ें (जन्नत का पानी और रिज़्क़) काफ़िरों पर।”*

अहले जन्नत जवाब देंगे कि हम तो शायद ये चीज़ें तुम लोगों को देना भी चाहते, क्योंकि हमारी शराफ़त से तो यह बईद था कि तुम्हें कोरा जवाब देते, लेकिन क्या करें, अल्लाह ने काफ़िरों के लिये जन्नत की यह सब चीज़ें हराम कर दी हैं, लिहाज़ा हम यह नेअमतें तुम्हारी तरफ़ नहीं भेज सकते।

## आयत 51

الَّذِیۡنَ اتَّخَذُوۡا دِیۡنَہُمۡ لَہۡوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتۡہُمُ الۡحَیٰوۃُ الدُّنۡیَا ۚ

*“(उनके लिये) जिन्होंने अपने दीन को तमाशा और खेल बना लिया था और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में मुब्तला कर दिया था।”*

فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَاۗءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ

*"लिहाज़ा आज के दिन हम भी उन्हें नज़र अंदाज़ कर देंगे, जैसा कि उन्होंने इस दिन की मुलाक़ात को भुलाए रखा था"*

وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝٥١

*"और जैसा कि वो हमारी आयात का इन्कार करते रहे थे।"*

## आयत 52

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰي عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢

*"और हम ले आए हैं इनके पास एक किताब, जिसकी हमने पूरी तफ़सील बयान कर दी है इल्म क़तई की बुनियाद पर, हिदायत भी है और रहमत भी उन लोगों के लिये जो ईमान ले आएँ।"*

## आयत 53

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ

*"यह किस चीज़ का इन्तेज़ार कर रहे हैं सिवाय इसकी हक़ीक़त के मुशाहिदे के!"*

यानि क्या यह लोग आयाते अज़ाब के अमली ज़हूर का इन्तेज़ार कर रहे हैं? क्या यह इन्तेज़ार कर रहे हैं कि वक़्फ़ा-

ए-मोहलत का यह बंद टूट जाये और वाक़िअतन इनके ऊपर अज़ाब का धारा छूट पड़े। क्या यह लोग इस अंजाम का इन्तेज़ार कर रहे हैं?

يَوْمَ يَأْتِيْ تَأْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ

*"जिस दिन इसका मिस्दाक़ ज़ाहिर हो जायेगा तो कहेंगे वो लोग जिन्होंने पहले इसे नज़र अंदाज़ किये रखा था कि यक़ीनन हमारे परवरदिग़ार के रसूल हक़ के साथ आए थे।"*

فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَاۗءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ

*"तो क्या (अब) हैं हमारे लिये कोई शफ़ाअत करने वाले कि हमारी शफ़ाअत करें या कोई सूरत कि हमें (दुनिया में) लौटा दिया जाये ताकि हम अमल करें उसके बरअक्स जो कुछ (पहले) हम करते रहे थे!"*

قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ۧ53

*"वो तो अपने आप को बर्बाद कर चुके, और जो इफ़्तरा (अपवाद) वो करते रहे थे वो उनसे गुम हो गया।"*

उस दिन वो लोग दोबारा दुनिया में जाने की ख़्वाहिश करेंगे, लेकिन तब उन्हें इस तरह का कोई मौक़ा फ़राहम किये जाने का कोई इम्कान नहीं होगा।

# आयात 54 से 58 तक

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ
النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ
مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ۭ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۭ تَبٰرَكَ اللّٰهُ
رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٥٤ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ اِنَّهٗ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٥٥ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ
بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٦ وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ
بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا
سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاۗءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۝٥٧ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ
رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ۭ كَذٰلِكَ
نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝٥٨

## आयत 54

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ فِىۡ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ

*"बेशक तुम्हारा परवरदिग़ार वही अल्लाह है जिसने पैदा किये आसमान और ज़मीन छ: दिनो में, फिर मुतमक्किन हुआ अर्श पर।"*

अर्श की हक़ीक़त और अल्लाह तआला के अर्श पर मतमक्किन होने की कैफ़ियत हमारे तसव्वुर से बालातर है। इस लिहाज़ से यह आयत मुतशाबेहात में से है। इसकी असल हक़ीक़त को अल्लाह ही जानता है। मुमकिन है वाक़्यतन यह कोई मुजस्सम शय हो और किसी ख़ास जगह पर मौजूद हो और यह भी हो सकता है कि महज़ इस्तआरा (रूपक) हो। आलम-ए-ग़ैब की ख़बरें देने वाली इस तरह की क़ुरानी आयात मुस्तक़िल तौर पर आयाते मुतशाबेहात के ज़ुमरे में आती हैं। अलबत्ता जिन आयात में बाज़ साइंसी हक़ाइक़ बयान हुए हैं, उनमें से अक्सर की सदाक़त साइंसी तरक़्क़ी के बाइस मुन्कशिफ़ हो चुकी है, और वो "मोहकमात" के दर्जे में आ चुकी हैं। इस सिलसिले में आइंदा तदरीजन मज़ीद पेशरफ्त रफ़त की तवक्क़ो भी है। (वल्लाहु आलम!)

يُغۡشِى الَّيۡلَ النَّهَارَ يَطۡلُبُهٗ حَثِيۡثًا ۙ

*"वह ढ़ाँप देता है रात को दिन पर (या रात को ढ़ाँप देता है दिन से) जो उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ"*

दिन रात के पीछे आता है और रात दिन के पीछे आती है।

وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ

*"और उसने सूरज, चाँद और सितारे पैदा किये जो उसके हुक्म से अपने-अपने कामों में लगे हुए हैं।"*

सूरज, चाँद और सितारों के मुसख़्ख़र होने का मतलब यह है कि जो भी क़ायदा या क़ानून उनके लिये मुक़र्रर कर दिया गया है, वो उसकी इताअत कर रहे हैं।

اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۭ

*"आगाह हो जाओ उसी के लिये है ख़ल्क़ और (उसी के लिये है) अम्र।"*

इन अल्फ़ाज़ के दो मफ़हूम ज़हन में रखिये। एक तो बहुत सादा और सतही मफ़हूम है कि यह कायनात अल्लाह ने तख़्लीक़ की है और अब इसमें उसी का हुक्म कारफ़रमा है। यानि अहकामे तबीइया (law of physics) भी उसी के बनाये हुए हैं जिनके मुताबिक़ कायनात का निज़ाम चल रहा है, और अहकामे तशरीइया (वैधानिक) भी उसी ने उतारे हैं कि यह अवामिर और यह नवाही हैं, इंसान इनके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे। मग़र इसका दूसरा और गहरा मफ़हूम यह है कि कायनात में तख़्लीक़ दो सतह पर हुई है। इस लिहाज़ से यह दो अलग-अलग आलम हैं, एक आलमे ख़ल्क़ है और दूसरा आलमे अम्र। आलमे अम्र में अदमे महज़ से तख़्लीक़ (creation ex nihilio) होती है और इसमें तख़्लीक़ के लिए बस "कुन" कहा जाता है तो वह चीज़ वजूद में आ जाती है (फ़-यकून)। इसके लिये ना वक़्त दरकार है और ना किसी माद्दे की ज़रूरत होती है। फ़रिश्तों, इंसानी

अरवाह और वही का ताल्लुक़ आलमे अम्र से है। इसी लिये इनके सफ़र करने के लिये भी कोई वक़्त दरकार नहीं होता। फ़रिश्ता आँख झपकने में ज़मीन से सातवें आसमान पर पहुँच जाता है।

दूसरी तरफ़ आलमे ख़ल्क़ में एक शय से कोई दूसरी शय तबई क़वानीन और ज़वाबित (शर्तों) के मुताबिक़ बनती है। इसमें माद्दा भी दरकार होता है और वक़्त भी लगता है। जैसे रहमे मादर में बच्चे की तख़्लीक़ में कई महीने लगते हैं। आम की गुठली से पौधा उगने और बढ़ कर दरख़्त बनने के लिये कई साल का वक़्त दरकार होता है। आलमे ख़ल्क़ में जब ज़मीन और आसमानों की तख़्लीक़ हुई तो क़ुरान के मुताबिक़ यह छः दिनों में मुकम्मल हुई (यह आयत भी अभी तक मुतशाबेहात में से है, अग़रचे इसके बारे में अब जल्द हक़ीक़त मुन्कशिफ़ होने के इम्कानात हैं)। इसकी हक़ीक़त के बारे में अल्लाह ही जानता है कि इन छः दिनों से कितना ज़माना मुराद है। इसका दौरानिया कई लाख साल पर भी मुहीत हो सकता है। ख़ुद क़ुरान के मुताबिक़ अल्लाह का एक दिन हमारे नज़दीक एक-एक हज़ार साल का भी हो सकता है (सूरतुस्सज्दा, आयत 5) और पचास हज़ार साल का भी (सूरतुल मआरिज, आयत 4)।

यह क़ुरान मजीद का ऐजाज़ है कि इन्तहाई पेचीदा इल्मी नुक्ते को भी ऐसे अल्फ़ाज़ और ऐसे पैराय में बयान कर देता है कि एक अमूमी ज़हनी सतह का आदमी भी इसे पढ़ कर मुत्मईन हो जाता है, जबकि एक फ़लसफ़ी व हकीम इंसान को इसी नुक्ते के अंदर इल्म व मारफ़त का बहरे बेकराँ मौज्ज़न नज़र आता है। चुनाँचे पन्द्रह सौ साल पहले सहराये अरब के एक बददु को इस आयत का यह मफ़हूम समझने में

कोई उलझन महसूस नहीं हुई होगी कि यह कायनात अल्लाह की तख़्लीक़ है और उसी को हक़ है कि इस पर अपना हुक्म चलाये। मग़र जब एक साहिबे इल्मे मुहक़्क़िक़ इस लफ़्ज़ "अम्र" पर ग़ौर करता है और फिर क़ुरान मजीद में गोताज़नी करता है कि यह लफ़्ज़ "अम्र" क़ुरान मजीद में कहाँ-कहाँ, किन-किन मायनो में इस्तेमाल हुआ है, और फिर इन तमाम मतालब व मफ़ाहीम को आपस में मरबूत (integrated) करके देखता है तो उस पर बहुत से इल्मी हक़ाइक मुन्कशिफ़ होते हैं। बहरहाल आलमे ख़ल्क़ एक अलग आलम है और आलमे अम्र अलग, और इन दोनों के क़वानीन व ज़वाबित भी अलग-अलग हैं।

تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۵۴

*"बहुत बा-बरकत है अल्लाह जो तमाम जहानों का रब है।"*

## आयत 55

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝۵۵

*"पुकारते रहा करो अपने रब को आजिज़ी के साथ और चुपके-चुपके, यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता।"*

गोया ज़्यादा बुलंद आवाज़ से दुआ माँगना अल्लाह के यहाँ पसंदीदा नहीं है।

## आयत 56

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ

*“और ज़मीन में उसकी इस्लाह के बाद फ़साद मत मचाओ और अल्लाह को पुकारा करो ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ।”*

अल्लाह को पुकारने, उससे दुआ करने के दो पहलू (dimensions) पहले बताए गए कि अल्लाह को जब पुकारो तो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके दिल में पुकारो। अब इस ज़िमन में मज़ीद फ़रमाया गया कि अल्लाह के साथ तुम्हारा मामला हमेशा “बैयनल खौफ़ वर्रिजा” रहना चाहिये। एक तरफ़ ख़ौफ़ का अहसास भी हो कि अल्लाह पकड़ ना ले, कहीं सजा ना दे दे, और दूसरी तरफ़ उसकी मग़फ़िरत और रहमत की क़वी उम्मीद भी दिल में हो। लिहाज़ा फ़रमाया कि अल्लाह से दुआ करते हुए तुम्हारी दिली और रुहानी कैफ़ियत इन दोनों के बैन-बैन (दरमियान) होनी चाहिये।

اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

*“यक़ीनन अल्लाह की रहमत अहले अहसान बंदों के बहुत ही क़रीब है।”*

**आयत 57**

وَهُوَ الَّذِىۡ يُرۡسِلُ الرِّيٰحَ بُشۡرًاۢ بَيۡنَ يَدَىۡ رَحۡمَتِهٖ‌ؕ

*"और वही है जो भेजता है हवाएँ बशारत देती हुई, उसकी रहमत के आगे-आगे।"*

यानि अब्रे रहमत से पहले हवाओं के ठंडे झोंके गोया बशारत दे रहे होते हैं कि बारिश आने वाली है। इस कैफ़ियत का सही इदराक करने (समझने) के लिये किसी ऐसे ख़ित्ते का तसव्वुर कीजिये जहाँ ज़मीन मुर्दा और बे आबो ग्याह पड़ी है, लोग आसमान की तरफ़ नज़रें लगाये बारिश के मुन्तज़िर हैं। अग़र वक़्त पर बारिश ना हुई तो बीज और मेहनत दोनों ज़ाया हो जाएँगे। ऐसे में ठंड़ी-ठंड़ी हवा के झोंके जब बाराने रहमत की नवीद (ख़ुशख़बरी) सुनाते हैं तो वहाँ के वासियों के लिये इससे बड़ी बशारत और क्या होगी।

حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتۡ سَحَابًا ثِقَالًا

*"यहाँ तक कि वह हवाएँ उठा लाती हैं बड़े-बड़े भारी बादल"*

यह बादल किस क़द्र भारी होते होंगे, इनका वज़न इंसानी हिसाब व शुमार में आना मुमकिन नहीं। अल्लाह की क़ुदरत और उसकी हिकमत के सबब लाखों टन पानी को हवाएँ रुई के गालों की तरह उड़ाये फिरती हैं।

سُقۡنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ

*"तो हम हाँक देते हैं उस (बादल) को एक मुर्दा ज़मीन की तरफ़"*

हवाएँ हमारे हुक्म से उस बादल को किसी बे आबो ग्याह वादी की तरफ़ ले जाती हैं और बाराने रहमत उस वादी में एक नई ज़िन्दगी की नवीद साबित होती है।

فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ

*"फिर हम उससे पानी बरसाते हैं और फिर उससे हर तरह के मेवे निकाल लाते हैं।"*

बारिश के बाद वह ख़ुश्क और मुर्दा ज़मीन घास, फ़सलों और फलदार पौधों की रुईदगी की शक्ल में अपने ख़जाने उग़ल देती है।

كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝۵۷

*"इसी तरह हम मुर्दों को निकाल लाएँगे (ज़मीन से) ताकि तुम नसीहत अखज़ करो।"*

दरअसल बादलों और हवाओं के मज़ाहिर की तफ़सील बयान करके एक आम ज़हन को तशबीह के ज़रिये से बअसे बादल मौत की हक़ीक़त की तरफ़ मुतवज्जह करना मक़सूद है। यानि मुर्दा ज़मीन को देखो! इसके अंदर ज़िन्दगी के कुछ भी आसार बाक़ी नहीं रहे थे, हशरातुल अर्ज़ और परिंदे तक वहाँ नज़र नहीं आते थे, इस ज़मीन के वासी भी मायूस हो चुके थे, लेकिन इस मुर्दा ज़मीन पर जब बारिश हुई तो यकायक इसमें ज़िन्दगी फिर से उग कर आई और वह देखते ही देखते *"मग़र अब ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है मौज्ज़न साक़ी!"* की मुज्जसम तस्वीर बन गई। बंजर ज़मीन हरियाली की सब्ज़ पोशाक पहन कर दुल्हन की तरह सज गई। हशरातुल

अर्ज़ का असद हाम! परिंदों की ज़मज़मा परदाज़ियाँ! इसके वासियों की रौनकें! गोया बारिश के तुफ़ैल ज़िन्दगी पूरी चहल-पहल के साथ वहाँ जलवागर हो गई। इस आसान तशबीह से एक आम ज़हनी इस्तअदाद रखने वाले इंसान को हयात बाद अल मौत की कैफ़ियत आसानी से समझ में आ जानी चाहिये कि ज़मीन के अंदर पड़े हुए मुर्दे भी गोया बीजों की मानिंद हैं। जब अल्लाह का हुक्म आयेगा, ये भी नबातात की मानिंद फूट कर बाहर निकल आएँगे।

## आयत 58

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ

*"और ज़रख़ैज़ ज़मीन तो अपने रब के हुक्म से अपना सब्ज़ा निकालती है, और जो (ज़मीन) ख़राब है वह कुछ नहीं निकालती मग़र कोई नाक़िस सी चीज़।"*

सरायकी ज़बान में एक लफ़्ज़ "नख़द" इस्तेमाल होता है, यह इस अरबी लफ़्ज़ "نَكِدًا" से मिलता-जुलता है। यानि बिल्कुल रद्दी और घटिया चीज़।

كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

*"इस तरह हम अपनी आयात को ग़र्दिश में लाते हैं उन लोगों के लिये जो (इनकी) क़द्र करने वाले हों।"*

अल्लाह तआला इस क़ुरान के ज़रिये से अपनी निशानियाँ गोनागों पहलुओं से नुमाया करता है ताकि लोग उनको

समझें, उनको पहचाने और उनकी क़द्र करें। यह तसरीफ़े आयात अल्लाह तआला का बहुत बड़ा अहसान है बशर्ते इसकी क़द्र करने वाले लोग हों।

## आयात 59 से 64 तक

لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰی قَوۡمِہٖ فَقَالَ یٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا
اللّٰہَ مَا لَکُمۡ مِّنۡ اِلٰہٍ غَیۡرُہٗ ؕ اِنِّیۡۤ اَخَافُ عَلَیۡکُمۡ
عَذَابَ یَوۡمٍ عَظِیۡمٍ ﴿۵۹﴾ قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِہٖۤ اِنَّا
لَنَرٰىكَ فِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ﴿۶۰﴾ قَالَ یٰقَوۡمِ لَیۡسَ بِیۡ ضَلٰلَۃٌ
وَّلٰکِنِّیۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۶۱﴾ اُبَلِّغُکُمۡ
رِسٰلٰتِ رَبِّیۡ وَاَنۡصَحُ لَکُمۡ وَاَعۡلَمُ مِنَ اللّٰہِ مَا لَا
تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۲﴾ اَوَعَجِبۡتُمۡ اَنۡ جَآءَکُمۡ ذِکۡرٌ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ
عَلٰی رَجُلٍ مِّنۡکُمۡ لِیُنۡذِرَکُمۡ وَلِتَتَّقُوۡا وَلَعَلَّکُمۡ
تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۶۳﴾ فَکَذَّبُوۡہُ فَاَنۡجَیۡنٰہُ وَالَّذِیۡنَ مَعَہٗ فِی
الۡفُلۡکِ وَاَغۡرَقۡنَا الَّذِیۡنَ کَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِنَا ؕ اِنَّہُمۡ کَانُوۡا
قَوۡمًا عَمِیۡنَ ﴿۶۴﴾

इस रुकूअ से अत्तज़कीर बिय्यामिल्लाह के उस सिलसिले का आग़ाज़ हो रहा है जिसे कब्ल अज़ इस सूरत के मज़ामीन का "उमूद" क़रार दिया गया है। यहाँ इस सिलसिले का बहुत बड़ा हिस्सा "अन्बाअ अर्रुसुल (रसूलों की ख़बरें)" पर मुश्तमिल है। आगे बढ़ने से पहले इस इस्तलाह को अच्छी तरह समझना बहुत ज़रूरी है। क़ुरान मजीद में जहाँ कहीं नबियों का ज़िक्र आता है तो इसका मक़सद उनकी सीरत के रोशन पहलुओं मसलन उनका मक़ाम, तक़वा और इस्तक़ामत वग़ैरह को नुमाया करना होता है, जबकि रसूलों का ज़िक्र बिल्कुल मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में आता है। अल्लाह तआला की तरफ़ से जब भी कोई रसूल अलै. आया तो वह किसी क़ौम की तरफ़ भेजा गया, लिहाज़ा क़ुरान मजीद में रसूल अलै. के ज़िक्र के साथ लाज़िमन मुतलक़्क़ा क़ौम का ज़िक्र भी किया गया है। फिर रसूल की दावत के जवाब में उस क़ौम के रवैय्ये और रद्दे अमल की तफ़सील भी बयान की गई है। चुनाँचे पहली क़िस्म के वाक़्यात को "क़ससुल अम्बिया" कहा जा सकता है। इसकी मिसाल सूरह युसुफ़ है, जिसमें हज़रत युसुफ़ अलै. के हालात बहुत तफ़सील से बयान हुए हैं, मग़र कहीं भी आप अलै. की तरफ़ से इस नौइयत के ऐलान का ज़िक्र नहीं मिलता कि लोगो! मुझ पर ईमान लाओ, मेरी बात मानो, वरना तुम पर अज़ाब आयेगा और ना ही ऐसा कोई इशारा मिलता है कि उस क़ौम ने आप अलै. की दावत को रद्द कर दिया और फिर उन पर अज़ाब आ गया और उन्हें हलाक कर दिया गया।

दूसरी क़िस्म के वाक़्यात के लिये "अन्बाअ अर्रुसुल" की इस्तलाह इस्तेमाल होती है। ("अन्बाअ" जमा है "नबाअ"

की, जिसके मायने ख़बर के हैं, यानि रसूलों की ख़बरे)। इन वाक़्यात से एक उसूल वाज़ेह होता है कि जब भी कोई रसूल किसी क़ौम की तरफ़ आया तो वह अल्लाह की अदालत बन कर आया। जिन लोगों ने उसकी दावत को मान लिया वो अहले ईमान ठहरे और आफ़ियत में रहे, जबकि इंकार करने वाले हलाक कर दिये गये। अन्बाअ अर्रुसुल के सिलसिले में आमतौर पर छः रसूलों अलै. के हालात क़ुरान मजीद में तकरार के साथ आये हैं। इसकी वजह यह नहीं है कि रसूल सिर्फ़ छः हैं, बल्कि ये छः रसूल अलै. वो हैं जिनसे अहले अरब वाक़िफ़ थे। यह तमाम रसूल अलै. इसी जज़ीरा नुमाए अरब के अन्दर आये। यह रसूल जिन इलाक़ों में मबऊस हुए उनके बारे में जानने के लिये जज़ीरा नुमाए अरब (Arabian Peninsula) का नक़्शा अपने ज़हन में रखिये। नीचे जुनूब (दक्षिण/साउथ) की तरफ़ से इसकी चौड़ाई काफ़ी ज़्यादा है, जबकि यह चौड़ाई ऊपर शिमाल (उत्तर/नार्थ) की तरफ़ कम होती जाती है। इस जज़ीरा नुमा इलाक़े के मशरिक़ी (पूरब/ईस्ट) जानिब ख़लीज फ़ारस (Persian Gulf) है जबकि मग़रिबी (पश्चिम/वेस्ट) जानिब बहीरा-ए-अहमर (Red Sea) है जो शिमाल में जाकर दो घाटियों में तक़सीम हो जाता है। उनमें से एक (शिमाल मग़रिब की तरफ़) ख़लीज स्वेज़ है और दूसरी तरफ़ (शिमाल मशरिक़ की जानिब) ख़लीज अक़बह। ख़लीज अक़बह के ऊपर (शिमाल) वाले कोने से ख़लीज फ़ारस के शिमाली किनारे की तरफ़ सीधी लाइन लगाएँ तो नक़्शे पर एक मुसल्लस (Triangle) बन जाती है, जिसका क़ायदा (Base) नीचे जुनूब में यमन से सल्तनते ओमान तक है और ऊपर वाला कोना शिमाल में बहरे मुर्दार (Dead Sea) के इलाके में वाक़ेअ है।

मौजूदा दुनिया के नक़्शे के मुताबिक़ इस मुसल्लस में सऊदी अरब के अलावा इराक़ और शाम के मुमालिक भी शामिल हैं। यह मुसल्लस उस इलाक़े पर मुहीत है जहाँ अरब की क़दीम (पुरानी) क़ौमें आबाद थीं और यही वो क़ौमें थीं जिनकी तरफ़ वो छ: रसूल मबऊस हुए थे जिनका ज़िक्र क़ुरान मजीद में बार-बार आया है। उनमें से जो रसूल सबसे पहले आये वह हज़रत नूह अलै. थे। आप अलै. के ज़माने के बारे में यक़ीनी तौर पर तो कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन मुख़्तलिफ़ अंदाज़ों के मुताबिक़ आप अलै. का ज़माना हज़रत आदम अलै. से कोई दो हज़ार साल बाद का ज़माना बताया जाता है (वल्लाहु आलम)। उस वक़्त तक कुल नस्ले इंसानी बस इसी इलाक़े में आबाद थी। जब आप अलै. की क़ौम

आपकी दावत पर ईमान ना लाई तो पानी के अज़ाब से उन्हें तबाह कर दिया गया। यही वह इलाक़ा है जहाँ वह तबाहकुन सैलाब आया था जो "तूफ़ाने नूह" के नाम से मौसूम है और यहीं कोहे जूदी में अरारात की पहाड़ी है जहाँ हज़रत नूह अलै. की कश्ती लंगर अंदाज़ हुई थी। फिर हज़रत नूह अलै. के तीन बेटों से दोबारा नस्ले इंसानी चली। आपका एक बेटा जिसका नाम साम था, उसकी नस्ल जुनूब में इराक़ की तरफ़ फैली। इस नस्ल से जो क़ौमे वजूद में आयीं उन्हें सामी क़ौमें कहा जाता है। इन्हीं क़ौमों में एक क़ौमे आद थी, जो जज़ीरा नुमाए अरब के बिल्कुल जुनूब में आबाद थी। आज-कल यह इलाक़ा बड़ा ख़तरनाक क़िस्म का रेगिस्तान है, लेकिन उस ज़माने में क़ौमे आद का मसकन यह इलाक़ा बहुत सरसब्ज़ व शादाब था। इस क़ौम की तरफ़ हज़रत हूद अलै. को रसूल बना कर भेजा गया। आपकी दावत को इस क़ौम ने रद्द किया तो यह भी हलाक कर दी गई। इस क़ौम के बचे-कुचे लोग और हज़रत हूद अलै. वहाँ से नक़्ले मकानी करके मज़कूरा मुसल्लस की मग़रिबी सिम्त जज़ीरा नुमाए अरब के शिमाल मशरिक़ी कोने में ख़लीज अक़बह से नीचे मग़रिबी साहिल के इलाक़े में जा आबाद हुए। इन लोगों की नस्ल को क़ौमे समूद के नाम से जाना जाता है।

क़ौमे समूद की तरफ़ हज़रत सालेह अलै. को भेजा गया। इस क़ौम ने भी अपने रसूल अलै. की दावत को रद्द कर दिया, जिस पर इन्हें भी हलाक कर दिया गया। ये लोग पहाड़ों को तराश कर आलीशान इमारतें बनाने में माहिर थे। पहाड़ों के अंदर खुदे हुए उनके महलात और बड़े-बड़े हॉल आज भी मौजूद हैं। क़ौमे समूद के इस इलाक़े से ज़रा ऊपर ख़लीज अक़बह के दाहिनी तरफ़ मदयन का इलाक़ है

जहाँ वह क़ौम आबाद थी जिनकी तरफ़ हज़रत शोएब अलै. को भेजा गया। मदयन के इलाक़े से थोड़ा आगे बहरे मुर्दार (Dead Sea) है, जिसके साहिल पर सदूम और आमूरह के शहर आबाद थे। इन शहरों में हज़रत लूत अलै. को भेजा गया। बहरहाल ये सारी क़ौमें जिनका ज़िक्र क़ुरान में बार-बार आया है मज़कूरा मुसल्लस के इलाक़े में ही आबाद थीं। सिर्फ़ क़ौमे फ़िरऔन इस मुसल्लस से बाहर मिस्र में आबाद थी जहाँ हज़रत मूसा अलै. मबऊस हुए। इन छ: रसूलों के हालात पढ़ने से पहले इनकी क़ौमों के इलाक़ों का यह नक़्शा अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लीजिये। ज़मानी ऐतबार से हज़रत नूह अलै. सबसे पहले रसूल हैं, फिर हज़रत हूद अलै, फिर हज़रत सालेह अलै, फिर हज़रत इब्राहीम अलै। लेकिन हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र क़ुरान में अन्बाअ अर्रुसुल के अंदाज़ में नहीं बल्कि क़ससुल अम्बिया के तौर पर आया है। आप अलै. के भतीजे हज़रत लूत अलै. को सदूम और आमूरह की बस्तियों की तरफ़ भेजा गया।

हज़रत इब्राहीम अलै. के एक बेटे का नाम मदयन था, जिनकी औलाद में हज़रत शोएब अलै. की बेअसत हुई। हज़रत इब्राहीम अलै. ही के बेटे हज़रत इस्माईल हिजाज़ (मक्का) में आबाद हुए और फिर हिजाज़ में ही नबी आखिरुज़्ज़मान ﷺ की बेअसत हुई। हज़रत इब्राहीम अलै. के दूसरे बेटे हज़रत इस्हाक़ थे जिनको आप अलै. ने फ़लस्तीन में आबाद किया। हज़रत इस्हाक़ अलै. के बेटे हज़रत याक़ूब अलै. थे जिनसे बनी इस्राईल की नस्ल चली। क़ुरान हकीम में जब हम अम्बिया व रुसुल का तज़किरा पढ़ते हैं तो ये सारी तफ़सीलात ज़हन में होनी चाहियें।

## आयत 59

لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰی قَوۡمِهٖ فَقَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ اِنِّيۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۵۹﴾

*"हमने भेजा था नूह अलै. को उसकी क़ौम की तरफ़ तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अल्लाह की बंदगी करो, तुम्हारा कोई मअबूद उसके सिवा नहीं है, मुझे तुम्हारे बारे में अंदेशा है एक बड़े दिन के अज़ाब का।"*

यानि मुझे अंदेशा है कि अग़र तुम लोग यूँ ही मुशरिकाना अफ़आल और अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों का इरतकाब करते रहोगे तो बहुत बड़े अज़ाब में पकड़े जाओगे।

## आयत 60

قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰكَ فِيۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۶۰﴾

*"आप अलै. की क़ौम के सरदारों ने कहा कि हम तो तुम्हें एक खुली हुई ग़ुमराही में मुब्तला देख रहे हैं।"*

## आयत 61

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

*"आप अलै. ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैं किसी गुमराही में मुब्तला नहीं हूँ, बल्कि मैं तो रसूल हूँ तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से।"*

## आयत 62

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

*"मैं तो तुम्हें पहुँचा रहा हूँ अपने रब के पैग़ामात, और मैं तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूँ, और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह कुछ जानता हूँ जो तुम्हें मालूम नहीं।"*

मुझे तो तमाम जहानों के परवरदिग़ार ने इस ख़िदमत पर मामूर किया है कि मैं तुम्हें ख़बरदार कर दूँ, ताकि तुम लोग एक बड़े अज़ाब की लपेट में आने से बच जाओ। मैं तो तुम्हारी भलाई ही की फ़िक्र कर रहा हूँ। अग़र तुम्हारे मुशरिकाना अफ़आल इसी तरह जारी रहे तो इनकी पादाश में (वजह से) तुम्हारे ऊपर कितनी बड़ी तबाही आ सकती है तुम लोगों को इसका कुछ भी अंदाज़ा नहीं, मग़र मुझे अपने परवरदिग़ार की तरफ़ से इसके बारे में बराबर आगाह किया जा रहा है।

## आयत 63

اَوَ عَجِبۡتُمۡ اَنۡ جَآءَکُمۡ ذِکۡرٌ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ عَلٰی رَجُلٍ مِّنۡکُمۡ لِیُنۡذِرَکُمۡ وَ لِتَتَّقُوۡا وَ لَعَلَّکُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۶۳﴾

*"क्या तुम्हें इस बात पर तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक याद दिहानी तुम ही में से एक फ़र्द के ज़रिये से आई, ताकि वह तुम्हें ख़बरदार कर दे और तुम (गुनाहों से) बच सको और तुम पर रहम किया जाये।"*

## आयत 64

فَکَذَّبُوۡہُ فَاَنۡجَیۡنٰہُ وَ الَّذِیۡنَ مَعَہٗ فِی الۡفُلۡکِ وَ اَغۡرَقۡنَا الَّذِیۡنَ کَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِنَا ؕ

*"तो उन्होंने उसको झुठलाया, तो बचा लिया हमने उसको और जो उसके साथी थे कश्ती में, और हमने ग़र्क़ कर दिया उन लोगों को जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया।"*

اِنَّہُمۡ کَانُوۡا قَوۡمًا عَمِیۡنَ ﴿۶۴﴾ ع

*"यक़ीनन वो अंधे लोग थे।"*

यानि वह ऐसी क़ौम थी जिसने आँखे होने के बावजूद अल्लाह की निशानियों को देखने और हक़ को पहचानने से इंकार कर दिया। हज़रत नूह अलै. के साथी अहले ईमान बहुत ही कम लोग थे। आप अलै. ने साढ़े नौ सौ बरस तक

अपनी क़ौम को दावत दी थी इसके बावजूद बहुत थोड़े लोग ईमान लाये थे, जो आप अलै. के साथी कश्ती में सैलाब से महफ़ूज़ रहे। आप अलै. के तीन बेटों में से "आद" नाम के एक सरदार बड़े मशहूर हुए और फिर उन्हीं के नाम पर "क़ौमे आद" वजूद में आई। आगे इसी क़ौम का तज़किरा है।

## आयात 65 से 72 तक

وَاِلٰی عَادٍ اَخَاهُمۡ هُوۡدًا ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا
لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ الۡمَلَاُ
الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ قَوۡمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىۡ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا
لَنَظُنُّكَ مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوۡمِ لَيۡسَ بِىۡ
سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّىۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٦٧﴾
اُبَلِّغُكُمۡ رِسٰلٰتِ رَبِّىۡ وَاَنَا لَكُمۡ نَاصِحٌ اَمِيۡنٌ ﴿٦٨﴾
اَوَعَجِبۡتُمۡ اَنۡ جَآءَكُمۡ ذِكۡرٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ عَلٰى رَجُلٍ
مِّنۡكُمۡ لِيُنۡذِرَكُمۡ ؕ وَاذۡكُرُوۡۤا اِذۡ جَعَلَكُمۡ خُلَفَآءَ مِنۡۢ
بَعۡدِ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّزَادَكُمۡ فِى الۡخَلۡقِ بَصۜۡطَةً ۚ فَاذۡكُرُوۡۤا
اٰلَۤاءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوۡۤا اَجِئۡتَنَا لِنَعۡبُدَ
اللّٰهَ وَحۡدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاۡتِنَا بِمَا

تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۷۰ قَالَ قَدْ وَقَعَ
عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ
اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ
سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝۷۱
فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝۷۲

## आयत 65

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ

*"और क़ौमे आद की तरफ़ (हमने) उनके भाई हूद अलै. को भेजा।"*

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۶۵

*"उस अलै. ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अल्लाह की बंदगी करो, तुम्हारा कोई इलाह उसके सिवा नहीं है, तो क्या तुम लोग डरते नहीं?"*

हज़रत हूद अलै. ने भी अपनी क़ौम को वही पैग़ाम दिया जो हज़रत नूह अलै. ने अपनी क़ौम को दिया था।

## आयत 66

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۞٦٦

*"आप अलै. की क़ौम के सरदारों ने, जिन्होंने इंकार किया था, कहा कि हम तो तुम्हें किसी हिमाक़त में मुब्तला देखते हैं और हम तुमको झूठों में से गुमान करते हैं।"*

यानि तुम झूठा दावा कर रहे हो, तुम पर कोई वही वग़ैरह नहीं आती।

## आयत 67

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞٦٧

*"आप अलै. ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मुझ पर कोई हिमाक़त तारी नहीं हुई बल्कि मैं तो रसूल हूँ तमाम जहानों के परवरदिग़ार की जानिब से।"*

## आयत 68

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ۞٦٨

*"मैं तो अपने परवरदिग़ार के पैग़ामात तुम्हें पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा दयानतदार ख़ैर ख्वाह हूँ।"*

मैं तो वही बात हू-ब-हू तुम तक पहुँचा रहा हूँ जो अल्लाह की तरफ़ से आ रही है, इसलिये कि मुझे तुम्हारी ख़ैरख्वाही मतलूब है। मैं तुम्हारा ऐसा ख़ैरख़्वाह हूँ जिस पर भरोसा किया जा सकता है।

## आयत 69

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۭ

*"क्या तुम्हें तअज्जुब है इस बात पर कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आ गई है तुम्हीं में से एक शख़्स के ज़रिये ताकि वह तुम्हें ख़बरदार कर दे।"*

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاۗءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ

*"और ज़रा याद करो जब अल्लाह ने तुम्हें क़ौमे नूह के बाद उनका जानशीन बनाया और तुम्हें जिस्मानी ऐतबार से बड़ी कुशादगी अता फ़रमाई।"*

क़ौमे नूह की सतूत (नस्ल) ख़त्म हुई और क़ौम तबाह व बर्बाद हो गई तो उसके बाद अल्लाह तआला ने क़ौमे आद को उरूज अता फ़रमाया। ये बड़े क़द्दावर और जसीम लोग थे। इस क़ौम को अल्लाह तआला ने दुनियावी तौर पर बड़ा उरूज बख़्शा था। शद्दाद इसी क़ौम का बादशाह था जिसने बहशते अरज़ी (ज़मीनी जन्नत) बनाई थी। अब उसकी जन्नत

और उस शहर के खंडरात का सुराग भी मिल चुका है। जज़ीरा नुमाए अरब के जुनूबी सहरा में एक इलाक़ा है जहाँ की रेत बहुत बारीक है और उसके ऊपर कोई चीज़ टिक नहीं सकती। इस वजह से वहाँ आमद व रफ्त (आना-जाना) मुश्किल है, क्योंकि उस रेत पर चलने वाली हर चीज़ उसके अंदर धँस जाती है। इस इलाक़े में सैटेलाइट के ज़रिये ज़ेरे ज़मीन शद्दाद के उस शहर का सुराग मिला है, जिसकी फ़सील पर 35 बुर्ज थे।

فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۗءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۶۹

*"तो अल्लाह के अहसानात को याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।"*

## आयत 70

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ

*"उन्होंने कहा (ऐ हूद अलै.) क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम सिर्फ़ अल्लाह की बंदगी करें जो अकेला है"*

وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُنَا ۚ

*"और हम छोड़ बैठें उनको जिनको पूजते थे हमारे आबा व अजदाद!"*

فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ⑦⓪

*"तो हम पर ले आओ (वह अज़ाब) जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे हो, अग़र तुम सच्चे हो।"*

हमेशा से होता आया है कि जब भी किसी क़ौम पर ज़वाल आता था तो उनके अक़ीदे बिगड़ जाते थे। अल्लाह के रसूल के बताये हुए सीधे रास्ते को छोड़ कर वो क़ौम बुतपरस्ती और शिर्क में मुब्तला हो जाती थी। औलिया अल्लाह की अक़ीदत की वजह से उनके नामों के बुत बनाये जाते थे या फिर उनकी क़ब्रों की परस्तिश शुरू कर दी जाती। यह सामने के मअबूद उनको उस अल्लाह के मुक़ाबले में ज़्यादा अच्छे लगते थे जो उनकी नज़रों से ओझल था। इन हालात में जब भी कोई रसूल आकर ऐसी मुशरिक क़ौम को बुतपरस्ती से मना करता और उन्हें एक अल्लाह की बंदगी की तल्क़ीन करता, तो अपने माहौल के मुताबिक़ उनका पहला जवाब यही होता कि अपने सारे ख़ुदाओं को ठुकरा कर सिर्फ़ एक अल्लाह को कैसे अपना मअबूद बना लें।

## आयत 71

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ ۖ

*"(हूद अलै. ने) फ़रमाया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से अज़ाब और उसका ग़जब वाक़ेअ हो ही चुका है।"*

तुम्हारी इस हठधर्मी के बाइस अल्लाह का अज़ाब और उसका क़हर व गज़ब तुम पर मुसल्लत हो चुका है।

اَتُجَادِلُوۡنَنِیۡ فِیۡۤ اَسۡمَآءٍ سَمَّیۡتُمُوۡهَاۤ اَنۡتُمۡ وَ اٰبَآؤُکُمۡ

*“क्या तुम मुझसे झगड़ रहे हो उन नामों के बारे में जो तुमने और तुम्हारे आबा व अजदाद ने रख लिये थे”*

यह जो तुमने मुख़्तलिफ़ नामों के बुत बना रखे हैं और उनकी पूजा करते हो, उनकी हक़ीक़त कुछ नहीं, महज़ चंद फ़र्ज़ी नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे आबा व अजदाद ने बग़ैर किसी सनद के रखे हुए हैं।

مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنۡ سُلۡطٰنٍ ؕ فَانۡتَظِرُوۡۤا اِنِّیۡ مَعَکُمۡ مِّنَ الۡمُنۡتَظِرِیۡنَ ﴿۷۱﴾

*“अल्लाह ने इसके लिये कोई सनद नहीं उतारी। तो (ठीक है) तुम भी इन्तेज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार करने वालों में हूँ।”*

यानि देखें कब तक अल्लाह तुम्हें मोहलत देता है और कब अल्लाह की तरफ़ से तुम पर अज़ाबे इस्तेसाल आता है।

## आयत 72

فَاَنۡجَیۡنٰهُ وَالَّذِیۡنَ مَعَهٗ بِرَحۡمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعۡنَا دَابِرَ الَّذِیۡنَ کَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِنَا

*"तो हमने बचा लिया उस अलै. को और जो (अहले ईमान) लोग उस अलै. के साथ थे अपनी रहमत से, और हमने जड़ काट दी उस क़ौम की जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया था"*

وَمَا کَانُوۡا مُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۷۲﴾

*"और नहीं थे वो ईमान लाने वाले।"*

सात दिन और आठ रातों तक एक तेज़ आँधी मुसलसल उन पर चलती रही और उन्हें पटक-पटक कर गिराती रही, उसी आँधी की वजह से वो सब हलाक हो गए। जब भी किसी क़ौम पर अज़ाबे इस्तेसाल का फ़ैसला हो जाता है तो अल्लाह के रसूल अलै. और अहले ईमान को वहाँ से हिजरत का हुक्म आ जाता है। चुनाँचे आँधी के इस अज़ाब से पहले हज़रत हूद अलै. और आपके साथी वहाँ से हिजरत करके चले गए थे।

# आयात 73 से 84 तक

وَاِلٰی ثَمُوۡدَ اَخَاهُمۡ صٰلِحًا ۘ قَالَ یٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا
لَکُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَیۡرُهٗ ؕ قَدۡ جَآءَتۡکُمۡ بَیِّنَةٌ مِّنۡ
رَّبِّکُمۡ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَکُمۡ اٰیَةً فَذَرُوۡهَا تَاۡکُلۡ فِیۡۤ
اَرۡضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوۡهَا بِسُوۡٓءٍ فَیَاۡخُذَکُمۡ عَذَابٌ

اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ
وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا
وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا
تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ
مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا
بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۷۵﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا
اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ
وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۷۷﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ
وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ
لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ
لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ
مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ
دُوْنِ النِّسَاۗءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَمَا كَانَ

جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ
قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڮ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ
﴿۸۴﴾

## आयत 73

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا

*"और क़ौमे समूद की तरफ़ (भेजा हमने) उनके भाई सालेह अलै. को"*

हज़रत हूद अलै. और उनके अहले ईमान साथी जज़ीरा नुमाए अरब के जुनूबी इलाक़े से हिजरत करके शिमाल मग़रिबी कोने में जा आबाद हुए। यह "हजर" का इलाक़ा कहलाता है। यहाँ उनकी नस्ल आगे बढ़ी और फिर ग़ालिबन समूद नामी किसी बड़ी शख़्सियत की वजह से इस क़ौम का यह नाम मशहूर हुआ।

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

*"उस अलै. ने कहा ऐ मेरी क़ौम इबादत करो अल्लाह की जिसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं है, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ख़ास निशानी आ गई है।"*

غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ
بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ

हज़रत सालेह अलै. ने भी अपनी क़ौम को वही दावत दी जो इससे पहले हज़रत नूह अलै. और हज़रत हूद अलै. अपनी-अपनी क़ौमों को दे चुके थे। यहाँ बय्यिना से मुराद वह ऊँटनी है जो उनके मुतालबे पर मौज्ज़ाना तौर पर चट्टान से निकली थी। यहाँ यह बात भी क़ाबिले तवज्जोह है कि हज़रत नूह और हज़रत हूद अलै. के बारे में किसी मौज्ज़े का ज़िक्र क़ुरान में नहीं है। मौज्ज़े का ज़िक्र सबसे पहले हज़रत सालेह अलै. के बारे में आता है।

هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْۗءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۷۳

*"यह अल्लाह की ऊँटनी है, तुम्हारे लिये एक निशानी, तो इसे छोड़े रखो कि यह अल्लाह की ज़मीन में चरती फिरे, और इसे ना छूना किसी बुरे इरादे से, (अग़र तुमने ऐसा किया) तो एक दर्दनाक अज़ाब तुम्हें आ पकड़ेगा।"*

यह ऊँटनी तुम्हारे मुतालबे पर तुम्हारी निगाहों के सामने एक चट्टान से बरामद हुई है। अब इसे कोई नुक़सान पहुँचाने की कोशिश ना करना, वरना अल्लाह का अज़ाब तुम्हें आ लेगा।

## आयत 74

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاۗءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ

*"और याद करो जब उसने तुम्हें जानशीन बनाया क़ौमे आद (की तबाही) के बाद और तुम्हें जगह दी ज़मीन में, तुम इसके नरम मैदानों में महल तामीर करते हो और पहाड़ों को तराश कर (भी अपने लिये) घर बना लेते हो।"*

मैदानी इलाक़ो में वो आलीशान महलात तामीर करते थे और पहाड़ों को तराश कर बड़े ख़ूबसूरत घर बनाते थे। अब उन महलात का तो कोई नामो निशान उस इलाक़े में मौजूद नहीं, अलबत्ता पहाड़ों से तराश कर बनाये हुए घरों के खंडरात उस इलाक़े में आज भी मौजूद हैं। क़ौमे समूद हज़रत इब्राहीम अलै. से पहले गुज़री है और क़ौम आद उससे भी पहले थी। इस तरह क़ौमे समूद का ज़माना आज से तक़रीबन छ: हज़ार साल पहले का है जबकि क़ौमे आद को गुज़रे तक़रीबन सात हज़ार साल हो चुके हैं।

فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۗءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ 74

*"तो अल्लाह की नेअमतों को याद रखो और मत फिरो ज़मीन में फ़साद मचाते।"*

## आयत 75

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ

*"आप अलै. की क़ौम के मुतकब्बिर सरदारों ने उन लोगों से कहा जो दबा लिये गये थे (और) जो उनमें से ईमान ले आये थे कि (वाक़ई) क्या तुम लोगों का ख़्याल है कि यह सालेह अपने रब की तरफ़ से भेजा गया है?"*

قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝٧٥

*"उन्होंने कहा कि (हाँ) हम तो जो कुछ उनको देकर भेजा गया है उस पर ईमान रखते हैं।"*

हज़रत सालेह अलै. की क़ौम के जो गरीब, दबे हुए और कमज़ोर लोग थे मग़र ईमान ले आये थे, उनसे उनके सरदार बड़े मुतकब्बिराना अंदाज़ से मुख़ातिब होकर कहते थे कि क्या तुम्हें इस बात का यक़ीन है कि यह सालेह वाक़ई अपने रब की तरफ़ से भेजे गये हैं? इस पर वो लोग बड़े यक़ीन से जवाब देते थे कि जो कुछ आप अलै. के रब ने आप अलै. को दिया है हम उस पर ईमान ले आये हैं और इन सारे अहकाम को सच जानते हैं।

## आयत 76

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝76

*"(इस पर) वो इस्तकबार करने वाले कहते कि जिस चीज़ पर तुम ईमान लाये हो हम उसके मुन्किर हैं।"*

## आयत 77

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

*"तो उन्होंने ऊँटनी की कून्चें काट डालीं और अपने रब के हुक्म से सरताबी की"*

यह ऊँटनी उनकी फ़रमाईश पर चट्टान से बरामद हुई थी, मग़र फिर यह उनके लिये बहुत बड़ी आज़माईश बन गई थी। वह उनकी फ़सलों में जहाँ चाहती फिरती और जो चाहती खाती। उसकी खुराक ग़ैर मामूली हद तक ज़्यादा थी। पानी पीने के लिये भी उसकी बारी मुक़र्रर थी। एक दिन उनके तमाम ढ़ोर-डंगर पानी पीते थे, जबकि दूसरे दिन वह अकेली तमाम पानी पी जाती थी। रफ़्ता-रफ़्ता यह सब कुछ उनके लिये ना क़ाबिले बर्दाश्त हो गया और बिलआख़िर उन सरदारों ने एक साज़िश के ज़रिये उसे हलाक़ करवा दिया।

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝77

*"और कहा कि ऐ सालेह, ले आओ हम पर वह (अज़ाब) जिससे तुम हमें डराते हो अग़र वाक़ई तुम रसूल हो।"*

हज़रत सालेह अलै. से उन्होंने चैलेंज के अंदाज़ में कहा कि हमने तुम्हारी ऊँटनी को तो मार डाला है, अब अग़र वाक़ई तुम अल्लाह के रसूल हो तो ले आओ हमारे ऊपर वह अज़ाब जिसका तुम हर वक़्त हमें डरावा देते रहते हो।

## आयत 78

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝۷۸

*"तो उन्हें आ पकड़ा ज़लज़ले ने, फिर वह पड़े रह गए अपने घरों में औंधे।"*

## आयत 79

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝۷۹

*"तो (सालेह अलै. ने) उनसे पीठ मोड़ ली और कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तो तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया था और मैंने (इम्कान भर) तुम्हारी ख़ैरख्वाही की, लेकिन तुम तो ख़ैरख़्वाहों को पसंद नहीं करते।"*

इसके बाद हज़रत लूत अलै. का ज़िक्र आ रहा है। आप अलै. हज़रत इब्राहीम अलै. के भतीजे थे। आप अलै. इराक़ के रहने वाले थे और सामी उल नस्ल थे। आप अलै. ने हज़रत इब्राहीम अलै. के साथ हिजरत की थी। अल्लाह तआला ने

हज़रत लूत अलै. को रिसालत से सरफ़राज़ फ़रमा कर सदूम और आमूराह की बस्तियों की तरफ़ मबऊस फ़रमाया। यह दोनों शहर बहरे मुर्दार (Dead Sea) के किनारे उस ज़माने के दो बड़े अहम तिजारती मरकज़ थे। उस ज़माने जो तिजारती क़ाफिले ईरान और इराक़ के रास्ते मशरिक से मग़रिब की तरफ़ जाते थे वह फ़लीस्तीन और मिस्र को जाते हुए सदूम और आमूराह के शहरों से होकर गुज़रते थे। इस अहम तिजारती शाहराह पर वाक़ेअ होने की वजह से इन शहरों में बड़ी ख़ुशहाली थी। मग़र इन लोगों में मर्दों के आपस में जिन्सी इख़्तलात की ख़बासत पैदा हो गई थी जिसकी वजह से इन पर अज़ाब आया।

हज़रत लूत अलै. इस क़ौम में से नहीं थे। सूरह अन्कबूत (आयत 26) में हमें आप अलै. की हिजरत का ज़िक्र मिलता है। आप अलै. इन शहरों की तरफ़ मबऊस होकर इराक़ से आये थे। यहाँ पर यह बात ख़ास तौर पर क़ाबिले तवज्जोह है कि हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलै. का ज़माना हज़रत इब्राहीम अलै. से पहले का है। जबकि हज़रत लूत अलै. हज़रत इब्राहीम अलै. के हम असर थे। यहाँ हज़रत इब्राहीम अलै. से पहले के ज़माने के तीन रसूलों का ज़िक्र किया गया है और फिर हज़रत इब्राहीम अलै. को छोड़ कर हज़रत लूत अलै. का ज़िक्र शुरू कर दिया गया है। इसकी क्या वजह है? इसकी वजह यह है कि यहाँ एक ख़ास अस्लूब से अन्बाअ अर्रुसुल का तज़किरा हो रहा है। यानि उन रसूलों का तज़किरा जो अल्लाह की अदालत बन कर क़ौमों की तरफ़ आये और उनके इंकार के बाद क़ौमें तबाह कर दी गईं। चूँकि हज़रत इब्राहीम अलै. के ज़िमन में इस नौइयत की कोई तफ़सील सराहत के साथ क़ुरान में नहीं मिलती

इसलिये आप अलै. का ज़िक्र क़ससुल नबिय्यीन के ज़ेल में आता है। यही वजह है कि आप अलै. का तज़किरा सूरह आराफ़ के बजाय सूरतुल अन्आम में किया गया है और वहाँ यह तज़किरा क़ससुल नबिय्यीन ही के अंदाज़ में हुआ है, जबकि सूरतुल आराफ़ में तमाम अन्बाअ अर्रुसुल को इकठ्ठा कर दिया गया है। अन्बाअ अर्रुसुल और क़ससुल नबिय्यीन की तक़सीम के अंदर यह एक मन्तक़ी रब्त (कड़ी) है।

## आयत 80

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ

*"और लूत अलै. (को भी हमने भेजा) जब उसने कहा अपनी क़ौम से"*

अग़रचे हज़रत लूत अलै. उस क़ौम में से नहीं थे, लेकिन उनकी तरफ़ मबऊस होने और वहाँ जाकर आबाद हो जाने की वजह से उन लोगों को आप अलै. की क़ौम क़रार दिया गया है।

اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝۸۰

*"क्या तुम ऐसी बेहयाई का इरतकाब कर रहे हो जो तुमसे पहले तमाम जहान वालों में से किसी ने भी नहीं की।"*

यानि इजतमाई तौर पर पूरी क़ौम का एक शर्मनाक फ़अल को इस अंदाज़ से अपना लेना कि उसे अपना शआर (नारा) बना लेना, खुल्लम-खुल्ला उसका इरतकाब करना और उसमें शर्माने की बजाय फ़ख्र करना, इस सब कुछ की मिसाल तारीख़े इंसानी के अंदर कोई और नहीं मिलती।

## आयत 81

*"तुम मर्दों का रुख़ करते हो शहवत के साथ औरतों को छोड़ कर, बल्कि तुम तो हो ही हद से तजावुज़ करने वाली क़ौम।"*

اِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ شَهۡوَةً مِّنۡ دُوۡنِ النِّسَآءِ‌ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ مُّسۡرِفُوۡنَ ۝٨١

यानि तुम्हारा यह फ़अल उसूले फ़ितरत के ख़िलाफ है और क़ानूने तबई से भी मुतसादिम।

## आयत 82

*"तो नहीं था उसकी क़ौम का कोई जवाब सिवाय इसके कि उन्होंने कहा निकालो इनको अपनी बस्ती से, ये लोग बड़े पाकबाज़ बनते है।"*

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوۡمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡۤا اَخۡرِجُوۡهُمۡ مِّنۡ قَرۡيَتِكُمۡ‌ۚ اِنَّهُمۡ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوۡنَ ۝٨٢

उनके पास कोई माक़ूल जवाब तो था नहीं, शर्म व हया को वो लोग पहले ही बालाये ताक़ रख चुके थे। कोई दलील, कोई उज़र, कोई माज़रत, जब कुछ भी ना बन पड़ा तो वो हज़रत लूत अलै. और आप अलै. के घर वालों को शहर बदर

करने के दर पे हो गये। हज़रत लूत अलै. की बीवी इस मक़ामी क़ौम से ताल्लुक़ रखती थी, इसलिये वह आख़िर वक़्त तक अपनी क़ौम से साथ मिली रही। हज़रत लूत अलै. अल्लाह के हुक्म से अपनी बेटियों को लेकर अज़ाब आने से पहले वहाँ से निकल गये।

## आयत 83

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ښ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

*"तो हमने निजात दे दी उस अलै. को और उसके घर वालों को, सिवाय उसकी बीवी के, वह हो गई पीछे रहने वालों ही में।"*

## आयत 84

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ ع

*"और हमने बरसाई उन पर एक बारिश, तो देखो क्या अंजाम हुआ मुजरिमों का!"*

यह पत्थरों की बारिश थी और साथ शदीद ज़लज़ला भी था जिससे उनकी बस्तियाँ उलट कर बहरे मुर्दार के अंदर दफ़न हो गईं। क़ौमे लूत अहले मक्का से ज़मानी और मक़ानी लिहाज़ से ज़्यादा दूर नहीं थी, इस क़ौम के क़िस्से अहले

अरब की तारीख़ी रिवायात के अंदर मौजूद थे। चुनाँचे अहले मक्का इस क़ौम के हसरतनाक अंजाम से ख़ूब वाक़िफ थे।

## आयात 85 से 93 तक

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ
اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۸۵﴾
وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْۤا
اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ
اٰمَنُوْا بِالَّذِيْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا
فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ

﴿٨٧﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ
لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ
قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ
﴿٨٨﴾ قف قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ۭ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ
اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ۭ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ عَلَى
اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۭ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ
وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ
﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ
﴿٩١﴾ ۚ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ڔ اَلَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ
وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ
لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰي قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع

## आयत 85

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ

*"और क़ौमे मदयन की तरफ़ (हमने भेजा) उनके भाई शोएब अलै. को।"*

हज़रत शोएब अलै. का ताल्लुक़ इसी क़ौम से था, इसलिये आप अलै. को उनका भाई क़रार दिया गया। जैसा कि पहले भी ज़िक्र हो चुका है कि हज़रत इब्राहीम अलै. की तीसरी बीवी का नाम "क़तूरा" था। उनसे आप अलै. के कई बेटे हुए, जिनमें से एक का नाम मदयन था जो अपनी औलाद के साथ ख़लीज उक़बा के मशरिकी साहिल पर आबाद हुए थे। यह इलाक़ा उन लोगों की वजह से बाद में "मदयन" ही के नाम से मारुफ़ हुआ। मदयन का इलाक़ा भी उस ज़माने की बैयनल अक़्वामी तिजारती (world trade center) शाहराह पर वाक़ेअ था। यह शाहराह शिमालन जुनूबन फ़लस्तीन से यमन को जाती थी। इस लिहाज़ से अहले मदयन बहुत ख़ुशहाल लोग थे। नतीजतन उनमें बहुत सी कारोबारी और तिजारती बद्उनवानियाँ पैदा हो गई थीं। लिहाज़ा उनकी इस्लाह के लिये हज़रत शोएब अलै. को मबऊस किया गया।

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

*"उस अलै. ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बंदगी करो, तुम्हारा कोई मअबूद नहीं है उसके सिवा। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली दलील आ चुकी है"*

فَاَوۡفُوا الۡكَيۡلَ وَالۡمِيۡزَانَ وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ بَعۡدَ اِصۡلَاحِهَا‌ؕ ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ‌ۚ ﴿۸۵﴾

*"तो माप और तौल पूरा किया करो और लोगों से उनकी चीज़ें कम ना किया करो, और ज़मीन में उसकी इस्लाह के बाद फ़साद मत मचाओ, यही तुम्हारे लिये बेहतर है अग़र तुम मोमिन हो।"*

अहले मदयन चूँकि कारोबारी लोग थे लिहाज़ा उनके यहाँ जो ख़ास ख़राबी इजतमाई तौर पर पैदा हो गई थी वह माप-तौल में कमी की आदत थी। यहाँ यह नुक्ता भी क़ाबिले तवज्जोह है कि हज़रत इब्राहीम अलै. से क़ब्ल ज़माने की जिन तीन अक़वाम का ज़िक्र क़ुरान में आया है, यानि क़ौमे नूह, क़ौमे हूद और क़ौमे सालेह उनमें सिवाय शिर्क के और किसी खराबी की तफ़सील नहीं मिलती। यानि उस ज़माने तक इंसानी तमद्दुन (संस्कृति) इतना सादा था कि अभी आमाल की ख़राबियाँ और गंदगियाँ राइज (प्रचलित) नहीं हुई थीं। तब तक इंसान फ़ितरत के ज़्यादा क़रीब था, इसलिये वह पेचेदगियाँ जो तमद्दुन के फैलने के साथ बढ़ती हैं और वह बद्उन्वानियाँ जो इस पेचीदा ज़िन्दगी की वजह से फैलती हैं वो अभी उन अक़वाम के अफ़राद में पैदा नहीं हुई थीं। इस लिहाज़ से देखा जाये तो जिन्सी बुराईयाँ सबसे

पहले क़ौमे लूत में और माली बद्‌उन्वानियाँ सबसे पहले अहले मदयन में पैदा हुईं।

## आयत 86

وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ

*"और ना बैठा करो हर रास्ते पर डराने-धमकाने के लिये"*

यानि वो लोग राहज़नी भी करते थे और तिजारती क़ाफ़िलों को डरा-धमका कर उनसे भत्ता भी वसूल करते थे। इन हरकात से भी हज़रत शोएब अलै. ने उन्हें मना किया।

وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ

*"और अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिये (हर उस शख़्स को) जो ईमान लाता है और उस राह को कज करते हुए।"*

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۠ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝86

*"और याद करो जबकि तुम कम तादाद में थे तो अल्लाह ने तुम्हारी तादाद ज़्यादा कर दी, और (यह भी) देखो कि मुफ़सिदों का कैसा कुछ अंजाम होता रहा है।"*

## आयत 87

وَاِنۡ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنۡكُمۡ اٰمَنُوۡا بِالَّذِىۡۤ اُرۡسِلۡتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمۡ يُؤۡمِنُوۡا

*"और अग़र तुम में से एक गिरोह ईमान ले आया है उस चीज़ पर जो मुझे देकर भेजा गया है और एक गिरोह ईमान नहीं लाया है"*

فَاصۡبِرُوۡا حَتّٰى يَحۡكُمَ اللّٰهُ بَيۡنَنَا‌ ۚ وَهُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۸۷﴾

*"तो तुम सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे माबैन फ़ैसला फ़रमा दे, और यक़ीनन वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।"*

## आयत 88

قَالَ الۡمَلَاُ الَّذِيۡنَ اسۡتَكۡبَرُوۡا مِنۡ قَوۡمِهٖ لَـنُخۡرِجَنَّكَ يٰشُعَيۡبُ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَكَ مِنۡ قَرۡيَتِنَاۤ اَوۡ لَتَعُوۡدُنَّ فِىۡ مِلَّتِنَا‌ ؕ

*"कहा उस अलै. की क़ौम के उन सरदारों ने जिन्होंने तकब्बुर की रविश इख़्तियार की कि ऐ शोएब! हम तुझे और जो तेरे साथ ईमान लाए हैं उन्हें अपनी बस्ती से निकाल बाहर करेंगे, या तुम वापस आ जाओ हमारी मिल्लत में।"*

قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾

*"(हज़रत शोएब अलै. ने) फ़रमाया: क्या अगर हमें (यह सब कुछ) नापसंद हो तब भी?"*

हज़रत शोएब अलै. की क़ौम के मुतकब्बिर सरदारों ने आप और आप अलै. के मामने वालों से कहा कि अग़र तुम लोग हमारे यहाँ अमन और चैन से रहना चाहते हो तो तुम्हें हमारे ही तौर-तरीक़ों और रस्मो-रिवाज को अपनाना होगा, बसूरते दीग़र हम तुम लोगों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करेंगे। हज़रत शोएब अलै. ने फ़रमाया कि क्या तुम लोग ज़बरदस्ती हमें अपनी मिल्लत में वापस फेर लोगे जबकि हम तो इन तौर-तरीक़ों से नफ़रत करते हैं!

## आयत 89

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ۭ

*"हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे अग़र हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आएँ, इसके बाद कि अल्लाह ने हमें उससे निजात दे दी है।"*

हज़रत शोएब अलै. का फ़रमाना था कि अग़र हम दोबारा तुम्हारे तौर-तरीक़ों पर वापस आ जायें तो इसका मतलब यह होगा कि मेरा नुबुवत का दावा ही गलत था और मैं यह दावा करके गोया अल्लाह पर इफ़तरा कर रहा था। लेकिन चूँकि मेरा यह दावा सच्चा है और मैं वाक़िअतन अल्लाह का

फ़रस्तादा हूँ लिहाज़ा अब मेरे और मेरे साथियों के लिये तुम्हारी मिल्लत में वापस आना मुमकिन नहीं।

وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ۭ

*"और हमारे लिये क़तअन मुमकिन नहीं है कि हम इस मिल्लत में लौट आएँ, सिवाय इसके कि अल्लाह जो हमारा परवरदिगार हैं वह चाहे।"*

यह एक बंदा-ए-मोमिन की सोच और उसके तर्ज़े अमल की अक्कासी (reflection) है। वह ना अपने फ़िक्र व फ़लसफ़े पर भरोसा करता है और ना अपनी अक़्ल व इस्तक़ामत का सहारा लेता है, बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की तौफ़ीक और तैसीर पर तवक्कुल करता है। यही वह फ़लसफ़ा था जिसके मुताबिक़ हज़रत शोएब अलै. ने इस तरह फ़रमाया, हाँलाकि उनके वापस पलटने का कोई इम्कान नहीं था।

وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا

*"और हमारे रब ने तो हर शय के इल्म का इहाता किया हुआ है, हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया है।"*

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ؀

*"ऐ हमारे रब! फ़ैसला फ़रमा दे हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ, और यक़ीनन तू बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।"*

## आयत 90

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝٩٠

*“और कहा उस अलै. की क़ौम के उन सरदारों ने जिन्होंने कुफ़्र किया था कि अग़र तुमने शोएब की पैरवी की तो तुम खसारे वाले हो जाओगे।”*

## आयत 91

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٩١

*“तो उन्हें (भी) आ पकड़ा एक ज़लज़ले ने और वो (भी) पड़े रह गये अपने घरों में औंधे मुँह।”*

## आयत 92

اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ۝٩٢

*“वो लोग जिन्होंने शोएब अलै. को झुठलाया था ऐसे हो गए कि जैसे कभी उस बस्ती में बसे ही नहीं थे, जिन लोगों ने शोएब अलै. की तकज़ीब की वही हुए खसारे वाले।”*

## आयत 93

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ

*"तो वह उनको छोड़ कर चल दिया यह कहते हुए कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तो तुम्हें पहुँचा दिए थे अपने रब के पैग़ामात और मैंने तुम्हारी ख़ैरख्वाही की थी।"*

فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

*"तो अब मैं कैसे अफ़सोस करुँ उस क़ौम पर जिसने कुफ़्र किया है!"*

यानि हज़रत शोएब अलै. ने इम्कानी हद तक अपनी क़ौम को समझाने की कोशिश की। फिर भी अग़र क़ौम नहीं मानी तो गोया उन लोगों ने ख़ुद अपनी बर्बादी को दावत दी। अब ऐसे लोगों की हलाकत पर अफ़सोस करने का जवाज़ भी क्या है। लेकिन हज़रत शोएब अलै. के इन अल्फ़ाज़ से वाज़ेह हो रहा है कि आप अलै. को अपनी क़ौम के अंजाम पर शदीद रंज व ग़म और सदमा था और ऐसे मौक़े पर ऐसे अल्फ़ाज़ कहना अपने दिल की ढ़ाँढ़स बँधाने का अंदाज़ है। बहरहाल हक़ीक़त यह है कि नबी अपनी क़ौम और बनी नौए इंसानी के लिये बहुत शफ़ीक़, मेहरबान और हमदर्द होता है और अपनी क़ौम पर अज़ाब आने पर उसे बहुत सदमा होता है।

## आयात 94 से 102 तक

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا
بِالْبَاْسَاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ۹۴ ثُمَّ بَدَّلْنَا
مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ
اٰبَاۗءَنَا الضَّرَّاۗءُ وَالسَّرَّاۗءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۹۵ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا
لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ
وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۹۶
اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ
نَاۗىِٕمُوْنَ ۹۷ ۭ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا
ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۹۸ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ
مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ۹۹ ۧ اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ
يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَاۗءُ
اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَسْمَعُوْنَ ۱۰۰ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
اَنْۢبَاۗىِٕهَا ۚ وَلَقَدْ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا
كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ

اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ
مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ۝

## आयत 94

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ۝

*"और हमने नहीं भेजा किसी भी बस्ती में किसी भी नबी को मग़र यह कि हमने पकड़ा उसके बसने वालों को सख़्तियों से और तकलीफ़ों से ताकि वो गिड़गिड़ाएँ (और उनमें आजिज़ी पैदा हो जाये)।"*

यह अल्लाह के एक ख़ास क़ानून का तज़किरा है, जिसके बारे में हम सूरह अन्आम (आयात 42 से 45) में भी पढ़ आए हैं। अल्लाह तआला का यह तरीक़ा रहा है कि जब भी किसी क़ौम की तरफ़ किसी रसूल को भेजा जाता तो उस क़ौम को सख़्तियों और मुसीबतों में मुब्तला करके उनके लिये रसूल की दावत को क़ुबूल करने का माहौल पैदा किया जाता। क्योंकि ख़ुशहाली और ऐश की ज़िन्दगी गुज़ारते हुए इंसान ऐसी कोई नई बात सुनने की तरफ़ कम ही माइल होता है, अलबत्ता अग़र इंसान तकलीफ़ में मुब्तला हो तो वह ज़रूर अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करता है। लिहाज़ा किसी रसूल की दावत के आगाज़ के साथ ही उस क़ौम पर ज़िन्दगी के हालात तंग कर दिए जाते थे, लेकिन अग़र वो लोग इसके

बावजूद भी होश में ना आते, अपनी ज़िद पर अड़े रहते, और रसूल की दावत को रद्द करते चले जाते, तो उन पर से वह सख़्तियाँ और तकलीफ़ें दूर करके उनको ग़ैर मामूली आसाइशों और नेअमतों से नवाज़ दिया जाता था। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से गोया ढ़ील देने का एक अंदाज़ है कि अब इस क़ौम ने बर्बाद तो होना ही है मग़र आख़री अंजाम को पहुँचने से पहले उनकी नाफ़रमानी की आख़री हुदूद देख ली जाएँ कि अपनी इस रविश पर वो कहाँ तक जा सकते हैं। यह है वह क़ानून या अल्लाह की सुन्नत, जिस पर हर रसूल के आने पर अमल दर आमद होता रहा है। सूरतुल सज्दा (आयत 21) में इस क़ानून की वज़ाहत इस तरह की गई है: {وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ} "और हम उन्हें मज़ा चखायेंगे छोटे अज़ाब का बड़े अज़ाब से पहले शायद कि ये रुजूअ करें।" बड़ा अज़ाब तो अज़ाबे इस्तेसाल होता है जिसके बाद किसी क़ौम को तबाह व बर्बाद करके नस्यम मन्सिया कर दिया जाता है। इस बड़े अज़ाब की कैफ़ियत मक्की सूरतों में इस तरह बयान की गई है: {كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛ} (अल् आराफ़:92 और सूरह हूद:68, 95) "वो लोग ऐसे हो गये जैसे वहाँ बसते ही नहीं थे।" {فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ} (अल् अन्आम:45) "पस ज़ालिम क़ौम की जड़ काट दी गई।" {لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ} (अल् अह्काफ़:25) "अब सिर्फ़ उनके मसकन (आवास) ही नज़र आ रहे हैं।" यानि अज़ाबे इस्तेसाल के बाद उनकी कैफ़ियत यह है कि उनके बनाये हुए आलीशान महल तो नज़र आ रहे हैं, लेकिन उनके मकीनों

में से कोई भी बाक़ी नहीं रहा। क़ानूने क़ुदरत के तहत इस नौइयत के "अज़ाबुल अकबर" से पहले छोटी-छोटी तम्बीहात आती हैं ताकि लोग ख़्वाबे गफ़लत से जाग जायें, होश में आ जायें, इस्तकबार की रविश तर्क करके आजिज़ी इख़्तियार करें और रुजूअ करके अज़ाबे इस्तेसाल से बच सकें।

## आयत 95

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ

*"फिर हमने उस बुराई को भलाई से बदल दिया, यहाँ तक कि वो लोग ख़ूब बढ़ गये और कहने लगे कि हमारे आबा व अजदाद पर भी तकलीफ़ और खुशी आती रही है"*

فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩٥

*"फिर हमने उनको अचानक पकड़ लिया और उन्हें उसका शऊर भी नहीं था।"*

जब वो अपनी ज़िद्द और हठधर्मी पर अड़े रहे तो उन पर दुनियावी आसाइशों के दहाने खोल दिये गये कि अब खाओ, पियो और ऐश करो। फिर वो ऐशो इशरत की ज़िन्दगी में इस क़द्र मगन हुए कि सख़्तियों के दौर को बिल्कुल ही भूल गये और कहने लगे कि हमारे असलाफ़ पर भी अच्छे और बुरे दिन आते ही रहे हैं, इसमें इम्तिहान और आज़माईश की कौनसी बात है, हत्ता कि उनकी पकड़ की घड़ी आ पहुँची

और उन्हें उसका शऊर ही नहीं था कि अल्लाह तआला की गिरफ़्त यूँ अचानक आ जायेगी।

## आयत 96

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

*"और अग़र ये बस्तियों वाले ईमान लाते और तक़वा की रविश इख़्तियार करते तो हम इन पर खोल देते आसमानों और ज़मीन की बरकतें।"*

وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٩٦

*"लेकिन उन्होंने झुठलाया तो हमने उनको पकड़ लिया उनकी करतूतों की पादाश में।"*

## आयत 97

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآىِٕمُوْنَ ۝٩٧

*"तो क्या ये बस्तियों वाले इससे बेख़ौफ हो गये हैं कि उन पर आ जाये हमारा अज़ाब जबकि वो रात को सोए हुए हों।"*

## आयत 98

اَوَاَمِنَ اَهۡلُ الۡقُرٰٓى اَنۡ يَّاۡتِيَهُمۡ بَاۡسُنَا ضُحًى وَّهُمۡ يَلۡعَبُوۡنَ ۝٩٨

*"और क्या ये बस्तियों वाले बेख़ौफ हो गये हैं कि उन पर आ जाये हमारा अज़ाब दिन चढ़े, जबकि वो खेल रहे हो।"*

## आयत 99

اَفَاَمِنُوۡا مَكۡرَ اللّٰهِ‌ۚ فَلَا يَاۡمَنُ مَكۡرَ اللّٰهِ اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۝٩٩

*"क्या वह अमन में (या बेख़ौफ) हैं अल्लाह की चाल से? अल्लाह की चाल से कोई अपने आपको अमन में महसूस नहीं करता मग़र वही लोग जो ख़सारा पाने वाले हैं।"*

## आयत 100

اَوَلَمۡ يَهۡدِ لِلَّذِيۡنَ يَرِثُوۡنَ الۡاَرۡضَ مِنۡۢ بَعۡدِ اَهۡلِهَاۤ اَنۡ لَّوۡ نَشَآءُ اَصَبۡنٰهُمۡ بِذُنُوۡبِهِمۡ‌ۚ

*"तो क्या उन लोगों को सबक़ नहीं मिला जो ज़मीन के वारिस हुए हैं इसके पहले रहने वालों के (हलाक़ होने के) बाद, कि हम चाहें तो उनको भी पकड़ लें उनके गुनाहों की पादाश में!"*

क्या बाद में आने वाली क़ौम ने अपनी पेश रू क़ौम की तबाही व बर्बादी से कोई सबक़ हासिल नहीं किया? क़ौमे आद ने क्यों कोई सबक़ नहीं सिखा क़ौमे नूह के अज़ाब से?

और क़ौमे समूद ने क्यों इबरत नहीं पकड़ी क़ौमें आद की बर्बादी से? और क़ौमे शोएब ने क्यों नसीहत हासिल नहीं की क़ौमे लूत के अंजाम से?

وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝۱۰۰

*"और हम उनके दिलों पर मोहर कर दिया करते हैं, फिर वो कुछ सुनते ही नहीं।"*

## आयत 101

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗىِٕهَا ۚ

*"यह वो बस्तियाँ है जिनकी कुछ ख़बरें हम आप (صلی اللہ علیہ وسلم) को सुना रहे हैं।"*

अन्बाअ अर्रुसुल के सिलसिले में अब तक पाँच रसूलों यानि हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत लूत और हज़रत शोएब अलै. का ज़िक्र हो चुका है। आगे हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र आ रहा है जो क़द्रे तवील है।

وَلَقَدْ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ

*"और उनके पास उनके रसूल आये रोशन निशानियों के साथ, तो वो नहीं थे ईमान लाने वाले उस पर जिसका उन्होंने पहले इन्कार कर दिया था।"*

यानि जिसे ईमान लाना होता वह जैसे ही हक़ मुन्कशिफ होता है उसे क़ुबूल कर लेता है। जिसे क़ुबूल नहीं करना होता

उसके लिये नसीहतें, दलीलें, निशानियाँ और मौज्ज़े सब बेअसर साबित होते हैं। यही नुक्ता सूरह अन्आम में इस तरह बयान हुआ है: { وَنُقَلِّبُ اَفۡـِٕدَتَهُمۡ وَاَبۡصَارَهُمۡ كَمَا لَمۡ يُؤۡمِنُوۡا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ } (आयत:110) यानि हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को उलट देते हैं, जैसे कि वो पहली मर्तबा ईमान नहीं लाये थे।

كَذٰلِكَ يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِ الۡكٰفِرِيۡنَ ۝١٠١

*"इसी तरह अल्लाह मोहर कर दिया करता है काफ़िरों के दिलों पर।"*

## आयत 102

وَمَا وَجَدۡنَا لِاَكۡثَرِهِمۡ مِّنۡ عَهۡدٍ ۚ

*"और हमने उनमें से अक्सर में अहद की पासदारी नहीं पाई।"*

दुनिया में जब भी कोई क़ौम उभरी, अपने रसूल के सहारे उभरी। हर क़ौम के इल्मी व अख्लाक़ी विरसे में अपने रसूल की तालीमात और वसीयतें भी मौजूद रही होंगी। उनके रसूल ने उन लोगों से कुछ अहद और मीसाक़ भी लिए होंगे, लेकिन उनमें से अक्सर ने कभी किसी अहद की पासदारी नहीं की।

وَاِنۡ وَّجَدۡنَاۤ اَكۡثَرَهُمۡ لَفٰسِقِيۡنَ ۝١٠٢

*"और हमने तो उनकी अक्सरियत को फ़ासिक़ ही पाया।"*

अब अन्बाअ अर्रुसुल के सिलसिले में हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र आ रहा है। इससे पहले एक रसूल का ज़िक्र औसतन एक रुकूअ में आया है लेकिन हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र सात-आठ रुकूओं पर मुश्तमिल है। इसकी वजह यह कि यह सूरतें हिजरत से मुत्तसलन क़ब्ल नाज़िल हुई थीं और हिजरत के फ़ौरन बाद क़ुरान की यह दावत बराहे रास्त अहले किताब (यहूदे मदीना) तक पहुँचने वाली थी। लिहाज़ा ज़रूरी था कि नबी अकरम ﷺ और आपके सहाबा रज़ि. मदीना पहुँचने से पहले यहूद से मकालमा करने के लिये ज़हनी और इल्मी तौर पर पूरी तरह तैयार हो जायें। यही वजह है कि हज़रत मूसा अलै. और बनी इस्राईल के वाक़्यात इन सूरतों में बहुत तफ़सील से बयान हुए हैं।

## आयात 103 से 126 तक

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٠٣ وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ
مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٤ حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى
اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ
مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٠٥ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ
فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝١٠٦ فَاَلْقٰى عَصَاهُ

فَاِذَا هِيَ ثُعۡبَانٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۱۰۷﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ
بَيۡضَآءُ لِلنّٰظِرِيۡنَ ﴿۱۰۸﴾ قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ
اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيۡمٌ ﴿۱۰۹﴾ يُّرِيۡدُ اَنۡ يُّخۡرِجَكُمۡ مِّنۡ
اَرۡضِكُمۡ ۚ فَمَاذَا تَاۡمُرُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾ قَالُوۡۤا اَرۡجِهۡ وَاَخَاهُ
وَاَرۡسِلۡ فِي الۡمَدَآئِنِ حٰشِرِيۡنَ ﴿۱۱۱﴾ يَاۡتُوۡكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ
عَلِيۡمٍ ﴿۱۱۲﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرۡعَوۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّ لَنَا لَاَجۡرًا
اِنۡ كُنَّا نَحۡنُ الۡغٰلِبِيۡنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ نَعَمۡ وَاِنَّكُمۡ لَمِنَ
الۡمُقَرَّبِيۡنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالُوۡا يٰمُوۡسٰۤى اِمَّاۤ اَنۡ تُلۡقِيَ وَاِمَّاۤ اَنۡ
نَّكُوۡنَ نَحۡنُ الۡمُلۡقِيۡنَ ﴿۱۱۵﴾ قَالَ اَلۡقُوۡا ۚ فَلَمَّاۤ اَلۡقَوۡا
سَحَرُوۡۤا اَعۡيُنَ النَّاسِ وَاسۡتَرۡهَبُوۡهُمۡ وَجَآءُوۡ بِسِحۡرٍ
عَظِيۡمٍ ﴿۱۱۶﴾ وَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى مُوۡسٰۤى اَنۡ اَلۡقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا
هِيَ تَلۡقَفُ مَا يَاۡفِكُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾ فَوَقَعَ الۡحَقُّ وَبَطَلَ مَا
كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۱۸﴾ فَغُلِبُوۡا هُنَالِكَ وَانۡقَلَبُوۡا
صٰغِرِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾ وَاُلۡقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيۡنَ ﴿۱۲۰﴾ قَالُوۡۤا اٰمَنَّا
بِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۲۱﴾ رَبِّ مُوۡسٰى وَهٰرُوۡنَ ﴿۱۲۲﴾ قَالَ
فِرۡعَوۡنُ اٰمَنۡتُمۡ بِهٖ قَبۡلَ اَنۡ اٰذَنَ لَكُمۡ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكۡرٌ

مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ
تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ
خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى
رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا
بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۭ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿۱۲۶﴾

## आयत 103

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ

*"फिर हमने भेजा उनके बाद मूसा अलै. को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़"*

अब तक जिन पाँच क़ौमों का ज़िक्र हुआ है वह जज़ीरा नुमाए अरब ही के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में बस्ती थीं, लेकिन अब हज़रत मूसा अलै. के हवाले से बनी इस्राईल का ज़िक्र होगा जो मिस्र के वासी थे। मिस्र बर्रे अज़ीम अफ्रीक़ा के शिमाल मशरिक़ी कोने में वाक़ेअ है। इस क़िस्से में सहराए सीना का भी ज़िक्र आयेगा, जो मुसल्लस शक्ल में एक जज़ीरा नुमा (Sinai Peninsula) है, जो मिस्र और फ़लस्तीन के दरमियान वाक़ेअ है। मिस्र में उस वक़्त "फ़राअना" (फ़िरऔन की जमा) की हुकूमत थी। जिस तरह ईराक़ के

क़दीम बादशाह "नमरूद" कहलाते थे उसी तरह मिस्र में उस दौर के बादशाह को "फ़िरऔन" कहा जाता था। चुनाँचे हज़रत मूसा अलै. को बराहे रास्त अपने वक़्त के बादशाह (फ़िरऔन) के पास भेजा गया था।

فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

*"तो उन्होंने उन (निशानियों) के साथ ज़ुल्म किया, तो देख लो कैसा अंजाम हुआ फ़साद करने वालों का!"*

यानि हमारी निशानियों का इंकार करके उनकी हक़ तलफ़ी की और उन्हें जादूगरी क़रार देकर टालने की कोशिश की।

## आयत 104

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ ۙ

*"और मूसा अलै. ने कहा: ऐ फ़िरऔन! मैं रसूल हूँ तमाम जहानों के रब की तरफ़ से।"*

## आयत 105

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ

*"मैं इस पर क़ायम हूँ कि हक़ के सिवा कोई बात अल्लाह से मन्सूब ना करूँ।"*

फ़िरऔन के लिये हज़रत मूसा अलै. कोई अजनबी आदमी नहीं थे। आप उसके साथ ही शाही महल में पले-बढ़े थे। हज़रत मूसा अलै. की पैदाईश के वक़्त जो फ़िरऔन बरसरे इक़्तदार था वह इस फ़िरऔन का बाप था और उसी ने हज़रत मूसा अलै. को बचपन में बचाया था। हज़रत मूसा अलै. की वालिदा ने आप अलै. को एक संदूक़ में बंद करके दरिया-ए-नील में डाल दिया था। वह संदूक़ फ़िरऔन के महल के पास साहिल पर आ लगा था और महल के मुलाज़िमों ने उसे उठा लिया था। फ़िरऔन को पता चला तो वह इस्राईली बच्चा समझ कर आप अलै. के क़त्ल के दर पे हुआ, मग़र उसकी बीवी ने उसे यह कह कर बाज़ रखा था कि हम इसको अपना बेटा बना लेंगे, यह हमारे लिये आँखों की ठंडक होगा: {قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ} (अल् क़सस:9) क्योंकि उस वक़्त तक उनके यहाँ कोई औलाद नहीं थी। चुनाँचे उसने हज़रत मूसा अलै. को अपना बेटा बना लिया। बाद में उसके यहाँ भी एक बेटा पैदा हुआ। हज़रत मूसा अलै. और फ़िरऔन का बेटा तक़रीबन हम उम्र थे, वो दोनों इकठ्ठे महल में पले-बढ़े थे और उनके दरमियान हक़ीक़ी भाईयों जैसी मोहब्बत थी, बल्कि हज़रत मूसा अलै. की हैसियत बड़े भाई की थी। जब बड़ा फ़िरऔन बूढ़ा हो गया तो उसने अपनी ज़िन्दगी में ही इक़्तदार अपने बेटे को सुपुर्द कर दिया

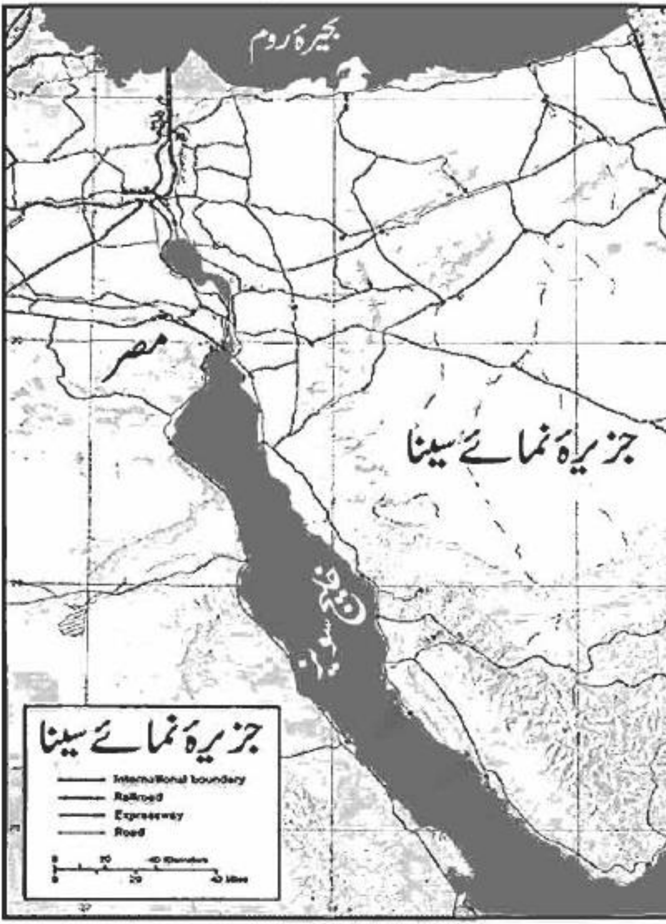


था। चुनाँचे जिस फ़िरऔन के दरबार में हज़रत मूसा अलै. ने अपनी नुबुवत का दावा किया था यह वही था जिसके साथ आप अलै. शाही महल में पले-बढ़े थे। अभी कुछ ही बरस पहले आप अलै. यहाँ से मदयन गये थे और फिर मदयन से वापस आ रहे थे तो आप अलै. को नुबुवत और रिसालत मिली (इसकी पूरी तफ़सील आगे जाकर सूरह

ताहा और सूरह क़सस में आयेगी) इस पसेमंज़र में फ़िरऔन के साथ आप अलै. का बात करने का अंदाज़ भी किसी आम आदमी जैसा नहीं था। आप अलै. ने बड़े वाज़ेह और बेबाक अंदाज़ में फ़िरऔन को मुख़ातिब करके फ़रमाया कि देखो! मेरा यह मन्सब नहीं और यह बात मेरे शायाने शान नहीं कि मैं तुमसे कोई लायानी और झूठी बात करूँ।

قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِبَيِّنَةٖ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ فَاَرۡسِلۡ مَعِيَ بَنِيۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿۱۰۵﴾

*"मैं लेकर आया हूँ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक खुली निशानी, तो बनी इस्राईल को मेरे साथ भेज दो।"*

बनी इस्राईल हज़रत युसुफ़ अलै. की वसातत से फ़लस्तीन से आकर मिस्र में उस वक़्त आबाद हुए थे जब यहाँ एक अरबी नस्ल ख़ानदान की हुकूमत थी। उस ख़ानदान के बादशाह "चरवाहे बादशाह" (Hiksos Kings) कहलाते थे। उनके दौरे हुकूमत में हज़रत युसुफ़ अलै. के एहतराम की वजह से बनी इस्राईल को मआशरे में एक ख़ुसूसी मक़ाम हासिल रहा और वह सदियों तक ऐशो इशरत की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। इसके बाद किसी दौर में मिस्र के अंदर क़ौम परस्त अनासिर के ज़ेरे असर इन्क़लाब आया। इस इन्क़लाब के नतीजे में हुक्मरान ख़ानदान को मुल्क बदर कर दिया गया और यहाँ क़िब्ती क़ौम की हुकूमत क़ायम हो गई। ये लोग मिस्र के असल बाशिन्दे थे। बनी इस्राईल के लिये यह तब्दीली बड़ी मन्हूस साबित हुई। साबिक़ शाही ख़ानदान के चहेते होने की वजह से वो क़िब्ती हुकुमत के ज़ेरे अताब (अधीन) आ गये और उनकी हैसियत और ज़िन्दगी बतदरीज

पस्त से पस्त और सख्त से सख्त होती चली गई। हज़रत मूसा अलै. के ज़माने में यह लोग मिस्र में गुलामाना ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, बल्कि फ़िरऔन की तरफ़ से आये रोज़ इन पर तरह-तरह के ज़ुल्म ढ़ाए जाते थे। यह वह हालात थे जिनमें हज़रत मूसा अलै. को मबऊस किया गया ताकि वह बनी इस्राईल को फ़िरऔन की गुलामी से निजात दिला कर वापस फ़लस्तीन लायें। चुनाँचे हज़रत मूसा अलै. ने फ़िरऔन से मुतालबा किया कि बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने दिया जाये।

## आयत 106

قَالَ اِنۡ كُنۡتَ جِئۡتَ بِاٰيَةٍ فَاۡتِ بِهَاۤ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۱۰۶﴾

*"उस (फ़िरऔन) ने कहा: अच्छा अगर तुम (वाक़ई) कोई निशानी लेकर आये हो तो उसे पेश करो, अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो।"*

## आयत 107

فَاَلۡقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعۡبَانٌ مُّبِيۡنٌ ۖ ﴿۱۰۷﴾

*"तो (मूसा अलै. ने) अपना असा (छड़ी) फेंका, तो उसी वक़्त वह एक हक़ीक़ी अज़दा बन गया।"*

## आयत 108

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَاۗءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ١٠٨

*"और अपना हाथ (ग़िरेबान से) निकाला तो अचानक वह था देखने वालों के लिये सफ़ेद (चमकदार)।"*

## आयत 109

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ١٠٩

*"फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा कि यह तो वाक़िअतन कोई बहुत माहिर जादूगर है।"*

उन्होंने कहा होगा कि यह जो यहाँ से जान बचा कर भाग गया था और कई साल बाद वापस आया है तो कहीं से बहुत बड़ा जादू सीख कर आया है।

## आयत 110

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ١١٠

*"यह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करे, तो अब तुम्हारी क्या राय है?"*

यह तो चाहता है कि जादू के ज़ोर पर तुम्हें इस मुल्क से निकाल कर यहाँ खुद अपनी हुकूमत क़ायम कर ले। इस नाज़ुक सूरते हाल से ओहदा बरा होने के लिये क्या हिकमते अमली इख़्तियार की जायेगी?

## आयत 111

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ١١١

*"(फिर मशवरा देते हुए) उन्होंने कहा कि (फ़िलहाल) मूसा और उसके भाई के मामले को मुअख्खर रखें और मुख्तलिफ़ शहरों में हरकारे भेज दें।"*

यानि अभी फ़ौरी तौर पर इनके ख़िलाफ कोई रद्दे अमल ज़ाहिर ना किया जाये। इन्हें मुनासिब अंदाज़ में टालते हुए मुअस्सर जवाबी हिकमते अमली अपनाने के लिये वक़्त हासिल किया जाये और इस दौरान मुल्क के तमाम इलाक़ों की तरफ़ अपने अहलकार (अधिकारी) रवाना कर दिये जायें।

## आयत 112

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ١١٢

*"जो आपके पास ले आएँ तमाम माहिर जादूगरों को।"*

मुल्क के कोने-कोने से चोटी के जादूगरों को बुला कर एक अवामी इज्तमा के सामने मुक़ाबले में इन्हें शिकस्त से दो-चार किया जाये ताकि लोगों के ज़हनों में जन्म लेने वाले ख़ौफ़ के असरात ज़ायल हो सकें।

## आयत 113

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝١١٣

*"और वो जादूगर फ़िरऔन के पास आ पहुँचे, उन्होंने कहा यक़ीनन हमें अजर तो मिलेगा ही, अग़र हम ग़ालिब आ गये!"*

यहाँ पर ग़ैर ज़रूरी तफ़सील को छोड़ कर रिसालत के मक़ाम व मन्सब और दुनियादारों के माद्दा परस्ताना किरदार के फ़र्क़ को नुमाआ किया जा रहा है। अल्लाह के रसूल मूसा अलै. ने उनके मुतालबे के मुताबिक़ उन्हें निशानियाँ दिखाईं मग़र आप अलै. को इससे कोई मफ़ाद मतलूब नहीं था। आपने फ़िरऔन और अहले दरबार को मरऊब करके किसी ईनाम व इकराम का मुतालबा नहीं किया। जबकि दूसरी तरफ़ जादूगरों का किरदार ख़ालिस माद्दा परस्ताना सोच की अकासी करता है। उन्होंने आते ही जो मुतालबा किया वह माली मुन्फ़अत से मुताल्लिक़ था।

## आयत 114

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝١١٤

*"उसने कहा हाँ और (ईनाम के अलावा) तुम मुक़र्रबीन में भी शामिल कर लिये जाओगे।"*

तुम्हें माली फ़ायदा और ईनाम व इकराम से भी नवाज़ा जायेगा और दरबार में बड़े-बड़े मर्तबे व मंसब अता किये जायेंगे। इसके बाद एक खुले मैदान में बहुत बड़े अवामी इज्तमा के सामने यह मुक़ाबला शुरू हुआ। जब हज़रत मूसा अलै. और जादूगर एक दूसरे के सामने आ गये तो:

## आयत 115

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ۝١١٥

*"(जादूगर) कहने लगे: ऐ मूसा! अब तुम पहले डालोगे या हम हो जाएँ पहले डालने वाले?"*

## आयत 116

قَالَ اَلْقُوْا ۚ

*"(हज़रत मूसा अलै. ने) फ़रमाया: तुम डालो!"*

जादूगरों ने अपनी जादू की चीज़ें ज़मीन पर फेंक दीं। इस सिलसिले में क़ुरान मजीद में किसी जगह पर रस्सियों का ज़िक्र आया है और कहीं छड़ियों का। यानि अपनी जादू की वो चीज़ें ज़मीन पर फेंक दीं जो उन्होंने हज़रत मूसा अलै. के असा (छड़ी) का मुक़ाबला करने के लिये तैयार कर रखीं थीं।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ

*"तो जब उन्होंने डाला तो लोगों की आँखो पर जादू कर दिया"*

उन्होंने जादू के ज़ोर से हाज़िरीन की नज़रबंदी कर दी जिसके नतीजे में लोगों को रस्सियों और छड़ियों के बजाय ज़मीन पर साँप और अज़दे रेंगते हुए नज़र आने लगे।

وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ۝١١٦

*"और उन्होंने उन (हाज़िरीन) पर दहशत तारी कर दी और ज़ाहिर कर दिया बहुत बड़ा जादू।"*

वाक़िअतन उन्होंने भी अपने फन का भरपूर मुज़ाहिरा किया। यहाँ इस क़िस्से की कुछ तफ़सील छोड़ दी गई है, मगर क़ुरान हकीम के बाज़ दूसरे मक़ामात के मुताअले से पता चलता है कि हज़रत मूसा अलै. जादूगरों के इस मुजाहिरे के बाद आरज़ी तौर पर डर से गये थे कि जो मौज्ज़ा मेरे पास था इसी नौइयत का मुज़ाहिरा इन्होंने कर दिया दिखाया है, तो फिर फ़र्क़ क्या रह गया! तब अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐ मूसा डरो नहीं, बल्कि तुम्हारे हाथ में जो असा है उसे ज़मीन पर फेंक दो!

## आयत 117

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝١١٧

*"और हमने वही की मूसा को कि डालो (तो सही ज़रा) अपना असा, तो दफ्फ़तन वह (अज़दा बन कर) निगलने लगा उन सबको जो वो गढ़ लाए थे।"*

मूसा अलै. का असा फेंकना था कि आन की आन में वह इस झूठे तिलस्म को निग़लता चला गया।

## आयत 118

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾

*"पस हक़ ज़ाहिर हो गया और जो कुछ वो कर रहे थे वह बातिल होकर रह गया।"*

## आयत 119

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

*"तो यह (जादूगर) उसी वक़्त मग़लूब हो गये और वह (फ़िरऔन और उसके सरदार) ज़लील होकर रह गये।"*

यानि फ़िरऔन के बुलाए हुए बड़े-बड़े जादूगर हज़रत मूसा अलै. के सामने मग़लूब हो गये और नतीजतन फ़िरऔन और उसकी क़ौम के सरदार ज़लील होकर रह गये।

## आयत 120

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾

*"और जादूगर सजदे में गिरा दिए गये।"*

यानि ऐसे लगा जैसे जादूगरों को किसी ने सजदे में गिरा दिया है। उन पर यह कैफ़ियत हक़ के मुन्कशिफ़ हो जाने के बाद तारी हुई। यह एक ऐसी सूरते हाल थी कि जब किसी बाज़मीर इंसान के सामने हक़ को मान लेने के अलावा दूसरा कोई रास्ता (option) रह ही नहीं जाता।

## आयत 121

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ١٢١

*"वो (फ़ौरन) पुकार उठे कि हम ईमान ले आए तमाम जहानों के रब पर।"*

## आयत 122

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ١٢٢

*"मूसा अलै. और हारुन अलै. के रब पर।"*

आख़िर क्या वजह थी कि जादूगर मग़लूब हुए तो फ़ौरन ईमान ले आए और वह भी इन्तहाई पुख़्ता, यक़ीन और इस्तक़ामत वाला ईमान! कहाँ वो फ़िरऔन से ईनाम की भीख माँग रहे थे और कहाँ अब उसे ख़ातिर में ना लाते हुए नताइज से बेपरवाह होकर डंके की चोट पर अपने ईमान का ऐलान कर दिया। जादूगरों के इस रवैय्ये की मन्तक़ी तौजीह (explanation) यह है कि जो शख़्स किसी फन का माहिर हो उसे उस फ़न के मुम्किनात की इन्तहा और उसके हुदूद व क़ुयूद (limitations) का बख़ूबी इल्म होता है। वह अपने फ़न के मख़्सूस मैदान (field of specialization) में किसी चीज़ की क़द्र, अहमियत, मैयार वग़ैरह को सही पहचान सकता है। जादूगर जो अपने फ़न की मंझे हुए माहिरीन थे वो फ़ौरन पहचान गये थे कि उनके जादू के मुक़ाबले में जो कुछ हज़रत मूसा अलै. ने पेश किया है वह जादू से मा वरा (above) कोई चीज़ है। लिहाज़ा जिस हक़ीकत का इदराक (समझ) फ़िरऔन और उसके अमराअ ना कर सके वह बिजली की एक कोंद (flash) की मानिन्द आनन-फानन जादूगरों के दिलों के तारीक गोशों को रोशन कर गई और उनको ऐसा ईमान नसीब हुआ जिसकी जुर्रते

इज़हार और इस्तक़ामत ने फ़िरऔन और उसके लाव लश्कर को परेशान कर दिया।

## आयत 123

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ

*"फ़िरऔन ने कहा (तुम्हारी ये जुर्रत कि) तुम ईमान ले आए हो उस पर इससे क़ब्ल कि मैं तुम्हे इजाज़त दूँ!"*

اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ

*"यह तुम्हारी एक (सोची समझी) साज़िश है जो तुम सबने मिलकर चली है शहर के अंदर"*

अब फ़िरऔन की जान पर बन गई कि लोगों पर जादूगरों की इस शिकस्त का क्या असर पड़ेगा, अवाम को कैसे मुत्मईन किया जा सकेगा? लेकिन वह बड़ा ज़हनी और genius शख़्स था, फ़ौरन पैंतरा बदला और बोला मुझे सब पता चल गया है, यह मूसा भी तुम्हारा ही साथी है, तुम्हारा गुरु घंटाल है। यह सब तुम्हारी आपस की मिली भगत का नतीजा है और तुम सबने मिल कर हमारे ख़िलाफ एक साज़िश का जाल बुना है।

لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾

*"ताकि निकाल दो इस (शहर) में से इसके वासियों को, तो तुम्हें अनक़रीब पता चल जायेगा।"*

## आयत 124

لَاُقَطِّعَنَّ اَيۡدِيَكُمۡ وَاَرۡجُلَكُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۱۲۴﴾

*"मैं काट डालूँगा तुम्हारे हाथ और पाँव मुख़ालिफ़ सिम्तों से और फिर मैं सूली पर चढ़ा दूँगा तुम सबको।"*

## आयत 125

قَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنۡقَلِبُوۡنَ ﴿۱۲۵﴾

*"उन्होंने कहा (ठीक है) हमें तो अपने रब ही की तरफ़ लौट कर जाना है।"*

जादूगरों पर इन्कशाफ़े हक़ से हासिल होने वाली यक़ीन की पुख़्तगी और गहराई का यह आलम था कि एक मुतल्लक़ुल अल् आन बादशाह की इतनी बड़ी धमकी उनके पाए इस्तक़ामत में ज़रा भी लरज़िश पैदा ना कर सकी। उनके इस जवाब के एक-एक लफ़्ज़ से उनके दिल का इत्मिनान झलकता और छलकता हुआ महसूस हो रहा है।

## आयत 126

وَمَا تَنۡقِمُ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنۡ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتۡنَا ؕ

*"और तुम हमसे किस बात का इन्तेक़ाम ले रहे हो सिवाय इसके कि हम ईमान ले आए अपने रब की आयात पर जब वो हमारे पास आ गईं!"*

رَبَّنَاۤ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّتَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿۱۲۶﴾ ع

*"ऐ हमारे रब! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें वफ़ात दीजियो मुस्लिम ही की हैसियत से।"*

यानि ईमान के रास्ते में जो आज़माईश आने वाली है उसकी सख़्तियों को झेलते हुए कहीं दामने सब्र हमारे हाथ से छूट ना जाये और हम कुफ़्र में दोबारा लौट ना जायें। ऐ अल्लाह! हमें सब्र और इस्तक़ामत अता फ़रमा, और अगर हमें मौत आये तो तेरी इताअत और फ़रमाबरदारी की हालत में आये।

इस वाक़िये के बाद भी फ़िरऔन अमली तौर पर हज़रत मूसा अलै. के ख़िलाफ कोई ठोस अक़दाम ना कर सका। चुनाँचे हज़रत मूसा अलै. अब भी शहर में लोगो तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने और बनी इस्राईल को मुनज़्ज़म करने में मसरूफ़ रहे। क़ौम के नौजवानों ने आप अलै. की दावत पर लब्बैक कहा और वो आप अलै. के गिर्द जमा होना शुरु हो गये। आप अलै. की इस तरह की सरगर्मियों से हुकूमती ओहदेदारों के अंदर बजा तौर पर तशवीश (चिंता) पैदा हुई और बिल्आख़िर उन्होंने फ़िरऔन से इस बारे में शिकायत की।

# आयात 127 से 141 तक

وَقَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ اَتَذَرُ مُوۡسٰى وَقَوۡمَهٗ
لِيُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ
سَنُقَتِّلُ اَبۡنَآءَهُمۡ وَنَسۡتَحۡىٖ نِسَآءَهُمۡ ۚ وَاِنَّا فَوۡقَهُمۡ
قٰهِرُوۡنَ ﴿۱۲۷﴾ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهِ اسۡتَعِيۡنُوۡا بِاللّٰهِ
وَاصۡبِرُوۡا ۚ اِنَّ الۡاَرۡضَ لِلّٰهِ ۙ يُوۡرِثُهَا مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ
عِبَادِهٖ ؕ وَالۡعَاقِبَةُ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۱۲۸﴾ قَالُوۡۤا اُوۡذِيۡنَا مِنۡ
قَبۡلِ اَنۡ تَاۡتِيَنَا وَمِنۡۢ بَعۡدِ مَا جِئۡتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى
رَبُّكُمۡ اَنۡ يُّهۡلِكَ عَدُوَّكُمۡ وَيَسۡتَخۡلِفَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ
فَيَنۡظُرَ كَيۡفَ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۹﴾ وَلَقَدۡ اَخَذۡنَاۤ اٰلَ فِرۡعَوۡنَ
بِالسِّنِيۡنَ وَنَقۡصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَذَّكَّرُوۡنَ
﴿۱۳۰﴾ فَاِذَا جَآءَتۡهُمُ الۡحَسَنَةُ قَالُوۡا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنۡ
تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوۡا بِمُوۡسٰى وَمَنۡ مَّعَهٗ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا
طٰٓئِرُهُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۳۱﴾
وَقَالُوۡا مَهۡمَا تَاۡتِنَا بِهٖ مِنۡ اٰيَةٍ لِّتَسۡحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحۡنُ

لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ
وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ
مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۳﴾
وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ
لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۳۴﴾ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا
عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ
﴿۱۳۵﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَاَوْرَثْنَا
الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ
وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
الْحُسْنٰى عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ڏ بِمَا صَبَرُوْا ۭ وَدَمَّرْنَا مَا
كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾
وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰي قَوْمٍ
يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓي اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ
اِلٰـهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ

هٰٓؤُلَاۗءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
﴿١٣٩﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَ
يَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭوَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾

## आयत 127

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ

*"और कहा क़ौमे फ़िरऔन के सरदारों ने (फ़िरऔन से) क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को इसी तरह छोड़े रखेगें कि वो ज़मीन के अन्दर फ़साद मचाएँ"*

وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۭ

*"और आपको और आपके मअबूदों को छोड़ दें!"*

जिस नये नज़रिये का प्रचार वह कर रहे हैं अगर वह लोगों में मक़बूल होता गया और उस नज़रिये पर लोग इकठ्ठे और मुनज़्जम हो गये तो हमारे ख़िलाफ बग़ावत फूट पड़ेगी। इस तरह मुल्क में फ़साद फैलने का सख़्त अंदेशा है।

यहाँ पर क़ाबिले तवज्जोह नुक्ता यह है कि क़ौमे फ़िरऔन के मअबूद भी थे। उनका सबसे बड़ा इलाह तो सूरज था। लिहाज़ा मामला यह नहीं था कि वो ख़ुदा सिर्फ़ फ़िरऔन को मानते थे। फ़िरऔन की ख़ुदाई सियासी थी, उसका दावा था कि हुकूमत मेरी है, इक़तदार व इख़्तियार (sovereignty) का मालिक मैं हूँ। नमरूद की ख़ुदाई का दावा भी इसी तरह का था। बाकी पूजा-पाठ के लिये कुछ मअबूद फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने भी बना रखे थे जिनके छूट जाने का उन्हें ख़दशा था।

قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبۡنَآءَهُمۡ وَنَسۡتَحۡیٖ نِسَآءَهُمۡ ۚ

*"उसने कहा हम अनक़रीब क़त्ल करेंगे उनके बेटों को और ज़िन्दा रहने देंगे उनकी बेटियों को।"*

यह आज़माईश उन पर एक दफ़ा पहले भी आ चुकी थी। हज़रत मूसा अलै. की विलादत से क़ब्ल जो फ़िरऔन बरसरे इक़तदार था उसने एक ख़्वाब देखा था जिसकी ताबीर में उसके नजूमियों ने उसे बताया था कि बनी इस्राईल में एक बच्चे की पैदाईश होने वाली है जो बड़ा होकर आपकी हुकूमत ख़त्म कर देगा। चुनाँचे इस खदशे के पेशे नज़र फ़िरऔन ने हुक्म दिया था कि बनी इस्राईल के यहाँ पैदा होने वाले हर एक लड़के को पैदा होते ही क़त्ल कर दिया जाये और सिर्फ़ लड़कियों को ज़िन्दा रहने दिया जाये। तक़रीबन चालीस-पैंतालिस साल बाद अब फिर यह मरहला आ गया कि जब मौजूदा फ़िरऔन के सरदारों ने उसकी तवज्जोह इस तरह दिलाई कि जिसे तुम मशते ग़ुबार समझ रहे हो वह बढ़ते-बढ़ते अगर तूफ़ान बन गया तो फिर क्या करोगे? अगर इस (हज़रत मूसा अलै.) ने अपनी क़ौम को तुम्हारे ख़िलाफ़ एक

तहरीक की शक्ल में मुनज़्ज़म कर लिया तो फिर उनको दबाना मुश्किल हो जायेगा। लिहाज़ा वो चाहते थे कि "nip the evil in the bud" के उसूल के तहत हज़रत मूसा अलै. को क़त्ल कर दिया जाये, लेकिन फ़िरऔन के दिल में अल्लाह ने हज़रत मूसा अलै. के लिये मुहब्बत डाली हुई थी। क्योंकि यह वही फ़िरऔन था जिसका हज़रत मूसा अलै. के साथ भाईयों का सा रिश्ता था, जिसकी वजह से उसके दिल में आप अलै. के लिये तबई मुहब्बत अभी भी मौजूद थी। यही वजह थी कि उसने आप अलै. को क़त्ल करने के बारे में नहीं सोचा, बल्कि इसके बजाय उसने बनी इस्राईल को दबाने के लिये फिर से अपने बाप का पुराना हुक्म नाफ़िज़ कराने का हुक्म दे दिया कि हम उनके लड़कों को क़त्ल करते रहेंगे ताकि मूसा अलै. को अपनी क़ौम से इज्तमाई अफ़रादी क़ुव्वत मुहैय्या ना हो सके।

وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۝١٢٧

*"और यक़ीनन हम उन पर पूरी तरह ग़ालिब हैं।"*

गोया अब दरबारियों और अमराअ का हौसला बढ़ाने के अंदाज़ में कहा जा रहा है कि तुम क्यों घबराते हो, हम पूरी तरह उन पर छाए हुए हैं, यह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

## आयत 128

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ

*“मूसा अलै. ने अपनी क़ौम (अहले ईमान) से कहा कि अब तुम लोग अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो?”*

اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙۗ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ١٢٨

*“यक़ीनन यह ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसको चाहता है इसका वारिस बना देता है, लेकिन आक़बत (आख़िरत) तो तक़वा वालों के लिये ही है।”*

यानि इतनी बड़ी आज़माईश में साबित क़दम रहने के लिये अल्लाह से मदद की दुआ करते रहो और सब्र का दामन थामे रखो। अन्जामकार की कामयाबी अल्लाह ही के हाथ में है और वह अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करने वालों का मुक़द्दर है।

## आयत 129

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۭ

*“वो कहने लगे (ऐ मूसा अलै.) हमें तो ईज़ा पहुँची आपके आने से क़ब्ल भी और आपके आने के बाद भी।”*

इन अल्फ़ाज़ से उस मज़लूम क़ौम की बेबसी और बेचारगी टपक रही है, कि पहले भी हमारा यही हाल था कि हम

बदतरीन ज़ुल्म व सितम का निशाना बन रहे थे, और अब आप अलै. के आने के बाद भी हमारे हालात में कोई तब्दीली नहीं आ सकी।

قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾

*"(मूसा अलै. ने) फ़रमाया (घबराओ नहीं!) हो सकता है अनक़रीब अल्लाह तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ख़िलाफ़त अता कर दे ज़मीन में, फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो!"*

यह आयत मुसलमाने पाकिस्तान के लिये भी ख़ास तौर पर लम्हा-ए-फिक्रिया है। बर्रे अज़ीम पाक-ओ-हिन्द के मुसलमान भी गुलामाना ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। उन्होंने सोचा कि मुत्तहिदा हिन्दुस्तान अगर एक वहदत की हैसियत से आज़ाद हो तो कसरते आबादी की वजह से हिन्दू हमेशा हम पर ग़ालिब रहेंगे, क्योंकि जदीद (नई) दुनिया का जम्हूरी उसूल "one man one vote" है। इस तरह हिन्दु हमें दबा लेंगे, हमारा इस्तेहसाल करेंगे, हमारे दीन व मज़हब, तहज़ीब व तमद्दुन, सियासत व मईशत और ज़बान व मआशरत हर चीज़ को बर्बाद कर देंगे। चुनाँचे उन्होंने एक अलग आज़ाद वतन हासिल करने के लिये तहरीक चलाई। इस तहरीक का नारा यही था कि मुसलमान क़ौम को अपने दीन व मज़हब, शक़ाफ़त और मआशरत वग़ैरह के मुताबिक़ ज़िन्दगी बसर करने के लिये एक अलग वतन की ज़रूरत है। इस तहरीक में अल्लाह ने

उन्हें कामयाबी दी और उन्हें एक आज़ाद ख़ुद मुख़्तार मुल्क का मालिक बना दिया। अभी इस हवाले से इस आयत का दोबारा मुताअला कीजिये: {وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ} कि वह तुम्हें ज़मीन में ताक़त और इक़्तदार अता करेगा और फिर देखेगा कि तुम लोग कैसा तर्ज़े अमल इख़्तियार करते हो! इस मुल्क में अल्लाह की हुकूमत क़ायम करके दीन को ग़ालिब करते हो या अपनी मर्ज़ी की हुकूमत क़ायम करके अपनी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ निज़ाम चलाते हो।

## आयत 130

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

*"और हमने पकड़ा आले फ़िरऔन को लगातार क़हत साली और फ़सलों की तबाही से ताकि वो नसीहत पकड़ें।"*

यह वही क़ानून है जिसका ज़िक्र इसी सूरह की आयत 94 में हो चुका है कि जब अल्लाह तआला किसी क़ौम की तरफ़ कोई रसूल भेजता है तो उन्हें आज़माईशों और मुसीबतों में मुब्तला करता है ताकि वो ख़्वाबे ग़फ़लत से जागें और दावते हक़ की तरफ़ मुतवज्जह हों। चुनाँचे हज़रत मूसा अलै. जब आले फ़िरऔन की तरफ़ मबऊस हुए और आपने अपनी दावत शुरू की तो उस दौरान में अल्लाह तआला ने क़ौमे

फ़िरऔन पर भी छोटे-छोटे अज़ाब भेजने शुरू किये ताकि वो होश में आ जायें।

## आयत 131

فَاِذَا جَآءَتۡهُمُ الۡحَسَنَةُ قَالُوۡا لَنَا هٰذِهٖ ۚ

*"तो जब भी हालात बेहतर हो जाते तो वो लोग कहते यह हमारे लिये है।"*

وَاِنۡ تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوۡا بِمُوۡسٰى وَمَنۡ مَّعَهٗ ؕ

*"और जब उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती तो उसे वो नहूसत समझते मूसा अलै. और आपके साथियों की।"*

اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝۱۳۱

*"आगाह हो जाओ कि उनकी शौमी-ए-क़िस्मत अल्लाह के हाथ में है लेकिन उनमें से अक्सर लोग समझते नहीं।"*

जब उनके हालात क़द्रे बेहतर होते यानि फसलें वगैरह ठीक हो जातीं, ख़ुशहाली आती और उनको आसाईश हासिल होती तो वो कहते कि यह हमारी मेहनत, मन्सूबाबंदी और कोशिश का नतीज़ा है, यह हमारा इसतहक़ाक़ (privilege) है। और जब उनको फ़सलों में नुक़सान होता या किसी और क़िस्म के माली नुक़सानात का उन्हें सामना करना पड़ता तो वो इस सब कुछ की ज़िम्मेदारी हज़रत मूसा अलै. और

आपके साथियों पर डाल देते कि हमारा यह नुक़सान इनकी नहूसत की वजह से हुआ है।

## आयत 132

وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ١٣٢

*"और वो कहते कि (ऐ मूसा) तुम हमारे ऊपर ख़्वाह कोई भी निशानी ले आओ ताकि उससे हम पर जादू करो, मगर हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं हैं।"*

वो तहद्दी के अंदाज़ में कहते कि ऐ मूसा! यह तुम जो अपने जादू के ज़ोर से हम पर मुसीबतें ला रहे हो तो तुम्हारा क्या ख़्याल है कि हम तुम्हारे जादू के ज़ेरे असर अपने अक़ाइद से बरगश्ता हो जायेंगे? ऐसा हरग़िज नहीं हो सकता! हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं हैं!

## आयत 133

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ

*"फिर हमने भेजे उनके ऊपर तूफ़ान और टिड्डी दल और चिचड़ियाँ और मेंढक और खून"*

उन पर तूफान बाद व बारान भी आया। टिड्डी डाल उनकी फ़सलों को चट कर जाती थीं। चिचड़ियाँ, जुएँ, खटमल और पिस्सू उनको काटते थे और उनका खून चूसते थे और उनके अनाज में कसरत से सुरसुरियाँ पड़ जातीं। मेंढ़क उनके घरों, बिस्तरों और बर्तनों वगैरह में हर जगह पैदा हो जाते थे। इसी तरह उन पर ख़ून की बारिश भी होती थी और खाने-पीने की चीज़ों में भी खून शामिल हो जाता था।

| | |
|---|---|
| *"(हमने भेजीं ये) निशानियाँ वक़्फे-वक़्फे से"* | اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ |

यह सारी मुसीबतें और आज़माईशें एक बार ही उन पर मुसल्लत नहीं हो गई थीं, बल्कि वक़्फ़े-वक़्फ़े से एक के बाद दीगर आती रहीं, कि शायद किसी एक मुसीबत को देख कर वो राहे रास्त पर आ जायें और हज़रत मूसा अलै. की दावत को क़ुबूल कर लें।

| | |
|---|---|
| *"(इसके बावजूद) वो तकब्बुर पर अड़े रहे और वो थे ही मुजरिम लोग।"* | فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾ |

अगली आयत से पता चल रहा है कि बाद में उनकी यह अकड़ ख़त्म हो गई थी और अज़ाब को ख़त्म कराने के लिये वो लोग हज़रत मूसा अलै. की मिन्नत समाजत करने पर भी तैयार हो गये थे।

## आयत 134

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيۡهِمُ الرِّجۡزُ قَالُوۡا يٰمُوۡسَى ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنۡدَكَ

*“और जब उन पर कोई अज़ाब आता था तो वो कहते कि ऐ मूसा अलै. अपने रब से दुआ करो उस अहद के वास्ते से जो उसने तुमसे कर रखा है।”*

لَئِنۡ كَشَفۡتَ عَنَّا الرِّجۡزَ لَنُؤۡمِنَنَّ لَكَ

*“अगर तुमने हमसे इस अज़ाब को हटा दिया तो हम लाज़िमन तुम्हारी बात मान लेंगे”*

آمَنَ के साथ जब “ل” का सिला आता है (जैसे لَكَ) तो इससे मुराद अक़ीदे वाला “ईमान” नहीं होता, बल्कि इस तरह किसी की बात को सरसरी अंदाज़ में मानने के मायने पैदा हो जाते हैं। लिहाज़ा “لَنُؤۡمِنَنَّ لَكَ” का मतलब है कि हम लाज़िमन तुम्हारी बात मान लेंगे। लेकिन इसके साथ जब “ب” का सिला आये, जैसा कि “آمَنۡتُ بِاللّٰهِ وَمَلآئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ” में है तो इसके मायने पूरे वसूक़, यक़ीन और गहरे ऐतमाद के साथ मानने के होते हैं, यानि ईमान लाना।

وَلَنُرۡسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيۡٓ اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿۱۳۴﴾

*“और हम बनी इस्राईल को भी लाज़िमन तुम्हारे साथ भेज देंगे।”*

मिस्र में बनी इस्राईल की हैसियत हुक्मरान ख़ानदान के गुलामों की सी थी। फ़राअना उनसे मुश्किल और भारी काम बेगार में करवाते थे। ऐहरामे मिस्र की तामीर के दौरान ना जाने कितने हज़ार इस्राईली इस बेरहम मुश्क़्क़त के सबब

जान से हाथ धो बैठे और उनकी हड्डियाँ ऐहरामे मिस्र की बुनियादों में दफ़न हो गईं। ऐहरामों की तामीर के दौरान सैकड़ों मन वज़नी चट्टाने ऊपर खींची जाती थीं। इस दौरान अगर को चट्टान नीचे गिर जाती तो उसके नीचे सैकड़ों इस्राईली पिस जाते। क्योंकि वो लोग फ़िरऔन के मुफ़्त के कारिन्दे थे लिहाज़ा वह उनको आसानी से छोड़ने वाला नहीं था। लेकिन इन आयात से पता चलता है कि एक के बाद दीग़र आने वाले अज़ाब सह-सह कर फ़िरऔन और उसके अमराअ का ग़ुरूर व तकब्बुर कुछ कम हुआ था। चुनाँचे जब वो लोग ज़्यादा आज़िज आ जाते थे तो हज़रत मूसा अलै. से यह वादा भी करते थे कि अगर यह मुसीबत टल जाये तो हम आप अलै. की बात मान लेंगे और आप अलै. की क़ौम को आपके साथ भेज देंगे।

## आयत 135

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾

*"लेकिन जब हम उनसे उस मुसीबत को दूर कर देते थे एक ख़ास मुद्दत के लिये कि जिस तक वह पहुँचने वाले होते तो वो दफ़्फ़तन अहद तोड़ देते थे।"*

## आयत 136

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝١٣٦

*"पस हमने उनसे इन्तेक़ाम लिया और हमने उन्हें समुन्दर में ग़र्क़ कर दिया, इसलिये कि उन्होंने हमारी आयात को झुठलाया और वो उन (आयात) से तग़ाफ़ुल बरतते रहे।"*

## आयत 137

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ

*"और जिन लोगों को दबा लिया गया था (अब) हमने उन्हें वारिस बना दिया उस ज़मीन के मशरिक़ व मग़रिब का जिसको हमने बाबरकत बनाया था।"*

यहां पर مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا की तरकीब की ख़ास अदबी (literary, साहित्यिक) अहमियत है जो फ़िक़रे में एक खूबसूरत rhythm पैदा कर रही है। इस आयत का सादा मफ़हूम यही है कि बनी इसराइल जो मिस्र में गुलामी की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे उनको वहाँ से उठा कर पूरे फ़लस्तीन का वारिस बना दिया दिया। अर्ज़े फ़लस्तीन की ख़ुसूसी बरकत का ज़िक्र सूरह बनी इसराइल की पहली

आयत में भी بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ अल्फ़ाज़ के साथ हुआ है। यह सरज़मीन इसलिये भी मुतबर्रिक (बहुत मुबारक) है कि हज़रत इब्राहिम अलै. के बाद सैकड़ों अम्बिया का मस्कन (आवास) व मदफ़न रही है और इसलिये भी कि अल्लाह तआला ने इसे एक इम्तियाज़ी नौइयत की ज़रखेज़ी से नवाज़ा है।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ڏ بِمَا صَبَرُوْا ۭ

*"और तेरे रब का अच्छा वादा बनी इसराइल के हक़ में पूरा हुआ इस वजह से कि वह साबित क़दम रहे।"*

उनमें से जो लोग हज़रत मूसा अलै. पर ईमान लाये थे उन्होंने वाक़िअतन सख्त तरीन आज़माइशों पर सब्र किया और साबित क़दमी दिखाई और इस सबब से अल्लाह तआला ने उन पर ईनाम फ़रमाया।

وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ١٣٧

*"और हमने तबाह व बर्बाद कर डाला वह सब कुछ जो फ़िरऔन और उसकी क़ौम (ऊँचे महलात) बनाते थे और (बागात में अंगूर की बेलों वगैरह के लिये छतरियाँ) चढ़ाते थे।"*

यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम की सारी तामिरात और उनके सारे बाग व चमन मलियामेट कर दिए गये।

अब अगली आयात में बनी इसराइल के मिस्र से सहराए सीना तक के सफ़र का तज़किरा है। यह वाक़िआत मदनी सूरतों में भी मुतअद्दिद (बहुत) बार आ चुके हैं। ओल्ड

टेस्टामेंट की किताबुल ख़ुरूज (Exodus) में भी इस सफ़र की कुछ तफ़सीलात मिलती हैं।

## आयत 138

وَجٰوَزْنَا بِبَنِىٓ اِسْرَاۗءِيْلَ الْبَحْرَ

*“और पार उतार दिया हमने बनी इस्राईल को समुन्दर के”*

बनी इस्राईल ख़लीज स्वेज को उबूर (पार) करके जज़ीरा नुमाए सीना में दाखिल हुए थे।

فَاَتَوْا عَلٰي قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓي اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ

*“तो उनका गुज़र हुआ एक ऐसी क़ौम पर जो ऐतकाफ़ कर रही थी अपने बुतों का।”*

बुतों का ऐतकाफ़ करने से मुराद बुतों के सामने पूरी तवज्जोह और यक्सुई से बैठना है जो बुतपरस्तों का तरीक़ा है। बुतपरस्ती के इस फ़लसफ़े पर डॉक्टर राधा कृष्णन (1888 से 1975) ने तफ़सील से रोशनी डाली है। डॉक्टर राधा कृष्णन साठ की दहाई में हिन्दुस्तान के सदर भी रहे। उन्होंने अपनी तस्नीफ़ात के ज़रिये हिन्दुस्तान के फ़लसफ़े को ज़िन्दा किया। यह बर्ट्रेंड रसेल/Bertrand Russell (1872 से 1970) के हमअसर थे यह दोनों अपने ज़माने में चोटी के फ़लसफ़ी थे। बर्ट्रेंड रसेल मुल्हिद था जबकि डॉक्टर राधा कृष्णन मज़हबी था। इत्तेफ़ाक़ से इन दोनों ने कमो बेश 90 साल की उम्र पाई। बुतपरस्ती के बारे में डॉक्टर राधा

कृष्णन के फ़लसफ़े का खुलासा यह है कि हम जो किसी देवी या देवता के नाम के बुत बनाते हैं तो हम उन बुतों को अपने नफ़ा या नुक़सान का मालिक नहीं समझते, बल्कि हमारा असल मक़सद एक मुजस्सम चीज़ के ज़रिये से तवज्जोह मरकूज़ करना होता है। क्योंकि तसव्वुराती अंदाज़ में उन देवताओं के बारे में मुराक़बा करना और पूरी तवज्जोह के साथ उनकी तरफ़ ध्यान करना बहुत मुश्किल है, जबकि मुजस्समा या तस्वीर सामने रख कर तवज्जोह मरकूज़ करना आसान हो जाता है। इसी इंसानी कमज़ोरी को अल्लामा इक़बाल ने अपनी नज़्म "शिकवा" में इस तरह बयान किया है।

*ख़ूग़र-ए-पैकर-ए-महसूस थी इंसान की नज़र*
*मानता फिर कोई अनदेखे ख़ुदा को क्योंकर!*

बहरहाल बनी इस्राईल ने उस बुतपरस्त क़ौम को अपने बुतों की इबादत में मशगूल पाया तो उनका जी भी ललचाने लगा और उन्हें एक मसनूई खुदा की ज़रूरत महसूस हुई।

قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ

*"उन्होंने कहा कि ऐ मूसा अलै. हमारे लिये भी कोई मअबूद बना दो जैसे उनके मअबूद हैं।"*

उस क़ौम की हालत देख बनी इस्राईल का भी जी चाहा कि हमारे लिये भी कोई इस तरह का मअबूद हो जिसको सामने रख कर हम उसकी पूजा करें। चुनाँचे उन्होंने हज़रत मूसा अलै. से अपनी इसी ख़्वाहिश का इज़हार कर ही दिया। जवाब में हज़रत मूसा अलै. ने उन्हें सख़्त डाँट पिलाई:

قَالَ اِنَّكُمۡ قَوۡمٌ تَجۡهَلُوۡنَ ۝١٣٨

*"आप अलै. ने फ़रमाया कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो!"*

तुम कितनी बड़ी नादानी और जहालत की बात कर रहे हो!

## आयत 139

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمۡ فِيۡهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝١٣٩

*"यह लोग जिस चीज़ में पड़े हैं वह सब कुछ बर्बाद होने वाला है और जो कुछ ये लोग कर रहे हैं वह सब बातिल है।"*

## आयत 140

قَالَ اَغَيۡرَ اللّٰهِ اَبۡغِيۡكُمۡ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمۡ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ۝١٤٠

*"(हज़रत मूसा अलै. ने) फ़रमाया कि क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई और मअबूद तलाश करूँ, जबकि उसने तुम्हें फ़ज़ीलत दी है तमाम जहान वालों पर!"*

## आयत 141

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ

*"और याद करो जब हमने तुम्हें निजात दी आले फ़िरऔन से, जो तुम्हें मुब्तला किए हुए थे बदतरीन अज़ाब में।"*

يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝۱۴۱

*"वो क़त्ल कर डालते थे तुम्हारे बेटों को और ज़िन्दा रखते थे तुम्हारी बेटियों को, और यक़ीनन इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत बड़ी आज़माईश थी।"*

तक़रीबन यही अल्फ़ाज़ सूरतुल बक़रह (आयत 49) में भी गुज़र चुके हैं।

# आयात 142 से 147 तक

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ
مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ
هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ
رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ
وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ
تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى
صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا
اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّي اصْطَفَيْتُكَ
عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ
مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ
وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ
الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ
فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا
بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ
وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَالَّذِيْنَ

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤٧

## आयत 142

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً

*"और हमने बुलाया मूसा अलै. को तीस रातों के लिये"*

यानि कोहे सीना (तूर) पर तलब किया। आमतौर पर इस तरह कहने से दिन-रात ही मुराद होते हैं, लेकिन अरबी मुहावरे में रात का तज़किरा किया जाता है।

وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ

*"और मुकम्मल कर दिया हमने इस मुद्दत को दस (मज़ीद रातों) से, तो मुद्दत पूरी हो गई उसके रब की चालीस रातों की।"*

इस तरह हज़रत मूसा अलै. ने तूर पर "चिल्ला" मुकम्मल किया, जिसके दौरान आपने लगातार रोज़े भी रखे। हमारे यहाँ सूफ़िया ने चिल्ला काटने का तस्सवुर ग़ालिबन यहीं से लिया है।

وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ

*"और (जाते हुए) कहा मूसा अलै. ने अपने भाई हारून अलै. से कि मेरी क़ौम के अंदर मेरी नयाबत के फ़राइज़ अदा करना, इस्लाह*

وَاَصۡلِحۡ وَلَا تَتَّبِعۡ سَبِيۡلَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۱۴۲﴾

*करते रहना और फ़साद करने वालों के रास्ते की पैरवी ना करना।”*

## आयत 143

وَلَمَّا جَآءَ مُوۡسٰى لِمِيۡقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ

*“और जब मूसा अलै. पहुँचे हमारे वक़्ते मुक़र्ररा पर और उनसे कलाम किया उनके रब ने”*

قَالَ رَبِّ اَرِنِيۡۤ اَنۡظُرۡ اِلَيۡكَ ؕ قَالَ لَنۡ تَرٰىنِيۡ

*“उन्होंने दरख़्वास्त की कि ऐ मेरे रब! मुझे यारा-ए-नज़र दे कि मैं तुझे देखूँ। अल्लाह ने फ़रमाया कि तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते”*

وَلٰكِنِ انۡظُرۡ اِلَى الۡجَبَلِ فَاِنِ اسۡتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوۡفَ تَرٰىنِيۡ ۚ

*“लेकिन ज़रा उस पहाड़ को देखो अगर वह अपनी जगह पर खड़ा रह जाये तो तुम भी मुझे देख सकोगे।”*

فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلۡجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا

*“तो जब उसके रब ने अपनी तजल्ली डाली पहाड़ पर तो कर दिया उसको रेज़ाह-रेज़ाह”*

جَلَا يَجۡلُو جَلَاءً के मायने हैं ज़ाहिर करना, रोशन करना। इससे “تَجَلّٰى” बाब तफ़अ’उल है, यानि किसी चीज़ का ख़ुद

रोशन हो जाना। यह अल्लाह तआला की ज़ात की तजल्ली थी जो पहाड़ पर डाली गई जिससे पहाड़ रेज़ाह-रेज़ाह हो गया।

*"और मूसा अलै. गिर पड़े बेहोश होकर"*

وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ

तजल्ली-ए-बारी तआला के इस बिलवास्ता मुशाहिदे को भी हज़रत मूसा अलै. बर्दाश्त ना कर सके। पहाड़ पर तजल्ली का पड़ना था कि आप अलै. बेहोश होकर गिर पड़े।

*"फिर जब आप अलै. को अफ़ाक़ा हुआ तो कहा कि (ऐ अल्लाह!) तू पाक है, मैं तेरी जनाब में तौबा करता हूँ और मैं हूँ पहला ईमान लाने वाला!"*

فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

जब हज़रत मूसा अलै. को होश आया तो आप अलै. ने अल्लाह तआला के हुज़ूर अपने सवाल की जसारत पर तौबा की और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे देखे बग़ैर सबसे पहले तुझ पर ईमान लाने वाला हूँ।

## आयत 144

*"(अल्लाह ने) फ़रमाया: ऐ मूसा मैंने तुम्हें मुन्तख़ब किया है लोगों पर (तरजीह देकर) अपनी पैगम्बरी और अपनी हमकलामी के लिये।"*

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى

النَّاسِ بِرِسٰلٰتِیۡ

وَ بِکَلَامِیۡ ۫ۖ

यह हज़रत मूसा अलै. का इम्तियाज़ी मक़ाम था, जैसे सूरतुन्निसा (आयत 164) में फ़रमाया: { وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا }

*"तो ले लो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ और हो जाओ शुक्र करने वालों मे।"*

فَخُذۡ مَاۤ اٰتَیۡتُکَ وَ کُنۡ مِّنَ الشّٰکِرِیۡنَ ﴿۱۴۴﴾

यानि यह अल्वाह जो हम आपको दे रहे हैं इन्हें ले लो और इनमें जो अहकाम लिखे हुए हैं उनका हक़ अदा करो।

## आयत 145

*"और हमने लिख दी उस अलै. के लिये तख़्तियों पर हर तरह की नसीहत और हर तरह (के अहकाम) की तफ़सील।"*

وَ کَتَبۡنَا لَہٗ فِی الۡاَلۡوَاحِ مِنۡ کُلِّ شَیۡءٍ مَّوۡعِظَۃً وَّ تَفۡصِیۡلًا لِّکُلِّ شَیۡءٍ ۚ

यानि शरीअत के तमाम बुनियादी अहकाम उन अल्वाह में दर्ज कर दिये गये थे। अल्लाह की उतारी हुई शरीअत के बुनियादी अहकाम शाहराहे हयात पर इंसान के लिये गोया danger signals की हैसियत रखते हैं। जैसे किसी पुरपेच पहाड़ी सड़क पर सफ़र को महफ़ूज़ बनाने के लिये जगह-

जगह danger caution नसब किए जाते हैं इसी तरह इंसानी तमद्दुन के पेचीदा रास्ते पर आसमानी शरीअत अपने अहकामात के ज़रिये caution नसब करके इंसानी तगो-दो (भाग-दौड़) के लिये एक महफ़ूज़ दायरा मुक़र्रर कर देती है ताकि इंसान इस दायरे के अंदर रहते हुए, अपनी अक़्ल को बरूएकार लाकर अपनी मर्ज़ी और पसंद-नापसंद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार। इस दायरे के बाहर "मुहर्रमात" होते हैं जिनके बारे में अल्लाह का हुक्म है कि उनके क़रीब भी मत जाना: { تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا } (अल् बक़रह:187)

فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۭ

*"तो (ऐ मूसा अलै.) इसको थाम लो मज़बूती के साथ और अपनी क़ौम को भी हुक्म दो कि वो इसको पकड़ें इसकी बेहतरीन सूरत पर।"*

किसी भी हुक्म पर अमल दरआमद के लिये मुख्तलिफ़ दर्जे होते हैं। यह अमल दरआमद अदना दर्जे में भी हो सकता है, औसत दर्जे में भी और आला दर्जे में भी। लिहाज़ा यहाँ मतलब यह है कि आप अलै. अपनी क़ौम को तरग़ीब दें कि वो अहकामे शरीअत पर अमल करते हुए आला से आला दर्जे की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करें। यही नुक्ता हम मुसलमानों को भी क़ुरान में बताया गया: {الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ} (अल् ज़ुमुर:18) यानि वो लोग कलामुल्लाह को सुनते हैं फिर जो उसकी बेहतरीन बात होती है उसको इख़्तियार करते हैं। एक तर्ज़े अमल यह होता

है कि आदमी अपनी ज़िम्मेदारियों के बारे में ढ़ील और रिआयत हासिल करना चाहता है। वह सोचता है कि इम्तियाज़ी पोज़ीशन ना सही, फर्स्ट या सेकेंड डिवीज़न भी ना सही, बस पास मार्क्स काफ़ी हैं, लेकिन यह मामला "दीन" में नहीं होना चाहिये। दीनी उमूर में अमल का अच्छे से अच्छा और आला से आला मैयार क़ायम करने की कोशिश करने की हिदायत की गई है। जैसा कि हम सूरतुल मायदा में भी पढ़ आए हैं: { اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ} (आयत:93) दुनियावी उमूर में तो हर शख़्स *"है जुस्तजू कि ख़ूब से ख़ूब तर कहाँ!"* के नज़रिये का हामिल नज़र आता ही है, लेकिन दीन के सिलसिले में भी हर मुसलमान को कोशिश होनी चाहिये कि उसका आज उसके कल से बेहतर हो। दीनी उमूर में भी वह तरक्क़ी के लिये हत्तल इम्कान हर घड़ी कोशाँ रहे।

سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۱۴۵

*"अनक़रीब मैं तुम्हें घर दिखाऊँगा (जिस पर उस वक़्त क़ब्ज़ा है) फ़ासिकों का।"*

इससे मुराद फ़लस्तीन का इलाक़ा है जिस पर हमलावर होने का हुक्म हज़रत मूसा अलै. को मिलने वाला था। बनी इस्राईल का क़ाफिला मिस्र से निकलने के बाद ख़लीज स्वेज़ को उबूर करके सहरा-ए-सीना में दाख़िल हुआ तो ख़लीज स्वेज़ के साथ-साथ सफ़र करता रहा, यहाँ तक कि जज़ीरा नुमाए सीना के जुनूबी कोने में पहुँच गया जहाँ कोहे तूर वाक़ेअ है। यहाँ पर इस क़ाफिले का तवील अर्से तक क़याम

रहा। यहीं पर हज़रत मूसा अलै. को कोहे तूर पर तलब किया गया और जब आप अलै. तौरात लेकर वापस आए तो आप अलै. को फ़लस्तीन पर हमलावर होने का हुक्म मिला। चुनाँचे यहाँ से यह क़ाफिला ख़लीज उक़्बा के साथ-साथ शिमाल की तरफ़ आज़मे सफ़र हुआ। बनी इस्राईल सात-आठ सौ साल क़ब्ल हज़रत यूसुफ़ अलै. की दावत पर फ़लस्तीन छोड़ कर मिस्र में आ बसे थे। अब फ़लस्तीन में वो मुशरिक और फ़ासिक़ क़ौम क़ाबिज़ थी जिसके बारे में उनका ख़्याल था कि वो सख़्त और ज़ोरावर लोग हैं। चुनाँचे जब उनको हुक्म मिला कि जाकर उस क़ौम से जिहाद करो तो उन्होंने यह कह कर माज़ूरी ज़ाहिर कर दी कि ऐसे ताक़तवर लोगों से जंग करना उनके बस की बात नहीं: {قَالُوْا يٰمُوْسٰى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ} (मायदा:22) इस वाक़िये की तफ़सील सूरह मायदा में गुज़र चुकी है। यहाँ उसी मुहिम का ज़िक्र हो रहा है कि मैं अनक़रीब तुम लोगों को उस सरज़मीन की तरफ़ ले जाऊँगा जो तुम्हारा असल वतन है लेकिन अभी उस फ़ासिक़ों का क़ब्ज़ा है। उन नाफ़रमान लोगों के साथ जंग करके तुमने अपने वतन को आज़ाद कराना है।

## आयत 146

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ

*"मैं फेर दूँगा अपनी आयात से उन लोगों (के रुख़) को ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते है।"*

यहाँ एक उसूल बयान फ़रमा दिया गया कि जिन लोगों के अंदर तकब्बुर होता है हम ख़ुद उनका रुख़ अपनी आयात की तरफ़ से फेर देते हैं, चुनाँचे वो हमारी आयात को समझ ही नहीं सकते, उन पर ग़ौर कर ही नहीं सकते। इसलिये कि तकब्बुर अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा नापसंद है। एक हदीसे क़ुदसी में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ((اَلْكِبْرِيَاءُ رِدَائِیْ))[8] यानि तकब्बुर मेरी चादर है, अगर कोई इंसान तकब्बुर करता है तो वह गोया मेरी चादर मेरे शाने (कन्धे) से घसीट रहा है, लिहाज़ा ऐसे हर इन्सान के ख़िलाफ मेरा ऐलान-ए-जंग है। एक और हदीस में रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ((لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِیْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ كِبْرٍ))[9] "वह शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेगा जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर है।" चुनाँचे आयत ज़ेरे नज़र का मफ़हूम यह है कि जिन लोगों के अंदर तकब्बुर है हम ख़ुद उन्हें अपनी आयात से बरगश्ता कर देते हैं। ऐसे लोगों को हम इस लायक़ ही नहीं समझते कि वो हमारी आयात को देखें और समझें। ऐसे मग़रूर लोगों को हम सीधी राह की तरफ़ तवज्जोह मरकूज़ करने ही नहीं देते।

وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ

*"और अग़र वो देख भी लें सारी निशानियाँ तब भी वो उन पर ईमान नहीं लाएँगे।"*

وَاِنۡ یَّرَوۡا سَبِیۡلَ الرُّشۡدِ لَا یَتَّخِذُوۡهُ سَبِیۡلًا ۚ

"और अग़र वो देख भी लें हिदायत का रास्ता तब भी उस रास्ते को इख़्तियार नहीं करगें।"

وَاِنۡ یَّرَوۡا سَبِیۡلَ الۡغَیِّ یَتَّخِذُوۡهُ سَبِیۡلًا ؕ

"और अग़र वो देखें बुराई का रास्ता तो उसे वो (फ़ौरन) इख़्तियार कर लेंगे।"

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِنَا وَكَانُوۡا عَنۡهَا غٰفِلِیۡنَ ﴿۱۴۶﴾

"यह इसलिये कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे तग़ाफ़ुल बरतते रहे।"

## आयत 147

وَالَّذِیۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِنَا وَلِقَآءِ الۡاٰخِرَةِ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ؕ

"और जो लोग भी झुठलाएँगे हमारी आयात को और आख़िरत की मुलाक़ात को, उनके आमाल ज़ाया हो जायेंगे।"

ऐसे लोग अपने तैं बड़ी-बड़ी नेकियाँ कमा रहे होंगे, मग़र अल्लाह के यहाँ उनकी इन नेकियों का कोई सिला नहीं होगा। जैसे कि क़ुरैशे मक्का ख़ुद को "ख़ादिमीने काबा" समझते थे, वो काबा के सफ़ाई और सुथराई का खुसूसी अहतमाम करते, हाजियों की ख़िदमत करते, उनके लिये दूध

और पानी की सबीलें लगाते, मग़र मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की दावत पर ईमान लाए बग़ैर उनके इन सारे आमाल की अल्लाह के नज़दीक कोई अहमियत नहीं थी।

هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾

*"और उनको नहीं दिया जायेगा बदले में मग़र वही कुछ जो वो करते रहे थे।"*

## आयात 148 153 तक

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا
جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا
يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا
سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ
لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ
﴿١٤٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ
بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ
وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ؕ قَالَ
ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۡ ۖ
فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَاۗءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ

الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥٠ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ
رَحْمَتِكَ ڮ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١٥١ اِنَّ الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ۝١٥٢
وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا
وَاٰمَنُوْٓا ۡ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٥٣

## आयत 148

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۭ

*"और बना लिया मूसा अलै. की क़ौम ने आपके बाद अपने ज़ेवरों से बछड़े का सा एक जिस्म जिससे गाय की सी आवाज़ आती थी।"*

जब हज़रत मूसा अलै. कोहे तूर पर चले गये तो आप अलै. की क़ौम के एक फ़र्द ने यह फितना उठाया, जिसका नाम सामरी था। उसने सोने का एक मुजस्समा बनाने का मन्सूबा बनाया और इस गर्ज़ से उसने सब लोगों से ज़ेवरात इकट्ठे कर लिये। रिवायात के मुताबिक़ यह ज़ेवरात ज़्यादातर मिस्र के मक़ामी लोगों (क़िब्तियों) के थे जो उन्होंने बनी इस्राईल के लोगों के पास अमानतन रखवाये थे। फ़िरऔनियों के हाथों अपनी तमामतर ज़िल्लत व ख्वारी के बावजूद मआशरे में बनी इस्राईल की अख़्लाक़ी साख अभी तक किसी ना किसी सतह पर इस वजह से मौजूद थी कि

यह लोग हज़रत इब्राहीम अलै. की औलाद में से थे। यही वजह थी कि बहुत से मक़ामी लोग अपनी क़ीमती चीज़ें इनके यहाँ बतौर अमानत रख दिया करते थे। जब यह लोग हज़रत मूसा अलै. के साथ मिस्र से निकले तो उस वक़्त भी उनके बहुत से लोगों के पास क़िब्तियों के बहुत से ज़ेवरात अमानतों के तौर पर मौजूद थे। चुनाँचे वो ज़ेवरात उनके मालिकों को वापिस करने के बजाय अपने साथ ले आये थे। सामरी ने एक मन्सूबे के तहत सारे क़ाफ़िले से वो ज़ेवरात इकठ्ठे किये। बक़ायदा एक भट्टी बना कर उन ज़ेवरात को गलाया और बछड़े की शक्ल और जसामत का एक मुजस्समा तैयार कर दिया। उसने एक माहिर कारीग़र की तरह उस मुजस्समे को बनाया, सँवारा और उसमें कुछ सुराख़ इस तरह से रखे कि जब उनमें से हवा गुज़रती थी तो गाय के डकारने जैसी आवाज़ सुनाई देती। यह सब कुछ करने के बाद सामरी ने ऐलान कर दिया कि यह बछड़ा तुम लोगों का ख़ुदा है और मूसा अलै. को दरअसल मुग़ालता हो गया है जो ख़ुदा से मिलने कोहे तूर पर चले गये हैं।

इसमें एक और नुक्ता क़ाबिले तवज्जोह है, वह यह कि हज़रत मूसा अलै. मोहब्बत और जज़्बा-ए-इश्तियाक़ (उत्सुकता) में वक़्ते मुक़र्ररा से पहले ही कोहे तूर पर चले गये थे। इस पर अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब तल्बी भी हुई थी, जिसके बारे में हमें कुछ इशारा सूरह ताहा (आयत:83) में मिलता है: {وَمَآ اَعۡجَلَكَ عَنۡ قَوۡمِكَ يٰمُوۡسٰى} "ऐ मूसा! तुम अपनी क़ौम को छोड़ कर क़ब्ल अज़ वक़्त क्यों आ गये हो?" इस पर आपने जवाब दिया: {وَعَجِلۡتُ اِلَيۡكَ رَبِّ لِتَرۡضٰى} (आयत:84) कि परवरदिग़ार! मैं तो तेरी मोहब्बत

और तुझसे गुफ्तगू करने के शौक में इसलिये जल्दी आया था कि तू इससे ख़ुश होगा। गोया आप तो फ़रते इश्तियाक़ (उत्सुकता) में शाबाश की तवक्क़ो रखते थे। लेकिन यहाँ डाँट पड़ गई: { قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ} (आयत:85) "(अल्लाह तआला ने) फ़रमाया: तो (आपकी इस अजलियत की वजह से) आपके बाद हमने आपकी क़ौम को फ़ितने में डाल दिया है और सामरी ने उन्हें गुमराह कर दिया है।" गोया ख़ैर और भलाई के मामले में भी जल्दीबाज़ी नहीं करनी चाहिये और हर काम क़ायदे, कुल्लिये के मुताबिक़ करना चाहिये। इसी लिये मिसाल मशहूर है: "सहज पके सो मीठा हो!"

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا

*"क्या उन्होंने ग़ौर ना किया कि ना वह उनसे कोई बात कर सकता है और ना उन्हें रास्ता बता सकता है!"*

अग़रचे उस मुजस्समे से गाय की सी आवाज़ निकलती थी मग़र उन्होंने यह ना सोचा कि वह कोई बमायने बात करने के क़ाबिल नहीं है और ना ही किसी अंदाज़ में वह उनकी रहनुमाई कर सकता है। मग़र इसके बावजूद:

اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾

*"उसी को वो (मअबूद) बना बैठे और वो थे बहुत ज़ालिम!"*

बनी इस्राईल ने उसी बछड़े को अपना मअबूद मान कर उसकी परस्तिश शुरू कर दी और इस तरह शिर्क जैसे ज़ुल्मे

अज़ीम के मुरतकिब हुए। ज़ालिम से यह भी मुराद है कि वो अपने ऊपर बड़े ज़ुल्म ढ़ाने वाले थे।

## आयत 149

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ

*"और जब उनके हाथों के तोते उड़ गए (उनको पछतावा हुआ) और उन्हें अहसास हुआ कि वो तो गुमराह हो गये हैं"*

قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ١٤٩

*"तो उन्होंने कहा कि अग़र हमारे रब ने हम पर रहम ना फ़रमाया और हमें बख़्श ना दिया तो हम हो जायेंगे बहुत ख़सारा पाने वालों में से।"*

इस मामले में वो लोग तीन गिरोहों में तक़सीम हो गये थे। क़ौम का एक बड़ा हिस्सा वो था जो इस गुनाह में बिल्कुल शरीक नहीं हुआ। दूसरे गिरोह में वो लोग थे जो कुछ देर के लिये इस गुनाह में शरीक हुए, लेकिन फ़ौरन उन्हें अहसास हो गया कि उनसे गलती हो गई है। तीसरा गिरोह हज़रत मूसा अलै. की वापसी तक इस शिर्क पर अड़ा रहा। यहाँ दरमियानी गिरोह के लोगों का ज़िक्र है कि गलती के बाद वो नादिम हुए और उन्हें समझ आ गई कि वो गुमराही का इरतकाब कर बैठे हैं।

## आयत 150

| | |
|---|---|
| *"और जब मूसा अलै. लौटे अपनी क़ौम की तरफ़ सख़्त ग़जबनाक होकर अफ़सोस में"* | وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ |

غَضْبَان, رَحْمٰن की तरह فَعْلَان के वज़न पर मुबालगे का सीगा है। यानि आप अलै. निहायत ग़जबनाक थे। हज़रत मूसा अलै. का मिज़ाज भी जलाली था और क़ौम के जुर्म और गुमराही की नौइयत भी बहुत शदीद थी। फिर अल्लाह तआला ने कोहे तूर पर ही बता दिया था कि तुम्हारी क़ौम फ़ितने में पड़ चुकी है लिहाज़ा उनका ग़म व गुस्सा और रंज व अफ़सोस बिल्कुल बेजा था।

| | |
|---|---|
| *"आपने फ़रमाया बहुत बुरी है मेरी नयाबत जो तुमने की है मेरे बाद।"* | قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ |

यह ख़िताब हज़रत हारुन अलै. से भी हो सकता है और अपनी पूरी क़ौम से भी।

| | |
|---|---|
| *"क्या तुमने अपने रब के मामले में जल्दी की?"* | اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ |

यानि अगर सामरी ने फ़ितना खड़ा कर ही दिया था तो तुम लोग इस क़द्र जल्द बग़ैर सोचे-समझे उसके कहने में आ गये? कम से कम मेरे वापस आने का ही इन्तेज़ार कर लेते!

| | |
|---|---|
| *"और आप अलै. ने वह तख़्तियाँ (एक तरफ़) डाल दीं"* | وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ |

कोहे तूर से जो तौरात की तख़्तियाँ लेकर आये थे वो अभी तक आप अलै. के हाथ में ही थीं, तो आपने उन तख़्तियों एक तरफ़ ज़मीन पर रख दिया।

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۭ

*"और (गुस्से में) अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगे।"*

हज़रत मूसा अलै. ने गुस्से में हज़रत हारून अलै. को सर के बालों से पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा और कहा कि मैं तुम्हें अपना ख़लीफ़ा बना कर गया था, मेरे पीछे तुमने यह क्या किया? तुमने क़ौम के लोगों को इस बछ्ड़े की पूजा करने से रोकने की कोशिश क्यों नहीं की?

قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ڮ

*"(हारुन अलै. ने) कहा कि ऐ मेरे माँ जाय (मेरी माँ के बेटे / भाई), हक़ीक़त में क़ौम ने मुझे दबा लिया था और वो मेरे क़त्ल पर आमादा हो गये थे"*

मैंने तो इन लोगों को ऐसा करने से मना किया था, लेकिन इन्होंने मुझे बिल्कुल बेबस कर दिया था। इस मामले में इन लोगों ने इस हद तक जसारत की थी कि वो मेरी जान के दर पे हो गये थे।

فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَاۗءَ

*"तो (देखें अब) दुश्मनों को मुझ पर हँसने का मौक़ा ना दें।"*

"شماتتِ اَعداء" का मुहावरा हमारे यहाँ उर्दू में भी इस्तेमाल होता है, यानि किसी की तौहीन और बेईज़्ज़ती पर उसके

दुश्मनों का खुश होना और हँसना। हज़रत हारून ने हज़रत मूसा अलै. से दरख्वास्त की कि अब इस तरह मेरे बाल खींच कर आप दुश्मनों को मुझ पर हँसने का मौक़ा ना दें।

وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۵۰

*"और मुझे इन ज़ालिमों के साथ शामिल ना कीजिए।"*

आप मुझे इन ज़ालिमों के साथ शुमार ना कीजिए। मैं इस मामले में हरग़िज़ इनके साथ नहीं हूँ। मैं तो इन्हें इस हरकत से मना करता रहा था।

## आयत 151

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ڮ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝۱۵۱

*"(तब हज़रत मूसा अलै. ने दुआ करते हुए) कहा कि ऐ मेरे परवरदिग़ार! बख़्श दे मुझे भी और मेरे भाई को भी और हमें दाखिल फ़रमा अपनी रहमत में, और तू तमाम रहम करने वालों में सबसे बढ़ कर रहम फ़रमाने वाला है।"*

इस दुआ के जवाब में अल्लाह तआला की तरफ़ से इर्शाद हुआ:

## आयत 152

*"यक़ीनन जिन लोगों ने बछड़े को मअबूद बना लिया, अनक़रीब उनको पहुँचेगा गज़ब उनके रब की तरफ़ से और ज़िल्लत दुनिया की ज़िन्दगी में।"*

اِنَّ الَّذِيۡنَ اتَّخَذُوا الۡعِجۡلَ سَيَنَالُهُمۡ غَضَبٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَذِلَّةٌ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا

"ग़ज़ब" से आख़िरत का गज़ब भी मुराद है और क़त्ले मुर्तद की वह सज़ा भी जिसका ज़िक्र हम सूरतुल बक़रह की आयत 54 में पढ़ आए हैं।

*"और इसी तरह हम बदला देते हैं बोहतान बाँधने वालों को।"*

وَكَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُفۡتَرِيۡنَ ﴿۱۵۲﴾

## आयत 153

*"अलबत्ता जिन लोगों ने (कुछ देर के लिये) बुरे काम किये फिर तौबा कर ली उसके बाद और ईमान ले आये, तो यक़ीनन उसके बाद आप अलै. का रब बख़्शने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।"*

وَالَّذِيۡنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِهَا وَاٰمَنُوۡۤا اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ بَعۡدِهَا لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۵۳﴾

वो लोग जिनसे इस गलती का इरतकाब तो हुआ मगर उन्होंने इससे तौबा करके अपने ईमान की तजदीद कर ली, ऐसे तमाम लोगों का मामला उस अल्लाह के सुपुर्द है जो बख्शने वाला और इंसानो पर रहम करने वाला है। अलबत्ता जो लोग उस जुर्म पर अड़े रहे उन पर आखिरत से पहले दुनिया की ज़िन्दगी में भी अल्लाह का गज़ब मुसल्लत हुआ। इसकी तफ़सील सूरतुल बक़रह की आयत 54 के तहत गुज़र चुकी है कि हज़रत मूसा अलै. ने हर क़बीले के मोमिनीन मुख्लिसीन को हुक्म दिया कि वो अपने-अपने क़बीले के उन मुजरिमीन को क़त्ल कर दें जिन्होंने गौसाला परस्ती का इरतकाब किया। सिर्फ़ वो लोग क़त्ल से बचे जिन्होंने तौबा कर ली थी। यह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे सूरतुल मायदा में आयाते मुहारबा (आयात 33 और 34) में हमने पढ़ा कि अगर डाकू, राहज़न वग़ैरह मुल्क में फ़साद मचा रहे हों, लेकिन मुतालक़ा हुक्काम (हाकिम) के क़ाबू में आने से पहले वो तौबा कर लें तो ऐसी सूरत में उनके साथ नरमी का बर्ताव हो सकता है बल्कि उन्हें माफ़ भी किया जा सकता है, लेकिन अग़र उन्हें उसी बग़ावत की कैफ़ियत में गिरफ़्तार कर लिया जाये तो फिर उनकी सज़ा बहुत सख़्त है।

# आयात 154 से 157 तक

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚۖ وَفِيْ
نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ
﴿١٥٤﴾ وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ

فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ۭ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَاۗءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۭ تُضِلُّ بِهَا مَنْ
تَشَاۗءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَاۗءُ ۭ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا
وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ١٥٥ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ
هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ۭ قَالَ
عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَاۗءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ
شَيْءٍ ۭ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ١٥٦ۚ اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ
الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا
عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۡ يَاْمُرُهُمْ
بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ
الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَـبٰۗىِٕثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۭ فَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ
اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ١٥٧ۧ

# आयत 154

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾

*“और जब मूसा अलै. का गुस्सा कुछ ठंडा पड़ा तो उन्होंने वो तख़्तियाँ उठा लीं, और उसकी तहरीर में थी रहमत और हिदायत उन लोगों के लिये जो अपने रब से डरते हैं।”*

# आयत 155

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ

*“और इन्तख़ाब किया मूसा अलै. ने अपनी क़ौम से सत्तर अफ़राद का हमारे वक़्ते मुक़र्ररा के लिये।”*

वो लोग जो आख़री वक़्त तक इस मुशरिकाना फ़अल पर क़ायम रहे उन्हें क़त्ल कर दिया गया। अब इस ततहीर (purge) के बाद इज्तमाई तौबा का मरहला था, जिसके लिये हज़रत मूसा अलै. के हुक्म के मुताबिक़ अपनी क़ौम के सत्तर (70) सरकर्दा अफ़राद को साथ लेकर कोहे तूर पर हाज़री के लिये रवाना हो गये।

فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

*“फिर उन्हें आ पकड़ा ज़लज़ले ने”*

कोहे तूर पर या उसके मज़ाफ़ात में उन लोगों के लिये जिस्मानी कपकपी या ज़मीनी ज़लजले जैसी ख़ौफनाक कैफ़ियत पैदा कर दी गई।

قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ

*"(मूसा अलै. ने) अर्ज़ किया कि ऐ परवरदिग़ार! अगर तू चाहता तो हलाक कर देता पहले ही इन सबको भी और मुझे भी।"*

اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ

*"तो क्या तू हमें हलाक कर देगा हममें से कुछ बेवक़ूफ़ लोगों की हरकत की वजह से?"*

क़ौम के कुछ जाहिल लोगों ने जो हरकत की थी उन्हें उसकी सज़ा भी मिल गई है। हमने इतना बड़ा कफ्फ़ारा दे दिया है कि उन्हें अपने हाथों से क़त्ल भी कर दिया है। तो क्या उनकी वजह से तू पूरी क़ौम को हलाक कर देगा?

اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ

*"मग़र यह तेरी तरफ़ से एक आज़माईश है, तू गुमराह करता है इसके ज़रिये से जिसको चाहता है और हिदायत देता है जिसको चाहता है।"*

اَنۡتَ وَلِيُّنَا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَاَنۡتَ خَيۡرُ الۡغٰفِرِيۡنَ ﴿۱۵۵﴾

*"तू हमारा पुश्त पनाह है, पस हमें बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा और यक़ीनन तमाम बख़्शने वालों में तू सबसे बेहतर बख्शने वाला है।"*

## आयत 156

وَاكۡتُبۡ لَنَا فِىۡ هٰذِهِ الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّفِى الۡاٰخِرَةِ

*"और तू हमारे लिये इस दुनिया (की ज़िन्दगी) में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी"*

हज़रत मूसा अलै. ने अपनी क़ौम के लिये जो दुआ की, यह वही अल्फ़ाज़ हैं जो सूरतुल बक़रह (आयत 201) में मुसलमानों को सिखाए गये हैं: {رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّفِى الۡاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ}

اِنَّا هُدۡنَاۤ اِلَيۡكَ‌ؕ

*"हम तेरी जनाब में रुजूअ करते हैं।"*

यानि हमसे जो ख़ता हो गई है उसका ऐतराफ़ करते हुए हम माफ़ी चाहते हैं।

قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَاۗءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۭ

*"(अल्लाह ने) फ़रमाया कि मैं अज़ाब में मुब्तला करूँगा जिसको चाहूँगा, और मेरी रहमत हर शय पर छाई हुई है।"*

यानि मेरी एक रहमत तो वह है जो हर शय के शामिल हाल है, हर शय पर मुहीत है। हर शय का वुजूद और बक़ा मेरी रहमत ही से मुमकिन है। यह पूरी कायनात और इसका तसल्सुल मेरी रहमत ही का मरहूने मिन्नत है। मेरी इस रहमते आम से मेरी तमाम मख़्लूक़ात हिस्सा पा रही हैं, लेकिन जहाँ तक मेरी रहमते ख़ास का ताल्लुक़ है जिसके लिये तुम लोग अभी सवाल कर रहे हो:

فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ١٥٦

*"तो उसे मैं लिख दूँगा उन लोगों के लिये जो तक़वा की रविश इख़्तियार करेंगे, ज़कात देते रहेंगे और जो लोग हमारी आयात पर पुख़्ता ईमान रखेंगे।"*

## आयत 157

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ

*"जो इत्तेबाअ करेंगे रसूले नबी उम्मी (ﷺ) का"*

यानि हमारे नबी उम्मी ﷺ का इत्तेबाअ करेंगे जिनको रसूल बना कर भेजा जायेगा। मुहम्मदे अरबी ﷺ ने दुनियावी ऐतबार से कोई तालीम हासिल नहीं की थी और ना आप ﷺ दुनियावी मैयार के मुताबिक़ पढ़ना-लिखना जानते थे। इस लिहाज़ से आप ﷺ भी उम्मी थे और जिन लोगों में आप ﷺ को मबऊस किया गया वो भी उम्मी थे, क्योंकि उन लोगों के पास इससे पहले कोई किताब थी ना कोई शरीयत।

الَّذِیۡ یَجِدُوۡنَہٗ مَکۡتُوۡبًا عِنۡدَہُمۡ فِی التَّوۡرٰىۃِ وَالۡاِنۡجِیۡلِ ۫

*"जिसे पायेंगे वो लिखा हुआ अपने पास तौरात और इंजील में"*

यानि आख़री नबी ﷺ के बारे में पेशनगोईयाँ, आप ﷺ के हालात, और आप ﷺ के बारे में वाज़ेह अलामात उनको तौरात और इंजील दोनों में मिलेंगी।

یَاۡمُرُہُمۡ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَیَنۡہٰہُمۡ عَنِ الۡمُنۡکَرِ وَیُحِلُّ لَہُمُ الطَّیِّبٰتِ

*"वो उन्हें नेकी का हुक्म देंगे, तमाम बुराईयों से रोकेंगे और उनके लिये तमाम पाक चीज़ें हलाल कर देंगे"*

बनी इस्राईल पर कुछ चीज़ें उनकी शरारतों की वजह से भी हराम कर दी गई थीं, जैसा कि सूरह निसा (आयत 160) में हम पढ़ आए हैं। इसलिये फ़रमाया कि नबी उम्मी ﷺ उन पर से ऐसी तमाम बंदिशें उठा देंगे और तमाम पाकीज़ा चीज़ों को उनके लिये हलाल कर देंगे।

وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۭ

*"और हराम कर देंगे उन पर नापाक चीज़ों को, और उनसे उतार देंगे उनके बोझ और तौक़ जो उन (की गर्दनों) पर पड़े होंगे।"*

यह बोझ और तौक़ वो बेजा और ख़ुद साख़्ता पाबंदियाँ और रसुमात भी हैं जो मआशरे के अंदर किसी ख़ास तबक़े के मफ़ादात या नमूद व नुमाईश की ख्वाहिश की वजह से रिवाज पाती हैं, बाद में गरीब लोगों को इन्हें निभाना पड़ता है और फिर एक वक़्त आता है जब उनकी वजह से एक आम आदमी की ज़िन्दगी इन्तहाई मुश्किल हो जाती है। इसके अलावा मआशरे की बुलंद तरीन सतह पर भी बड़ी-बड़ी क़बाहतें और लानतें जन्म लेतीं हैं जिनके बोझ तले मुख़्तलिफ़ अक़वाम बुरी तरह पिस जाती हैं। मसलन बादशाहत का जबर, जागीरदारी का इस्तेहसाली निज़ाम, सियासी व मआशी गुलामी, रंग व नस्ल की बुनियाद पर इंसानियत में तफ़रीक़ वगैरह। तो इस आयत में बशारत दी जा रही है कि नबी आखिरुज्ज़ान ﷺ आएँगे और इंसानियत को ग़लत रसुमात, ख़ुदसाख़्ता अक़ाइद और निज़ाम हाय बातिला के बोझों से निजात दिला कर अदल और क़िस्त का निज़ाम क़ायम करेंगे।

इसके बाद हुज़ूर ﷺ के साथ ताल्लुक़ की शर्तें मज़कूर हैं जिनमें से हर शर्त पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। इस मौज़ूअ को तफ़सीली तौर पर समझने के लिये मेरे किताबचे

बाउन्वान: "नबी अकरम ﷺ से हमारे ताल्लुक़ की बुनियादें" का मुताअला मुफ़ीद रहेगा।

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ *"तो जो लोग आप ﷺ पर ईमान लायेंगे"*

यह पहली और बुनियादी शर्त है। आप ﷺ पर ईमान लाने के दो बुनियादी तक़ाज़े हैं, पहला तक़ाजा है आप ﷺ की इताअत और दूसरा तक़ाजा है आप ﷺ की मुहब्बत। इन दोनों तक़ाज़ों के बारे में दो अहादीस मुलाहिज़ा कीजिए। पहली हदीस के रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल्आस रज़िअल्लाहु अन्हुमा हैं। वह कहते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: ((لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى يَكُوْنَ هَوَاهُ تَبَعًا لِمَا جِئْتُ بِهٖ))(10) "तुम में से कोई शख़्स मोमिन नहीं है जब तक कि उसकी ख़्वाहिशे नफ़्स ताबेअ ना हो जाये उस चीज़ के जो मैं (ﷺ) लेकर आया हूँ।" यानि जो अहकाम और शरीअत हुज़ूर ﷺ लेकर तशरीफ़ लाये हैं, अगर कोई शख़्स ईमान रखता है कि यह अल्लाह की तरफ़ से है तो इस सब कुछ को तस्लीम करके इस पर अमल करना होगा। दूसरी हदीस मुत्तफ़क़ अलैह है और उसके रावी हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. हैं। वह रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ((لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ))(11) "तुम में से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस महबूबतर ना हो जाऊँ उसके बाप, बेटे और तमाम इंसानों से। चुनाँचे यह दोनों तक़ाज़े पूरे होंगे तो आप ﷺ पर ईमान का दावा हक़ीकत बनेगा। एक ग़ायत

दर्जा में आप ﷺ का इत्तेबाअ और इताअत, दूसरे ग़ायत दर्जे में आप ﷺ की मुहब्बत।

وَعَزَّرُوۡهُ وَنَصَرُوۡهُ

*"और आप (ﷺ) की ताज़ीम करेंगे और आपकी मदद करेंगे"*

जब मज़कूरा बाला दो तक़ाज़े पूरे होंगे तो उनके लाज़िमी नतीजे के तौर पर दिलों में रसूल अल्लाह ﷺ की ताज़ीम पैदा होगी, आप ﷺ की अज़मत दिलों पर राज करेगी। जब और जहाँ आप ﷺ का नाम मुबारक सुनाई देगा बेसाख़्ता ज़बान पर दरूदो सलाम आ जायेगा। आप ﷺ का फ़रमान सामने आने पर मन्तिक़ व दलीलों का सहारा छोड़ कर सरे तस्लीम ख़म कर दिया जायेगा। हुज़ूर ﷺ के अदब व अहतराम के सिलसिले में यह उसूल ज़हन नशीन कर लीजिए कि अग़र कहीं किसी मसले पर बहस हो रही हो, दोनों तरफ़ दलाइल को दलाइल काट रहे हों और ऐसे में अगर कोई कह दे कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इस ज़िमन में यूँ फ़रमाया है तो हदीस के सुनते ही फ़ौरन ज़बान बंद हो जानी चाहिये। एक मुसलमान को ज़ेब नहीं देता कि वह आप ﷺ का फ़रमान सुन लेने के बाद भी किसी मामले में रायज़नी करे। बाद में तहक़ीक़ की जा सकती है कि आप ﷺ से मन्सूब करके जो फ़रमान सुनाया गया है दरहक़ीक़त वह हदीस है भी या नहीं और अग़र हदीस है तो रिवायत है व दरायत के ऐतबार से उसका क्या मक़ाम है। हदीस सही है या ज़ईफ़! यह सब बाद की बाते हैं, लेकिन हदीस सुन कर वक़्ती तौर पर चुप हो जाना और सरे तस्लीम ख़म कर देना आप ﷺ के अदब का तक़ाज़ा है।

"وَنَصَرُوْهُ" के ज़िमन में यह नुक्ता अहम है कि नबी अकरम ﷺ को किस काम में मदद दरकार है? क्या आप ﷺ को अपने किसी ज़ाती काम के लिये मदद चाहिये? आप ﷺ ने कोई ज़ाती सल्तनत व हुकूमत तो क़ायम नहीं की, जिसके क़याम व इस्तहकाम के लिये आप ﷺ को मदद की ज़रुरत होती। आप ﷺ की कोई ज़ाती जागीर या जायदाद भी नहीं थी, जिसको सम्भालने के लिये आप ﷺ को मदद दरकार होती। दरअसल आप ﷺ को अपने उस मिशन की तकमील के लिये मदद चाहिये थी जिसके लिये आप ﷺ भेजे गये थे और वह था ग़लबा-ए-हक़ और अक़ामते दीन: (सूरतुस्सफ़ 9) { هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ } दीने हक़ के ग़लबे के लिये की जाने वाली जाँ कसल जद्दो-जहद में आप ﷺ को मददगारों की ज़रुरत थी और उसके लिये आप ﷺ की तरफ़ से "مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ" की सिला-ए-आम थी, कि मुझे अल्लाह का दीन ग़ालिब करना है, यह मेरा फ़र्ज़े मन्सबी है, कौन है जो इस काम में मेरा हाथ बटाये और मेरा मददगार बने? चुनाँचे आप ﷺ ने अपनी मेहनत, सहाबा किराम रज़ि. की क़ुर्बानियों और अल्लाह की नुसरत से जज़ीरा नुमाए अरब में दीन को गालिब करके अपने मिशन की तकमील कर दी। आप ﷺ के बाद कुछ अरसा दीन ग़ालिब रहा, फिर मग़लूब हो गया और आज तक मग़लूब है। आज दुनिया में कहीं भी दीन ग़ालिब नहीं है। लिहाज़ा अब दीन को सारी दुनिया में ग़ालिब करना उम्मत की ज़िम्मेदारी है। इस ज़िम्मेदारी के हवाले से आप ﷺ का मिशन आज भी ज़िन्दा है, यह मैदान अब भी ख़ुला है।

आज भी हुज़ूर ﷺ को हमारी मदद की ज़रूरत है। {يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ} (अस्सफ़ 14) का क़ुरानी हुक्म आज भी हमें पुकार रहा है।

| | |
|---|---|
| وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ | *"और पैरवी करेंगे उस नूर की जो आप ﷺ के साथ नाज़िल किया जायेगा"* |

यह गोया उस कठिन मिशन की तकमील का रास्ता बताया गया है। दीन के ग़लबे की तकमील क़ुरान के ज़रिये से होगी, यानि तज़कीर बिल् क़ुरान, तबशीर बिल् क़ुरान, तब्लीग़ बिल् क़ुरान, इन्ज़ार बिल् क़ुरान, तालीम बिल् क़ुरान वग़ैरह। जैसे मुहम्मदे अरबी ﷺ ने क़ुरान के ज़रिये से लोगों का तज़किया किया: { يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ} (अल् जुमा 2) इस तरह आज भी ज़रुरत है कि क़ुरान के ज़रिये से लोगों को तरग़ीब दी जाये, उनके दिलों की सफ़ाई की जाये, उन्हें जहालत के अंधेरों से हिदायत के उजाले की तरफ़ लाया जाये, तारीक दिलों के अंदर ईमान की शमाएँ रोशन की जाये। फिर उन लोगों को एक मिशन पर इकठ्ठा किया जाये, उन्हें मुनज़्ज़म किया जाये, उनमें मंज़िल की तड़प पैदा की जाये और फिर बातिल से टकरा कर उसको पाश-पाश कर दिया जाये। यह है आप ﷺ की मदद करने का सही तरीक़ा, और यह है उस नूर (क़ुरान) की पैरवी करने का मारूफ़ रास्ता। और जो लोग इस रास्ते पर चलेंगे उनके बारे में फ़रमाया:

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ؏ ﴿۱۵۷﴾

*"वही लोग होंगे फ़लाह पाने वाले।"*

# आयात 158 से 162 तक

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا
الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ
الَّذِىْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ
وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَىْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا
اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا
عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ
وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا
ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَاِذْ

قِيۡلَ لَهُمُ اسۡكُنُوۡا هٰذِهِ الۡقَرۡيَةَ وَكُلُوۡا مِنۡهَا حَيۡثُ
شِئۡتُمۡ وَقُوۡلُوۡا حِطَّةٌ وَّادۡخُلُوا الۡبَابَ سُجَّدًا نَّغۡفِرۡ
لَكُمۡ خَطِيۡٓـٰٔتِكُمۡ‌ؕ سَنَزِيۡدُ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۶۱﴾ فَبَدَّلَ
الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡهُمۡ قَوۡلًا غَيۡرَ الَّذِىۡ قِيۡلَ لَهُمۡ
فَاَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ رِجۡزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوۡا
يَظۡلِمُوۡنَ ﴿۱۶۲﴾

अब अगली आयत का मुताअला करने से पहले दो बातें अच्छी तरह समझ लीजिए। एक तो गुज़िश्ता आयात के मज़मून का इस आयत के साथ रब्त का मामला है। इस रब्त को यूँ समझना चाहिये कि हज़रत मूसा अलै. के ज़िक्र के बाद अन्बाअ अर्रुसुल के इस सिलसिले को नबी आखिरुज्ज़मान ﷺ की बेअसत तक लाने में बहुत तफ़सील दरकार थी। उस तफ़सील को छोड़ कर अब बराहे रास्त आप ﷺ को मुख़ातिब करके फ़रमाया जा रहा है कि आप ﷺ लोगों को बता दें कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तमाम बनी नौए इंसान की तरफ़। चुनाँचे पिछली आयात में हज़रत मूसा अलै. के ज़िक्र और तौरात व इंजील में नबी आखिरुज्ज़मान के बारे में बशारतों के हवाले से इस आयत का सयाक़ व सबाक़ गोया यूँ होगा कि ऐ मुहम्मद ﷺ अब आप अलल ऐलान कह दीजिए कि मैं ही वह रसूल हूँ जिसका ज़िक्र था तौरात और इंजील में, मुझ पर ही ईमान लाने की ताकीद हुई थी मूसा अलै. के पैरोकारों को, मेरी ही दावत पर लब्बैक

कहने वालों के लिये वादा है अल्लाह की खुसूसी रहमत का, और मेरी नुसरत और इताअत का हक़ अदा करने वालों को ज़मानत मिलेगी अबदी व उख़रवी फ़लाह की!

दूसरी अहम बात यहाँ यह नोट करने की है कि इस सूरत में हमने अब तक जितने रसूलों का तज़किरा पढ़ा है, उनका ख़िताब "या क़ौमी" (ऐ मेरी क़ौम के लोगों!) के अल्फ़ाज़ से शुरू होता था, मगर मुहम्मदे अरबी ﷺ की यह इम्तियाज़ी शान है कि आप ﷺ किसी मख़्सूस क़ौम की तरफ़ मबऊस नहीं हुए बल्कि आप ﷺ की रिसालत आफ़ाक़ी और आलमी सतह की रिसालत है और आप ﷺ पूरी बनी नौए इंसानी की तरफ़ रसूल बना कर भेजा गये हैं। सूरतुल बक़रह की आयत 21 में "इबादते रब" का हुक्म जिस आफ़ाक़ी अंदाज़ में दिया गया है इसमें भी इसी हक़ीक़त की झलक नज़र आती है: {يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ} इस पसमंज़र को समझ लेने के बाद अब हम इस आयत का मुताअला करते हैं:

## आयत 158

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا

*"(ऐ नबी ﷺ!) कह दीजिए ऐ लोगों! मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम सबकी तरफ़"*

यह बात मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ और मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में क़ुरान हकीम के पाँच मक़ामात पर दोहराई गई है कि नबी अकरम ﷺ की बेअसत पूरी नौए इंसानी के लिये है। उनमें सूरह सबा की आयत नम्बर 28 सबसे नुमाया है: {وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَاۗفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا} "हमने नहीं भेजा है (ऐ मुहम्मद ﷺ) आपको मगर पूरी नौए इंसानी के लिये बशीर और नज़ीर बना कर।"

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠

*"(उस अल्लाह का) जिसके लिये आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, वही ज़िन्दा रखता है और वही मौत वारिद करता है।"*

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ١٥٨

*"तो ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर जो नबी-ए-उम्मी है, जो ईमान रखता है अल्लाह पर और उसके सब कलामों पर, और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ।"*

यह गोया ऐलाने आम है मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ से कि मेरी बेअसत उस वादे के मुताबिक़ हुई है जो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलै. से किया था, हज़रत मूसा अलै. के ज़िक्र के बाद की यह आयात गोया उस ख़िताब

की तम्हीद (प्रस्तावना) है जो यहूदे मदीना से होने वाला था। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि यह सूरत हिजरत से क़ब्ल नाज़िल हुई थी और इसके नुज़ूल के फ़ौरन बाद हिजरत का हुक्म आने को था, जिसके बाद दावत के सिलसिले में हुज़ूर ﷺ का मदीने के यहूदी क़बाइल से बराहे रास्त साबक़ा पेश आना वाला था। मक्की क़ुरान में अभी तक यहूद से बराहे रास्त ख़िताब नहीं हुआ था, अभी तक या तो अहले मक्का मुख़ातिब थे या हुज़ूर ﷺ या फिर आप ﷺ की वसातत से अहले ईमान। लेकिन अब अंदाज़े बयान में जो तब्दीली आ रही है उसका असल महल हिजरत के बाद का माहौल था।

## आयत 159

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

*"और मूसा अलै. की क़ौम में एक जमाअत ऐसे लोगों की भी थी जो हक़ की हिदायत देते थे और हक़ ही के साथ अदल व इंसाफ़ भी करते थे।"*

अग़रचे हज़रत मूसा अलै. की क़ौम की अक्सरियत नाफ़रमानों पर मुश्तमिल थी मगर आप अलै. के पैरोकारों में हक़परस्त और इंसाफ पसंद अफ़राद भी मौजूद थे जो लोगों को हक़ बात की तल्क़ीन करते थे और उनके फ़ैसले भी अदल व इंसाफ पर मब्नी होते थे।

## आयत 160

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ
عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ

*"और हमने उनको अलैहदा-अलैहदा कर दिया बारह क़बीलों की जमाअतों में।"*

उनकी नस्ल हज़रत याक़ूब अलै. के बारह बेटों से चली थी। अल्लाह तआला ने इसी लिहाज़ से उनमें एक मज़बूत क़बाइली निज़ाम को क़ायम रखा। हर बेटे की औलाद से एक क़बीला वजूद में आया और यह अलग-अलग बारह जमाअतें बन गयीं।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ
اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ

*"और हमने वही की मूसा अलै. की तरफ़, जब पानी तलब किया आप अलै. से आपकी क़ौम ने, कि अपनी लाठी से चट्टान पर ज़र्ब (चोट) लगाइये।"*

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ

*"पस उसमें से बारह चश्में फूट पड़े, तो हर क़बीले ने जान लिया अपने-अपने घाट को।"*

मशरब इस्मे ज़र्फ़ है, यानि पानी पीने की जगह। हर क़बीले ने अपना घाट मुअय्यन कर लिया ताकि पानी की तक़सीम में किसी क़िस्म का कोई तनाज़ाअ (विवाद) जन्म ना ले।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ

*"और हमने उनके ऊपर बादल का सायबान बनाए रखा, और उतारा हमनें उन पर मन व सलवा।"*

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ وَمَا

*"(और उनसे कहा कि) खाओ उन पाकीज़ा चीज़ों में से जो हमने तुम्हें रिज़्क़ में दी हैं।"*

ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ١٦٠

*"और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि वो ख़ुद अपनी ही जानों पर ज़ुल्म करते रहे।"*

वो अल्लाह का कुछ नुक़सान कर भी कैसे सकते थे। अल्लाह का क्या बिगाड़ सकते थे? एक हदीसे क़ुदसी का मफ़हूम इस तरह से है:

"ऐ मेरे बंदों, अग़र तुम्हारे अव्वलीन भी और आखरीन भी, इंसान भी और जिन्न भी, सबके सब इतने मुत्तक़ी हो जायें जितना कि तुम में कोई बड़े से बड़ा मुत्तक़ी हो सकता है, तब भी मेरी सल्तनत और मेरे कारखाना-ए-क़ुदरत में कोई ईज़ाफ़ा नहीं होगा--- और अग़र तुम्हारे अव्वलीन व आखरीन और इन्स व जिन्न सब के सब ऐसे हो जायें जितना कि तुम में कोई ज़्यादा से ज़्यादा सरकश व नाफ़रमान हो

सकता है, तब भी मेरी सल्तनत में कोई कमी नहीं आयेगी।”(12)

## आयत 161

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ

*“और याद करो जब उनसे कहा गया था कि आबाद हो जाओ उस बस्ती में और उसमें से खाओ (पियो) जहाँ से भी चाहो”*

उस शहर का नाम “अरीहा” था, जो आज भी जेरिको (Jericho) के नाम से मौजूद है। यह फ़लस्तीन का पहला शहर था जो बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अलै. के ख़लीफ़ा हज़रत यूशा बिन नून की सरकरदगी में बाक़ायदा जंग करके फ़तह किया था।

وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا

*“और अस्तग़फ़ार करते रहो, और शहर के दरवाज़े में सिर झुका कर दाख़िल होना”*

उन्हें हुक्म दिया गया था कि जब शहर में दाख़िल हों तो “हित्ततुन” का विर्द करते हुए दाख़िल हों। इस लफ़्ज़ के मायने अस्तग़फ़ार करने के हैं। यानि अल्लाह तआला से अपनी लगज़िशों और कोताहियों की माफ़ी माँगते हुए शहर में दाख़िल होने का हुक्म दिया गया था। इस ज़िमन में दूसरा हुक्म यह था कि जब तुम फ़ातेह की हैसियत से शहर के दरवाज़े से दाख़िल हो तो उस वक़्त अल्लाह तआला के हुज़ूर आजिज़ी इख़्तियार करते हुए सजदा-ए-शुक्र अदा करना।

कहीं ऐसा ना हो कि उस वक़्त तकब्बुर से तुम्हारी गर्दनें अकड़ी हुई हों।

نَّغۡفِرۡ لَكُمۡ خَطِيٓـَٔـٰتِكُمۡ‌ؕ سَنَزِيۡدُ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۶۱﴾

*"हम तुम्हारी ख़ताएँ बख़्श देंगे, और हम मोहसिनीन को और भी ज़्यादा अता करेंगे।"*

इस तरह से हम ना सिर्फ़ यह कि तुम्हारी ख़ताएँ, लगज़िशें और फ़रगोज़ाशतें माफ़ कर देंगे, बल्कि तुम में से मुख़्लिस और नेक लोगों को मज़ीद नवाज़ेंगे, उनके दर्जात बुलंद करेंगे और उनको ऊँचे-ऊँचे मर्तबे अता करेंगे।

## आयत 162

فَبَدَّلَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡهُمۡ قَوۡلًا غَيۡرَ الَّذِىۡ قِيۡلَ لَهُمۡ

*"तो बदल दी उन लोगों ने जो उनमें से ज़ालिम थे इस बात के बजाय जो उनसे कही गई थी एक (दूसरी) बात"*

यानि उनको हित्ततुन, हित्ततुन का विर्द करते हुए शहर में दाख़िल होने का हुक्म दिया था, जबकि उन्होंने इसके बजाय हिन्ततुन, हिन्ततुन कहना शुरू कर दिया, जिसका मतलब था कि हमें गेंहू चाहिये, हमें गेंहू चाहिये!

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝١٦٢

*"तो हमने भेज दिया उन पर एक अज़ाब आसमान से बसबब उस ज़ुल्म के जो वो अपने ऊपर करते थे।"*

जिन लोगों ने वह लफ़्ज़ बदलने की हरकत की थी उनमें ताऊन की बीमारी फूट पड़ी और सबके सब हलाक हो गये।

# आयात 163 से 171 तक

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ
يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ
سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ
كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝١٦٣ وَاِذْ قَالَتْ
اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ
مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝١٦٤ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا
الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْۗءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
بِعَذَابٍۢ بَـِٔيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝١٦٥ فَلَمَّا عَتَوْا
عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ۝١٦٦

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ
الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى
الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫
وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ
﴿۱۶۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ
يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ
وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ
عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا
الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ
بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ
وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ ع

## आयत 163

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ

*"और इनसे ज़रा पूछिये उस बस्ती के बारे में जो साहिले समुन्द्र पर थी।"*

अब यह असहाबे सब्त का वाक़िया आ रहा है। अक्सर मुफ़स्सरीन का ख़्याल है कि यह बस्ती उस मक़ाम पर वाक़ेअ थी जहाँ आज-कल "ऐलात" की बंदरगाह है। 1966 ई० की अरब-इस्राईल जंग में मिस्र ने इसी बंदरगाह का घेराव किया था, जिसके ख़िलाफ़ इस्राईल ने शदीद रद्दे अमल का इज़हार करते हुए मिस्र, शाम और उरदन पर हमला करके उनके वसीअ इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। मिस्र से जज़ीरा नुमाए सीना, शाम से जौलान की पहाड़ियाँ और उरदन से पूरा मग़रिबी किनारा, जो फ़लस्तीन के ज़रख़ेज़ तरीन इलाक़ा है, हथिया लिया था। बहरहाल ऐलात की इस बंदरगाह के इलाक़े में मछियारों की वह बस्ती आबाद थी जहाँ यह वाक़िया पेश आया।

اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ

*"जबकि वो सब्त के क़ानून में हद से तजावुज़ करने लगे"*

اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا

*"जबकि आती थीं उनकी मछलियाँ उनके पास हफ़्ते के दिन छलाँगे लगाती हुई"*

شُرَّع के मायने हैं सीधे उठाए हुए नेज़े। यहाँ यह लफ़्ज़ मछलियों के लिये आया है तो इससे मुँह उठाए हुए मछलियाँ मुराद हैं। किसी जगह मछलियों की बहुतात हो और वो बेख़ौफ़ होकर बहुत ज़्यादा तादाद में पानी की सतह पर उभरती हैं, छलाँगे लगाती हैं। इस तरह के मंज़र को यहाँ شُرَّعًا से तशबीह दी गई है। यानि की मछलियों की इस बेख़ौफ़ उछल-कूद का मंज़र ऐसे था जैसे कि नेज़े चल रहे हों। दरअसल तमाम हैवानात को अल्लाह तआला ने छठी हिस्स से नवाज़ रखा है। उन मछलियों को भी अंदाज़ा हो गया था कि हफ़्ते के दिन ख़ास तौर पर हमें कोई हाथ नहीं लगाता। इसलिये उस दिन वो बेखौफ़ होकर हुजूम की सूरत में अठखेलियाँ करती थीं, जबकि वो लोग जिनका पेशा ही मछलियाँ पकड़ना था वो उन मछलियों को बेबसी से देखते थे, उनके हाथ बँधे हुए थे, क्योंकि यहूद की शरीअत के मुताबिक़ हफ़्ते के दिन उनके लिये कारोबारे दुनियवी की मुमानियत थी।

وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ

*“और जिस दिन सब्त नहीं होता था वो उनके क़रीब नहीं आती थीं”*

हफ़्ते के बाक़ी छ: दिन मछलियाँ साहिल से दूर गहरे पानी में रहती थीं, जहाँ से वो उन्हें पकड़ नहीं सकती थे, क्योंकि उस ज़माने में अभी ऐसे जहाज़ और आलात वग़ैरह ईजाद नहीं हुए थे कि वो लोग गहरे पानी में जाकर मछली का शिकार कर सकते।

كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝١٦٣

*"इस तरह हम उन्हें आज़माते थे बवजह इसके कि वो नाफ़रमानी करते थे।"*

आए दिन की नाफ़रमानियों की वजह से उनको इस आज़माईश में डाला गया कि शरीअत के हुक्म पर क़ायम रहते हुए फ़ाक़े बर्दाश्त करते हैं या फिर नाफ़रमानी करते हुए शरीअत के साथ तमस्खर की सूरत निकाल लेते हैं। चुनाँचे उन्होंने दूसरा रास्ता इख़्तियार किया और उनमें से कुछ लोगों ने इस क़ानून में चोर दरवाज़ा निकाल लिया। वो हफ़्ते के रोज़ साहिल पर जाकर गड्ढ़े खोदते और नालियों के ज़रिये से उन्हें समुन्द्र से मिला देते। अब वो समुन्द्र का पानी उन गड्ढों में लेकर आते तो पानी के साथ मछलियाँ गड्ढों में आ जातीं और फिर वो उनकी वापसी का रास्ता बंद कर देते। अगले रोज़ इतवार को जाकर उन मछलियों को आसानी से पकड़ लेते और कहते कि हम हफ़्ते के रोज़ तो मछलियों को हाथ नहीं लगाते। इस तरह शरीअत के हुक्म के साथ उन्होंने यह मज़ाक किया कि इस हुक्म की असल रूह को मस्ख़ कर दिया। हुक्म की असल रूह तो यह थी कि छः दिन दुनिया के काम करो और सातवाँ दिन अल्लाह की इबादत के लिये वक़्फ़ रखो, जबकि उन्होंने यह दिन भी गड्ढ़े खोदने, पानी खोलने और बंद करने में सर्फ़ करना शुरू कर दिया।

अब उस आबादी के लोग इस मामले में तीन गिरोहों में तक़सीम हो गये। एक गिरोह तो बराहे रास्त इस घिनौने कारोबार में मुलव्विस था। जबकि दूसरे गिरोह में वो लोग शामिल थे जो इस गुनाह में मुलव्विस तो नहीं थे मग़र

गुनाह करने वालों को मना भी नहीं करते थे, बल्कि इस मामले में ये लोग ख़ामोश और ग़ैर जाँबदार रहे। तीसरा गिरोह उन लोगों पर मुश्तमिल था जो गुनाह से बचे भी रहे और पहले गिरोह के लोगों को उनकी हरकतों से मना करके बाक़ायदा नही अनिल मुन्कर का फ़रीज़ा भी अदा करते रहे। अब अगली आयत में दूसरे और तीसरे गिरोह के अफ़राद के दरमियान मकालमा नक़ल हुआ है। ग़ैरजाँबदार रहने वाले लोग नही अनिल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करने वाले लोगों से कहते थे कि यह अल्लाह के नाफ़रमान लोग तो तबाही से दो-चार होने वाले हैं, इन्हें समझाने और नसीहत करने का क्या फ़ायदा?

## आयत 164

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۨ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا

*"और जब कहा एक गिरोह ने उनमें से कि क्यों नसीहत कर रहे हो उन लोगों को जिन्हें या तो अल्लाह हलाक करने वाला है या फिर उन्हें अज़ाब देने वाला है बहुत सख़्त अज़ाब।"*

दूसरे गिरोह के लोग तीसरे गिरोह के लोगों से कहते कि तुम ख्वाह मख्वाह अपने आपको इन मुज़रिमों के लिये हल्कान कर रहे हो। अब यह लोग मानने वाले नहीं। अल्लाह का अज़ाब और तबाही इनका मुक़द्दर बन चुकी है।

قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ

*"उन्होंने कहा कि तुम्हारे रब के यहाँ माज़रत पेश करने के लिये"*

तीसरे गिरोह के लोग जवाब देते कि इस तरह हम अल्लाह के सामने उज़्र पेश कर सकेंगे कि ऐ परवरदिग़ार! हम आख़री वक़्त तक नाफ़रमान लोगों को उनकी ग़लत हरकतों से बाज़ रहने की हिदायत करते हुए, नही अनिल मुन्कर का फ़र्ज़ अदा करते रहे। हम ना सिर्फ़ ख़ुद इस गुनाह से बचे रहे बल्कि उन ज़ालिमों को ख़बरदार भी करते रहे कि वो अल्लाह के क़ानून के सिलसिले में हद से तज़ावुज ना करें।

وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾

*"और शायद कि वो तक़वा इख़्तियार कर ही लें।"*

फिर इस बात का इम्कान भी बहरहाल मौजूद है कि हमारी नसीहत उन पर असर करे और इस तरह समझाने-बुझाने से किसी ना किसी के दिल के अन्दर ख़ुदा ख़ौफ़ी का जज़्बा पैदा हो ही जाये। जैसा कि हुज़ूर अकरम ﷺ ने हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु से ख़िताब करते हुए फ़रमाया था: ((لَاَنْ يَهْدِيَ اللهُ بِكَ رَجُلًا وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ اَنْ يَكُوْنَ لَكَ حُمْرُ النَّعَمِ))(13) "(ऐ अली रज़ि.) अगर अल्लाह तुम्हारे ज़रिये से एक शख़्स को भी हिदायत दे दे तो यह दौलत तुम्हारे लिये सुर्ख ऊँटों से बढ़ कर है।"

## आयत 165

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ

*"फिर जब उन्होंने नज़र अंदाज़ कर दिया उस नसीहत को जो उन्हें की जा रही थी, तो हमने बचा लिया उनको जो बुराई से रोकते थे"*

وَاَخَذۡنَا الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا بِعَذَابٍۢ بَـئِيۡسٍۢ بِمَا كَانُوۡا يَفۡسُقُوۡنَ ۝١٦٥

*“और पकड़ लिया हमने उनको जो ज़ुल्म के मुरतकिब हुए थे बहुत ही बुरे अज़ाब में, उनकी नाफ़रमानी के सबब।”*

## आयत 166

فَلَمَّا عَتَوۡا عَنۡ مَّا نُهُوۡا عَنۡهُ قُلۡنَا لَهُمۡ كُوۡنُوۡا قِرَدَةً خٰسِـئِيۡنَ ۝١٦٦

*“तो जब वो बहुत बढ़ गये उसमें जिससे उनको रोका गया था, तो हमने उनसे कह दिया कि जाओ ज़लील बंदर बन जाओ!”*

आख़िरकार उन पर अज़ाब इस सूरत में आया कि उनकी इंसानी शक्लें मस्ख़ करके उन्हें बंदर बना दिया गया और फिर उन्हें हलाक कर दिया गया। यह उस वाक़िये की तफ़सील है जिसका इज्माली ज़िक्र सूरतुल बक़रह और सूरतुल मायदा में भी आ चुका है।

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि यह अज़ाब उन गिरोहों में से सिर्फ़ उस गिरोह पर आया था जो गुनाह में बराहे रास्त मुलव्विस था। उनकी दलील यह है कि नही अनिल मुन्कर करने वाले लोगों के बारे में वाज़ेह तौर पर बता दिया गया: {اَنۡجَيۡنَا الَّذِيۡنَ يَنۡهَوۡنَ عَنِ السُّوۡٓءِ} कि हमने उनको बचा लिया जो बदी से रोक रहे थे और जो गुनाहगार थे उनके बारे में भी सराहत से बता दिया गया: { وَاَخَذۡنَا الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا بِعَذَابٍۢ

بَئِيْسٍ } कि हमने पकड़ लिया उन लोगों को जो गुनाह में मुलव्विस थे एक बहुत ही बुरे अज़ाब में। जबकि तीसरे गिरोह के बारे में सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार किया गया है। इस तरह उन लोगों ने यह साबित करने की कोशिश की है कि अगर कोई शख़्स बराहेरास्त किसी गुनाह का इरतकाब करने से बचा रहता है तो फ़रीज़ा नही अनिल मुन्कर में कोताही होने की सूरत में भी वह दुनिया में उस गुनाह की पादाश में आने वाले अज़ाब से बच जायेगा। यह नज़रिया दरअसल बहुत बड़ी गलतफ़हमी पर मब्नी है और इसके पीछे वह इंसानी नफ़्सियात कारफ़रमा है जिसके तहत इन्सान ज़िम्मेदारी से फ़रार चाहता है और फिर उसके लिये दलील ढूँढता और बहाने तराश्ता है। इसी तरह की बात का तज़किरा सूरतुल मायदा की आयत 105 की तशरीह के ज़िमन में भी हो चुका है। इस आयत के हवाले से हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ रज़ि. को खुसूसी ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाना पड़ा था कि लोगों! तुम { عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۭ } का बिल्कुल ग़लत मफ़हूम समझ रहे हो। इसका यह हरग़िज़ मतलब नहीं कि दावत व तब्लीग़, अम्र बिल् मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर तुम्हारी ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसका तो यह मतलब है कि तुम इस सिलसिले में अपनी पूरी कोशिश करो, अपना फ़र्ज़ अदा करो, लेकिन इसके बावजूद भी अगर लोग कुफ़्र या गुनाह पर अड़े रहें तो फिर उनका बवाल तुम पर नहीं होगा। यहाँ इस नुक्ते को अच्छी तरह समझ लीजिए कि नही अनिल मुन्कर नसे क़ुरानी के मुताबिक़ फ़र्ज़ की हैसियत रखता है। जिस माहौल में अल्लाह तआला के किसी वाज़ेह हुक्म की ख़ुल्म-खुल्ला

खिलाफ़ वर्ज़ी हो रही हो तो उन हालात में गुनाह का इरतकाब करने वालों को ना रोकना, नही अनिल मुन्कर का फ़र्ज़ अदा ना करना, ब-ज़ाते खुद एक जुर्म है। लिहाजा इस वाक़िये में "الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا" के ज़ुमरे में वो लोग भी शामिल हैं जो अग़रचे बराहेरास्त तो गुनाह में मुलव्विस नहीं थे, लेकिन मुज़रिमों को गुनाह करते हुए देख कर ख़मोश थे। इस तरह ये लोग अल्लाह की नाफ़रमानी से लोगों को ना रोकने के जुर्म के मुरतकिब हो रहे थे। इस ज़िमन में नस्से क़तई के तौर पर एक हदीस क़ुदसी भी मौजूद है और एक बहुत वाज़ेह क़ुरानी हुक्म भी। पहले हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाएँ, यह हदीस मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहिमुल्लाह ने अपने मुरत्तब करदा ख़ुत्बात-ए-जुमा में शामिल की है। हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

(( اَوْحَی اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ اِلٰی جِبْرِیْلَ عَلَیْہِ السَّلَامُ اَنِ اقْلِبْ مَدِیْنَۃَ کَذَا وَ کَذَا بِاَھْلِھَا ۔ قَالَ : یَارَبِّ اِنَّ فِیْھِمْ عَبْدَكَ فُلَانًا لَمْ یَعْصِكَ طَرْفَۃَ عَیْنٍ ) قَالَ : ( فَقَالَ : اِقْلِبْھَا عَلَیْہِ وَعَلَیْھِمْ ، فَاِنَّ وَجْھَہٗ لَمْ یَتَمَعَّرْ فِیَّ سَاعَۃً قَطُّ )) (14)

*"अल्लाह तआला ने जिब्रील अलै. को वही की कि फलाँ-फलाँ शहर को उसके वासियों पर उलट दो। जिब्रील अलै. ने अर्ज़ किया कि परवरदिगार, उसमें तो तेरा फलाँ बंदा भी है जिसने कभी पलक झपकने की देर भी तेरी माअसियत में नहीं गुज़ारी।" हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: "(इस पर) अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उल्टो इस बस्ती को पहले उस पर और*

*फिर दूसरों पर, इसलिये कि उसके चेहरे का रंग कभी एक लम्हे के लिये भी मेरी ग़ैरत की वजह से मुतगय्युर नहीं हुआ।"*

यानि उसके सामने मेरे अहकाम पामाल होते रहे, शरीअत की धज्जियाँ बिखरती रहीं और यह अपनी ज़ाती परहेज़गारी को संभाल कर ज़िक्र-अज़कार, नवाफ़िल और मुराक़बों में मशरूफ़ रहा। यह दूसरों से बढ़ कर मुज़रिम है। अब इस सिलसिले में निस्से क़ुरानी के तौर पर सूरतुल अन्फ़ाल की आयत नम्बर 25 का यह वाज़ेह हुक्म भी मुलाहिज़ा कर लीजिए: {وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً} "और डरो उस फ़ितने (अज़ाब) से जो खुसूसियत के साथ उन्हीं लोगों पर वाक़ेअ नहीं होगा जो तुम में से गुनहगार हैं।" यानि जब किसी क़ौम में बहैसियत-ए-मजमुई मुन्करात फैल जायें और इस वजह से उनके लिये इस दुनिया में किसी इज्तमाई सज़ा का फ़ैसला हो जाये तो फिर ऐसी सज़ा की लपेट में सिर्फ़ गुनहगार लोग ही नहीं आयेंगे। इस लिहाज़ से यह बहुत तशवीश नाक बात है। मगर आयत ज़ेरे मुताअला में {اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ} के अल्फ़ाज़ में उम्मीद दिलाई गई है कि जो लोग अपनी इस्तताअत के मुताबिक़, आख़री वक़्त तक अम्र बिल् मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करते रहेंगे अल्लाह तआला अपनी रहमत से उन्हें बचा लेगा।

## आयत 167

وَاِذۡ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبۡعَثَنَّ عَلَيۡهِمۡ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ مَنۡ يَّسُوۡمُهُمۡ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ‌ؕ

*"और (याद करो) जब आप ﷺ के रब ने यह ऐलान कर दिया कि वो लाज़िमन मुसल्लत करता रहेगा उन पर क़यामत के दिन तक ऐसे लोगों को जो उन्हें बदतरीन अज़ाब में मुब्तला करते रहेंगे।"*

اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيۡعُ الۡعِقَابِ‌ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۶۷﴾

*"यक़ीनन आपका रब सज़ा देने में बहुत जल्दी करता है और यक़ीनन वह ग़फ़ूर भी है और रहीम भी।"*

अल्लाह तआला की एक शान तो यह है कि वह عَزِيۡزٌ ذُو انۡتِقَام और سَرِيۡعُ الۡعِقَاب है और उसकी दूसरी शान यह है कि वह غَفُوۡرٌ رَّحِيۡم है। अब इसका दारोमदार इंसानों के तर्ज़े अमल पर है कि वह अपने आपको उसकी किस शान का मुस्तहिक़ बनाते हैं। इस आयत में यहूद के बारे अल्लाह तआला के जिस क़ानून और फ़ैसले का ज़िक्र हो रहा है वह बनी इस्राईल की पूरी तारीख़ की सूरत में हमारी निगाहों के सामने है।

## आयत 168

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا

*"और हमने उन्हें ज़मीन के अंदर मुन्तशिर कर दिया फ़िरक़ो की सूरत में।"*

बनी इस्राईल का दौरे इन्तशार (Diaspora) 70 ईसवी में शुरू हुआ, जब रोमन जनरल टाइटस ने उनके मअबूदे सानी (Second Temple) को शहीद किया (जो हज़रत ऊज़ैर अलै. के ज़माने में दोबारा तामीर हुआ था) टाइटस के हुक्म से येरूशलम में एक लाख तैंतीस हज़ार यहूदियों को एक दिन में क़त्ल किया गया और बच जाने वालों को फ़लस्तीन से निकाल बाहर किया गया। चुनाँचे यहाँ से मुल्क बदर होने के बाद यह लोग मिस्र, हिन्दुस्तान, रूस और यूरोप के मुख़्तलिफ़ इलाक़ो में जा बसे। फिर जब अमेरिका दरयाफ्त हुआ तो बहुत से यहूदी ख़ानदान वहाँ जाकर आबाद हो गये। इस आयत में उनके इसी "इन्तशार" की तरफ़ इशारा है कि पूरी दुनिया में उन्हें मुन्तशिर कर दिया गया और इस तरह उनकी इज्तमाईयत ख़त्म होकर रह गई। दूसरी तरफ़ वो जहाँ कहीं भी गये वहाँ उनसे शदीद नफ़रत की जाती रही, जिसके बाइस उन पर यूरोप में बहुत ज़ुल्म हुए। ईसाइयों की उनसे नफ़रत और शदीद दुश्मनी का ज़िक्र क़ुरान में भी है: { فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ } (मायदा 14) "पस हमने उनके दरमियान अदावत और बुग़्ज क़यामत तक के लिये डाल दिया।" यह दुश्मनी यहूदियों के उन गुस्ताखाना अक़ाइद की वजह से थी जो वो हज़रत मसीह और हज़रत मरियम अलै. के बारे में रखते थे।

फिर जंगे अज़ीम दौम में हिटलर के हाथों तो यहूदियों पर ज़ुल्म की इन्तहा हो गई। उसके हुक्म पर पूरे मशरिक़ी

यूरोप से यहूदियों को इकट्ठा करके concentration camps में जमा किया गया और इनके इज्तमाई क़त्ल की बाक़ायदा मन्सूबाबंदी की गई, जिसके लिये लाखों लाशों को ठिकाने लगाने के लिये जदीद आटोमेटिक पलान्ट नसब (install) किये गये। चुनाँचे मर्दों, औरतों और बच्चों को इज्तमाई तौर पर एक बड़े हॉल में जमा किया जाता, वहाँ उनके कपड़े उतरवाये जाते और बाल मूंड दिये जाते (बाद में उन बालों से कालीन तैयार किये गये जो नाज़ियों ने अपने दफ़्तरों में बिछाये), और फिर उन्हें वहाँ से बड़े-बड़े गैस चेम्बरों में दाखिल कर दिया जाता। वहाँ मरने के बाद मशीनों के ज़रिये से लाशों का चूरा किया जाता और फिर ख़ास क़िस्म के कैमिकल की मदद से इंसानी गोश्त को एक स्याह रंग के सयाल माद्दे में तब्दील करके खेतों में बतौर खाद इस्तेमाल किया जाता। यह सब कुछ बीसवीं सदी में आज के इस महज़ब (civilized) दौर में हुआ। इस तरीक़े से हिटलर के हाथों साठ लाख यहूदी क़त्ल हुए। यहूद के इस क़त्ले आम को "Holocaust" का नाम दिया जाता है। बाज़ लोग कहते हैं कि साठ लाख की तादाद मुबालगे पर मब्नी है, असल तादाद चालीस लाख थी। चालीस लाख ही सही, इतनी बड़ी तादाद में क़त्ले आम क़ौमी सतह पर कितना दर्दनाक अज़ाब है! यह उनकी तारीख़ के अब तक के हालात व वाक़िआत में से {مَنۡ يَّسُوۡمُهُمۡ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ} की एक झलक हैं। और इस सिलसिले में क़यामत तक मज़ीद क्या कुछ होने वाला है उसकी ख़बर अभी पर्दा-ए-ग़ैब में है।

बहरहाल यहूदियों का आखरी वक़्त बहुत जल्द आने वाला है, मगर जैसे चिराग का शौला बुझने से पहले भड़कता है, बिल्कुल इसी अंदाज़ से आज-कल हमें उनकी

हुकूमत और ताकत नज़र आ रही है। और शायद यह सब कुछ इसलिये भी हो रहा है कि अरबों (जो हुज़ूर अकरम صلى الله عليه وسلم के मुखातिबे अव्वल और वारिसे अव्वल होने के बावजूद दीन से पीठ फेरने के जुर्म के मुरतकिब हुए हैं) को एक "مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ" क़ौम के हाथों हज़ीमत से दो-चार करके सज़ा देना और "to add insult to injury" के मिस्दाक़ इस ज़लील क़ौम के हाथों अरबों की तज़लील मक़सूद है। अंदरूनी हालात ऐसे नज़र आते हैं कि वह दिन अब ज़्यादा दूर नहीं जब मस्जिदे अक़्सा शहीद कर दी जायेगी और उसके नतीजे में मशरिक़े वुस्ता में जो तूफ़ान उठेगा वह यहूदियों का सब कुछ बहा कर ले जायेगा, लेकिन उनके इस सिलसिला-ए-अज़ाब की आख़री शक़्ल हज़रत मसीह अलै. के ज़हूर के बाद सामने आयेगी। जैसे पहले तमाम रसूलों के मुन्करीन उनकी मौजूदगी में ख़त्म कर दिये गये थे (छ: रसूलों और उनकी क़ौमों के वाक़िआत तकरार के साथ क़ुरान में आये हैं) इसी तरह हज़रत ईसा अलै. के मुन्करीन को भी उनकी मौजूदगी में ख़त्म किया जायेगा। हज़रत ईसा अलै. बनी इसराइल की तरफ़ अल्लाह के रसूल थे: {وَرَسُوۡلًا اِلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ۙ......} (आले इमरान 49)। यहूदी ना सिर्फ आप अलै. के मुन्किर हुए बल्कि (बज़अमे ख़वीश) उन्होंने आप अलै. को क़त्ल भी कर दिया। लिहाज़ा बहैसियत क़ौम उनका इज्तमाई इस्तेसाल भी हज़रत मसीह अलै. ही के हाथों होगा।

مِنۡهُمُ الصّٰلِحُوۡنَ وَمِنۡهُمۡ دُوۡنَ ذٰلِكَ ۬

*"उनमें से कुछ लोग सालेह हैं और कुछ वह भी हैं जो दूसरी तरह के हैं।"*

وَبَلَوۡنٰهُمۡ بِالۡحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ۞١٦٨

*"हम उन्हें भलाई और बुराई से आज़माते रहे हैं कि शायद ये लोग लौट आएँ।"*

## आयत 169

فَخَلَفَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ وَّرِثُوا الۡكِتٰبَ يَاۡخُذُوۡنَ عَرَضَ هٰذَا الۡاَدۡنٰى

*"लेकिन उनके बाद ऐसे (नाख़लफ़) जाँनशीन किताब (तौरात) के वारिस हो गये जो इस हक़ीर दुनिया के साज़ो सामान ही को हासिल करते हैं"*

वो ऐसे लोग है जो हलाल और हराम से बेनियाज़ होकर दुनिया के फ़ायदे के पीछे पड़े हुए हैं। उनको आख़िरत के बारे में किसी क़िस्म का ख़ौफ और डर नहीं है।

وَيَقُوۡلُوۡنَ سَيُغۡفَرُ لَنَا ۚ

*"और कहते यह हैं कि हमें तो बख़्श ही दिया जायेगा।"*

उनका कहना है कि हम हज़रत इब्राहीम अलै. की नस्ल से हैं, पैग़म्बरों की औलाद हैं, अल्लाह के चहेते हैं, हमारी

बख़्शिश तो यक़ीनी है। हमारे लिये सब माफ़ कर दिया जायेगा।

وَاِنۡ يَّاۡتِهِمۡ عَرَضٌ مِّثۡلُهٗ يَاۡخُذُوۡهُ

*"अग़र ऐसा ही और सामान भी उनको दे दिया जाये तो (वो भी) ले लेंगे।"*

اَلَمۡ يُؤۡخَذۡ عَلَيۡهِمۡ مِّيۡثَاقُ الۡكِتٰبِ اَنۡ لَّا يَقُوۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الۡحَقَّ وَدَرَسُوۡا مَا فِيۡهِ‌ؕ

*"क्या उनसे अहद नहीं लिया गया था किताब (तौरात) की निस्बत, कि नहीं मन्सूब करेंगे अल्लाह से कोई बात मगर हक़, और उन्होंने पढ़ भी लिया जो कुछ उसमें था।"*

وَالدَّارُ الۡاٰخِرَةُ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ يَتَّقُوۡنَ‌ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶۹﴾

*"और यक़ीनन आख़िरत का घर तो बेहतर है उन लोगों के लिये जिन्होंने तक़वा की रविश इख़्तियार की, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?"*

## आयत 170

وَالَّذِيۡنَ يُمَسِّكُوۡنَ بِالۡكِتٰبِ وَاَقَامُوا

*"और जिन लोगों ने किताब को मज़बूती के साथ थामे रखा और नमाज़ क़ायम की, तो यक़ीनन ऐसे मुस्लिहीन का अज्र हम ज़ाया नहीं करेंगे।"*

الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّا لَا نُضِيْعُ
اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝١٧٠

बनी इस्राईल में नेक लोग आख़री वक़्त तक ज़रूर मौजूद रहे होंगे। उनके बारे में फ़रमाया जा रहा है कि उनका अज्र हम किसी सूरत में ज़ाया नहीं करेंगे।

## आयत 171

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ
فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ

*"और याद करो जबकि हमने पहाड़ को उनके ऊपर ऐसे उठा दिया था जैसे सायबान हो, और उन्हें लगता था कि अब यह उन पर गिरने ही वाला है।"*

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ
وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝١٧١

*"(हमने उस वक़्त उनसे कहा था कि) थाम लो इसको मज़बूती से जो हमने तुम्हें दिया है और जो कुछ इसमें है इसको याद रखो ताकि तुम (ग़लत रवी से) बचते रहो।"*

अब आख़री तीन रुकूअ में फ़लसफ़ा-ए-दीन के ऐतबार से बहुत अहम मज़ामीन आ रहे हैं।

# आयात 172 से 174 तक

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ
وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰي ۚۛ
شَهِدْنَا ۚۛ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا
غٰفِلِيْنَ ١٧٢؀ۙ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ
وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
الْمُبْطِلُوْنَ ١٧٣؀ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ١٧٤؀

## आयत 172

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ

*"और याद करो जब निकाला आप ﷺ के रब ने तमाम बनी आदम की पीठों से उनकी नस्ल को"*

यह वाक़िया आलम-ए-अरवाह में वक़ूअ पज़ीर हुआ था जबकि इंसानी जिस्म अभी पैदा भी नहीं हुए थे। अहले अरब जो उस वक़्त क़ुरान के मुख़ातिब थे उनकी उस वक़्त की ज़हनी इस्तअदाद के मुताबिक़ यह सक़ील (भारी) मज़मून था। एक सूरत तो यह थी कि उन्हें पहले तफ़सील से बताया जाता कि इंसानों की पहली तख़लीक़ आलमे अरवाह में हुई थी और दुनिया में तबई अज्साम (जिस्मों) के साथ यह दूसरी

तख़लीक़ है और फिर बताया जाता कि यह मीसाक़ आलमे अरवाह में लिया गया था। लेकिन इसके बजाय इस मज़मून को आसान पैराये में बयान करने के लिये आम फ़हम अल्फ़ाज़ आम फ़हम अंदाज़ में इस्तेमाल किए गये कि जब हमने नस्ले आदम की तमाम ज़ुर्रियत (औलाद) को उनकी पीठों से निकाल लिया। यानि क़यामत तक इस दुनिया में जितने भी इंसान आने वाले थे, उन सबकी अरवाह वहाँ मौजूद थीं।

وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ

*"और उनको गवाह बनाया ख़ुद उनके ऊपर, (और सवाल किया) क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?"*

यानि पूरी तरह होशो-हवास और ख़ुद शऊरी (self conciousness) के साथ यह इक़रार हुआ था। इस नुक्ते की वज़ाहत इससे पहले भी हो चुकी है कि इंसान की ख़ुद शऊरी (self conciousness) ही उसे हैवानात से मुमताज़ करती है जिनमें शऊर (conciousness) तो होता है। लेकिन ख़ुद शऊरी नहीं होती। इंसान की इस ख़ुद शऊरी का ताल्लुक़ उसकी रूह से है जो अल्लाह तआला ने बतौर ख़ास सिर्फ़ इंसान में फूँकी है। चुनाँचे जब यह अहद लिया गया तो वहाँ तमाम अरवाह मौजूद थीं और उन्हें अपनी ज़ात का पूरा शऊर था। अल्लाह तआला ने तमाम अरवाहे इंसानिया से यह सवाल किया कि क्या मैं तुम्हारा रब, तुम्हारा मालिक, तुम्हारा आक़ा नहीं हूँ?

*"उन्होंने कहा क्यों नहीं! हम इस पर गवाह हैं।"* قَالُوْا بَلٰى ۚ شَهِدْنَا ۚ

तमाम अरवाह ने यही जवाब दिया कि तू ही हमारा रब है, हम इक़रार करते हैं, हम इस पर गवाह हैं। अब यहाँ नोट कीजिए कि यह इक़रार तमाम इंसानों पर अल्लाह की तरफ़ से हुज्जत है। जैसे कि इससे पहले सूरतुल मायदा की आयत 19 में आ चुका है: "ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास आ चुका है हमारा रसूल जो तुम्हारे लिये (दीन को) वाज़ेह कर रहा है, रसूलों के एक वक़्फ़े के बाद, मबादा तुम यह कहो कि हमारे पास तो आया ही नहीं था कोई बशारत देने वाला और ना कोई ख़बरदार करने वाला।" तो यह गोया इम्तामे हुज्जत थी अहले किताब पर। इसी तरह सूरतुल अन्आम की आयत 156 में फ़रमाया: "मबादा तुम यह कहो कि किताबें तो दी गई थीं हमसे पहले दो गिरोहों को और हम तो उन किताबों को (ग़ैर ज़बान होने की वजह से) पढ़ भी नहीं सकते थे।" तो यह इम्तामे हुज्जत किया गया बनी इस्माईल पर कि अब तुम्हारे लिये हमने अपना एक रसूल (ﷺ) तुम ही में से भेज दिया है और वह तुम्हारे लिये एक किताब लेकर आया है जो तुम्हारी अपनी ज़बान ही में है। लिहाज़ा अब तुम यह नहीं कह सकते कि अल्लाह ने अपनी किताबें तो हमसे पहले वाली उम्मतों पर नाज़िल की थीं, और यह कि अगर हम पर भी कोई ऐसी किताब नाज़िल होती तो हम उनसे कहीं बढ़ कर हिदायत याफ़्ता होते। आयत ज़ेरे नज़र में जिस गवाही का ज़िक्र है वह पूरी नौए इंसानी के लिये हुज्जत है। यह अहद हर रूहे इंसानी अल्लाह से करके दुनिया में आई है और उख़रवी मुवाख़जे कि असल बुनियाद यही गवाही फ़राहम करती है। नुबुवत, वही और इल्हामी कुतुब

के ज़रिये जो इत्मामे हुज्जत किया गया, वह ताकीद मज़ीद और तकरार के लिये और लोगों के इम्तिहान को मज़ीद आसान करने के लिये किया गया। लेकिन हक़ीक़त में अगर कोई हिदायत बज़रिये नुबुवत, वही वगैरह ना भी आती तो रोज़े महशर के अज़ीम मुहासबे (accountability) के लिये आलमे अरवाह में लिया जाने वाला यह अहद ही काफ़ी था जिसका अहसास और शऊर हर इंसान की फ़ितरत में समो दिया गया है।

اَنۡ تَقُوۡلُوۡا یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ اِنَّا کُنَّا عَنۡ ہٰذَا غٰفِلِیۡنَ ﴿۱۷۲﴾ۙ

*"मबादा तुम यह कहो क़यामत के दिन कि हम तो इससे ग़ाफ़िल थे।"*

## आयत 173

اَوۡ تَقُوۡلُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَشۡرَکَ اٰبَآؤُنَا مِنۡ قَبۡلُ وَ کُنَّا ذُرِّیَّۃً مِّنۡۢ بَعۡدِہِمۡ ۚ

*"या तुम यह कहो कि शिर्क को पहले हमारे आबा व अजदाद ने किया था, और हम उनके बाद उनकी नस्ल में से थे।"*

اَفَتُہۡلِکُنَا بِمَا فَعَلَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ﴿۱۷۳﴾

*"तो (परवरदिग़ार!) क्या तू हमें हलाक करेगा उन बातिल पसंद लोगों के फ़अल के बदले में?"*

हमारे बड़े जो रास्ता, जो तौर-तरीक़े छोड़ गये थे, हम तो उन पर चलते रहे, लिहाज़ा हमारा कोई क़सूर नहीं, असल मुजरिम तो वो हैं जो हमें इस दलदल में फँसा कर चले गये। यह बातिल तौर-तरीक़े उन्होंने ही ईजाद किए थे, हम तो सिर्फ़ उसके मुक़ल्लिद थे।

## आयत 174

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝١٧٤

*“और हम इसी तरह अपनी आयात को तफ़सील से बयान कर देते हैं ताकि वो रुजूअ करें।”*

अब आइंदा आयात में एक शख़्सियत का वाक़िया तम्सीली अंदाज़ में बयान हुआ है, मगर हक़ीक़त में यह महज़ तश्बीह नहीं है बल्कि हक़ीकी वाक़िया है। यह क़िस्सा दरअसल हमारे लिये दर्से इबरत है, जिसका खुलासा यह है कि बहुत बदनसीब है वह फ़र्द या क़ौम जिसको अल्लाह तआला अपने बेशबहा ईनाम व इकराम और क़ुर्बे ख़ास से नवाज़े, मगर वह उसकी नाफ़रमानी का इरतकाब करके ख़ुद को उन तमाम फ़ज़ीलतों से महरूम कर ले और अल्लाह की बंदगी से निकल कर शैतान का चेला बन जाये।

# आयात 175 से 178 तक

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا

فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝١٧٥ وَلَوْ شِئْنَا

لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ
فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ
تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾
سَاۗءَ مَثَلَا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ
كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾

## आयत 175

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا

*"और सुनाइये इन्हें ख़बर उस शख़्स की जिसको हमने अपनी आयात अता की थीं"*

यहाँ पर उस वाक़िये के लिये लफ़्ज़ "नबा" इस्तेमाल हुआ है जिसके लुग्वी मायने "ख़बर" के हैं। इससे वाज़ेह होता है कि यह कोई तम्सील नहीं बल्कि हक़ीक़ी वाक़िया है। दूसरे जो यह फ़रमाया गया कि उस शख़्स को हमने अपनी आयात अता की थीं, इससे यह वाज़ेह होता है कि वह शख़्स साहिबे करामत बुज़ुर्ग था। इस वाक़िये की तफ़सील हमें तौरात में भी मिलती है जिसके मुताबिक़ यह शख़्स बनी इस्राईल में से था। उसका नाम बलअम बिन बाऊरा था और यह एक बहुत बड़ा आबिद, ज़ाहिद और आलिम था।

فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ

*“तो वह उनसे निकल भागा तो शैतान उसके पीछे लग गया”*

यहाँ पर यह नुक्ता बहुत अहम है कि पहले इंसान ख़ुद गलती करता है, शैतान उसे किसी बुराई में मजबूर नहीं कर सकता, क्योंकि अल्लाह तआला के फ़ैसले के मुताबिक़ {اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ} (अल् हिज्र 42) शैतान को किसी बन्दे पर कोई इख़्तियार हासिल नहीं, लेकिन जब बंदा अल्लाह की नाफ़रमानी की तरफ़ लपकता है और बुराई कर बैठता है तो वह शैतान का आसान शिकार बन जाता है। शैतान ऐसे शख़्स के पीछे लग जाता है और वह तौबा करके रुजूअ ना करे तो उसे तदरीजन दूर से दूर ले जाता है यहाँ तक कि उसे बुराई की आख़री मंज़िल तक पहुँचा कर दम लेता है।

فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾

*“तो वह हो गया गुमराहों में से।”*

## आयत 176

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ

*“और अगर हम चाहते तो इन (आयात) के ज़रिये से उसे और बुलंद करते मगर वह तो ज़मीन की तरफ़ ही धँसता चला गया”*

यानि अल्लाह की आयात और जो भी इल्म उसको अता हुआ था उसके ज़रिये से उसको बड़ा बुलंद मक़ाम मिल सकता था मगर वह तो ज़मीन ही की तरफ़ धँसता चला गया। यहाँ पर ज़मीन की तरफ़ धँसने के इस्तआरे को भी अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। इंसान दरअसल हैवानी जिस्म और मलकूती रूह से मुरक्कब (मिला हुआ) है। जिस्म अजज़ा-ए-तरकीबी का ताल्लुक़ ज़मीन से है, जैसा कि सूरह ताहा की आयत 55 में फ़रमाया गया: {مِنۡهَا خَلَقۡنٰكُمۡ} यानि हमने तुम्हें इस ज़मीन से पैदा किया। इसके बरअक्स इंसानी रूह का ताल्लुक़ आलमे बाला से है और वह अल्लाह से {اَلَسۡتُ بِرَبِّكُمۡ ؕ} वाला अहद करके आई है। चुनाँचे असल के इस तज़ाद की बुनियाद पर जिस्म और रूह में मुतवातिर कशमकश रहती है। "كُلُّ شَیۡءٍ یَرۡجِعُ اِلٰی اَصۡلِهٖ" (हर चीज़ अपने मिम्बा [असल] की तरफ़ लौटती है) के मिस्दाक़ रूह ऊपर उठना चाहती है ताकि अल्लाह से क़ुर्ब हासिल कर सके, जबकि जिस्म की सारी क़शिश ज़मीन की तरफ़ होती है। चूँकि जिस्म की तक़वियत का सारा सामान, ग़िज़ा वग़ैरह ज़मीन ही के मरहूने मिन्नत है, इसलिये ज़मीनी और दुनियावी लज़्ज़तों में ही उसे सुकून मिलता है और *"बाबर बा-ऐश कोश कि आलम दोबारा नीस्त"* का नारा उसे अच्छा लगता है। अब अग़र कोई शख़्स फ़ैसला कर लेता है कि जिस्मानी ज़रूरतों और लज़्ज़तों के हुसूल के लिये उसने ज़मीन के साथ ही चिमट कर रहना है तो गोया अब उसने अपने आप को अल्लाह की तौफ़ीक़ से महरूम कर लिया। अब उसकी रूह सिसकती रहेगी, ऐहतजाज करती रहेगी और अगर ज़्यादा मुद्दत तक उसकी रुहानी ग़िज़ा का

बंदोबस्त नहीं किया जायेगा तो रूह की मौत भी वाक़ेअ हो सकती है। अगर किसी इंसान के जीते जी उसकी रूह के साथ यह हादसा हो जाये, यानि उसकी रूह की मौत वाक़ेअ हो जाये तो गोया वह चलता-फिरता हैवान बन जाता है, जो अपने सारे हैवानी तक़ाज़े हैवानी अंदाज़ में पूरे करता रहता है। फिर ज़मीनी ग़िज़ाएँ, सिफ़ली आरज़ुएँ और माद्दी उमंगे ही उसकी ज़िन्दगी का मक़सद व महवर क़रार पाती हैं। नतीजतन उसे फ़ैज़ाने समावी और तौफ़ीक़े इलाही से कुल्ली तौर पर महरूम कर दिया जाता है।

وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ

*"और उसने पैरवी की अपनी ख़्वाहिशात की।"*

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ

*"तो उसकी मिसाल कुत्ते की सी है, अगर तुम उसके ऊपर बोझ रखो तब भी हाँफेगा और अगर छोड़ भी दो तब भी हाँफता रहेगा।"*

यानि उस शख़्स ने अल्लाह की नेअमतों की क़द्र करने के बजाय ख़ुद को कुत्ते से मुशाबा कर लिया, जो हर वक़्त ज़बान निकाले हाँफता रहता है और हिर्स व तमअ के ग़लबे की वजह से हर वक़्त ज़मीन को सूँघते रहना उसकी फ़ितरत में शामिल है।

ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

*"यही मिसाल है उस क़ौम की (भी) जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया।"*

ऊपर तफ़सील के साथ यहूद की जो सरगुज़श्त बयान हुई है उससे वाज़ेह होता है कि यह क़ौम शुरू से ही बलअम बिन बाऊरा बनी रही है। आज इसकी सबसे बड़ी मिसाल पाकिस्तानी क़ौम है। पाकिस्तान का बन जाना और इसका क़ायम रहना एक मौअज्ज़ा था। अंग्रेज़ों और हिन्दुओं को यक़ीन था कि पाकिस्तान की बक़ा बहैसियत एक आज़ाद और ख़ुदमुख़्तार मुल्क के मुमकिन नहीं है, इसलिये यह जल्द ही ख़त्म हो जायेगा। लेकिन यह मुल्क ना सिर्फ़ क़ायम रहा बल्कि 1965 ई. की जंग जैसी बड़ी-बड़ी आज़माईशों से भी सुर्ख़रू होकर निकला। इसलिये कि हमने इस मुल्क को हासिल किया था इस्लाम के नाम पर कि इसे इस्लामी निज़ाम की तजुर्बा गाह बनायेंगे, ताकि पूरी दुनिया इस्लामी निज़ाम के अमली नमूने और उसकी बरकात का मुशाहिदा कर सके। क़ायदे आज़म ने भी फ़रमाया था कि हम पाकिस्तान इसलिये चाहते हैं कि हम अहदे हाज़िर में इस्लाम के उसूले हुर्रियत व अख़ुवत व मसावात का एक नमूना दुनिया के सामने पेश कर सकें, लेकिन अमली तौर पर आज हमारा तर्ज़े अमल "فَانْسَلَخَ مِنْهَا" की इबरतनाक तस्वीर बन चुका है। हम उन तमाम वादों से पीछा छुड़ा कर निकल भागे और शैतान की पैरवी इख़्तियार की। फिर हमारा जो हाल हुआ और मुसलसल हो रहा है वह सामने रखें और इस पसमंज़र में इस आयत को दोबारा पढ़ें।

فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝١٧٦

*"सो (ऐ नबी ﷺ!) आप यह वाक़िआत सुना दीजिए, शायद कि ये तफ़क्कुर (ग़ौर व फ़िक्र) करें।"*

## आयत 177

سَآءَ مَثَلًا الۡقَوۡمُ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَاَنۡفُسَهُمۡ كَانُوۡا يَظۡلِمُوۡنَ ۝۱۷۷

*"क्या ही बुरी मिसाल है उस क़ौम की जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया और वो ख़ुद अपनी ही जानों पर ज़ुल्म ढ़ाते रहे।"*

## आयत 178

مَنۡ يَّهۡدِ اللّٰهُ فَهُوَ الۡمُهۡتَدِىۡ‌ۚ وَمَنۡ يُّضۡلِلۡ فَاُولٰۤـئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۝۱۷۸

*"जिसे अल्लाह हिदायत देता है वही हिदायत याफ्ता होता है, और जिन्हें वह गुमराह कर दे तो वही लोग तबाह होने वाले हैं।"*

"अहदे अलस्त" के हवाले से हम पर यह बात वाज़ेह हो गई कि इंसान का एक वुजूद रुहानी है और दूसरा माद्दी यानि हैवानी। अगर इंसान की तवज्जोह और सारी दिलचस्पियाँ हैवानी वुजूद की ज़रुरियात पूरी करने तक महदूद रहेंगी तो फिर वह बलअम बिन बाऊरा की मिसाल बन जायेगा। यह इन्फ़रादी सतह पर भी हो सकता है और क़ौमी व इज्तमाई सतह पर भी। इस ज़िमन में हिकमते क़ुरानी का तीसरा नुक्ता अगली आयत में बयान हो रहा है कि इंसानों में से

अक्सर वो हैं जो सिर्फ़ अपने हैवानी जिस्म की परवरिश में मसरूफ़ हैं। वो अगरचे बज़ाहिर तो इंसान ही नज़र आते हैं मगर हक़ीक़त में हैवानों की सतह पर ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं।

# आयात 179 से 183 तक

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ
قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا
وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ
هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي
أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ
خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا
يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿١٨٣﴾

## आयत 179

وَلَقَدۡ ذَرَاۡنَا لِجَهَنَّمَ كَثِیۡرًا
مِّنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ ۖ

*"और हमने जहन्नम के लिये पैदा किये हैं बहुत से जिन्न और इंसान।"*

لَهُمۡ قُلُوۡبٌ لَّا یَفۡقَهُوۡنَ
بِهَا ۫ وَلَهُمۡ اَعۡیُنٌ لَّا
یُبۡصِرُوۡنَ بِهَا ۫ وَلَهُمۡ
اٰذَانٌ لَّا یَسۡمَعُوۡنَ بِهَا ؕ

*"उनके दिल तो हैं लेकिन उनसे ग़ौर नहीं करते, उनकी आँखे हैं मगर उनसे देखते नहीं, और उनके कान हैं लेकिन उनसे सुनते नहीं।"*

اُولٰٓئِكَ كَالۡاَنۡعَامِ بَلۡ
هُمۡ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الۡغٰفِلُوۡنَ ﴿۱۷۹﴾

*"यह चौपायों की मानिन्द हैं, बल्कि उनसे भी गये गुज़रे हैं। यही वो लोग हैं जो गाफ़िल हैं।"*

यानि जब इंसान हिदायत से मुँह मोड़ता है और हठधर्मी पर उतर आता है तो नतीजतन अल्लाह तआला ऐसे लोगों के दिलों पर मोहर कर देता है। उसके बाद उनके दिल तफ़क्क़ो (गौरो फ़िक्र) से यक्सर (बिल्कुल) खाली हो जाते हैं, उनकी आँखे इंसानी आँखें नहीं रहतीं और ना उनके कान इंसानी कान रहते हैं। अब उनका देखना हैवानों जैसा देखना रह जाता है और उनका सुनना हैवानों जैसा सुनना। जैसे कुत्ता भी देख लेता है कि गाड़ी आ रही है मुझे उससे बचना है। जबकि इंसानी देखना तो यह है कि इंसान किसी चीज़ को देखे, उसकी हक़ीक़त को समझे और फिर दुरुस्त नतीज़े

अख़ज़ करे। इसी फ़लसफ़े को अल्लामा इक़बाल ने इन अल्फ़ाज़ में बयान किया है।

*ऐ अहले नज़र ज़ौक़-ए-नज़र खूब है लेकिन*
*जो शय की हक़ीक़त को ना देखे वह नज़र क्या!*

चुनाँचे अल्लामा इक़बाल कहते हैं *"दीदन दीग़र आमोज़, शुनीदन दीग़र आमोज़!"* यानि दूसरी तरह का देखना सीखो, दूसरी तरह का सुनना सीखो! वह देखना जो दिल की आँख से देखा जाता है और वह सुनना जो दिल से सुना जाता है। लेकिन जब उनके दिलों और उनके कानों पर मोहर हो गई और उनकी आँखों पर परदे डाल दिये गये तो अब उनका हाल यह है कि यह चौपायों की मानिन्द हैं बल्कि उनसे भी गये गुज़रे।

ऐसे लोगों को चौपायों से बदतर इसलिये कहा गया है कि चौपायों को तो अल्लाह तआला ने पैदा ही कमतर सतह पर किया है, जबकि इंसान का तख़्लीक़ी मक़ाम बहुत आला है, लेकिन जब इंसान उस आला मक़ाम से गिरता है तो फिर वह ना सिर्फ़ शर्फ़े इंसानियत को खो देता है बल्कि जानवरों से भी बदतर हो जाता है। यही मज़मून है जो सूरह अत्तीन में इस तरह बयान हुआ है: {لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِیۡۤ اَحۡسَنِ تَقۡوِیۡمٍ} {ثُمَّ رَدَدۡنٰہُ اَسۡفَلَ سٰفِلِیۡنَ} (आयत 4 व 5) यानि इंसान को पैदा किया गया बेहतरीन अंदाज़े पर, बुलंदतरीन सतह पर, यहाँ तक कि अपने तख़्लीक़ी मैयार के मुताबिक़ वह मस्जूदे मलाइक ठहरा, लेकिन जब वह इस मक़ाम से नीचे गिरा तो कम तरीन सतह की मख्लूक़ से भी कम तरीन हो गया। फिर उसकी ज़िन्दगी महज़ हैवानी ज़िन्दगी बन कर रह गई, हैवानों की तरह खाया-पिया, दुनिया की लज़्जतें हासिल कीं और मर गया। ना ज़िन्दगी के मक़सद

का इदराक, ना अपने ख़ालिक व मालिक की पहचान, ना अल्लाह के सामने हाज़िरी का डर और ना आख़िरत में अहतसाब की फ़िक्र। यह वह इंसानी ज़िन्दगी है जो इंसान के लिये बाइसे शर्म है। बक़ौले सअदी शिराज़ी:

*ज़िन्दगी आमद बराए बंदगी*
*ज़िन्दगी बेबंदगी शर्मिन्दगी!*

## आयत 180

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۠

*“और तमाम अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं, तो पुकारो उसे उन (अच्छे नामों) से।”*

अल्लाह तआला की सिफ़ात के ऐतबार से उसके बेशुमार नाम हैं। उनमें से कुछ क़ुरान में आये हैं और कुछ हदीसों में। एक हदीस जो हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. से मरवी है, उसमें हुज़ूर अकरम ﷺ ने अल्लाह तआला के 99 नाम गिनवाये हैं। उन नामों में “अल्लाह” सबसे बड़ा और अहम तरीन नाम है। यहाँ फ़रमाया जा रहा है कि अल्लाह तआला के सब नाम अच्छे हैं, उन नामों के हवाले से उसको पुकारा करो, उन नामों के ज़रिये से दुआ किया करो जैसे या सत्तार, या ग़फ़्फ़ार, या करीम, या अलीम। ज़िमनी तौर पर यहाँ एक नुक्ता नोट कर लें कि क़ुरान मजीद में अल्लाह के लिये लफ़्ज़ “सिफ़त” कहीं इस्तेमाल नहीं हुआ, अलबत्ता हदीस में यह लफ़्ज़ आया है। क़ुरान में अल्लाह के लिये इस हवाले से अस्मा (नाम) का लफ़्ज़ ही इस्तेमाल हुआ है।

وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَاۗىِٕهٖ ۭ

*"और छोड़ दो उन लोगों को जो उसके नामों में कजी निकालते हैं।"*

'लहद' कहते हैं टेढ़ को। 'लहद' बमायने क़ब्र का मफ़हूम यह है कि क़ब्र के लिये एक सीधा गड्ढा खोद कर उसके अंदर एक बगली गड्ढा खोदा जाता है। उस गड्ढे को सीधे रास्ते से हटे हुए होने की वजह से 'लहद' कहते हैं। अस्माए इलाही के सिलसले में 'इल्हाद' एक तो यह है कि उनका गलत इस्तेमाल किया जाये। अल्लाह के हर नाम की अपनी तासीर है, इस लिहाज़ से मुराक़बों वग़ैरह के ज़रिये से अल्लाह के नामों की तासीर से किसी को कोई नुक़सान पहुँचाने की कोशिश की जाये। और दुसरे यह कि अल्लाह तआला के बाज़ नाम जोड़ों की शक्ल में हैं, किसी सिफ़त के दो रुख़ हैं तो उस सिफ़त से नाम भी दो होंगें, जैसे अल्मुइज़्ज़ु और अल्मुज़िल्लु, अर्राफ़िऊ और अल्हाफ़िज़ु, अल्हय्यु और अल्मुमीतु वग़ैरह। चुनाँचे अल्लाह तआला के जो अस्मा इस तरह के जोड़ों की शक्ल में हैं उनमें से अगर एक ही नाम बार-बार पुकारा जाये और दूसरे को छोड़ दिया जाये तो यह भी इल्हाद होगा। मसलन अल्मुइज़्ज़ु और अल्मुज़िल्लु दो नाम एक जोड़े में हैं, यानि वही इज़्ज़त देने वाला और वही ज़िल्लत देने वाला है। लेकिन अगर कोई शख़्स या मुज़िल्लु, या मुज़िल्लु, या मुज़िल्लु का विर्द शुरू कर दे तो यह इल्हाद हो जायेगा। क्योंकि "ऐ ज़लील करने वाले! ऐ ज़लील करने वाले! मुनासिब विर्द नहीं है। लिहाज़ा ऐसे तमाम नाम जब पुकारे जायें तो हमेशा जोड़ों ही की सूरत में पुकारे जायें।

سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٨٠

*"अनक़रीब वो बदला पायेंगे अपने आमाल का।"*

## आयत 181

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝١٨١

*"और जो इंसान हमने पैदा किये हैं उनमें कुछ लोग वो हैं जो हक़ की हिदायत करते हैं और हक़ के साथ अदल करते हैं।"*

यक़ीनन हर दौर में कुछ लोग हक़ के अलम्बरदार रहे हैं और ऐसे लोग हमेशा रहेंगे। जैसे हुज़ूर ﷺ ने ज़मानत दी है: ((لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ اُمَّتِیْ ظَاهِرِیْنَ عَلَى الْحَقِّ))(15) "मेरी उम्मत में एक गिरोह ज़रूर हक़ पर क़ायम रहेगा।"

## आयत 182

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٨٢

*"रहे वो लोग जिन्होंने हमारी आयात की तकज़ीब की है, तो हम रफ़्ता-रफ़्ता उन्हें ऐसे पकड़ेगें कि उनको पता भी नहीं चलेगा।"*

बाज़ अवक़ात यूँ होता है कि एक शख़्स कुफ़्र के रास्ते पर बढ़ता जाता है तो साथ ही उसकी दुनियावी कामयाबियाँ

भी बढ़ती जाती हैं, जिसकी वजह से वह समझता है कि वह जो कुछ कर रहा है, ठीक कर रहा है और यह दुनियावी कामयाबियाँ उसकी इसी रविश का नतीजा हैं। लिहाज़ा वह कुफ़्र और मअसियत के रास्ते में मज़ीद आगे बढ़ता चला जाता है। यह कैफ़ियत किसी इंसान के लिये बहुत बड़ा फ़ितना है और इसको इस्तदराज कहा जाता है। यानि कोई इंसान जो पूरी दीदा दिलेरी और ढ़िटाई के साथ अल्लाह तआला की आयात से ऐराज़ और उसके अहकाम से नाफ़रमानी करता है तो अल्लाह उसको ढ़ील देता है और उसकी रस्सी दराज़ कर देता है, जिसकी वजह से वह गुनाहों कि दलदल में धँसता चला जाता है।

**आयत 183**

وَاُمۡلِیۡ لَهُمۡ ؕ اِنَّ كَيۡدِیۡ مَتِيۡنٌ ﴿۱۸۳﴾

*"और मैं उनको ढ़ील दूँगा, यक़ीनन मेरी चाल बहुत मज़बूत है।"*

ऐसे मुजरिमों को ढ़ील देने की मिसाल मछली के शिकार की सी है। जब काँटा मछली के हलक़ में फँस जाये तो अब वह कहीं जा नहीं सकती, जितनी डोर चाहे ढ़ीली छोड़ दें। जब आप चाहेंगे उसे खींच कर क़ाबू कर लेंगे।

# आयात 184 से 188 तक

اَوَلَمۡ يَتَفَكَّرُوۡا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمۡ مِّنۡ جِنَّةٍ ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۱۸۴﴾ اَوَلَمۡ يَنۡظُرُوۡا فِىۡ مَلَكُوۡتِ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ
يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ
يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ
وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۸۶﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ
السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا
يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۭؔ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ قُلْ
اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
﴿۱۸۷﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۗءَ
اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ
الْخَيْرِ ڔ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْۗءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ۧ

## आयत 184

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ

*“क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी (मुहम्मद ﷺ) को कोई जिन्नून नहीं है।”*

यानि रसूल ﷺ पर किसी तरह के जिन्नों के असरात या किसी जिन्न का साया वग़ैरह कुछ नहीं है। यह भी मुतजस्साना सवाल (searching question) का अंदाज़ है कि ज़रा ग़ौर करो, कभी तुमने सोचा है कि हमारे रसूल ﷺ तुम्हारी निगाहों के सामने पले-बढ़े हैं। आप ﷺ की सीरत, शख़्सियत, तहारत, नज़ाफ़त और आप ﷺ का किरदार, क्या यह सब कुछ आप लोगों के सामने नहीं है? इसके बावजूद तुम्हारा इस क़दर भोंडा दावा कि आप ﷺ पर जिन्नों के असरात हैं! कभी तुमने अपने इस दावे के बोदेपन पर भी ग़ौर किया है?

إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝١٨٤

*"वह नहीं हैं मगर वाज़ेह तौर पर ख़बरदार कर देने वाले।"*

## आयत 185

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ

*"और क्या उन लोगों ने ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया आसमानों और ज़मीन की सल्तनत में और अल्लाह ने जो चीज़ें बनाई हैं (उनमें)"*

وَّاَنۡ عَسٰۤى اَنۡ يَّكُوۡنَ قَدِ اقۡتَرَبَ اَجَلُهُمۡ‌ۚ

*"और यह (नहीं सोचा) कि हो सकता है उनका मुक़र्रर वक़्त क़रीब पहुँच गया हो।"*

इससे पहले इसी सूरत में हम पढ़ आए हैं: {وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ‌ۚ} (आयत 34) "और हर क़ौम के लिये एक वक़्त मुअय्यन है।" जिसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। लिहाज़ा यह लोग क्योंकर बेफ़िक्र हो सकते हैं!

فَبِاَىِّ حَدِيۡثٍۢ بَعۡدَهٗ يُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٨٥

*"और अब इसके बाद वो और किस बात पर ईमान लायेंगे?"*

## आयत 186

مَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ‌ؕ

*"जिसको अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं है।"*

जिसकी गुमराही पर अल्लाह की तरफ़ से मोहरे तस्दीक़ सब्त हो जाये, फिर इसके बाद उसे कोई राहे रास्त पर नहीं ला सकता।

وَيَذَرُهُمۡ فِىۡ طُغۡيَانِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ۝١٨٦

*"और वह छोड़ देगा उनको उनकी सरकशी में, अँधे होकर आगे बढ़ते हुए।"*

# आयत 187

يَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرۡسٰهَا ؕ قُلۡ اِنَّمَا عِلۡمُهَا عِنۡدَ رَبِّیۡ ۚ

*"(ऐ नबी ﷺ) ये आपसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि इसका वक़ूअ (समय) कब होगा? आप कहिये कि इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है।"*

यह लोग आप ﷺ से क़यामत के बारे में सवाल करते हैं कि कब लंगर अंदाज़ होगी? आप इनसे कह दीजिये कि इसके बारे मे सिवाय मेरे अल्लाह के कोई नहीं जानता। किसी के पास इस बारे में कोई इल्म नहीं है। "مُرۡسٰی" जहाज़ के लंगर अंदाज़ होने को कहा जाता है। जैसे "بِسۡمِ اللّٰهِ مَجۡرٖىهَا وَ مُرۡسٰهَا"।

لَا یُجَلِّیۡهَا لِوَقۡتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕۘ

*"वही ज़ाहिर करेगा उसे उसके वक़्त पर।"*

ثَقُلَتۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ

*"और आसमानों और ज़मीन के अंदर बड़ा भारी बोझ है।"*

आसमान व ज़मीन उससे बोझल हैं। जैसे एक मादा अपना हमल लिए फिरती है, इसी तरह यह कायनात भी क़यामत को यानि अपनी फ़ना को लिए फिरती है। हर शय जो तख़्लीक़ की गई है उसकी एक "अजल-ए-मुसम्मा (निश्चित समय)" उसके अंदर मौजूद है। गोया हर मख़्लूक़ की मौत उसके वजूद के अंदर समो दी गई है। चुनाँचे हर इंसान अपनी

मौत को साथ-साथ लिए फिर रहा है और इसी लिहाज़ से पूरी कायनात भी।

لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ

*"वो नहीं आयेगी तुम पर मगर अचानक।"*

يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا

*"(ऐ नबी ﷺ) आपसे तो यह इस तरह पूछते हैं गोया आप उसकी खोज में लगे हुए हैं।"*

आप ﷺ से तो वो ऐसे पूछते हैं जैसे समझतें हों कि आपको तो बस क़यामत की तारीख़ ही के बारे में फ़िक्र दामनगीर है और आप उसकी तहक़ीक़ व जुस्तुजू में लगे हुए हैं। हालाँकि आपका उससे कोई सरोकार नहीं, यह तो हमारा मामला है।

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ١٨٧

*"आप कह दीजिए कि इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।"*

## आयत 188

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ؕ

*"कह दीजिए कि मुझे कोई इख़्तियार नहीं है अपनी जान के बारे में किसी भी नफ़े का और ना किसी नुक़सान का, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे।"*

आप ﷺ इन्हें बताएँ कि मेरे पास इल्मे ग़ैब नहीं है। जैसा कि सूरतुल अनआम की आयत 50 में फ़रमाया गया कि ऐ नबी ﷺ कह दीजिए कि मैं ना तुमसे यह कहता हूँ कि अल्लाह के ख़ज़ाने मेरे क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में हैं, ना मैं इल्मे ग़ैब जानता हूँ और ना मैं यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ।

وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ

*"और अगर मुझे इल्मे ग़ैब हासिल होता तो मैं बहुत सा ख़ैर जमा कर लेता और मुझे कभी कोई तकलीफ़ ना आती।"*

اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾

*"नहीं हूँ मैं मगर बशारत देने वाला और ख़बरदार करने वाला, उन लोगों के लिये जो ईमान वाले हों।"*

# आयात 189 से 202 तक

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا
زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا
خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ
اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ

اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى
اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا
وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ۖ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ
اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى
لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ
صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ
لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۫
اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ
كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾ اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ
الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ
يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٧﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا
يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ
﴿١٩٨﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ

﴿١٩٩﴾ وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ
بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ
طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ
﴿٢٠١﴾ وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

## आयत 189

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ

*"वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से और उसी से बनाया उसका जोड़ा, ताकि वह उसके पास सुकून हासिल करे।"*

इस नुक्ते की वज़ाहत सूरतुल बक़रह की आयत 187 {وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ} के मुताअले के दौरान गुज़र चुकी है। शौहर और बीबी के ताल्लुक़ात में जहाँ औलाद का मामला है वहाँ तस्कीन और सुकून का भी पहलु भी है।

فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ ۖ

*"तो जब वह (शौहर) ढाँप लेता है उस (अपनी बीवी) को तो उसे हमल हो जाता है हल्का सा हमल, तो वह उसके साथ चलती-फिरती रहती है।"*

इब्तदा में हमल इतना ख़फ़ीफ़ होता है कि पता भी नहीं चलता कि कोई हमल ठहर गया है।

فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾

*"फिर जब बोझल हो जाती है तो वह दोनो अपने रब को पुकारते हैं, कि अगर तू हमें सही सालिम बच्चा अता कर देगा तो हम तेरे शुक्र गुज़ारों में से होंगे।"*

## आयत 190

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَاۗءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ

*"फिर जब अल्लाह ने उन्हें अता कर दिया सही सालिम बच्चा, तो ठहरा लिए उन्होंने उसके शरीक उसमें जो अल्लाह ने उनको अता किया था।"*

कि फलाँ बुज़ुर्ग के मज़ार पर गये थे, उनकी निगाहें करम हुई है, या फलाँ देवी या देवता कि कृपा की वजह से हमें औलाद मिल गई है।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾

*"अल्लाह बहुत बुलंद व बाला है उनके इस शिर्क से।"*

## आयत 191

اَيُشۡرِكُوۡنَ مَا لَا يَخۡلُقُ شَيۡـًٔـا وَّهُمۡ يُخۡلَقُوۡنَ ﴿١٩١﴾

*"क्या वो उनको शरीक कर रहे हैं (अल्लाह के साथ) जो कोई शय तख़्लीक़ करते ही नहीं बल्कि वो ख़ुद मख़लूक़ हैं।"*

फ़रिश्ते, जिन्नात, अम्बिया और औलिया अल्लाह सबके सब ख़ुद अल्लाह की मख़्लूक़ हैं।

## आयत 192

وَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ لَهُمۡ نَصۡرًا وَّلَاۤ اَنۡفُسَهُمۡ يَنۡصُرُوۡنَ ﴿١٩٢﴾

*"और ना वो उनकी मदद कर सकते हैं और ना वो अपनी मदद पर क़ादिर हैं।"*

वो तो सबके सब ख़ुद अल्लाह के बंदे हैं। अब यहाँ बात तदरीजन बुतों की तरफ़ लाई जा रही है। नज़रियाती तौर पर तो उनके फ़लसफ़ी बुतपरस्ती का जवाज़ यह बताते हैं कि वो उन पत्थर के बुतों की पूजा नहीं करते बल्कि उन मूर्तियों की हैसियत अलामती है। असल देवता और देवियाँ चूँकि हमारे सामने मौजूद नहीं हैं इसलिये उनके बारे में तवज्जोह के इरतकाज़ के लिये हम बुतों को अलामत के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। यह उस फ़लसफ़े का ख़ुलासा है जो इंडिया के डॉक्टर राधाकृष्णन वग़ैरह बयान करते रहे हैं, मगर उनके अवाम तो उन बुतों ही को मअबूद मानते हैं, उन्हीं की पूजा करते हैं, बुतों ही के आगे झुकते हैं, नज़राने देते हैं और उन्हीं से अपनी हाजात माँगते हैं।

## आयत 193

وَاِنۡ تَدۡعُوۡهُمۡ اِلَى
الۡهُدٰى لَا يَتَّبِعُوۡكُمۡ‌ؕ

*"और अग़र तुम उन्हें पुकारो रहनुमाई के लिये (कि तुम्हें रास्ता दिखा दें) तो वो तुम्हारी तरफ़ तवज्जोह ही नहीं कर सकेगें।"*

سَوَآءٌ عَلَيۡكُمۡ
اَدَعَوۡتُمُوۡهُمۡ اَمۡ اَنۡتُمۡ
صَامِتُوۡنَ ﴿۱۹۳﴾

*"बराबर है तुम्हारे लिये कि तुम उन्हें पुकारो या खामोश रहो।"*

## आयत 194

اِنَّ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ
دُوۡنِ اللّٰهِ عِبَادٌ
اَمۡثَالُكُمۡ

*"यक़ीनन जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के मा-सिवा वो भी तुम्हारी तरह के बंदे हैं"*

वो फ़रिश्ते हों या जिन्नात, देवी-देवता हों या औलिया अल्लाह, सब तुम्हारी तरह अल्लाह ही के बंदे हैं।

*"उनको पुकार कर देखो, फिर वो तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो।"*

فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

अगर तुम अपने इस दावे में सच्चे हो कि वो लायक़ परस्तिश हैं और कुछ इख़्तियार भी रखते हैं तो तुम्हारी पुकार या दुआ पर उनकी तरफ़ से कुछ ना कुछ जवाब तो ज़रूर मिलना चाहिये। बल्कि सूरह युनूस में तो यहाँ तक वाज़ेह किया गया है कि रोज़े महशर वो कहेंगे कि हमें तो ख़बर ही नहीं थी कि तुम लोग हमारी पूजा-पाठ करते रहे हो: {اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ} (आयत 29) यानि हम तो इस सब कुछ से ग़ाफ़िल थे कि तुम लोग हमें पुकारते रहे हो, हमारी दुहाईयाँ देते रहे हो। *"या शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी शयअन लिल्लाह"* जैसे मुशरिकाना विर्द करते रहे हो। अब अग़ली आयत में ख़ास तौर पर बुतों की तरफ़ इशारा है।

## आयत 195

*"क्या इनके पाँव है जिनसे ये चलते हों?"*

اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۡ

तुमने उनके पाँव अगर बना भी दिये हैं तो क्या वो एक क़दम चलने की सकत (ताक़त) भी रखते हैं?

اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۡ

*“या इनके हाथ हैं जिनसे ये पकड़ते हों?”*

اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۡ

*“या इनकी आँखे हैं जिनसे ये देखते हों?”*

اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ

*“या इनके कान हैं जिनसे ये सुनते हों?”*

قُلِ ادْعُوْا شُرَكَاۗءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ١٩٥

*“(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिए कि पुकार लो अपने सब शरीकों को, फिर मेरे ख़िलाफ़ चालें चलो (जो चल सकते हो) और मुझे कोई मोहलत ना दो।”*

रसूल ﷺ से डंके की चोट पर यह ऐलान कराया जा रहा है कि मैं तुमसे कोई दरख़्वास्त नहीं करता कि मेरे साथ नरमी करो या मुझे मोहलत दे दो। तुम अपने तमाम मअबूदों को बुला लो और मेरे ख़िलाफ़ जो भी अक़दाम कर सकते हो कर गुज़रो। यह इसी तहर का क़ौले फ़ैसल है जैसे हज़रत इब्राहीम अलै. से ऐलाने बराअत कराया गया था: {اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ} (अन्आम 78)।

## आयत 196

اِنَّ وَلِیِّۦَ اللّٰهُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ یَتَوَلَّى الصّٰلِحِیْنَ ۝١٩٦

*"यक़ीनन मेरा मददगार तो वह अल्लाह है जिसने यह किताब नाज़िल की, और सालेह बंदों का वही पुश्त पनाह है।"*

## आयत 197

وَالَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَاۤ اَنْفُسَهُمْ یَنْصُرُوْنَ ۝١٩٧

*"और जिन्हें तुम पुकार रहे हो उस (अल्लाह) को छोड़ कर वो तुम्हारी मदद की इस्तताअत ही नहीं रखते, और ना वो ख़ुद अपनी मदद कर सकते हैं।"*

## आयत 198

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا یَسْمَعُوْا ؕ

*"और अगर तुम उन्हें रहनुमाई कि लिये पुकारो तो वो सुन ना सकेगें।"*

وَتَرٰىهُمْ یَنْظُرُوْنَ اِلَیْكَ وَهُمْ لَا یُبْصِرُوْنَ ۝١٩٨

*"और तुम्हें ऐसा नज़र आता है कि वो तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं जबकि वो कुछ भी नहीं देखते।"*

## आयत 199

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ

*"(ऐ नबी ﷺ!) आप दरगुज़र को थाम लीजिए और भली बात का हुक्म देते रहिये"*

जैसा कि मक्की सूरतों के आखिर में अक्सर हुज़ूर ﷺ से ख़िताब और इल्तफ़ात (अनुग्रह) होता है यहाँ भी वही अंदाज़ है कि आप ﷺ इन लोगों से बहुत ज़्यादा बहस-मुबाहिसा में ना पड़ें, इनके रवैये से दरगुज़र करें और अपनी दावत जारी रखें।

وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

*"और जाहिलों से ऐराज़ करें।"*

यह जाहिल लोग आप ﷺ से उलझना चाहें तो आप ﷺ इनसे किनारा कशी कर लें। जैसा कि सूरह फ़ुरकान में फ़रमाया: {وَّإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا} (आयत 63) "और जब जाहिल लोग इन (रहमान के बंदों) से उलझना चाहते हैं तो वो उनको सलाम कहते (हुए गुज़र जाते) हैं। सूरह अल् क़सस में भी अहले ईमान का यही तरीक़ा बयान किया गया है: {سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ} (आयत 55) "तुम्हें सलाम हो, हम जाहिलों के मुँह नहीं लगना चाहते।" आयत ज़ेरे नज़र में एक दाई के लिये तीन बड़ी बुनियादी बातें बताई गई हैं। अफ़ू दरगुज़र से काम लेना, नेकी और भलाई की बात का हुक्म देते रहना और जाहिल यानि

जज़्बाती और मुश्तइल (उग्र) मिज़ाज लोगों से ऐराज़ करना।

## आयत 200

وَاِمَّا يَنۡزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيۡطٰنِ نَزۡغٌ فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ‌ؕ اِنَّهٗ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ۝۲۰۰

*"और अगर कभी आपको कोई चूक लग ही जाये शैतान की तरफ़ से तो अल्लाह की पनाह तलब करें, यक़ीनन वह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।"*

نزع और نزغ मिलते-जुलते हुरूफ़ वाले दो माद्दे हैं, इनमें सिर्फ़ "ع" और "غ" का फ़र्क़ है। نزع खींचने के मायने देता है जबकि نزغ के मायने हैं कचूका लगाना, उकसाना, वसवसा अंदाज़ी करना। यानि अगर बर-बनाए-तबअ-ए-बशरी कभी जज़्बात में इश्तआल (उत्तेजक) और गुस्सा आ ही जाये तो फ़ौरन भाँप लें कि यह शैतान की जानिब से एक चूक है, चुनाँचे फ़ौरन अल्लाह की पनाह माँगें। जैसा कि ग़जवा-ए-ओहद में हुज़ूर ﷺ को गुस्सा आ गया था और आप ﷺ की ज़बान मुबारक से ऐसे अल्फ़ाज़ निकले गये थे: ((كَيْفَ يُفْلِحُ قَوْمٌ خَضَبُوْا وَجْهَ نَبِيِّهِمْ بِالدَّمِ وَهُوَ يَدْعُوْهُمْ اِلَى اللّٰهِ))(16) "यह क़ौम कैसे फ़लाह (कामयाबी) पायेगी जिसने अपने नबी के चेहरे को खून से रंग दिया जबकि वह उन्हें अल्लाह की तरफ बुला रहा था!" यह आयत आगे चल कर सूरह हा मीम सजदा (आयत 36) में एक लफ़्ज़

(हुवा) के इज़ाफ़े के साथ दोबारा आयेगी: {اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ} कि यक़ीनन वही है सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला।

## आयत 201

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰۗىِٕفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا

*"जिन लोगों के अंदर तक़वा है उनको जब कोई बुरा ख़्याल छू जाता है शैतान के असर से तो वो चौकन्ने हो जाते हैं"*

यानि जिनके दिलों में अल्लाह का तक़वा जागुज़ीं होता है वो हर घड़ी अपने फ़िक्र व अमल का अहतसाब करते रहते हैं और अगर कभी आरज़ी तौर पर ग़फ़लत या शैतानी वसवसों से कोई मन्फ़ी असरात दिल व दिमाग़ में ज़ाहिर हों तो वो फ़ौरन सम्भल कर अल्लाह की तरफ़ रुजुअ करते हैं। जैसे ख़ुद नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: ((اِنَّهٗ لَيُغَانُ عَلٰى قَلْبِىْ وَاِنِّىْ لَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ فِى الْيَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ))(17) "मेरे दिल पर भी कभी-कभी हिजाब सा आ जाता है और मैं रोज़ाना सौ-सौ मर्तबा अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करता हूँ।" लेकिन यह समझ लीजिए कि हमारे दिल पर हिजाब और शय है जबकि रसूल ﷺ के क़ल्बे मुबारक पर हिजाब बिल्कुल और शय है। यह हिजाब भी उस हुज़ूरी के दर्जे में होगा जो हमारी लाखों हुज़ूरियों से बढ़ कर है। यहाँ सिर्फ़ बात की वज़ाहत के लिये इस हदीस का ज़िक्र किया गया है वरना जिस हिजाब का ज़िक्र हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया है हम ना तो

उसका अंदाज़ा कर सकते हैं कि इसकी नौइयत क्या होगी और ना ही उसकी मुशाबेहत हमारी किसी भी क़िस्म की क़ल्बी कैफ़ियात के साथ हो सकती है। हम ना तो हुज़ूर ﷺ के ताल्लुक़ मय अल्लाह की कैफ़ियत का तस्सवुर कर सकते हैं और ना ही मज़कूरा हिजाब की कैफ़ियत का। बस उस ताल्लुक़ मय अल्लाह की शिद्दत (intensity) में कभी ज़रा सी भी कमी आ गई तो हुज़ूर ﷺ ने उसे हिजाब से ताबीर फ़रमाया।

فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

*"और दफ्फ़तन उनकी आँखें खुल जाती हैं।"*

जब वो चौकन्ने हो जाते हैं तो उनकी वक़्ती ग़फ़लत दूर हो जाती है, आरज़ी मन्फ़ी असरात का बोझ ख़त्म हो जाता है और हक़ाइक फिर से वाज़ेह नज़र आने लगते हैं।

## आयत 202

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

*"और जो उन (शैतानों) के भाई हैं उन्हें वो घसीट कर ले जाते हैं दूर तक गुमराही में, फिर वो कुछ कमी नहीं करते।"*

शैतान का जो दोस्त बनेगा फिर उस पर शैतान का हुक्म तो चलेगा। श्यातीन अपने भाई बंदों को गुमराही में घसीटते हुए दूर तक ले जाते हैं और उसमें कोई कसर उठा नहीं रखते। यानि गुमराही की आखरी हद तक पहुँचा कर रहते हैं। जैसे बलअल बिन बाऊरा को शैतान ने अपना शिकार बनाया था और उसे गुमराही की आखरी हद तक पहुँचा कर दम लिया,

लेकिन जो अल्लाह के मुख़्लिस और मुत्तक़ी बंदे हैं उन पर शैतान का इख़्तियार नहीं चलता। उनकी कैफ़ियत वह होती है जो इससे पिछली आयत में बयान हुई है, यानि ज्योंहि मन्फ़ी असरात का साया उनको अपनी तरफ़ बढ़ता हुआ महसूस होता है वो एकदम चौंक कर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं।

# आयात 203 से 206 तक

وَاِذَا لَمۡ تَاۡتِهِمۡ بِاٰيَةٍ قَالُوۡا لَوۡلَا اجۡتَبَيۡتَهَا ؕ قُلۡ اِنَّمَاۤ
اَتَّبِعُ مَا يُوۡحٰٓى اِلَىَّ مِنۡ رَّبِّىۡ‌ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنۡ رَّبِّكُمۡ
وَهُدًى وَّرَحۡمَةٌ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۲۰۳﴾ وَاِذَا قُرِئَ
الۡقُرۡاٰنُ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ وَاَنۡصِتُوۡا لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ
﴿۲۰۴﴾ وَاذۡكُرْ رَّبَّكَ فِىۡ نَفۡسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيۡفَةً وَّدُوۡنَ
الۡجَـهۡرِ مِنَ الۡقَوۡلِ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ وَلَا تَكُنۡ مِّنَ
الۡغٰفِلِيۡنَ ﴿۲۰۵﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ عِنۡدَ رَبِّكَ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ
عَنۡ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوۡنَهٗ وَلَهٗ يَسۡجُدُوۡنَ ۩ ﴿۲۰۶﴾

आखिर में इन दोनों सूरतों के मज़ामीन के उमूद का ख़ुलासा बयान किया जा रहा है। जिस ज़माने में ये दो सूरतें नाज़िल हुईं उस वक़्त कुफ्फ़ारे मक्का की तरफ़ से यह मुतालबा तकरार के साथ किया जा रहा था कि कोई

निशानी लाओ, कोई मौअज्ज़ा दिखाओ। जिस तरह की हिस्सी मौअज्ज़ात हज़रत ईसा और हज़रत मूसा अलै. को मिले थे, उसी नौइयत के मौअज्ज़ात अहले मक्का भी देखना चाहते थे। जैसे-जैसे उनकी तरफ़ से मुतालबात आते रहे, साथ-साथ उनके जवाबात भी दिये जाते रहे। अब इस सिलसिले में आखरी बात हो रही है।

## आयत 203

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ

*"(ऐ नबी ﷺ) जब आप इनके पास कोई मौअज्ज़ा नहीं लाते तो ये कहते हैं कि आप क्यों ना उसे चुन कर ले आए?"*

कुफ्फ़ारे मक्का का कहना था कि जब आप (ﷺ) का दावा है कि आप अल्लाह के रसूल हैं, उसके महबूब हैं तो आपके लिये मौअज्ज़ा दिखाना कौन सा मुश्किल काम है? आप हमारे इत्मिनान के लिये कोई मौअज्ज़ा छाँट कर ले आएँ! इस सिलसले में तफ़्सीर कबीर में इमाम राज़ी रहि. ने एक वाक़या नक़ल किया है कि नबी अकरम ﷺ का एक फूफी ज़ाद भाई था, जो अग़रचे ईमान तो नहीं लाया था मगर अक्सर आप ﷺ के साथ रहता और आप ﷺ से तआवुन (सहयोग) भी करता था। उसके इस तरह के रवैय्ये से उम्मीद थी कि एक दिन वह ईमान भी ले आयेगा। एक दफ़ा किसी महफ़िल में सरदाराने क़ुरैश ने मौअज्ज़ात के बारे में आप ﷺ से बहुत बहस व तकरार की कि आप नबी हैं तो अभी मौअज्ज़ा दिखायें, यह नहीं तो वह दिखा दें, ऐसे नहीं तो वैसे करके दिखा दें! (इसकी तफ़सील सूरह बनी इस्राईल में भी आयेगी) मगर आप ﷺ ने उनकी हर बात पर यही

फ़रमाया कि मौअज्ज़ा दिखाना मेरे इख़्तियार में नहीं है, यह तो अल्लाह का फ़ैसला है, जब अल्लाह तआला चाहेगा दिखा देगा। इस पर उन्होंने गोया अपने ज़अम (ख्याल) में मैदान मार लिया और आप ﷺ पर आखरी हुज्जत क़ायम कर दी। इसके बाद जब हुज़ूर ﷺ वहाँ से उठे तो वहाँ शोर मच गया। उन लोगों ने क्या-क्या और किस-किस अंदाज़ में बातें नहीं की होंगी और उसके अवाम पर क्या असरात हुए होंगे। इसका अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि आप ﷺ के उस फूफी ज़ाद भाई ने कहा कि आज तो गोया आपकी क़ौम ने आप पर हुज्जत क़ायम कर दी है, अब मैं आपका साथ नहीं दे सकता।

इस वाक़िये से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि यह मौज़ूअ उस माहौल में किस क़द्र अहमियत इख़्तियार कर गया था और उस तरह की सूरते हाल में आप ﷺ किस क़द्र दिल गिरफ्ता हुए होंगे। इसका कुछ नक़्शा सूरतुल अनआम आयत 35 में इस तरह खींचा गया है:

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِى الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ

*"और (ऐ नबी ﷺ) अगर आप पर बहुत शाक़ गुज़र रहा है इनका ऐराज़ तो अगर आप में ताक़त है तो ज़मीन में कोई सुरंग बना लीजिए या आसमान पर सीढ़ी लगा लीजिए और इनके लिये कहीं से कोई निशानी ले आइये! (हम तो नहीं दिखायेगें!)*

यह पसमंज़र है उन हालात का जिसमें फ़रमाया जा रहा है कि मौअज्ज़ात के मुतालबात में आप ﷺ उनको बताएँ कि

मौज्ज़ा दिखाने या ना दिखाने का फ़ैसला अल्लाह ने करना है, मुझे इसका इख़्तियार नहीं है।

قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ

*"कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ पैरवी कर रहा हूँ उसकी जो मेरी तरफ़ वही की जा रही है मेरे रब की तरफ़ से।"*

هٰذَا بَصَاۗىِٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٢٠٣

*"यह तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत अफ़रोज़ बातें हैं, और यह हिदायत और रहमत है उन लोगों के हक़ में जो ईमान ले आएँ।"*

मैं आप लोगों के सामने जो पेश कर रहा हूँ, यह वही कुछ है जो अल्लाह ने मुझ पर वही किया है और मैं खुद भी इसी की पैरवी कर रहा हूँ। इससे बढ़ कर मैंने कभी कोई दावा किया ही नहीं।

## आयत 204

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٢٠٤

*"और जब क़ुरान पढ़ा जा रहा हो तो उसे पूरी तवज्जोह के साथ सुना करो और ख़ामोश रहा करो ताकि तुम पर रहम किया जाये।"*

سَمِعَ, يَسْمَعُ के मायने हैं सुनना, जबकि اِسْتِمَاع के मायने हैं पूरी तवज्जोह के साथ सुनना, कान लगा कर सुनना। जो हज़रात जहरी नमाज़ों में इमाम के पीछे क़िराअत ना करने

के क़ायल हैं वो इसी आयत को बतौर दलील पेश करते हैं, क्योंकि इस आयत की रू से तिलावते क़ुरान को पूरी तरह इरतकाज़े तवज्जोह के साथ सुनना फ़र्ज़ है और साथ ही ख़ामोश रहने का हुक्म भी है। जबकि नमाज़ के दौरान ख़ुद तिलावत करने की सूरत में सुनने की तरफ़ तवज्जोह नहीं रहेगी और ख़ामोश रहने के हुक्म पर भी अमल नहीं होगा।

## आयत 205

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً

*"और अपने रब को याद करते रहा करो अपने जी ही जी में, आजिज़ी और ख़ौफ के साथ"*

इस आजिज़ी की इन्तहा और अब्दियत कामिला का मज़हर तो वह दुआ-ए-मासूर है जो मैंने नक़ल की है "मुसलमानों पर क़ुरान मजीद के हुक़ूक़" नामी अपने किताबचे के आख़िर में। इन दोनों आयात (क़ुरान की अज़मत और दुआ में आजिज़ी) के हवाले से इस दुआ के मन्दर्जा ज़ेल (निम्नलिखित) अल्फ़ाज़ को अपने क़ल्ब की गहराईयों में उतारने की कोशिश करें:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ

*"ऐ अल्लाह मैं तेरा बंदा हूँ!"*

وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ

*"तेरे एक नाचीज़ गुलाम और अदना कनीज़ का बेटा हूँ!"*

| | |
|---|---|
| *"और मुझ पर तेरा ही कामिल इख़्तियार है, मेरी पेशानी तेरे ही हाथ है।"* | وَفِیْ قَبْضَتِكَ ، نَا صِیَتِیْ بِیَدِكَ |
| *"नाफ़िज़ है मेरे बारे में तेरा हर हुक्म, और अदल है मेरे बारे में तेरा हर फ़ैसला।"* | مَاضٍ فِیَّ حُكْمُكَ ، عَدْلٌ فِیَّ قَضَاءُكَ |
| *"मैं तुझसे दरख़्वास्त करता हूँ तेरे हर उस इस्म (नाम) के वास्ते से जिससे तूने अपनी ज़ाते मुक़द्दस को मौसूम फ़रमाया"* | اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ ، سَمَّیْتَ بِهٖ نَفْسَكَ |
| *"या अपनी किसी किताब में नाज़िल फ़रमाया"* | اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ كِتَابِكَ |
| *"या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को तल्क़ीन फ़रमाया"* | اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ |
| *"या उसे अपने मख़्सूस ख़ज़ाना-ए-ग़ैब ही में महफ़ूज़ रखा"* | اَوِاسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِیْ مَكْنُوْنِ الْغَیْبِ عِنْدَكَ |

اَنۡ تَجۡعَلَ الۡقُرۡاٰنَ رَبِيۡعَ قَلۡبِيۡ وَ نُوۡرَ صَدۡرِيۡ وَجِلَاءَ حُزۡنِيۡ وَذَهَابَ هَمِّيۡ وَغَمِّيۡ

*"कि तू बना दे क़ुरान मजीद को मेरे दिल की बहार और मेरे सीने का नूर और मेरे रंज व हज़्न की जिला और मेरे तफ़क्कुरात और गमों के इज़ाले का सबब!"* (18)

اٰمِيۡن يَا رَبَّ الۡعَالَمِيۡنَ!

*"ऐसा ही हो ऐ तमाम जहानों के परवरदिगार!"*

وَّدُوۡنَ الۡجَهۡرِ مِنَ الۡقَوۡلِ

*"और बुलंद आवाज़ से नहीं (पस्त आवाज़ से)"*

अलबत्ता जब आदमी दुआ माँगे तो इस तरह माँगे कि ख़ुद सुन सके ताकि उसकी समाअत भी उससे इस्तफ़ादा करे। इसी तरह अगर कोई शख़्स अकेला नमाज़ पढ़ रहा हो तो क़िरात ऐसे करे कि ख़ुद सुन सके, अग़रचे सिर्री नमाज़ ही क्यों ना हो।

بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ

*"(और इस तरह आप अपने रब का ज़िक्र करते रहें) सुबह के वक़्त भी और शाम के अवक़ात में भी"*

जैसे सूरह अल् अनआम की पहली आयत की तशरीह के ज़िमन में ज़िक्र आया था कि लफ़्ज़ नूर क़ुरान में हमेशा

वाहिद आता है जबकि ज़ुल्मात हमेशा जमा ही आता है, इसी तरह लफ़्ज़ ग़ुदुव्व (सुबह) भी हमेशा वाहिद और आसाल (शाम) हमेशा जमा ही आता है। यह असील की जमा है। इसमें इशारा है कि सुबह की नमाज़ तो एक ही है यानि फ़जर, जबकि सूरज ज़रा मग़रिब की तरफ़ ढलना शुरू होता है तो पै दर पै नमाज़ें हैं, जो रात तक पढ़ी जाती रहती हैं, यानि ज़ोहर, अस्र, मग़रिब और इशा। सूरह बनी इस्राईल की आयत 78 {اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِدُلُوۡکِ الشَّمۡسِ اِلٰی غَسَقِ الَّیۡلِ} में भी इसी तरफ़ इशारा है।

وَلَا تَكُنۡ مِّنَ الۡغٰفِلِيۡنَ ﴿۲۰۵﴾

*"और ग़ाफ़िलों में से ना हो जाइये।"*

## आयत 206

اِنَّ الَّذِيۡنَ عِنۡدَ رَبِّكَ

*"बेशक वो जो आपके रब के पास हैं"*

यानि मलाउलआला जो मलाइका मुक़र्रबीन पर मुश्तमिल है, जिसका नक़्शा अमीर खुसरो रहि. ने अपने इस ख़ूबसूरत शेअर में इस तरह बयान किया है:

*ख़ुदा ख़ुद मीरे महफ़िल बूद अंदर ला मकाँ ख़ुसरो*
*मुहम्मद ﷺ शमा-ए-महफ़फ़िल बूद शब जाये कि मन बूदम!*

यानि ला मकाँ कि वह महफ़िल जिसका मीर-ए-महफ़िल ख़ुद अल्लाह तआला है और जहाँ शुरकाए महफ़िल मलाइका मुक़र्रबीन हैं और मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ (रूहे

मुहम्मदी ﷺ) को उस महफ़िल में गोया चिराग और शमा की हैसियत हासिल है। अमीर ख़ुसरो कहते हैं कि रात मुझे भी उस महफ़िल में हाज़री का शर्फ़ हासिल हुआ।

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

*"वो उसकी इबादत से इस्तकबार नहीं करते, और उसकी तस्बीह करते रहते हैं, और उसके लिए सज्दे करते रहते हैं।"*

بارك الله لی ولكم فی القرآن العظيم ونفعنی وایاكم بالآيات والذكر الحكيم۔

बारक अल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरानुल अज़ीम, व नफ़ाअनी, व इय्याकुम बिल्आयाति वल् ज़िकरुल हकीम!!

❀ ❀ ❀

# सूरतुल अन्फ़ाल

## तम्हीदी कलिमात

सूरतुल अन्फ़ाल मदनी सूरत है और इसका सूरतुत्तौबा (मदनी) के साथ जोड़ा होने का ताल्लुक़ है। इस ग्रुप की चारों सूरतों में मायनवी रब्त यूँ है कि पहली दो मक्की सूरतों (अल अनआम और अल आराफ़) में मुशरिकीने अरब पर रसूल अल्लाह ﷺ की मुसलसल दावत के ज़रिये इत्मामे हुज्जत हुआ, और बाद की दो मदनी सूरतों (अल अन्फ़ाल और अल तौबा) में उस इत्मामे हुज्जत के जवाब में उन लोगों पर अज़ाब का तज़किरा है। मौज़ू की इस मुनासबत की बिना पर ये चारों सूरतें दो-दो के दो जोड़ों के साथ एक ग्रुप बनाती हैं।

सूरतुल अन्फ़ाल गज़वा-ए-बदर के मुत्तसलन बाद और सूरह आले इमरान के अक्सर हिस्से से पहले नाज़िल हुई। चुनाँचे इस सूरत के मुताअले से पहले गज़वा-ए-बदर के पसमंज़र के बारे में जानना बहुत ज़रूरी है। और इस पसमंज़र के मुताअले से भी पहले नबी अकरम ﷺ की दावती व इन्क़लाबी तहरीक के मनहज व मराहिल के हवाले से गज़वा-ए-बदर की ख़ुसूसी अहमियत और हैसियत का तअय्युन भी ज़रूरी है। चुनाँचे जब हम गज़वा-ए-बदर को क़ुरान के फ़लसफ़ा-ए-तज़किर बिअय्यामिल्लाह और सूरतुल अन्फ़ाल के ख़ुसूसी तनाज़र में देखते हैं तो इसके

मंदरजाज़ेल (निम्नलिखित) दो बहुत अहम पहलु हमारे सामने आते हैं:

**1) मुशरिकीने मक्का पर अज़ाब का पहला कौड़ा:** अल्लाह तआला की सुन्नत के मुताबिक़ रसूलों का इन्कार करने वाली अक़वाम पर इज्तमाई तौर पर अज़ाबे इस्तेसाल नाज़िल होता रहा है। इसी क़ानूने क़ुदरत का इतलाक़ हिजरत के बाद मुशरिकीने मक्का पर भी होने वाला था। नबी अकरम ﷺ ने बारह-तेरह बरस तक मुख्तलिफ़ अंदाज़ में दावत देकर अपनी क़ौम पर इत्मामे हुज्जत कर दिया था। इसके बाद आप ﷺ के लिये हिजरत का हुक्म गोया एक वाज़ेह इशारा था कि मुशरिकीने मक्का अपने मुसलसल इन्कार के बाइस अब अज़ाब के मुस्तहिक़ हो चुके हैं, लेकिन हिकमते इलाही के पेशेनज़र क़ुरैश का मामला अपनी नौइयत में इस लिहाज़ से मुनफ़रिद रहा कि उन पर अज़ाब एक बारगी टूट पड़ने की बजाय क़िस्तों में नाज़िल हुआ। लिहाज़ा इस अज़ाब की क़िस्त अव्वल उन पर बदर के मैदान में नाज़िल हुई। उन्हें हरमे मक्का से निकाल कर मैदाने बदर में बिल्कुल इसी तरह से लाया गया जैसे आले फ़िरऔन को उनके महलात से निकाला गया था और समंदर में लाकर ग़र्क़ कर दिया गया था।

मैदाने बदर में क़ुरैश के सत्तर सरदार मारे गए, सत्तर अफ़राद क़ैदी बने और मुतअद्दिद ज़ख़्मी हुए। यह अंजाम उन जंगजुओं का हुआ जो फने हर्ब (जंग) की महारत और बहादुरी में पूरे अरब में मशहूर थे, अपने दौर के जदीद तरीन अस्लाह से लैस और तादाद में अपने हरीफ़ लश्कर से तीन गुना थे। उनके मुक़ाबले में मुसलमानों की बे-सरो-सामानी का आलम यह था कि तीन सौ तेरह में से सिर्फ़ आठ अफ़राद

के पास तलवारें थीं। इन निहत्थे तीन सौ तेरह मुजाहिदीन के हाथों एक हज़ार के मुस्ल्लाह लश्कर की यह ज़िल्लत और हज़ीमत दर असल क़ुरैशे मक्का के लिये अज़ाबे इलाही की पहली क़िस्त थी, जिसका ज़िक्र सूरतुल अन्फ़ाल में हुआ है। (इस अज़ाब का आख़री मरहला सन 9 हिजरी में आया, जिसका ज़िक्र सूरतुत्तौबा में है।)

**2) गलबा-ए-दीन की जद्दो-जहद का हतमी और नागुज़ीर मरहला (इक़दाम):** गज़वा-ए-बदर रसूल अल्लाह ﷺ की गलबा-ए-दीन की जद्दो जहद के पाँचवें और आख़री मरहले यानि हक़ व बातिल के दरमियान बाक़ायदा तसादुम का नुक़्ता-ए-आग़ाज़ था और इस मरहले को सर करने के बाद यह तहरीक बिल आख़िर तारीखे इंसानी के अज़ीम तरीन और जामेअ तरीन इन्क़लाब पर मुन्तज (समापन) हुई। इस तहरीक के इब्तदाई चार मराहिल यानि दावत, तंज़ीम, तरबियत और सबरे महज़ तो मक्का मुकर्रमा में तय हो गए थे। इस सिलसिले के चौथे मरहले (सबरे महज़) का तज़किरा सूरतुन्निसा की आयत 77 में (कुफ्फ़ू अय्दियाकुम) के अल्फ़ाज़ में किया गया है कि अपने हाथ बाँध कर रखो, यानि तुम्हारे टुकड़े भी कर दिये जायें तो भी तुम्हें हाथ उठाने की इजाज़त नहीं है, हत्ता के मदाफ़आना कार्यवाही की भी इजाज़त नहीं है।

इन चार मराहिल को कामयाबी से तय करने का नतीजा था कि नबी अकरम ﷺ के पास जाँनिसारों की एक मुख़्तसर मगर इन्तहाई मज़बूत जमाअत तैयार हो गई थी, जो सर्द व गरम चशीदा थे, हर तरह की सख्तियाँ झेल चुके थे, हर क़िस्म की क़ुर्बानियाँ दे चुके थे और उनके इख्लास मअ अल्लाह (अल्लाह के साथ ईमानदारी) में किसी

क़िस्म के शक व शुबह की गुन्जाइश नहीं थी। इस तरबियत याफ्ता, मुनज़्ज़म और मज़बूत जमाअत की तैयारी के बाद अब बातिल को ललकारने का वक़्त क़रीब आ चुका था। लिहाज़ा मदीने की तरफ़ एक खिड़की खोल कर दारुल हिजरत का इंतेज़ाम कर दिया गया, ताकि यह सारी क़ुव्वत एक जगह मुजतमाअ (इकट्ठी) होकर आख़री मरहले (इक़दाम) के लिये तैयारी कर सके और यही वजह थी कि यह हिजरत तमाम अहले ईमान पर फ़र्ज़ कर दी गई थी। इस पसमंज़र में अगर देखा जाये तो यह हिजरत फ़रार (flight) नहीं थी, जैसा कि मगरबी मौरखीन (western historian) इसे यह नाम देते हैं, बल्कि बाक़ायदा एक सोची-समझी, तयशुदा हिकमते अमली थी, जिसके तहत इस तहरीक के हेडक्वार्टर्ज़ को मुतबादल base की तलाश में मक्का से मदीना मुन्तक़िल किया गया, ताकि वहाँ से फ़ैसलाकुन अंदाज़ में इक़दाम किया जा सके। (तफ़सील के लिये मुलाहिज़ा हो इस मौज़ू पर मेरी किताब "मन्हजे इन्क़लाबे नबवी صلى الله عليه وسلم")।

यहाँ पर एक बहुत अहम नुक्ता वज़ाहत तलब है और वह यह कि अट्ठारहवीं सदी में मगरबी उलूम व तहज़ीब की शदीद यलगार के सामने मुसलमान हर मैदान में पसपा होते चले गए, चुनाँचे जब मगरिब की तरफ़ से यह इल्ज़ाम लगाया गया कि *"बू-ए-ख़ूँ आती है इस क़ौम के अफ़सानों से!"* यानि यह कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है तो इसके जवाब में हमारे कुछ बुज़ुर्गों की तरफ़ से पूरे ख़ुलूस के साथ मअज़रत ख्वाहाना अंदाज़ इख्तियार किया गया। शायद यह उस वक़्त के हालात की वजह से मजबूरी भी थी। ये वह ज़माना था जब बर्रे सगीर में महकूमी व गुलामी की

हालत में मुसलमान ख़ुसूसी तौर पर अंग्रेज़ों के ज़ुल्मो सितम का निशाना बन रहे थे। इन हालात में कुछ मुसलमान रहनुमा एक तरफ़ अपनी क़ौम के तहफ्फ़ुज़ के बारे में फ़िक्रमंद थे तो दूसरी तरफ़ वह इस्लाम और सीरतुन्नबी ﷺ का दिफ़ा (बचाव) भी करना चाहते थे। चुनाँचे इस इल्ज़ाम के जवाब में यह मौक़फ़ इख्तियार किया गया कि नबी अकरम ﷺ ने खुद से कोई ऐसा जारहाना (आक्रामक) इक़दाम नहीं किया, बल्कि तमाम जंगे आप ﷺ पर मुस्सलत की गई थीं और आप ﷺ ने तमाम जंगें अपने दिफ़ा में लड़ीं।

हिन्दुस्तान में इन ख़ुतूत पर सबसे ज़्यादा काम अल्लामा शिबली नौमानी रहि. ने किया है। वह सर सय्यद अहमद खान के ज़ेरे असर थे और ये सब लोग मिल कर जदीद मगरबी इफ़कार व ख्यालात, तहज़ीब व तमद्दुन और इक़दार व नज़रियात के तूफ़ान का ख़ुलूसे नीयत से मुक़ाबला कर रहे थे, जो बरहाल कोई आसान काम नहीं था। लिहाज़ा इस सिलसिले में उन्हें मअज़रत ख्वाहाना (apologetic) अंदाज़ इख्तियार करना पड़ा। यही वजह है कि अल्लामा शिबली रहि. ने "सीरतुन्नबी ﷺ" तहरीर करते हुए गज़वा-ए-बदर से पहले की आठ मुहिम्मात (जिनमें चार गज़वात और चार सराया थीं) को तक़रीबन नज़रअंदाज़ कर दिया है, ताकि यह साबित ना हो कि पहल का इक़दाम (initiative) हुज़ूर अकरम ﷺ की तरफ़ से हुआ था।

मज़कूरा मसलिहत आमेज़ हिकमते अमली एक ख़ास दौर का तक़ाज़ा थी, लेकिन अब हालात मुख्तलिफ़ हैं। आज इस्लाम का यह फ़िक्र व फ़लसफ़ा पूरी वज़ाहत के साथ

दुनिया के सामने लाने की ज़रूरत है कि इस्लाम एक मुकम्मल दीन है जो इन्सानी मआशरे में अमली तन्फ़ीज़ के लिये अपना ग़लबा चाहता है और हुज़ूर ﷺ का मक़सदे बेअसत ही दीन को ग़ालिब करना था। इसी तरह दीन को ग़ालिब करने की इस इन्क़लाबी जद्दो जहद की आज भी ज़रूरत है। यह जद्दो जहद जब भी और जहाँ भी शुरू की जायेगी इसके लिये मुनज़्ज़म अंदाज़ में तैयारी की ज़रूरत होगी। और जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है, सीरते मुताहराह की रोशनी में तैयारी का यह कठिन सफ़र बतदरीज पाँच मराहिल तय करता हुआ नज़र आता है, यानि दावत, तंज़ीम, तरबियत, सबरे महज़ और इक़दाम। अगर पहले चार मराहिल कामयाबी से तय कर लिये जाएँ तो उसके बाद यह जद्दो जहद आखरी और फ़ैसलाकुन मरहले में दाखिल हो जाती है जिसमें बातिल को ललकार कर उससे टक्कर ली जाती है। इसकी मन्तक़ी (लॉजिकल) वजह यह है कि हक़ और बातिल दो ऐसी मुतज़ाद (विरोधी) और मुतहारिब (उग्रवादी) क़ुव्वतें हैं जो मुतवाज़ी (समानान्तर) अंदाज़ में नहीं चल सकतीं। दोनों में बक़ा-ए-बाहमी (co-existence) के उसूल पर मफ़ाहमत (सुलह) नहीं हो सकती। इनमें से एक क़ुव्वत ग़ालिब होगी तो दूसरी को लाज़मी तौर पर मगलूब होना पड़ेगा। लिहाज़ा अगर हक़ और अहले हक़ ताक़तवर हैं तो वो किसी क़ीमत पर बातिल से समझौता नहीं कर सकते। यही वजह है कि हज़रत अबुबकर सिद्दीक़ रज़ि. ने हालात की नज़ाकत के तहत मुनकरीने ज़कात के साथ रिआयत करने के मशवरे के जवाब में फ़रमाया था: اَيُبَدَّلُ الدِّيْنُ وَاَنَا حَيٌّ (क्या दीन में तरमीम की जाएगी जबकि मैं अभी ज़िन्दा हूँ!)। लिहाज़ा सूरतुल

अन्फ़ाल का मुताअला करते हुए इस फ़लसफ़े को पूरी वज़ाहत के साथ समझना और ज़हन में रखना बहुत ज़रूरी है।

**<u>ग़ज़वा-ए-बदर का पसमंज़र:</u>** मदीना तशरीफ़ लाने के बाद रसूल अल्लाह ﷺ ने दाखली इस्तेहकाम पर तरजीही तौर पर तवज्जो मरकूज़ फ़रमाई। इस सिलसिले में पहले छ: माह में आप ﷺ ने तीन इन्तहाई अहम उमूर सरअंजाम दिए। अव्वलन आप ﷺ ने मस्जिदे नबवी की तामीर मुकम्मल करवाई, जिसकी सूरत में आप ﷺ को एक ऐसा मरकज़ मयस्सर आ गया जो ब-यक-वक़्त (एक ही वक़्त में) एक गवर्नमेंट सेक्रेटरियेट भी था और पार्लिमेंट हाउस भी, दारुलउलूम और खानक़ाह भी था और इबादतगाह भी। सानियन (दूसरा), आप ﷺ ने मुहाजिरीन और अंसार में मुवाखात (भाई-भाई) का रिश्ता क़ायम करा दिया, जिससे ना सिर्फ़ मुहाजिरीन के मआशी व मआशरती मसाइल हल हो गए, बल्कि मदीने में इन दोनों फ़रीक़ों के अफ़राद पर मुशतमिल एक ऐसा मआशरा वजूद में आ गया जिसके अफ़राद बाहमी मोहब्बत और इख़लास के गहरे रिश्ते में मंसलिक (attached) थे। इस सिलसिले का तीसरा और अहम तरीन कारनामा मीसाक़े मदीना था। यानि यहूदी क़बाइल के साथ मदीने के मुशतरिक़ दिफ़ा का मुआहिदा, जिसके तहत हमले की सूरत में मदीने के यहूदी क़बाइल मुसलमानों के साथ मिल कर शहर का दिफ़ा करने के पाबंद हो गए।

दाख़ली महाज़ पर इन मामलात से फ़ारिग होने के बाद हिजरत के सातवें माह से आप ﷺ ने मदीने के ऐतराफ़ व जवानिब में छापा मार दस्ते भेजने शुरू कर दिये। क़ुरैशे

मक्का की मईशत का दारोमदार तिजारत पर था और मक्का से यमन और शाम की तरफ़ उनके तिजारती क़ाफ़िले सारा साल रवाँ-दावाँ रहते थे। ये दोनों तिजारती शाहराहें क़ुरैशे मक्का की मईशत के लिये शह रग की हैसियत रखती थीं। आप ﷺ ने इन दोनों शाहराहों पर अपने फ़ौजी दस्तों की नक़्ल व हरकत से क़ुरैश को यह बावर करा दिया कि उनकी ये मआशी शह रग अब हमारी ज़द में है और हम जब चाहें इसे काट सकते हैं। अपनी मईशत के बारे में ऐसे खदशात का तस्सवुर क़ुरैश के लिये बहुत ही भयानक था। गज़वा-ए-बदर (2 हिजरी) से पहले, डेढ़ साल के दौरान में ऐसी आठ मुहिम्मात का भेजा जाना तारीख़ से साबित है। इनमें से चार मुहिम्मात में रसूल अल्लाह ﷺ की ब-नफ्से नफ़ीस शिरकत भी शाबित है। आप ﷺ जिन-जिन इलाक़ों में तशरीफ़ ले गए वहाँ पर आबाद क़बाइल के साथ आप ﷺ ने दोस्ती के मुआहिदे कर लिये, इसका नतीजा यह हुआ कि मदीने के ऐतराफ़ व जवानिब में आबाद अक्सर क़बाइल जो पहले क़ुरैश के दोस्त थे अब मुसलमानों के हलीफ बन गए, जबकि कुछ क़बाइल ने गैर जानिबदार रहने के मुआहिदे कर लिये, और यूँ आप ﷺ की कामयाब हिकमते अमली से मदीने के मज़ाफ़ाती इलाक़ों से क़ुरैश का दायरा-ए-असर सुकड़ने लगा। क़ुरैश के लिये मक्का की मआशी नाकाबंदी का खदशा ही कुछ कम परेशान कुन नहीं था कि अब उन्हें इस इलाक़े से अपने सियासी असर व रसूख की बिसात भी लिपटती हुई दिखाई देने लगी, चुनाँचे “तंग आमद बजंग आमद” के मिस्दाक़ वह मदीने पर एक फ़ैसला कुन हमला करने के बारे में संजीदगी से मंसूबा बंदी करने लगे। इसी दौरान उनमें दो ऐसे वाक़िआत हुए जिनकी वजह

से हालात तेज़ी से ख़राब होकर गज़वा-ए-बदर पर मुन्तज हुए।

पहला वाक़िया यूँ हुआ कि हुज़ूर ﷺ ने एक छोटा सा दस्ता नख्ला के मक़ाम पर भेजा जो मक्का और ताइफ़ के दरमियान वाक़ेअ है। उन लोगों को यह मिशन सौंपा गया कि वह उस इलाक़े में मौजूद रहें और क़ुरैश की नक़्ल व हरकत के बारे में मुत्तलाअ करते रहें। इत्तेफ़ाक़ से इस दस्ते की मुठभेड़ क़ुरैश के एक तिजारती क़ाफ़िले से हो गई। मुक़ाबले में एक मुशरिक अब्दुल्लाह बिन हज़रमी मारा गया जबकि एक दूसरे मुशरिक को क़ैद कर लिया गया। माले ग़नीमत और क़ैदी के साथ यह लोग जब मदीना पहुँचे तो नबी अकरम ﷺ ने सख्त नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया, क्योंकि ऐसा करने का उन्हें हुक्म नहीं दिया गया था, लेकिन जो होना था वह हो चुका था। यह गोया मुसलमानों की तरफ़ से क़ुरैश के ख़िलाफ़ पहला बाक़ायदा मुसल्लह इक़दाम था जिसमें उनका एक शख्स भी क़त्ल हुआ। लिहाज़ा इस वाक़िये से माहौल की कशीदगी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया।

दूसरा वाक़िया अबु सूफ़ियान के क़ाफ़िले से मुताल्लिक़ हुआ। यह एक बहुत बड़ा तिजारती क़ाफ़िला था जो मक्का से शाम की तरफ़ जा रहा था। नबी अकरम ﷺ ने इसका तअक्क़ुब किया, मगर वह लोग बच निकलने में कामयाब हो गए। जब यह क़ाफ़िला पचास हज़ार दीनार की मालियत के साज़ो सामान के साथ शाम से वापस आ रहा था तो मुम्किना ख़तरे के पेशे नज़र अबु सूफ़ियान ने क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के लिये दोहरी हिकमते अमली इख्तियार की। उन्होंने एक तरफ़ तो एक तेज़ रफ़्तार सवार को अपने

तहफ्फ़ुज़ की ख़ातिर मदद हासिल करने के लिये मक्का रवाना किया और दूसरी तरफ़ मामूल का रास्ता जो बदर के क़रीब से होकर गुज़रता था, उसको छोड़ कर क़ाफ़िले को मदीने से दूर साहिल समन्दर के साथ-साथ निकाल कर ले गये। बरहाल इत्तेफ़ाक़ से मक्के में ये दोनों इश्तेआल अंगेज़ ख़बरें एक के बाद एक पहुँचीं। एक तरफ़ नख्ला से जान बचा कर भागने वाले अफ़राद रोते-पीटते अब्दुल्लाह बिन हज़रमी के क़त्ल की ख़बर लेकर पहुँच गए और दूसरी तरफ़ अबु सूफ़ियान का ऐलची भी दुहाई देते हुए आ पहुँचा कि भागो! दौड़ो! कुछ कर सकते हो तो करो, तुम्हारा क़ाफ़िला मुसलमानों के हाथों लुटने वाला है। इन ख़बरों से मक्के में तो गोया आग भड़क उठी। चुनाँचे फ़ौरी तौर पर एक हज़ार का लश्कर तैयार किया गया जिसके लिये एक सौ घोड़ों पर मुश्तमिल रसाला और नौ सौ ऊँट मुहैय्या किये गए, वाफ़र मिक़दार में सामाने रसद व अस्लाह वगैरह भी फ़राहम किया गया।

**<u>मशावरत के बारे में ग़लत फहमी की वज़ाहत:</u>** गज़वा-ए-बदर से पहले रसूल अल्लाह ﷺ की सहाबा किराम रज़ि. के साथ जिस मशावरत का ज़िक्र क़ुरान हकीम और तारीख़ में मिलता है उसके बारे में अक्सर लोग मुगालते का शिकार हुए हैं। इस गलतफ़हमी की वजह यह है कि हुज़ूर ﷺ ने दो मौक़ों और दो मक़ामात पर अलग-अलग मशावरत का इन्अक़ाद फ़रमाया था मगर इसे अक्सर व बेशतर लोगों ने एक ही मशावरत समझा है।

पहली मजलिसे मशावरत मदीने में हुई और इसका मक़सद यह फ़ैसला करना था कि अबु सूफ़ियान के क़ाफ़िले को शाम से वापसी पर रोकना चाहिये या नहीं? और जब

मशवरे के बाद इस सिलसिले में इक़दाम करना तय पाया तो आप ﷺ कुछ सहाबा रज़ि. को लेकर इस मक़सद के लिये मदीने से रवाना हो गए। चूँकि उस वक़्त तक जंग के बारे में कोई गुमान तक नहीं था इसलिये इस मुहिम के लिये कोई ख़ास तैयारी नहीं की गई थी। जिसके हाथ में जो आया वह लेकर चल पड़ा। चुनाँचे दो घोड़ों, आठ तलवारों और कुछ छोटे-मोटे हथियारों के साथ चंद सहाबा की मईयत (साथ) में जब आप ﷺ मक़ामे सफ़राअ पर पहुँच गए तो आप ﷺ को इत्तलाअ मिली कि अबु जहल एक हज़ार का लश्कर लेकर मक्का से चल पड़ा है। और इसी अशना में अल्लाह ताअला की तरफ़ से वही भी आ गई कि जुनूब (मक्का) की तरफ़ से एक लश्कर आ रहा है जो कील कांटे से लैस है जबकि शिमाल की जानिब से क़ाफ़िला, और मेरा यह वादा है कि इन दोनों में से एक पर आप ﷺ को ज़रूर फ़तह हासिल होगी। लिहाज़ा अहले ईमान को खुशख़बरी भी दें और इनसे मशवरा भी करें। चुनाँचे इस वही के बाद मक़ामे सफ़राअ पर आप ﷺ ने यह फ़ैसला करने के लिये दूसरी मशावरत का इन्तअक़ाद फ़रमाया कि पहले लश्कर के मुक़ाबले के लिये जाया जाए या क़ाफ़िले को रोकने के लिये? चुनाँचे जिन मुहक्क़िक़ीन और मुफ़स्सिरीन से इस पसमंज़र की तहक़ीक़ में कोताही हुई है और उन्होंने मशावरत के दो वाक़िआत को एक ही वाक़िया समझा है, उन्हें इस सूरत की मुतालक़ा आयात को समझने और इनका तरजुमा व तशरीह करने में बहुत खलजान रहा है।

**<u>सूरत के असलूब का एक ख़ास अंदाज़:</u>** यह सूरत दस रुकूआत पर मुश्तमिल एक मुकम्मल ख़ुतबा है, लेकिन इसमें से एक ख़ास मसले को दरमियान में से निकाल कर आगाज़

में लाया गया है, यानि माले ग़नीमत की तक़सीम का मसला। इस मसले की तफ़सीलात सूरत के अंदर अपनी जगह पर ही बयान हुई है, लकिन इस मौज़ू को इतनी अहमियत दी गई कि सूरत का आग़ाज़ ग़ैरमामूली अंदाज़ में इसके ज़िक्र से किया गया। यहाँ माले ग़नीमत की तक़सीम का मसला इसलिये ज़्यादा नुमाया होकर सामने आया कि गज़वा-ए-बदर ज़ज़ीरा नुमाए अरब में अपनी नौइयत का पहला वाक़िया था। इससे पहले अरब में कहीं भी किसी बाक़ायदा फौज़ और उसके डिसिप्लीन की कोई मिसाल मौजूद नहीं थी। चुनाँचे अस्करी नज़्म व ज़ब्त (army rules) और जंगी मामलात के बारे में कोई ज़ाबता और क़ानून भी पहले से मौजूद नहीं था। यही वजह है कि इस गज़वे में फ़तह के बाद मैदाने जंग से जो चीज़ जिसके हाथ लग गई, उसने समझा कि बस अब यह उसकी है। इस सूरते हाल की वजह से बहुत संजीदा नौइयत के मसाइल पैदा हो गए। बाज़ लोगों ने तो भाग-दौड़ करके बहुत ज़्यादा माल जमा कर लिया, जबकी मुख्तलिफ़ वज़ुहात की बिना पर कुछ लोगों के हाथ कुछ भी ना लगा। कुछ लोग अपनी बुज़ुर्गाना हैसियत और वज़अ दारी की बिना पर भाग-दौड़ कर माल इकट्ठा नहीं कर सकते थे। कुछ लोग अहम मक़ामात पर पहरे दे रहे थे और बाज़ रसूल अल्लाह ﷺ की हिफ़ाज़त पर मामूर थे। माले ग़नीमत में से ऐसे तमाम लोगों के हाथ कुछ भी ना आया। यही वजह थी कि इस ज़िमन में इख्तलाफ़ात पैदा हुए। चुनाँचे सूरत की पहली आयत में ही जितला दिया गया कि अल्लाह के यहाँ इस मामले का ख़ास नोटिस लिया गया है और फिर बात भी इस तरह से की गई कि मसले की जड़ ही काट कर रख दी गई। बिल्कुल दो टूक

अंदाज़ में बता दिया गया कि माले ग़नीमत सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल ﷺ का है, किसी और का इस पर किसी क़िस्म का कोई हक़ नहीं। सूरतुल अन्फ़ाल का यह असलूब अगर अच्छी तरह से ज़हन नशीन कर लिया जाए तो इससे हमें सूरतुत्तौबा के मज़ामीन की तरतीब को समझने में भी मदद मिलेगी।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

## आयात 1 से 8 तक

يَسۡـَٔلُوۡنَکَ عَنِ الۡاَنۡفَالِ ؕ قُلِ الۡاَنۡفَالُ لِلّٰہِ
وَالرَّسُوۡلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰہَ وَاَصۡلِحُوۡا ذَاتَ بَیۡنِکُمۡ ۪
وَاَطِیۡعُوا اللّٰہَ وَرَسُوۡلَہٗۤ اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱﴾ اِنَّمَا
الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الَّذِیۡنَ اِذَا ذُکِرَ اللّٰہُ وَجِلَتۡ قُلُوۡبُہُمۡ
وَاِذَا تُلِیَتۡ عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتُہٗ زَادَتۡہُمۡ اِیۡمَانًا وَّعَلٰی رَبِّہِمۡ
یَتَوَکَّلُوۡنَ ۚ﴿ۖ۲﴾ الَّذِیۡنَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَمِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ
یُنۡفِقُوۡنَ ﴿ؕ۳﴾ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ حَقًّا ؕ لَہُمۡ
دَرَجٰتٌ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ وَمَغۡفِرَۃٌ وَّرِزۡقٌ کَرِیۡمٌ ﴿ۚ۴﴾ کَمَاۤ
اَخۡرَجَکَ رَبُّکَ مِنۡۢ بَیۡتِکَ بِالۡحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِیۡقًا مِّنَ

الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا
تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝
وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّاۗىِٕفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ
وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ
اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

## आयत 1

يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۭ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ

*“(ऐ नबी ﷺ!) यह लोग आपसे अमवाले ग़नीमत के बारे में पूछ रहे हैं, आप कहिये कि अमवाले ग़नीमत कुल के कुल अल्लाह और रसुल के हैं।”*

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۠ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

*“पस तुम अल्लाह का तक़वा इख्तियार करो, और अपने आपस के मामलात दुरुस्त करो, और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो अगर तुम मोमिन हो।”*

यहाँ माले ग़नीमत के लिये लफ्ज़ “अन्फ़ाल” इस्तेमाल किया गया है। अन्फ़ाल जमा है नफ़ल की और नफ़ल के मायने हैं इज़ाफ़ी शय। मसलन नमाज़े नफ़ल, जिसे अदा कर लें तो बाइसे सवाब है और अगर अदा ना करें तो मुआख़ज़ा नहीं। इसी तरह जंग में असल मतलूब शय तो फ़तह है जबकि माले ग़नीमत एक इज़ाफ़ी ईनाम है।

जैसा कि तम्हीदी गुफ़्तगू में बताया जा चुका है कि गज़वा-ए-बदर के बाद मुसलमानों में माले ग़नीमत की तक़सीम का मसला संजीदा सूरत इख्तियार कर गया था। यहाँ एक मुख्तसर क़तई और दो टूक हुक्म के ज़रिये से इस मसले की जड़ काट दी गयी है और बहुत वाज़ेह अंदाज़ में बता दिया गया है कि अन्फ़ाल कुल के कुल अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की मिल्कियत हैं। इसलिये कि यह फ़तह तुम्हें अल्लाह की ख़ुसूसी मदद और अल्लाह के रसूल ﷺ के ज़रिये से नसीब हुई है। लिहाज़ा अन्फ़ाल के हक़दार भी अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ही हैं। इस क़ानून के तहत यह तमाम ग़नीमतें इस्लामी रियासत की मिल्कियत क़रार पाईं और तमाम मुजाहिदीन को हुक्म दे दिया गया कि इन्फ़रादी तौर पर जो चीज़ जिस किसी के पास है वह उसे लाकर बैतुलमाल में जमा करा दे। इस तरीक़े से सब लोगों को ज़ीरो लेवल पर ला कर खड़ा कर दिया गया और यूँ यह मसला अहसन तौर पर हल हो गया। इसके बाद जिसको जो दिया गया उसने वह बखुशी क़ुबूल कर लिया।

अगली आयात इस लिहाज़ से बहुत अहम हैं कि उनमें बंदा-ए-मोमिन की शख्सियत के कुछ खद-ओ-ख़ाल बयान हुए हैं। मगर इन खद-ओ-ख़ाल के बारे में जानने से पहले यह नुक्ता समझना भी ज़रूरी है कि “मोमिन” और

"मुस्लमान" दो मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ या इसतलाहात नहीं हैं। क़ुरान इन दोनों में वाज़ेह फ़र्क़ करता है। यह फ़र्क़ सूरह हुजरात आयत 14 में इस तरह बयान हुआ है: { قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ۭ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ} "(ऐ नबी ﷺ!) यह बद्दू लोग कहे रहे हैं कि हम ईमान ले आये हैं, इनसे कह दीजिये कि तुम ईमान नहीं लाये हो, बल्कि यूँ कहो कि हम मुसलमान हो गए हैं जबकि ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में दाखिल नहीं हुआ है।" इस्लाम और ईमान का यह फ़र्क़ अच्छी तरह समझने के लिये "अरकाने इस्लाम" की तफ़सील ज़हन में ताज़ा कर लीजिये जो قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا का मरहला ऊला तय करने के लिये ज़रूरी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

((بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ : شَهَادَةِ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَاِقَامِ الصَّلَاةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكَاةِ وَحَجِّ الْبَيْتِ وَصَوْمِ رَمَضَانَ))

"इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है: इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात अदा करना, बैतुल्लाह का हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।"(19)

यह पाँच अरकाने इस्लाम हैं, जिनसे हर मुसलमान वाक़िफ़ है। मगर जब ईमान की बात होगी तो इन पाँच अरकान के साथ दो मज़ीद अरकान इज़ाफ़ी तौर शामिल हो जायेंगे,

और वह हैं दिल का यक़ीन और अमल में जिहाद। चुनाँचे मुलाहिज़ा हो सूरतुल हुजरात की अगली आयत में बंदा-ए-मोमिन की शख्सियत का यह नक़्शा:

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ؀

*"मोमिन तो बस वो हैं जो ईमान लायें अल्लाह पर और उसके रसूल पर, फिर उनके दिलों में शक बाक़ी ना रहे और वह जिहाद करें अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह की राह में। सिर्फ़ वही लोग (अपने दावा-ए-ईमान में) सच्चे है।"*

यानि कलमा-ए-शहादत पढ़ने के बाद इंसान क़ानूनी तौर पर मुसलमान हो गया और तमाम अरकाने इस्लाम उसके लिये लाज़मी क़रार पाए। मगर हक़ीक़ी मोमिन वह तब बनेगा जब उसके दिल को गहरे यक़ीन (ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا) वाला ईमान नसीब होगा और अमली तौर पर वह जिहाद में भी हिस्सा लेगा।

बंदा-ए-मोमिन की इसी तारीफ़ (definition) की रोशनी में अहले ईमान की कैफ़ियत यहाँ सूरतुल अन्फ़ाल में दो हिस्सों में अलग़-अलग़ बयान हुई है। वह इस तरह कि हक़ीक़ी ईमान वाले हिस्से की कैफ़ियत को आयत 2 और 3 में बयान किया गया है, जबकि उसके दूसरे (जिहाद वाले) हिस्से की कैफ़ियात को सूरत की आखरी आयत से पहले वाली आयत में बयान किया गया है। इसकी मिसाल ऐसे है

जैसे एक परकार (compass) को खोल दिया गया हो, जिसकी एक नोक सूरत के आग़ाज़ पर है (पहली आयत छोड़ कर) जबकि दूसरी नोक सूरत के आख़िर पर है (आखरी आयत छोड़ कर)। इस वज़ाहत के बाद अब मुलाहिज़ा हो बंदा-ए-मोमिन की तारीफ़ (definition) का पहला हिस्सा:

## आयत 2

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝٢

*"हक़ीक़ी मोमिन तो वही हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल लरज़ जाते हैं और जब उन्हें उसकी आयात पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो उनके ईमान में इज़ाफ़ा हो जाता है, और वह अपने रब ही पर तवक्कुल करते हैं।"*

## आयत 3

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝٣

*"जो नमाज़ को क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं।"*

इससे इन्फ़ाक़ फ़ी सबिलिल्लाह मुराद है। यानि वह लोग अल्लाह के दीन के लिये खर्च करते हैं।

## आयत 4

أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ

*"यही लोग हैं जो हक़ीक़ी मोमिन हैं।"*

यहाँ पर एक मोमिन की तारीफ़ (definition) का पहला हिस्सा बयान हुआ है, जबकि इसका दूसरा और तकमीली हिस्सा इस सूरत की आयत 74 में बयान होगा, यानि आखरी से पहली (second last) आयत में। उस आयत में भी यही अल्फ़ाज़ {أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ} एक दफ़ा फिर आएँगे। ईमान के इन हक़ाइक़ को तक़सीम कर के सूरत के आगाज़ और इख्तताम पर इस तरह रखा गया है जैसे सारी सूरत इस मज़मून की गोद में आ गयी हो।

لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝

*"उनके लिये उनके रब के पास (ऊँचे) दरजात और मगफ़िरत और इज्ज़त वाला रिज़्क़ है।"*

यहाँ से अब गज़वा-ए-बदर का ज़िक्र शुरू हो रहा है।

## आयत 5

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝

*“जैसे कि निकाला आपको (ऐ नबी ﷺ) आपके रब ने आपके घर से हक़ के साथ, और यक़ीनन अहले ईमान में से कुछ लोग इसे पसंद नहीं कर रहे थे।”*

यह उस पहली मुशावरत (सलाह) का ज़िक्र है जो रसूल अल्लाह ﷺ ने सहाबा रज़ि. से मदीने ही में फ़रमाई थी। लश्कर के मैदाने बदर की तरफ़ रवानगी को नापसंद करने वाले दो क़िस्म के लोग थे। एक तो मुनाफ़िक़ीन थे जो किसी क़िस्म की आज़माइश में पड़ने तो तैयार नहीं थे। वह अपने मंसूबे के तहत इस तरह की किसी मुहिमजोई की रिवायत को “Nip the evil in the bud” के मिस्दाक़ इब्तदा ही में ख़त्म करना चाहते थे। इसके लिये उनके दलाइल बज़ाहिर बड़े भले थे कि लड़ाई-झगड़ा अच्छी बात नहीं है, हमें तो अच्छी बातों और अच्छे अख्लाक़ से दीन की तब्लीग करनी चाहिये, और लड़ने-भिड़ने से बचना चाहिये, वगैरह-वगैरह। दूसरी तरफ़ कुछ नेक सरश्त सच्चे मोमिन भी ऐसे थे जो अपने ख़ास मिज़ाज और सादालोही के सबब यह राय रखते थे कि अभी तक क़ुरैश की तरफ़ से तो किसी क़िस्म का कोई इक़दाम नहीं हुआ, लिहाज़ा हमें आगे बढ़ कर पहल नहीं करनी चाहिये। ज़ेरे नज़र आयत में दो टूक अल्फ़ाज़ में वाज़ेह किया गया है कि हुज़ूर ﷺ का बदर की तरफ़ रवाना होना अल्लाह तआला की तदबीर का एक हिस्सा था।

## आयत 6

*"वो लोग आपसे झगड़ रहे थे हक़ के बारे में, इसके बाद कि बात (उन पर) बिल्कुल वाज़ेह हो चुकी थी"*

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ

यह आयत मेरे नज़दीक दूसरी मुशावरत (सलाह) के बारे में है जो मक़ामे सफ़राअ पर मुनअक़िद हुई थी। नब़ी अकरम ﷺ मदीने से क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले का पीछा करने के इरादे से निकले थे, और यह बज़ाहिर इसी तरह की एक मुहीम थी जिस तरह की आठ मुहिमात उस इलाक़े में पहले भी भेजी जा चुकी थीं। उस वक़्त तक लश्करे क़ुरैश के बारे में ना कोई इत्तलाअ थी और ना ही ऐसा कोई गुमान था। लेकिन जब आप ﷺ मदीने से निकल कर सफ़राअ के मक़ाम पर पहुँचे तो आप ﷺ को अपने ज़राए से भी लश्करे क़ुरैश की मक्के से रवानगी की इत्तलाअ मिल गई और अल्लाह तआला ने वही के ज़रिये भी आप ﷺ को इस बारे में मुतल्लाअ फ़रमा दिया। चुनाँचे जिस तरह हज़रत तालूत ने रास्ते में अपने लश्कर की आज़माइश की थी कि दरिया को उबूर करते हुए जो शख्स सैर होकर पानी पियेगा उसका मुझसे कोई ताल्लुक़ नहीं रहेगा और इस तरह मुख्लिस साथियों का ख़ुलूस ज़ाहिर हो गया, इसी तरह आप ﷺ ने भी अल्लाह के हुक्म से सारा मामला मुसलमानों के सामने मुशावरत के लिये रख दिया और उनको वाज़ेह तौर पर बता दिया कि मक्के से अबु जहल एक हज़ार जंगजुओं पर मुश्तमिल लश्करे जरार लेकर रवाना हो चुका है।

كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝۶

*“(वह लोग ऐसे महसूस कर रहे थे) जैसे उन्हें मौत की तरफ़ धकेला जा रहा हो और वह उसे देख रहे हों।”*

ज़ाहिर बात है यह कैफ़ियत तो पक्के मुनाफ़िक़ीन ही की हो सकती थी।

## आयत 7

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآىِٕفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ

*“और याद करो जबकि अल्लाह वादा कर रहा था तुम लोगों से कि उन दोनों गिरोहों में से एक तुम्हें मिल जायेगा”*

लश्कर या क़ाफ़िले में से किसी एक पर मुसलमानों की फ़तह की ज़मानत अल्लाह तआला की तरफ़ से दे दी गई थी।

وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ

*“और (ऐ मुसलमानों!) तुम यह चाहते थे कि जो बगैर कांटे के है वह तुम्हारे हाथ आये”*

तुम लोगों की ख्वाहिश थी कि लश्कर और क़ाफ़िले में से किसी एक के मगलूब होने की ज़मानत है तो फिर गैर मुसल्लाह (बिना हथियारों वाला) गिरोह यानि क़ाफ़िले ही की तरफ़ जाया जाये, क्योंकि उसमें कोई ख़तरा और खदशा (रिस्क) नहीं था। क़ाफ़िले के साथ बमुश्किल पचास या सौ आदमी थे जबकि उसमें पचास हज़ार दीनार की मालियत के साज़ो-सामान से लदे-फंदे सैंकड़ो ऊँट थे, लिहाज़ा इस

क़ाफ़िले पर बड़ी आसानी से क़ाबू पाया जा सकता था और बज़ाहिर अक़्ल का तक़ाज़ा भी यही था। उन लोगों की दलील यह थी कि हमारे पास तो हथियार भी नहीं हैं और सामान-ए-रसद वगैरह भी नाकाफ़ी है, हम पूरी तैयारी करके मदीने से निकले ही नहीं हैं, लिहाज़ा यह बेहतर होगा कि पहले क़ाफ़िले की तरफ़ जाएँ, इस तरह साज़ो-सामान भी मिल जायेगा, अहले क़ाफ़िले के हथियार भी हमारे क़ब्ज़े में आ जाएँगे और इसके बाद लश्कर का मुक़ाबला हम बेहतर अंदाज़ में कर सकेगें। तो गोया अक़्ल व मन्तिक़ भी इसी राय के साथ थी।

وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

*"और अल्लाह चाहता था कि अपने फ़ैसले के ज़रिये से हक़ का हक़ होना साबित कर दे और काफ़िरों की जड़ काट दे।"*

यह वही बात है जो हम सूरह अनआम में पढ़ आये हैं: {فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا} (आयत 45) कि ज़ालिम क़ौम की जड़ काट दी गई। यानि अल्लाह का इरादा कुछ और था। यह सब कुछ दुनिया के आम क़ायदे क़वाइद व ज़वाबित (physical laws) के तहत नहीं होने जा रहा था। अल्लाह तआला उस दिन को "यौमुल फ़ुरक़ान" बनाना चाहता था। वह तीन सौ तेरह निहत्थे अफ़राद के हाथों कील-कांटे से पूरी तरह मुस्सल्लाह एक हज़ार जंगजुओं के लश्कर को ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त दिलवा कर दिखाना चाहता था कि अल्लाह की ताईद व नुसरत किसके साथ है और चाहता था कि काफ़िरों की जड़ काट कर रख दे।

## आयत 8

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۚ﴿٨﴾

*"ताकि सच्चा साबित कर दे हक़ को और झूठा साबित कर दे बातिल को, ख्वाह यह मुजरिमों को कितना ही नागवार हो।"*

# आयात 9 से 19 तक

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ
بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا
بُشْرٰى وَلِتَطْمَىِٕنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ۧ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ
النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً
لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ
وَلِيَرْبِطَ عَلٰي قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾ۭ اِذْ
يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰۗىِٕكَةِ اَنِّىْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۭ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ

١٢ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۗقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ١٣ ذٰلِكُمْ
فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ١٤ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا
تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ١٥ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا
مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَاۗءَ بِغَضَبٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ١٦ فَلَمْ
تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۠ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَاۗءً
حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ١٧ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ
مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ١٨ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ
جَاۗءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ
تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـــًٔا وَّلَوْ
كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ١٩

## आयत 9

اِذۡ تَسۡتَغِيۡثُوۡنَ رَبَّكُمۡ فَاسۡتَجَابَ لَكُمۡ اَنِّىۡ مُمِدُّكُمۡ بِاَلۡفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓـئِكَةِ مُرۡدِفِيۡنَ ۝

*"याद करो जबकि तुम लोग अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी दुआ क़ुबूल की थी, कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा एक हज़ार मलाइका (फ़रिश्तों) के साथ जो पे दर पे आयेंगे।"*

क़ुरैश के एक हज़ार के लश्कर के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद के लिये एक हज़ार फ़रिश्ते आसमानों से क़तार दर क़तार उतरेंगे।

## आयत 10

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشۡرٰى وَلِتَطۡمَٮِٕنَّ بِهٖ قُلُوۡبُكُمۡ‌ ۚ

*"और अल्लाह ने इसको नहीं बनाया मगर (तुम्हारे लिये) बशारत, और ताकि तुम्हारे दिल इससे मुत्मईन हो जाएँ।"*

وَمَا النَّصۡرُ اِلَّا مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝

*"और मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से होती है। यक़ीनन अल्लाह तआला ज़बरदस्त, हिकमत वाला है।"*

अल्लाह तआला तो "कुन फ़-यकून" की शान के साथ जो चाहे कर दे। वह फ़रिश्तों को भेजे बगैर भी तुम्हारी मदद कर सकता था, लेकिन इंसानी ज़हन का चूँकि सोचने का अपना एक अंदाज़ है, इसलिये उसने तुम्हारे दिलों की

तस्कीन और तस्सल्ली के लिये ना सिर्फ़ एक हज़ार फ़रिश्ते भेजे बल्कि तुम्हें उनकी आमद की इत्तलाअ भी दे दी कि खातिर जमा रखो, हम तुम्हारी मदद के लिये फ़रिश्ते भेज रहे हैं। वाज़ेह रहे कि अल्लाह के वादे के मुताबिक़ मैदाने बदर में फ़रिश्ते उतरे ज़रूर हैं लेकिन उन्होंने अमली तौर पर लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया। अमली तौर पर जंग कुफ्फ़ार के एक हज़ार और मुसलमानों के तीन सौ तेरह अफ़राद के दरमियान हुई और क़ुव्वते ईमानी से सरशार मुसलमान इस बेजिगरी और बेखौफ़ी से लड़े कि एक हज़ार पर ग़ालिब आ गए।

## आयत 11

اِذۡ يُغَشِّيۡكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنۡهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيۡكُمۡ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمۡ بِهٖ

*"याद करो जबकि अल्लाह तुम्हारी तस्कीन के लिये तुम पर नींद तारी कर रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था ताकि उससे तुम्हें पाक करे"*

बदर की रात तमाम मुसलमान बहुत पुरसकून नींद सोये और उसी रात गैर मामूली अंदाज़ में बारिश भी हुई। मुसलमानों की यह पुरसकून नींद और बारिश का नुज़ूल गोया दो मौअज्ज़े थे, जिनका ज़हूर मुसलमानों की ख़ास मदद के लिये अमल में आया। यह मौज्ज़ात इस अंदाज़ में ज़हूर पज़ीर नहीं हुए थे कि रसूल अल्लाह ﷺ ने बाक़ायदा इनके बारे में ऐलान फ़रमाया हो, या यह कि यह

बिल्कुल खर्के आदत वाक़िआत हो, बल्कि यह मौज्ज़ात इस अंदाज़ में थे कि उस वक़्त इन दोनों वाक़िआत से मुसलमानों को गैर मामूली तौर पर मदद मिली, और इसलिये भी कि ऐसी चीज़ें महज़ इत्तेफ़ाक़ात से ज़हूर पज़ीर नहीं होती। हक़ीक़त में गज़वा-ए-बदर का यह मामला मुसलमानों के लिये बहुत सख्त था, जिसकी वजह से हर शख्स के लिये बज़ाहिर फ़िक्रमंदी, तशवीश और अंदेशा हाए दूरदराज़ की इन्तहा होनी चाहिये थी कि कल जो कुछ होने जा रहा है उसमें मैं ज़िन्दा भी बच पाऊँगा या नहीं? मगर अमली तौर पर यह मामला बिल्कुल इसके बरअक्स हुआ। मुसलमान रात को आराम व सुकून की नींद सोये और सुबह बिल्कुल ताज़ा दम और चाक़ व चौबंद होकर उठे। इसी तरह उस रात जो बारिश हुई वह भी मुसलमानों के लिये अल्लाह की ताईद व नुसरत साबित हुई। उस बारिश से दूसरे फ़ायदों के अलावा मुसलमानों को एक यह सहूलत भी मयस्सर आ गई कि जिन लोगों को गुसल की हाजत थी उन्हें गुसल का मौक़ा मिल गया।

وَيُذۡهِبَ عَنۡكُمۡ رِجۡزَ الشَّيۡطٰنِ وَلِيَرۡبِطَ عَلٰى قُلُوۡبِكُمۡ وَيُثَبِّتَ بِهِ الۡاَقۡدَامَ ﴿۱۱﴾

*"और ताकि दूर कर दे तुमसे शैतान की (डाली हुई) नजासत को और ताकि तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और इससे तुम्हारे पाँव जमा दे।"*

इस बारिश में मुसलमानों के लिये इत्मिनाने क़ुलूब का एक पहलू यह भी था कि उन्हें उस खुश्क सहरा के अंदर पानी का वाफ़र ज़खीरा मिल गया, वरना लश्करे क़ुरैश पहले

आकर पानी के तालाब पर क़ब्ज़ा कर चुका था और मुसलमान इससे महरूम हो चुके थे। बारिश हुई तो नशेब की बिना पर सारा पानी मुसलमानों की तरफ़ जमा हो गया, जिसे उन्होंने बंद वगैरह बाँध कर ज़खीरा कर लिया। बारिश की वजह से मिट्टी दब गई, रेत फ़र्श की तरह हो गई और चलने-फिरने में सहुलत हो गई।

## आयत 12

اِذۡ یُوۡحِیۡ رَبُّکَ اِلَی الۡمَلٰٓئِکَۃِ اَنِّیۡ مَعَکُمۡ فَثَبِّتُوا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا ؕ

*"याद करे जब आपका रब वही कर रहा था फ़रिश्तों को कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो तुम (जाओ और) अहले ईमान तो साबित क़दम रखो।"*

वही एक हज़ार फ़रिश्ते जिनका ज़िक्र पहले गुज़र चुका है, उन्हें मैदाने जंग में मुसलमानों के शाना-ब-शाना रहने की हिदायत का तज़किरा है।

سَاُلۡقِیۡ فِیۡ قُلُوۡبِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوا الرُّعۡبَ فَاضۡرِبُوۡا فَوۡقَ الۡاَعۡنَاقِ وَاضۡرِبُوۡا مِنۡہُمۡ کُلَّ بَنَانٍ ﴿ؕ۱۲﴾

*"मै अभी इन काफ़िरों के दिलों में रौब डाले देता हूँ, पस मारों इनकी गर्दनों के ऊपर और मारो इनकी एक-एक पोर पर।"*

अल्लाह तआला ने कुफ्फ़ार को भरपूर मुक़ाबले के दौरान दहशतज़दा कर दिया था और जब कोई शख्स अपने हरीफ़ के मुक़ाबले में दहशतज़दा हो जाए तो उसके अंदर क़ुव्वते मदाफ़अत नहीं रहती। फिर वह गोया हमलावर के रहम व करम पर होता है, वह जिधर से चाहे उसे चोट लगाये, जिधर से चाहे उसे मारे।

## आयत 13

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۗقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ⑬

*"और यह (सज़ा इनकी) इसलिये है कि इन्होंने मुखालफ़त की अल्लाह और उसके रसूल की, और जो अल्लाह और इसके रसूल के साथ दुश्मनी करे तो अल्लाह भी सज़ा देने में बहुत सख्त है।"*

इसके बाद अब क़ुरैश से बराहेरास्त खिताब है।

## आयत 14

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ

*"(लो) यह तो चखो"*

अभी हमारी तरफ़ से सज़ा की पहली क़िस्त वसूल करो।

وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ⑭

*"और यह (भी तुम्हें मालूम रहे) कि काफ़िरों के लिये जहन्नम का अज़ाब है।"*

यानि यह मत समझना कि तुम्हारी यही सज़ा है, बल्कि असल सज़ा तो जहन्नम होगी, उसके लिये भी तैयार रहो।

## आयत 15

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا

*"ऐ अहले ईमान, जब तुम्हारा मुक़ाबला हो जाये काफ़िरों से मैदाने जंग में"*

"ज़हफ़" में बाक़ायदा दो लश्करों के एक-दूसरे के मद्दे-मुक़ाबिल आकर लड़ने का मफ़हूम पाया जाता है। गज़वा-ए-बदर से पहले रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ से इलाक़े में आठ मुहिम्मात (expeditions) भेजी गई थीं, मगर उनमें से कोई मुहिम भी बाक़ायदा जंग की शक्ल में नही थी। ज़्यादा से ज़्यादा उन्हें छापा मार मुहिम्मात कहा जा सकता है, लेकिन बदर में मुसलमानों की कुफ्फ़ार के साथ पहली मरतबा दू-ब-दू जंग हुई है। चुनाँचे ऐसी सूरते हाल के लिये हिदायात दी जा रही हैं कि जब मैदान में बाक़ायदा जंग के लिये तुम लोग कुफ्फ़ार के मुक़ाबिल आ जाओ:

فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾

*"तो तुम उनसे पीठ मत फेरना।"*

मतलब यह है कि डटे रहो, मुक़ाबला करो। जान चली जाए मगर क़दम पीछे ना हटें।

## आयत 16

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ دُبُرَهٗٓ

*"और जो कोई भी उनसे उस दिन अपनी पीठ फेरेगा"*

यानि अगर कोई मुसलमान मैदाने जंग से जान बचाने के लिये भागेगा।

اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ

*"सिवाय इसके कि वह कोई दाँव लगा रहा हो जंग के लिये"*

जैसे दो आदमी दू-ब-दू मुक़ाबला कर रहे हों और लड़ते-लड़ते कोई दांए, बांए या पीछे को हटे, बेहतर दाँव के लिये पैंतरा बदले तो यह भागना नहीं है, बल्कि यह तो एक तदबीराती हरकत (tactical move) शुमार होगी। इसी तरह जंगी हिकमते अमली के तहत कमांडर के हुकुम से कोई दस्ता किसी जगह से पीछे हट जाए और कोई दूसरा दस्ता उसकी जगह ले ले तो यह भी पसपाई के ज़ुमरे में नहीं आएगा।

اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

*"या किसी दूसरी (जमीअत) से मिलना हो"*

यानि लड़ाई के दौरान अपने लश्कर के किसी दूसरे हिस्से से मिलने के लिये मुनज्ज़म तरीक़े से पीछे हटना (orderly retreat) भी पीठ फेरने के ज़ुमरे में नहीं आयेगा। इन दो इस्तसनाई सूरतों के अलावा अगर किसी ने बुज़दिली दिखाई और भगदड़ के अंदर जान बचा कर भागा:

فَقَدۡ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاۡوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ﴿۱۶﴾

*"तो वह अल्लाह का गज़ब ले कर लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।"*

अब अगली आयत में यह बात वाज़ेहतर अंदाज़ में सामने आ रही है कि गज़वा-ए-बदर दुनियावी क़वाइद व ज़वाबित के मुताबिक़ नहीं, बल्कि अल्लाह की ख़ास मशीयत के तहत वक़ूअ पज़ीर हुआ था।

## आयत 17

فَلَمۡ تَقۡتُلُوۡهُمۡ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمۡ ۪

*"पस (ऐ मुसलमानों!) तुमने उन्हें क़तल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़तल किया"*

वैसे तो हर काम में फ़ाइले हक़ीक़ी अल्लाह ही है, हम जो भी काम करते हैं वह अल्लाह की मशीयत से मुमकिन होता है, और जिस शय के अंदर जो भी तासीर है वह भी अल्लाह ही की तरफ़ से है। आम हालात के लिये भी अगरचे यही क़ायदा है: "لَا فَاعِلَ فِى الْحَقِيْقَةِ وَلَا مُؤَثِّرَ اِلَّا اللّٰه" लेकिन यह तो मखसूस हालात थे जिनमें अल्लाह की ख़ुसूसी मदद आई थी।

**وَمَا رَمَيۡتَ اِذۡ رَمَيۡتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰىۚ**

*"और जब आपने (उन पर कंकरियाँ) फेंकी थीं तो वह आपने नहीं फेंकी थीं बल्कि अल्लाह ने फेंकी थीं"*

मैदाने जंग में जब दोनों लश्कर आमने-सामने हुए तो रसूल अल्लाह ﷺ ने कुछ कंकरियाँ अपनी मुठ्ठी में लीं और **شَاهَتِ الْوُجُوْه** (चेहरे बिगड़ जाएँ) फ़रमाते हुए कुफ्फ़ार की तरफ़ फेंकीं। अल्लाह तआला जानता है कि वह कंकरियाँ कहाँ-कहाँ तक पहुँची होंगी और उनके कैसे-कैसे असरात कुफ्फ़ार पर मुरत्तब हुए होंगे। बरहाल यहाँ पर आप ﷺ के अमल को भी अल्लाह तआला अपनी तरफ़ मंसूब कर रहा है कि ए नबी (ﷺ) जब वह कंकरियाँ आपने फेंकी थीं, तो वह आप ﷺ ने नहीं फेंकी थीं बल्कि अल्लाह ने फेंकी थीं। इसी बात को इक़बाल ने इन अल्फ़ाज़ में बयान किया है: *"हाथ है अल्लाह का बन्दा-ए-मोमिन का हाथ!"*

**وَلِيُبۡلِيَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ مِنۡهُ بَلَآءً حَسَنًاؕ**

*"ताकि अल्लाह इससे अहले ईमान के जौहर निखारे ख़ूब अच्छी तरह से।"*

अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसी आज़माइशें अपने बन्दों की मख्फी सलाहियतों को उजागर करने के लिये होती हैं। **بَلَا, يَبۡلُو, بَلَآءً** के मायने हैं आज़माना, तकलीफ़ और आज़माइश में डाल कर किसी को परख़ना, लेकिन **اَبۡلٰى**, **يُبۡلِي** जब बाबे अफ़आल से आता है तो किसी के जौहर निखारने के मायने देता है।

إِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

*"यक़ीनन अल्लाह तआला सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।"*

## आयत 18

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾

*"यह तो हो चुका, और (आइन्दा के लिये भी समझ लो कि) अल्लाह कुफ्फ़ार की तमाम चालों को नाकाम बना देने वाला है।"*

यह गोया अहले ईमान और कुफ्फ़ार दोनों को मुख़ातिब कर के फ़रमाया जा रहा है। इसके बाद सिर्फ़ कुफ्फ़ार से ख़िताब है। अबुजहल को बहैसियते सिपेसालार अपने लश्कर की तादाद, अस्लाह और साज़ो सामान की फ़रावानी के हवाले से पूरा यक़ीन था कि हम मुसलमानों को कुचल कर रख देंगे। चुनाँचे उन्होंने पहले ही प्रोपोगंडा शुरू कर दिया था कि मअरके (लड़ाई) का दिन "यौमुल फ़ुरक़ान" साबित होगा और उस दिन यह वाज़ेह हो जाएगा कि अल्लाह किसके साथ है। अल्लाह को तो कुफ्फ़ार भी मानते थे। चुनाँचे तारीख़ की किताबों में अबुजहल की इस दुआ के अल्फ़ाज़ भी मन्क़ूल हैं जो बदर की रात उसने ख़ुसूसी तौर पर अल्लाह तआला से माँगी थी। उस रात जब एक तरफ़ हुज़ूर अकरम ﷺ दुआ माँग रहे थे तो दूसरी तरफ़ अबुजहल भी दुआ माँग रहा था। उसकी दुआ हैरत अंगेज़ हद तक मुवह्हिदाना है। उस दुआ में लात, मनात, उज्ज़ा, और हुबल वगैरह का कोई ज़िक्र नहीं, बल्कि उस दुआ में वह

बराहेरास्त अल्लाह तआला से इल्तिजा कर रहा है: اللّٰھم اقطعنا للرحم فاحنه الغداة कि ऐ अल्लाह जिस शख्स ने हमारे रहमी रिश्ते काट दिए हैं, कल तू उसे कुचल कर रख दे। इस दुआ से यह भी पता चलता है कि अबुजहल का हुज़ूर ﷺ पर सबसे बड़ा इल्ज़ाम यह था कि आप ﷺ की वजह से क़ुरैश के खून के रिश्ते कट गए थे। मसलन एक भाई मुसलमान हो गया है और बाक़ी काफ़िर हैं, तो ना सिर्फ़ यह कि उनमें अख़ुवत (भाई) का रिश्ता बाक़ी ना रहा, बल्कि वह एक-दूसरे के दुश्मन बन गए। इसी तरह औलाद माँ-बाप से और बीवियाँ अपने शौहरों से कट गयीं। चूँकि इस अमल से क़ुरैश की यकजहती (एकता), ताक़त और साख बुरी तरह मुतास्सिर हुई थी, इसलिये सबसे ज़्यादा उन्हें इसी बात का क़ल्क़ (फ़िक्र) था। बरहाल अबुजहल समेत तमाम क़ुरैश की ख्वाहिश थी और वह दुआ गोह थे कि इस चप्पलिश का वाज़ेह फ़ैसला सामने आ जाए। उनकी इसी ख्वाहिश और दुआ का जवाब यहाँ दिया जा रहा है।

## आयत 19

اِنۡ تَسۡتَفۡتِحُوۡا فَقَدۡ جَآءَكُمُ الۡفَتۡحُ ۚ

*"अगर तुम फ़ैसला चाहते थे तो तुम्हारे पास (अल्लाह का) फ़ैसला आ चुका है।"*

अल्लाह तआला ने फ़ैसलाकुन फ़तह के ज़रिये बता दिया कि उसकी ताइद व नुसरत किस गिरोह के साथ है। हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना पूरी तरह वाज़ेह हो गया।

وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ

*"और अगर अब भी तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिये बेहतर है, और अगर तुम फिर यही करोगे तो हम भी यही कुछ दोबारा करेंगे।"*

وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٩

*"और तुम्हारी यह जमीअत तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकेगी ख्वाह कितनी ही ज़्यादा हो, और यह कि अल्लाह अहले ईमान के साथ है।"*

# आयात 20 से 28 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا
عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۝٢٠ۚۖ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا
سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٢١ اِنَّ شَرَّ الدَّوَاۗبِّ عِنْدَ
اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٢٢ وَلَوْ عَلِمَ
اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا
وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا
لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ

اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾
وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ
خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۵﴾
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ
تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ
بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
﴿۲۶﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ
وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ
اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ع ﴿۲۸﴾

## आयत 20

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿۲۰﴾

*“ऐ अहले ईमान! अल्लाह और उसके रसूल (صلی اللہ علیہ وسلم) की इताअत करो और इससे मुहँ ना मोड़ो जबकि तुम सुन रहे हो।”*

यानि जब अल्लाह के रसूल ﷺ ने बदर की तरफ़ चलने के इरादा कर लिया तो फिर तुम्हारी तरफ़ से रद्दो क़दा और बहस व इस्तदलाल क्यों हो रहा था? तुम सबको तो चाहिये था कि अल्लाह और इसके रसूल ﷺ की मरज़ी पर फ़ौरन समीअना व अताअना कहते और आप ﷺ के हुक्म पर सरे तस्लीम ख़म कर देते। यह बात ज़हन में रहे कि यहाँ ख़ास तौर पर उन लोगों की तरफ़ इशारा है जिन्होंने इस मौक़े पर कमज़ोरी दिखाई थी।

## आयत 21

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

*"और उन लोगों की मानिन्द मत हो जाओ जो कहते हैं हमने सुन लिया और हक़ीक़त में वह सुनते नहीं हैं।"*

यानि सिर्फ़ ज़बान से समीअना कह देते हैं मगर उनके दिल अपने ख्यालात और मफ़ादात पर ही डेरे जमाये रहते हैं। इताअत पर इनकी तबियत में यक्सुई पैदा ही नहीं होती। चुनाँचे इस तरह के सुनने की सिरे से कोई हक़ीक़त ही नहीं है।

## आयत 22

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۲۲

*"यक़ीनन तमाम चौपायों में अल्लाह के नज़दीक बदतरीन वह बहरे गूंगे (इन्सान) हैं जो अक़्ल से काम नहीं लेते।"*

यहाँ पर वाज़ेह तौर पर मुनाफ़िक़ीन को बदतरीन जानवर क़रार दिया गया है।

## आयत 23

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ

*"और अगर अल्लाह के इल्म में होता कि इनमें कोई ख़ैर है तो वह इन्हें सुनवा देता।"*

وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝۲۳

*"और अगर वह इन्हें (भलाई के बग़ैर) सुनवा भी देता तो वह ऐराज़ करते हुए पीठ फेर जाते।"*

अगर अल्लाह तआला इन लोगों के अंदर कोई सलाहियत पाता तो इनको सुनने और समझने की तौफ़ीक़ दे देता, लेकिन अगर इन्हें बगैर सलाहियत के तामील हुक्म में जंग के लिये निकल आने की तौफ़ीक़ दे भी दी जाती तो ये ख़तरे का मौक़ा देखते ही पीठ फेर कर भाग खड़े होते। यह ख़ास तौर पर उन लोगों के लिये तंबीह है जो कुफ्फ़ार के लश्कर का सामना करने में पसो पेश कर रहे थे।

## आयत 24

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ

*"ऐ अहले ईमान! लब्बैक कहा करो अल्लाह और रसूल (صلی اللہ علیہ وسلم) की पुकार पर जब वह तुम्हें पुकारें उस शय के लिये जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शने वाली है।"*

तुम जंग के लिये जाते हुए समझ रहे हो कि यह मौत का घाट है, जबकि हक़ीक़त यह है कि जिहाद फ़ी सबिलिल्लाह तो असल और अब्दी ज़िन्दगी का दरवाज़ा है। जैसा कि सूरतुल बक़रह (आयत 154) में शहीदों के बारे में फ़रमाया गया: { وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ} चुनाँचे अल्लाह और उसके रसूल صلی اللہ علیہ وسلم जिस चीज़ की तरफ़ तुम्हें बुला रहे हैं, हक़ीक़ी ज़िन्दगी वही है। इसके मुक़ाबले में इस दावत से ऐराज़ कर के ज़िन्दगी बसर करना गोया हैवानों की सी ज़िन्दगी है, जिसके बारे में हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ चुके हैं: {اُولٰۗىِٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ}

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ

*"और जान रखो कि अल्लाह बन्दे और उसके दिल के दरमियान हाइल हो जाया करता है"*

यानि अगर अल्लाह और उसके रसूल صلی اللہ علیہ وسلم की पुकार सुनी-अनसुनी कर दी जाये और उनके अहकामात से बेनियाज़ी को वतीराह बना लिया जाये तो अल्लाह तआला ख़ुद ऐसे

बन्दे और हिदायत के दरमियान आड़ बन जाता है, जिससे आइन्दा वह हिदायत की हर बात सुनने और समझने से माज़ूर (लाचार) हो जाता है। इसी मज़मून को सूरतुल बक़रह की आयत 7 में इस तरह बयान किया गया है: {خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ} कि उनके दिलों और उनकी समाअत पर अल्लाह तआला ने मुहर कर दी है। जबकि सूरतुल अनआम की आयत 110 में इस उसूल को सख्त तरीन अल्फ़ाज़ में इस तरह वाज़ेह किया गया है: {وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ} यानि हक़ के पूरी तरह वाज़ेह होकर सामने आ जाने पर भी जो लोग फ़ौरी तौर पर उसे मानते नहीं और उससे पहलु तही करते हैं तो ऐसे लोगों के दिल उलट दिए जाते हैं और उनकी बसारत पलट दी जाती है। चुनाँचे यह बहुत हस्सास और खौफ़ खाने वाला मामला है। दीन का कोई मुतालबा किसी के सामने आये, अल्लाह का कोई हुक्म उस तक पहुँच जाए और उसका दिल इस पर गवाही भी दे दे कि हाँ यह बात दुरुस्त है, फिर अगर वह उससे ऐराज़ करेगा, कन्नी कतरायेगा, तो इसकी सज़ा उसे इस दुनिया में यूँ भी मिल सकती है कि हक़ को पहचानने की सलाहियत ही उससे सल्ब कर (छीन) ली जाती है, दिल और समाअत पर मुहर लग जाती है, आँखों पर परदे पड़ जाते हैं, हिदायत और उसके दरमियान आड़ कर दी जाती है। यह अल्लाह तआला की सुन्नत और उसका अटल क़ानून है।

وَاَنَّهٗۤ اِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ۝۲۴

*"और यह कि (बिलआखिर) तुम सबको यक़ीनन उसी की तरफ़ जमा किया जाना है।"*

## आयत 25

وَاتَّقُوۡا فِتۡنَةً لَّا تُصِيۡبَنَّ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡكُمۡ خَآصَّةً ۚ

*"और डरो उस फ़ितने से जो तुम में से सिर्फ़ गुनाहगारों ही को अपनी लपेट में नहीं लेगा।"*

यह भी क़ानूने ख़ुदावंदी है और इससे पहले भी इस क़ानून का हवाला दिया जा चुका है। यहाँ यह नुक्ता क़ाबिले गौर है कि किसी जुर्म का बराहेरास्त इरतकाब करना ही सिर्फ़ जुर्म नहीं है, बल्कि किसी फ़र्ज़ की अदम अदायगी का फ़अल भी जुर्म के ज़ुमरे में आता है। मसलन एक मुसलमान ज़ाती तौर पर गुनाहों से बच कर भी रहता है और नेकी के कामों में भी हत्तल वसीअ (अपनी हद तक) हिस्सा लेता है। वह सदक़ा व खैरात भी देता है और नमाज़, रोज़ा का अहतमाम भी करता है। यह सब कुछ तो वह करता है मगर दूसरी तरफ़ अल्लाह और उसके दीन की नुसरत, इक़ामते दीन की जद्दो जहद और इस जद्दो जहद में अपने माल और अपने वक़्त की क़ुर्बानी जैसे फ़राइज़ से पहलु तही का रवैय्या अपनाए हुए है तो ऐसा शख्स भी गोया मुजरिम है और अज़ाब की सूरत में वह उसकी लपेट से बच नहीं पाएगा। इस लिहाज़ से यह दिल दहला देने वाली आयत है।

وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ۝٢٥

*"और जान लो कि अल्लाह सज़ा देने में बहुत सख्त है।"*

अब अगली आयत को ख़ुसूसी तौर पर पाकिस्तान के मुसलमानों के हवाले से पढ़ें।

**आयत 26**

وَاذۡكُرُوۡۤا اِذۡ اَنۡتُمۡ قَلِيۡلٌ مُّسۡتَضۡعَفُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ

*"और याद करो जबकि तुम थोड़ी तादाद में थे और ज़मीन में दबा लिए गए थे"*

تَخَافُوۡنَ اَنۡ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ

*"तुम्हे अंदेशा था कि लोग तुम्हें उचक ले जाएँगे"*

यह आयत ख़ास तौर पर मुसलमाने पाकिस्तान पर भी मुन्तबिक़ होती है। बर्रे सगीर में मुसलमान अक़लियत में (अल्पसंख्यक) थे, हिन्दुओं की अक्सरियत के मुक़ाबले में उन्हें खौफ़ था कि वह अपने हुक़ूक़ का तहफ्फ़ुज़ करने में कमज़ोर हैं। अपने जान व माल को दरपेश ख़तरात के अलावा उन्हें यह अंदेशा भी था कि अक्सरियत के हाथों उनका मआशी, समाजी, सियासी, लिसानी, मज़हबी वगैरह हर ऐतबार से इस्तेहसाल (शोषण) होगा।

فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٢٦

*"तो अल्लाह ने तुम्हें पनाह की जगह दे दी और तुम्हारी मदद की अपनी ख़ास नुसरत से और तुम्हें बेहतरीन पाकीज़ा रिज़्क़ अता किया, ताकि तुम शुक्र अदा करो।"*

## आयत 27

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ

*"ऐ अहले ईमान! मत ख्यानत करो अल्लाह से और रसूल (صلى الله عليه وسلم) से"*

अल्लाह की अमानत में ख्यानत यक़ीनन बहुत बड़ी ख्यानत है। हमारे पास अल्लाह की सबसे बड़ी अमानत उसकी वह रूह है जो उसने हमारे जिस्मों में फूंक रखी है। इसी के बारे में सूरतुल अहज़ाब में फ़रमाया गया:

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

*"हमने (अपनी) अमानत को आसमानों, ज़मीन और पहाड़ों पर पेश किया तो उन्होंने इसके उठाने से इन्कार कर दिया और वह इससे डर गए, मगर इंसान ने इसे उठा लिया, यक़ीनन वह ज़ालिम और जाहिल था।"*

وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

फिर इसके बाद दीन, क़ुरान और शरीअत अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की बड़ी-बड़ी अमानतें हैं जो हमें सौंपी गई हैं। चुनाँचे ईमान का दम भरना, अल्लाह की इताअत और उसके रसूल ﷺ की मोहब्बत का दावा करना, लेकिन फिर अल्लाह के दीन को मगलूब देख कर भी अपने कारोबार, अपनी जायदाद, अपनी मुलाज़मत और अपने कैरियर की फ़िक्र में लगे रहना, अल्लाह और रसूल ﷺ के साथ इससे बड़ी बेवफ़ाई, ग़द्दारी और ख्यानत और क्या होगी!

وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

*"और ना ही अपनी (आपस की) अमानतों में ख्यानत करो जानते-बूझते।"*

## आयत 28

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ

*"और जान लो कि तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी औलाद फ़ितना हैं"*

फ़ितने के मायने आज़माइश और उस कसौटी के हैं जिस पर किसी को परखा जाता है। इस लिहाज़ से माल और औलाद इन्सान के लिये बहुत बड़ी आज़माइश हैं। यक़ीनन माल और औलाद ही इंसान के पाँव की सबसे बड़ी बेड़ियाँ हैं जो उसे

नुसरते दीन की जद्दो जहद से रोक कर उसकी आक़बत ख़राब करती है। चुनाँचे वह अपनी शऊरी और फ़आल ज़िन्दगी के शबो-रोज़ माल कमाने, उसे सेंत-सेंत कर रखने और औलाद के मुस्तक़बिल को महफ़ूज़ बनाने में इस अंदाज़ से खपा देता है कि उसमें और कोल्हू के बैल में कोई फ़र्क़ नहीं रह जाता। इसके बाद उसके जिस्म में ज़िंदगी की कोई रमक़ बाक़ी बचती ही नहीं जिसे वह दीन के जद्दो जहद के लिये पेश करके अपने अल्लाह के हुज़ूर सुर्ख रू हो सके।

وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

*"और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा अजर।"*

# आयात 29 से 40 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا
وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُو
الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ
وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ
هٰذَاۤ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا

اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ
عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۲﴾
وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَمَا لَهُمْ اَلَّا
يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَمَا كَانُوْۤا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ
الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا
كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ
تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى
جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۶﴾ۙ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ
وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا
فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ؒ قُلْ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ
وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾

وَقَاتِلُوهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ
لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣٩ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ
النَّصِيْرُ ۝٤٠

## आयत 29

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا

*"ऐ अहले ईमान! अगर तुम अल्लाह के तक़्वे पर बरक़रार रहोगे तो वह तुम्हारे लिये फ़ुरक़ान पैदा कर देगा"*

अगर तुम तक़्वे की रविश इख्तियार करोगे तो अल्लाह की तरफ़ से एक बाद दीगर तुम्हारे लिये फ़ुरक़ान आता रहेगा। जैसे पहला फ़ुरक़ान गज़वा-ए-बदर में तुम्हारी फ़तह की सूरत में आ गया।

وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٢٩

*"और दूर कर देगा तुमसे तुम्हारी बुराईयाँ (कमज़ोरियाँ) और तुम्हें बख्श देगा। और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है।"*

## आयत 30

وَاِذۡ يَمۡكُرُ بِكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا

*“और याद कीजिये जब कुफ्फ़ार आप ﷺ के ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे थे”*

لِيُثۡبِتُوۡكَ اَوۡ يَقۡتُلُوۡكَ اَوۡ يُخۡرِجُوۡكَ‌ؕ

*“कि आप ﷺ को क़ैद कर दें या क़त्ल कर दें या (मक्के से) निकाल दें।”*

यह उन साज़िशों का ज़िक्र है जो क़ुरैशे मक्का हिजरत से पहले के ज़माने में रसूल अल्लाह ﷺ के ख़िलाफ़ कर रहे थे। आप ﷺ की मुखालफ़त में उनके बाक़ी तमाम हरबे नाकाम हो गए तो वह (नाउज़ु बिल्लाह) आप ﷺ के क़त्ल के दर पे हो गए और इस बारे में संजीदगी से सलाह मशवरे करने लगे।

وَيَمۡكُرُوۡنَ وَيَمۡكُرُ اللّٰهُ‌ؕ وَاللّٰهُ خَيۡرُ الۡمٰكِرِيۡنَ ۝۳۰

*“वह भी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी मंसूबा बंदी कर रहा था। अल्लाह बेहतरीन मंसूबा बंदी करने वाला है।”*

## आयत 31

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝31

*"और जब उन्हें हमारी आयात पढ़ कर सुनाई जाती है तो वह कहते हैं बहुत सुन लिया हमने (यह कलाम), अगर हम चाहें तो ऐसा कलाम हम भी कह दें, यह कुछ नहीं सिवाय पिछले लोगों की कहानियों के।"*

तारीख़ और सीरत की क़िताबों में यह क़ौल नज़र बिन हारिस से मंसूब है। लेकिन उनकी इस तरह की बातें सिर्फ़ कहने की हद तक थीं। अल्लाह की तरफ़ से उन लोगों को बार-बार यह चैलेंज दिया गया कि अगर तुम लोग इस क़ुरान को अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल शुदा नहीं समझते तो तुम भी इसी तरह का कलाम बना कर ले आओ और किसी सालिस (तीसरे) से फ़ैसला करा लो, मगर वह लोग इस चैलेंज को क़ुबूल करने की कभी जुर्रात ना कर सके। इसी तरह पिछली सदी तक आम मुस्तशरिक़ीन भी यह इल्ज़ाम लगाते रहे हैं कि मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) ने तौरात और इन्जील से मालूमात लेकर क़ुरान बनाया है, मगर आज-कल चूँकि तहक़ीक़ का दौर है, इसलिये उनके ऐसे बेतुके इल्ज़ामात ख़ुद-ब-ख़ुद ही कम हो गए हैं।

## आयत 32

وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝۳۲

*"और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यह (क़ुरान) तेरी ही तरफ़ से बरहक़ है तो बरसा दे हम पर पत्थर आसमान से या भेज दे हम पर कोई दर्दनाक अज़ाब।"*

जैसा कि पहले भी ज़िक्र हो चुका है कि सरदाराने क़ुरैश के लिये सबसे बड़ा मसला यह पैदा हो गया था कि मक्के के आम लोगों को मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की दावत के असरात से कैसे महफ़ूज़ रखा जाए। इसके लिये वह मुख्तलिफ़ क़िस्म की तदबीरें करते रहते थे, जिनका ज़िक्र क़ुरान में भी मुतअद्दिद बार हुआ है। इस आयत में उनकी ऐसी ही एक तदबीर का तज़किरा है। उनके बड़े-बड़े सरदार अवाम की इज्तमाआत में अल्ल ऐलान इस तरह की बातें करते थे कि अगर यह क़ुरान अल्लाह ही की तरफ़ से नाज़िल करदा है और हम इसका इन्कार कर रहे हैं तो हम पर अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब क्यों नही आ जाता? बल्कि वह अल्लाह को मुख़ातिब करके दुआइया अंदाज़ में भी पुकारते थे कि ऐ अल्लाह! अगर यह क़ुरान तेरा ही कलाम है तो फिर इसका इन्कार करने के सबब हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा दे, या किसी भी शक्ल में हम पर अपना अज़ाब नाज़िल फ़रमा दे। और इसके बाद वह अपनी इस तदबीर की ख़ूब तश्हीर करते कि देखा हमारी इस दुआ का कुछ भी रद्दे अमल नहीं हुआ, अगर यह वाक़ई अल्लाह का कलाम

होता तो हम पर अब तक अज़ाब आ चुका होता। चुनाँचे इस तरह वह अपने अवाम को मुत्मईन करने की कोशिश करते थे।

## आयत 33

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۭ

*"और अल्लाह ऐसा ना था कि उनको अज़ाब देता जबकि (अभी) आप ﷺ उनके दरमियान मौजूद थे।"*

अगरचे वह लोग अज़ाब के पूरी तरह मुस्तहिक़ हो चुके थे, लेकिन जिस तरह के अज़ाब के लिये वह लोग दुआएँ कर रहे थे वैसा अज़ाब सुन्नते इलाही के मुताबिक़ उन पर उस वक़्त तक नहीं आ सकता था जब तक अल्लाह के रसूल ﷺ मक्के में उनके दरमियान मौजूद थे, क्योंकि ऐसे अज़ाब के नुज़ूल से पहले अल्लाह तआला अपने रसूल और अहले ईमान को हिजरत का हुक्म दे देता है और उनके निकल जाने के बाद ही किसी आबादी पर इज्तमाई अज़ाब आया करता है।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝

*"और अल्लाह उनको अज़ाब देने वाला नहीं था जबकि वह इस्तगफ़ार भी कर रहे थे।"*

इस लिहाज़ से मक्के की आबादी का मामला बहुत गडमड था। मक्के में अवामुन्नास (आम लोग) भी थे, सादा लौ लोग भी थे जो अपने तौर पर अल्लाह का ज़िक्र करते थे, तल्बिया पढ़ते थे और अल्लाह से इस्तगफ़ार भी करते थे। दूसरी तरफ़

अल्लाह का क़ानून है जिसका ज़िक्र इसी सूरत की आयत 37 में हुआ है कि जब तक वह पाक और नापाक को छांट कर अलग नहीं कर देता {لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ} उस वक़्त तक इस नौइयत का अज़ाब किसी क़ौम पर नहीं आता।

## आयत 34

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

*"और क्या (रुकावट) है उनके लिये कि अल्लाह उनको अज़ाब ना दे जबकि वह रोक रहे हैं मस्जिदे हराम से (लोगों को)"*

وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَاۗءَهٗ ۭاِنْ اَوْلِيَاۗؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۳۴

*"दर हालाँकि वह उसके मुतवल्ली भी नहीं हैं। उसके (असल) मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तक़ी लोग हैं, लेकिन उनकी अक्सरियत इल्म नहीं रखती।"*

## आयत 35

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاۗءً وَّتَصْدِيَةً ۭ

*"और नहीं है उनकी नमाज़ बैतुल्लाह के पास सिवाय सीटियाँ बजाना और तालियाँ पीटना।"*

क़ुरैशे मक्का ने अपनी इबादात का हुलिया इस तरह बिगाड़ा था कि अपनी नमाज़ में सीटियों और तालियों जैसी खुराफ़ात भी शामिल कर रखी थीं। इसी तरह खाना काबा का सबसे आला तवाफ़ उनके नज़दीक वह था जो बिल्कुल बरहना (नंगा) होकर किया जाता।

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝۳۵

*"तो अब चखो मज़ा अज़ाब का अपने कुफ़्र की पादाश में।"*

यहाँ वाज़ेह कर दिया गया कि अल्लाह का अज़ाब सिर्फ़ आसमान से पत्थरों की सूरत ही में नहीं आया करता बल्कि गज़वा-ए-बदर में उनकी फ़ैसलाकुन शिकस्त उनके हक़ में अल्लाह का अज़ाब है।

## आयत 36

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

*"यक़ीनन काफ़िर लोग अपने अमवाल खर्च करते हैं ताकि (लोगों को) रोकें अल्लाह के रास्ते से।"*

क़ुरैश की तरफ़ से लश्कर की तैयारी, साज़ो सामान की फ़राहमी, अस्लाह की ख़रीदारी, ऊँटों, घोड़ों और राशन वगैरह का बंदोबस्त भी इस क़िस्म के इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिश्शैतान और फ़ी सबीलिश्शिर्क की मिसाल है। वह

लोग गोया शैतान के रास्ते के मुजाहिदीन थे और अल्लाह की मख्लूक़ को उसके रास्ते से रोकना उनका मिशन था।

فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ

*"तो वह (और भी) खर्च करेंगे, फिर यह उनके लिये एक हसरत बन जायेगा, फिर यह मग़लूब होकर रहेंगे।"*

यह खर्च करना उनके लिये मौजब-ए-हसरत होगा और यह पछतावा उनकी जानों का रोग बन जायेगा कि अपना माल भी खपा दिया, जानें भी ज़ाया कर दीं, लेकिन इस पूरी कोशिश के बावजूद मोहम्मद ﷺ का बाल भी बांका ना कर सके। उनकी यह हसरतें उस वक़्त और भी बढ़ जायेगी जब {وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا} (बनी इसराइल) की तफ़सीर अमली तौर पर उनके सामने आ जायेगी और वह मग़लूब होकर अहले हक़ के सामने उनके रहमो करम की भीख माँग रहे होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۝ؗ

*"और जो कुफ़्र पर रहेंगे वह जहन्नम की तरफ़ घेर कर ले जाए जायेंगे।"*

यानि उनमें से जो लोग ईमान ले आएँगे अल्लाह तआला उन्हें माफ़ कर देगा, और जो कुफ़्र पर अड़े रहेंगे और कुफ़्र पर ही उनकी मौत आएगी तो ऐसे लोग जहन्नम का ईंधन बनेंगे।

## आयत 37

لِيَمِيزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ۭ

*"ताकि अल्लाह पाक को नापाक से (छांट कर) अलैहदा कर दे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखते हुए सबको एक ढेर बना दे, फिर उसको जहन्नम में झोंक दे।"*

اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ۧ

*"यक़ीनन यही लोग हैं ख़सारा पाने वाले।"*

## आयत 38

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ

*"(ऐ मोहम्मद ﷺ!) आप ऐलान कर दीजिये इन काफ़िरों के सामने कि अगर वह अब भी बाज़ आ जाएँ तो जो कुछ पहले हो चुका है वह इनके लिये माफ़ कर दिया जाएगा।"*

यानि अब भी मौक़ा है कि ईमान ले आओ तो तुम्हारी पहली तमाम खताएँ माफ़ कर दी जाएँगी।

وَإِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

*"और अगर वह दोबारा यही कुछ करेंगे तो पिछलों के हक़ में सुन्नते इलाही गुज़र चुकी है।"*

इन्हें सब मालूम है कि जिन क़ौमों ने अपने रसूलों का इन्कार किया था उनका क्या अंजाम हुआ था। सूरतुल अन्फ़ाल से पहले मक्की क़ुरान तो पूरे का पूरा नाज़िल हो चुका था, सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ भी नाज़िल हो चुकी थीं। लिहाज़ा क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह, क़ौमे शुएब और क़ौमे लूत (अलै०) के इबरतनाक अंजाम की तफ़सीलात सबको मालूम हो चुकी थीं।

## आयत 39

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ

*"और (ऐ मुसलमानों!) इनसे जंग करते रहो यहाँ तक कि फ़ितना (कुफ़्र) बाक़ी ना रहे और दीन कुल का कुल अल्लाह ही का हो जाए।"*

यही हुक्म सूरतुल बक़रह की आयत 193 में भी आ चुका है। अलबत्ता यहाँ इसके अल्फ़ाज़ में "कुल्लुहू" की इज़ाफ़ी शान और मज़ीद ताकीद पाई जाती है। यानि ऐ मुसलमानों! तुम्हारी तहरीक को शुरू हुए पन्द्रह बरस हो गए। इस दौरान में दावत, तंज़ीम, तरबियत और सबरे महज़ के मराहिल कामयाबी से तय हो चुके हैं। चुनाँचे अब passive

resistance का दौर ख़त्म समझो। नबी अकरम ﷺ की तरफ़ से इक़दाम (active resistance) का आग़ाज़ हो चुका है और इस इक़दाम के नतीजे में अब यह तहरीक मुसल्लह तसादुम (armed conflict) के मरहले में दाखिल हो गई है। लिहाज़ा जब एक दफ़ा तलवारें तलवारों से टकरा चुकी हैं तो तुम्हारी यह तलवारें अब वापस मियानों में उस वक़्त तक नहीं जाएँगी जब तक यह काम मुकम्मल ना हो जाए और इस काम की तकमील का तक़ाज़ा यह है कि फ़ितना बिल्कुल ख़त्म हो जाए। "फ़ितना" किसी मआशरे के अन्दर बातिल के गलबे की कैफ़ियत का नाम है जिसकी वजह से उस मआशरे के लोगों के लिये ईमान पर क़ायम रहना और अल्लाह के अहकामात पर अमल करना मुश्किल हो जाता है। लिहाज़ा यह जंग अब उस वक़्त तक जारी रहेगी जब तक बातिल मुकम्मल तौर पर मगलूब और अल्लाह का दीन पूरी तरह से ग़ालिब ना हो जाए। अल्लाह के दीन का यह गलबा जुज़्वी तौर पर भी क़ाबिले क़ुबूल नहीं बल्कि दीन कुल का कुल अल्लाह के ताबेअ होना चाहिये।

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣٩

*"फ़िर अगर वह बाज़ आ जाएँ तो जो कुछ वह कर रहे हैं अल्लाह यक़ीनन उसको देख रहा है।"*

## आयत 40

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ

*"और अगर वह रूगरदानी करें तो (ऐ मुसलमानों!) तुम यह जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला*

الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝۴۰

*(हिमायती) है। क्या ही ख़ूब है वह मौला और क्या ही ख़ूब है वह मददग़ार!”*

# आयात 41 से 44 तक

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ
وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا
يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۴۱ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ
بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ۭ وَلَوْ
تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ
اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ڏ لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى
مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۴۲ اِذْ
يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ۭ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا
لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۭ اِنَّهٗ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۴۳ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ

الۡتَقَيۡتُمۡ فِيۡۤ اَعۡيُنِكُمۡ قَلِيۡلًا وَّيُقَلِّلُكُمۡ فِيۡۤ اَعۡيُنِهِمۡ لِيَقۡضِيَ اللّٰهُ اَمۡرًا كَانَ مَفۡعُوۡلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۴۴﴾

**आयत 41**

وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّمَا غَنِمۡتُمۡ مِّنۡ شَيۡءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوۡلِ وَلِذِي الۡقُرۡبٰى

*"और जान लो कि जो भी ग़नीमत तुम्हें हासिल हुई है उसका ख़ुम्स (पाँचवां हिस्सा) तो अल्लाह के लिये, अल्लाह के रसूल के लिये और (रसूल के) क़राबतदारों के लिये है"*

इस आयत में माले ग़नीमत का हुक्म बयान हो रहा है। वाज़ेह रहे कि बेअसत के बाद से रसूल अल्लाह ﷺ का ज़रिया-ए-मआश कोई नहीं था। शादी के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने अपनी सारी दौलत हर क़िस्म के तसर्रुफ़ के लिये आप ﷺ को पेश कर दी थी। जब तक आप ﷺ मक्का में रहे, किसी ना किसी तरह इसी सरमाये से आपके ज़ाती अखराजात चलते रहे, लेकिन हिजरत के बाद इस सिलसिले में कोई मुस्तक़िल इंतेज़ाम नहीं था। फिर आप ﷺ के क़राबतदार और अहलो अयाल भी थे जिनकी कफ़ालत आप ﷺ के ज़िम्मे थी। इन सब अखराजात के लिये ज़रूरी था कि कोई माक़ूल और मुस्तक़िल इंतेज़ाम कर दिया जाए। चुनाँचे गनाइम में से पाँचवां हिस्सा मुस्तक़िल

तौर पर बैतुलमाल को दे दिया गया और आपके ज़ाती अखराजात, अज़वाजे मुताहरात रज़ि. का नान-नफ़क़ा और आपके क़राबतदारों की कफ़ालत बैतुलमाल के ज़िम्मे तय पाई।

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ

*"और (इसमें हिस्सा होगा) यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये (भी)"*

इसी पाँचवें हिस्से में से मआशरे के महरूम अफ़राद की मदद भी की जायगी।

اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰي عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ

*"अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस शय पर जो हमने नाज़िल की अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन, जिस दिन दो फ़ौजों का टकराव हुआ था।"*

وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝41

*"और अल्लाह हर शय पर क़ादिर है।"*

फ़ैसले (गज़वा-ए-बदर) के दिन जो शय खुसूसी तौर पर नाज़िल की गई वह गैबी इमदाद और नुसरते इलाही थी। अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया था कि तुम्हारी मदद के लिये फ़रिश्ते आयेंगे। वह फ़रिश्ते अगरचे किसी को नज़र तो नहीं आते थे, लेकिन जैसे तुम लोग बहुत सी दूसरी चीज़ों

पर ईमान बिल गैब रखते हो, अल्लाह पर और उसकी वही पर ईमान रखते हो, जिबराइल अलै. के वही लाने पर ईमान रखते हो और इस क़ुरान के मुनज़्ज़ल मिनल्लाह होने पर ईमान रखते हो, इसी तरह तुम्हारा यह ईमान भी होना चाहिये कि अल्लाह ने अपना वादा पूरा कर दिया जो उसने अपने रसूल ﷺ और मुसलमानों की मदद के सिलसिले में किया था और यह कि तुम्हारी यह फ़तह अल्लाह की मदद से ही मुम्किन हुई है। अगर तुम लोगों का इस हक़ीक़त पर यक़ीने कामिल है तो फिर अल्लाह का यह फ़ैसला भी दिल की आमादगी और ख़ुशी से क़ुबूल कर लो कि माले ग़नीमत में से पाँचवां हिस्सा अल्लाह, उसके रसूल और बैतुलमाल का होगा।

इस हुक्म के नाज़िल होने के बाद तमाम माले ग़नीमत एक जगह जमा किया गया और उसमें से पाँचवां हिस्सा बैतुलमाल के लिये निकाल कर बाक़ी चार हिस्से मुजाहिदीन में तक़सीम कर दिए गए। उसमें से हर उस शख्स को बराबर का हिस्सा मिला जो लश्कर में जंग के लिये शामिल था, क़तअ नज़र इसके कि किसी ने अमली तौर पर क़िताल किया था या नहीं किया था और क़तअ नज़र इसके कि किसी ने बहुत सा माले ग़नीमत जमा किया था या किसी ने कुछ भी जमा नहीं किया था। अलबत्ता इस तक़सीम में सवार के दो हिस्से रखे गए और पैदल के लिये एक हिस्सा। इसलिये कि सवारियों के जानवर मुहैय्या करने और उन जानवरों पर उठने वाले अखराजात मुताल्क़ा अफ़राद ज़ाती तौर पर बर्दाश्त करते थे।

**आयत 42**

اِذۡ اَنۡتُمۡ بِالۡعُدۡوَةِ الدُّنۡيَا وَهُمۡ بِالۡعُدۡوَةِ الۡقُصۡوٰى

*"जब तुम लोग थे क़रीब वाले किनारे पर और वह लोग थे दूर वाले किनारे पर"*

वादी-ए-बदर दोनों ऐतराफ़ से तंग है जबकि दरमियान में मैदान की शक्ल इख्तियार कर लेती है। इस वादी का एक तंग किनारा शिमाल की तरफ़ है जहाँ से शाम की तरफ़ रास्ता निकलता है और दूसरा किनारा जुनूब की तरफ़ है जहाँ से मक्के को रास्ता जाता है। वादी में से एक रास्ता मशरिक़ की सिम्त भी निकलता है जो मदीने की तरफ़ जाता है। लिहाज़ा पुराने ज़माने में हाजियों के ज़्यादा तर क़ाफ़िले वादी-ए-बदर से ही गुज़रते थे। अब नई मोटर वे "तरीक़ुल हिजरत" बन जाने से लोगों को इन मक़ामात से गुज़रने का मौक़ा नहीं मिलता। गज़वा-ए-बदर के मौक़े पर अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसी तदबीर का ज़हूर हुआ कि दोनों लश्कर वादी-ए-बदर में एक साथ पहुँचे। यहाँ उसी का ज़िक्र है कि जब क़ुरैश का लश्कर वादी के दूर वाले (जुनूबी) किनारे पर आ पहुँचा और मशरिक़ की जानिब से हुज़ूर ﷺ अपना लश्कर लेकर उस किनारे पर पहुँच गए जो मदीने से क़रीब था।

وَالرَّكۡبُ اَسۡفَلَ مِنۡكُمۡ ؕ

*"और क़ाफ़िला तुमसे नीचे था।"*

क़ुरैश का तिजारती क़ाफ़िला उस वक़्त नीचे साहिल समन्दर की तरफ़ से होकर गुज़र रहा था। अबु सूफ़ियान ने एक तरफ़ तो क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के लिये मक्के वालों को

पैग़ाम भेज दिया था और दूसरी तरफ़ असल रास्ते को छोड़ दिया था जो वादी-ए-बदर से होकर गुज़रता था और अब यह क़ाफ़िला साहिल समन्दर के साथ-साथ सफ़र करते हुए आगे बढ़ रहा था। बदर के पहाड़ी सिलसिले से आगे तहामा का मैदान है जो साहिल समन्दर तक फैला हुआ है। और क़ाफ़िला उस वक़्त उस मैदान के भी आखरी हुदूद पर समन्दर की जानिब था। इसलिये फ़रमाया गया कि क़ाफ़िला तुमसे निचली सतह पर था।

وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ

*“और अगर तुम लोग आपस में मीआद ठहरा कर निकलते तो भी वक़्ते मुक़र्ररा (पर पहुँचने) में तुम ज़रूर मुख्तलिफ़ हो जाते”*

यानि यह तो अल्लाह की मशियत के तहत दोनों लश्कर ठीक एक ही वक़्त पर वादी के दोनों किनारों पर पहुँचे थे। अगर आप लोगों ने मक़ामे मुअययन पर पहुँचने के लिये आपस में कोई वक़्त मुक़र्रर किया होता तो उसमें ज़रूर तक़दीम व ताखीर हो जाती, लेकिन हमने दोनों लश्करों को ऐन वक़्त पर एक साथ आमने-सामने ला खड़ा किया, क्योंकि हम चाहते थे कि यह टकराव हो जाए और अहले मक्का पर यह बात वाज़ेह हो जाए कि अल्लाह तआला की नुसरत किसके साथ है।

وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا

*“लेकिन (यह सब कुछ इसलिये हुआ) ताकि अल्लाह फ़ैसला कर दे उस काम का जो होने ही वाला था”*

لِّيَهۡلِكَ مَنۡ هَلَكَ عَنۡۢ بَيِّنَةٍ

*"ताकि जिसे हलाक होना है वह हलाक हो बात वाज़ेह हो जाने के बाद"*

यानि हक़ के वाज़ेह हो जाने में कोई अबहाम (अस्पष्टता) ना रह जाए। अहले मक्का में से उन अवाम के लिये भी हक़ को पहचानने में कोई शक व शुबह बाक़ी ना रहे जिन्हें अब तक सरदारों ने गुमराह कर रखा था। अगर अब भी किसी की आँखें नहीं खुलतीं और वह हलाकत के रास्ते पर ही गामज़न रहने को तरजीह देता है तो यह उसकी मरज़ी, मगर हम चाहते हैं कि अगर ऐसे लोगों को हलाक ही होना है तो उनमें से हर फ़र्द हक़ के पूरी तरह वाज़ेह होने के बाद हलाक हो।

وَّيَحۡيٰى مَنۡ حَىَّ عَنۡۢ بَيِّنَةٍ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۴۲﴾

*"और जिसे ज़िन्दा रहना हो वह ज़िन्दा रहे वाज़ेह दलील की बिना पर। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।"*

जो सीधे रास्ते पर आना चहाता है वह भी इस बय्यिना की बिना पर सीधे रास्ते पर आ जाए और हयाते मअनवी हासिल कर ले।

## आयत 43

اِذۡ يُرِيۡكَهُمُ اللّٰهُ فِىۡ مَنَامِكَ قَلِيۡلًا ؕ

*"जब अल्लाह आपको दिखा रहा था (ऐ नबी ﷺ) उन्हें आपकी नींद में कम तादाद में"*

रसूल अल्लाह ﷺ ने ख़्वाब में देखा कि क़ुरैश के लश्कर की तादाद बहुत ज़्यादा नहीं है, बस थोड़े से लोग हैं जो बदर की तरफ़ जंग के लिये आ रहे हैं, हालाँकि वह एक हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल बहुत बड़ा लश्कर था।

وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا

*“और अगर आप ﷺ को दिखाता कि वह कसीर तादाद में हैं”*

और आप ﷺ ने अपने साथियों को वह खबर ज्यों की त्यों बताई होती:

لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ

*“(तो ऐ मुसलमानों!) तुम ज़रूर कमज़ोरी दिखाते और मामले में इख्तलाफ़ करते”*

दुश्मन की असल तादाद और ताक़त के बारे में जान कर आप लोग पस्त हिम्मत हो जाते और इख्तलाफ़ में पड़ जाते कि हमें बदर में जाकर इस लश्कर का मुक़ाबला करना भी चाहिये या नहीं। इस तरह आराअ (राय) में इख्तलाफ़ की बिना पर भी तुम्हारी जमीअत में कमज़ोरी आ जाती।

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

*“लेकिन अल्लाह ने सलामती पैदा फ़रमा दी। यक़ीनन वह वाक़िफ़ है उससे जो कुछ सीनों के अन्दर है।”*

रसूल अल्लाह ﷺ ने जो ख़्वाब देखा वह तो ग़लत नहीं हो सकता था, क्योंकि अंबिया अलै. के तमाम ख़्वाब सच्चे होते हैं। इसलिये मुफ़स्सरीन ने इस नुक्ते की तौजीह

(explanation) इस तरह की है कि आप ﷺ को लश्करे कुफ्फ़ार की मअनवी हक़ीक़त दिखाई गई थी। यानि किसी चीज़ की एक कमियत (quantitative value) होती है और एक उसकी कैफ़ियत और उसकी असल हक़ीक़त होती है। कमियत के पहलु से देखा जाए तो लश्करे कुफ्फ़ार की तादाद एक हज़ार थी और वह मुसलमानों से तीन गुना थे, मगर इस लश्कर की अंदरूनी कैफ़ियत यकसर मुख्तलिफ़ थी। दर हक़ीक़त मक्के के अवामुन्नास की अक्सरियत हुज़ूर ﷺ को अपने मआशरे का बेहतरीन इंसान समझती थी। उनकी सोच के मुताबिक़ आप ﷺ के तमाम साथी भी मक्के के बेहतरीन लोग थे। मक्के का आम आदमी दिल से इस हक़ीक़त को तस्लीम करता था कि मोहम्मद ﷺ और आपके साथियों ने कोई जुर्म नहीं किया है, बल्कि यह लोग एक ख़ुदा को मानने वाले, नेकियों का हुक्म देने वाले और शरीफ़ लोग हैं। चुनाँचे मक्के की ख़ामोश अक्सरियत की हमदर्दियां मुसलमानों के साथ थीं। ऐसे तमाम लोग अपने सरदारों और लीडरों के हुक्म की तामील में लश्कर में शामिल तो हो गए थे, मगर उनके दिल अपने लीडरों के साथ नहीं थे। जंग में दरअसल जान की बाज़ी लगाने का जज़्बा ही इन्सान को बहादुर और ताक़तवर बनाता है और यह जज़्बा नज़रिये की सच्चाई और नज़रियाती पुख्तगी से पैदा होता है। क़ुरैश के इस लश्कर में किसी ऐसे हक़ीक़ी जज़्बे का सिरे से फ़क़दान (अभाव) था। लिहाज़ा तादाद में अगरचे वह लोग ज़्यादा थे मगर मअनवी तौर पर उनकी जो कैफ़ियत और असल हक़ीक़त थी इस लिहाज़ से वह बहुत कम थे और हुज़ूर ﷺ को ख़्वाब में अल्लाह तआला ने उनकी असल हक़ीक़त दिखाई थी।

## आयत 44

وَاِذۡ يُرِيۡكُمُوۡهُمۡ اِذِ الۡتَقَيۡتُمۡ فِىۡۤ اَعۡيُنِكُمۡ قَلِيۡلًا وَّيُقَلِّلُكُمۡ فِىۡۤ اَعۡيُنِهِمۡ

*"और जब तुम आमने-सामने हुए तो तुम्हारी नज़रों में उन्हें (कुफ्फ़ार को) थोड़ा करके दिखाता था और उनकी नज़रों में तुम्हें थोड़ा करके दिखाता था"*

जब दोनों लश्कर मुक़ाबले के लिये आमने-सामने हुए तो अल्लाह तआला ने ऐसी कैफ़ियत पैदा कर दी कि मुसलमानों को भी देखने में कुफ्फ़ार थोड़े लग रहे थे और कुफ्फ़ार को भी मुसलमान थोड़े नज़र आ रहे थे। ऐसी सूरते हाल अल्लाह तआला ने इसलिये पैदा फ़रमा दी ताकि यह जंग डट कर हो। इसलिये कि वह इस दिन को "यौमुल फ़ुरक़ान" बनाना चाहता था और नहीं चाहता था कि कोई फ़रीक़ भी मैदान से कन्नी कतराए।

لِيَقۡضِىَ اللّٰهُ اَمۡرًا كَانَ مَفۡعُوۡلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ ۝٤٤

*"ताकि अल्लाह पूरा कर दे उस मामले को जो होने वाला ही था। और तमाम मामलात (बिल आख़िर तो) अल्लाह ही की तरफ़ लौटा दिए जायेंगे।"*

# आयात 45 से 48 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا
اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ
وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ
وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ
﴿٤٧﴾ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا
غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّىْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا
تَرَاۗءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰي عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ
مِّنْكُمْ اِنِّىْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

## आयत 45

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا

*"ऐ अहले ईमान! जब भी तुम्हारा मुक़ाबला हो किसी गिरोह से तो साबित क़दम रहो"*

यह वह दौर था जब हक़ और बातिल में मुसल्लाह तसादुम शुरू हो चुका था और दीन के गलबे की जद्दो-जहद आखरी

मरहले में दाख़िल हो चुकी थी। गज़वा-ए-बदर इस सिलसिले की पहली जंग थी और अभी बहुत सी मज़ीद जंगे लड़ी जानी थीं। इस पसमंज़र में मुसलमानों को मैदाने जंग और जंगी हिकमते अमली के बारे में ज़रूरी हिदायात दी जा रही हैं कि जब भी किसी फौज़ से मैदाने जंग में तुम्हारा मुक़ाबला हो तो तुम साबित क़दम रहो, और कभी भी, किसी भी हालत में दुश्मन को पीठ ना दिखाओ।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۴۵﴾

*"और अल्लाह का ज़िक्र करते रहो कसरत के साथ ताकि तुम फ़लाह पाओ।"*

हालते जंग में भी अल्लाह को कसरत से याद करते रहो, क्योंकि तुम्हारी असल ताक़त का इन्हसार अल्लाह की मदद पर है। लिहाज़ा तुम अल्लाह पर भरोसा रखो: {وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ} (नहल 127), क्योंकि एक बंदा-ए-मोमिन का सब्र अल्लाह के भरोसे पर ही होता है। अगर तुम्हारे दिल अल्लाह की याद से मुनव्वर होंगे, उसके साथ क़ल्बी और रूहानी ताल्लुक़ असत्वार (मज़बूत) होगा, तो तुम्हें साबित क़दम रहने के लिये सहारा मिलेगा, और अगर अल्लाह के साथ तुम्हारा यह ताल्लुक़ कमज़ोर पड़ गया तो फिर तुम्हारी हिम्मत भी जवाब दे देगी।

## आयत 46

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

*"और हुक्म मानो अल्लाह का और उसके रसूल (صلی اللہ علیہ وسلم) का"*

यह तीसरा हुक्म डिसिप्लीन के बारे में है कि जो हुक्म तुम्हें रसूल ﷺ की तरफ़ से मिले उसकी दिलो जान से पाबंदी करो। अगरचे यहाँ अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की इताअत की बात हुई है लेकिन हक़ीक़त में देखा जाये तो अमली तौर पर यह इताअत रसूल अल्लाह ﷺ ही की थी, क्योंकि जो हुक्म भी आता था वह आप ﷺ ही की तरफ़ से आता था। क़ुरान भी हुज़ूर ﷺ की ज़बाने मुबारक से अदा होता था और अगर आप ﷺ अपनी किसी तदबीर से इज्तेहाद के तहत कोई फ़ैसला फ़रमाते या कोई राय ज़ाहिर फ़रमाते तो वह भी आप ﷺ ही की ज़बाने मुबारक से अदा होता था। लिहाज़ा अमलन अल्लाह की इताअत आप ﷺ ही की इताअत में मुज़मर है। इक़बाल ने इस नुक्ते को बहुत खूबसूरती से इस एक मिसरे में समो दिया है: *"ब-मुस्तफ़ा ब-रसाँ ख्वेश रा कि दें हमा ऊस्त!"*

وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ۚ۴۶

*"और आपस में झगड़ा ना करो वरना तुम ढीले पड़ जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी, और साबित क़दम रहो। यक़ीनन अल्लाह साबित क़दम रहने वालों के साथ है।"*

यह वही अल्फ़ाज़ हैं जो हम सूरह आले इमरान की आयत 152 में पढ़ चुके हैं। वहाँ गज़वा-ए-ओहद के वाक़िये पर तबसिरा करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَھُمْ بِاِذْنِھٖ ۚ حَتّٰٓي اِذَا فَشِلْتُمْ وَ تَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ

अल्लाह तआला को तो इल्म था कि एक साल बाद (ग़ज़वा-ए-ओहद में) क्या सूरते हाल पेश आने वाली है। चुनाँचे एक साल पहले ही मुसलमानों को जंगी हिकमते अमली के बारे में बहुत वाज़ेह हिदायात दी जा रही हैं, कि डिसिप्लिन की पाबंदी करो और इताअते रसूल ﷺ पर कारबंद रहो।

## आयत 47

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ

*"और उन लोगों की मानिन्द ना हो जाना जो निकले थे अपने घरों से इतराते हुए, लोगों को दिखाने के लिये"*

यह क़ुरैश के लश्कर की तरफ़ इशारा है। जब यह लश्कर मक्का से रवाना हुआ तो उसकी शानो शौक़त वाक़ई मरऊब कुन थी। उसके साथ ऐश व तरब का सामान भी था। यही वजह थी कि अबु जहल और दीगर सरदाराने क़ुरैश अपने गुरूर और तकब्बुर बाइस इस ज़अम (गुमान) में थे कि मुट्ठी भर मुसलमान हमारे इस ताक़तवर लश्कर के सामने खस व खाशाक़ साबित होंगे और हम उन्हें कुचल कर रख देंगे।

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ؀

*"और वह अल्लाह के रास्ते से रोक रहे थे। और जो कुछ वह लोग कर रहे थे अल्लाह उसका इहाता किये हुए था।"*

वह अपनी सारी कोशिशें और तवानाइयाँ मख्लूक़े खुदा को अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिये सर्फ़ कर रहे थे, मगर उनकी कोई तदबीर अल्लाह के क़ाबू से बाहर जाने वाली तो नहीं थी।

## आयत 48

*"और जब शैतान ने उनके लिये उनके आमाल को मुज़य्यन कर दिया था और उसने (उनसे) कहा था कि आज तुम पर इन्सानों में से कोई ग़ालिब नही आ सकता"*

وَاِذۡ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيۡطٰنُ اَعۡمَالَهُمۡ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الۡيَوۡمَ مِنَ النَّاسِ

यानि उनके दिलों में शैतान ने मुतकब्बिराना ख़यालात पैदा कर दिए थे और उन्हें खुशफ़हमी में मुबतला कर दिया था कि तुम्हारा यह साज़ो सामान, यह अस्लाह, यह इतना बड़ा लश्कर, यह सब ग़ैर मामूली और अनहोनी सूरतेहाल है। अरब की तारीख़ में इस तरह के मौक़े बहुत कम मिलते हैं। किस में हिम्मत है कि आज इस लश्कर के सामने ठहर सके और किसके पास इतनी ताक़त है कि आज तुम्हारे ऊपर ग़लबा पा सके?

*"और मैं भी तुम्हारे साथ ही हूँ।"*

وَاِنِّىۡ جَارٌ لَّـكُمۡ‌ۚ

فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ

*"फिर जब दोनों लश्कर आमने-सामने हुए तो वह अपने एड़ियों के बल पीछे फिर गया"*

وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ

*"और कहने लगा कि मैं तुमसे ला-ताल्लुक़ हूँ, मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे हो"*

चूँकि इब्लीस (अज़ाज़ील) की तख्लीक़ आग़ से हुई है, लिहाज़ा नारी मख्लूक़ होने की वजह से उसने फ़रिश्तों को नाज़िल होते देख लिया और यह कहते हुए उलटे पाँव भाग खड़ा हुआ कि मैं तो यहाँ वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम लोगों को नज़र नहीं आ रहा है।

اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۴۸

*"मुझे अल्लाह का खौफ़ है। और अल्लाह सज़ा देने में बहुत सख्त है।"*

.

# आयात 49 से 58 तक

اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ
هٰٓؤُلَاۗءِ دِيْنُهُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۴۹ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ
الْمَلٰۗىِٕكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۵۰﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ
اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۵۱﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ
بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۲﴾ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى
يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۳﴾ ۙ
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ
فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۵۴﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ
عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۵﴾ ۖ اَلَّذِيْنَ
عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ
وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ
فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِمَّا
تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ ع

# आयत 49

اِذۡ یَقُوۡلُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ وَالَّذِیۡنَ فِیۡ قُلُوۡبِہِمۡ مَّرَضٌ

*"जब कह रहे थे मुनाफ़िक़ीन और वह लोग जिनके दिलों में रोग था"*

अभी तक एक तरफ़ के हालात का नक़्शा पेश किया जा रहा था। यानि लश्करे क़ुरैश की मक्के से रवानगी, उस लश्कर की कैफ़ियत, उनके सरदारों के मुतकब्बिराना ख्यालात, शैतान का उनकी पीठ ठोकना और फिर ऐन वक़्त पर भाग खड़े होना। अब इस अयात में मदीने के हालात का तबसिरा है कि जब रसूल अल्लाह ﷺ मदीने से लश्कर लेकर निकले तो पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ीन क्या-क्या बातें बना रहे थे। वह कह रहे थे:

غَرَّ ہٰۤؤُلَاۤءِ دِیۡنُہُمۡ ؕ

*"इन (मुसलमानों) को तो इनके दीन ने बिल्कुल धोखे में दाल दिया है"*

यानि इन लोगों का दिमाग़ ख़राब हो गया है जो क़ुरैश के इतने बड़े लश्कर से मुक़ाबला करने चल पड़े हैं। हम तो पहले ही इनको सुफ़हाअ (अहमक़) समझते थे, मगर अब तो महसूस होता है कि यह लोग अपने दीन के पीछे बिल्कुल ही पागल हो गए हैं।

وَمَنۡ یَّتَوَکَّلۡ عَلَی اللّٰہِ فَاِنَّ اللّٰہَ عَزِیۡزٌ حَکِیۡمٌ ﴿۴۹﴾

*"और (इन्हें क्या पता कि) जो कोई तवक्कुल करता है अल्लाह पर तो अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।"*

## आयत 50

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ

*"और काश तुम देख सकते जब क़ब्ज़ करते हैं फ़रिश्ते इन काफ़िरों की जानों को"*

يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٥٠

*"ज़रबें लगाते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और (कहते हैं कि अब) चखो जलने का अज़ाब।"*

## आयत 51

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٥١ۙ

*"यह वह कुछ है जो तुम्हारे अपने हाथों ने आगे भेजा है और अल्लाह तो हरगिज़ अपने बन्दों के हक़ में ज़ालिम नहीं है।"*

## आयत 52

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ

*"(इनके साथ वही मामला हुआ) जैसे कि मामला हुआ आले फ़िरऔन का और उन लोगों का जो उनसे पहले थे।"*

आले फ़िरऔन के पहले क़ौमे शोएब (अलै.) थी, क़ौमे शोएब से पहले क़ौमे लूत (अलै.), उनसे पहले क़ौमे समूद, उनसे पहले क़ौमे आद और उनसे पहले क़ौमे नूह। इन सारी क़ौमों के अंजाम के बारे में हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ चुके हैं।

كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ

*"उन्होंने अल्लाह की आयात का कुफ़्र किया, तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया उनके गुनाहों की पादाश में।"*

اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۵۲

*"यक़ीनन अल्लाह क़वी है और सज़ा देने में सख्त है।"*

## आयत 53

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ

*"यह इसलिये कि अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं कि कोई नेअमत जो उसने किसी क़ौम को दी हो उसमें तगय्युर करे जब तक कि वह क़ौम अपनी अंदरूनी कैफ़ियत को मुतगय्युर ना कर दे"*

अल्लाह तआला ने हर क़ौम की तरफ़ अपना पैग़म्बर मबऊस किया, जिसने अल्लाह की तौहीद और उसके अहकाम के मुताबिक़ उस क़ौम को दावत दी। पैग़म्बर की

दावत पर लब्बैक कहने वालों को अल्लाह तआला ने अपनी नेअमतों से नवाज़ा, उन पर अपने ईनामात और अहसानात की बारिशें कीं। फिर अपने पैग़म्बर के बाद उन लोगों ने आहिस्ता-आहिस्ता कुफ़्र व ज़लालत की रविश इख्तियार की और तौहीद के शहराह को छोड़ कर शिर्क की पगडंडियाँ इख्तियार कर लीं तो अल्लाह तआला की नेअमतों ने भी उनसे मुहँ मोड़ लिया, ईनामात की जगह अल्लाह के अज़ाब ने ले ली और यूँ वह क़ौम तबाह व बरबाद कर दी गई।

हज़रत नूह अलै. की कश्ती पर सवार होने वाले मोमिनीन की नस्ल से एक क़ौम वुजूद में आई। जब वह क़ौम गुमराह हुई तो हज़रत हूद अलै. को उनकी तरफ़ भेजा गया। फ़िर हज़रत हूद अलै. पर ईमान लाने वालों की नस्ल से एक क़ौम ने जन्म लिया और फिर वह लोग गुमराह हुए तो उनकी तरफ़ हज़रत सालेह अलै. मबऊस हुए। गोया हर क़ौम इसी तरह वुजूद में आई, मगर अल्लाह तआला ने किसी क़ौम से अपनी नेअमत उस वक़्त तक सल्ब नही की जब तक कि ख़ुद उन्होंने हिदायत की राह को छोड़ कर गुमराही इख्तियार नहीं की। यह मज़मून बाद में सूरतुल रआद (आयत 11) में भी आयेगा। मौलाना ज़फर अली खान ने इस मज़मून को एक ख़ूबसूरत शेर में इस तरह ढाला है:

*ख़ुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नही बदली*
*ना हो जिसको ख्याल आप अपनी हालत के बदलने का!*

इस फ़लसफ़े के मुताबिक़ जब कोई क़ौम मेहनत को अपना शआर (नारा) बना लेती है तो उसके ज़ाहिरी हालात में मुसबत तब्दीली आती है और यूँ उसकी तक़दीर बदलती है। सिर्फ़ ख़ुश फ़हमियों (wishful thinkings) और दुआओं से क़ौमों की तक़दीरें नहीं बदला करतीं, और क़ौम चूँकि

अफ़राद का मजमुआ होती है, इसलिये तब्दीली का आग़ाज़ अफ़राद से होता है। पहले चंद अफ़राद की क़ल्बे माहियत होती है और उनकी सोच, उनके नज़रियात, उनके ख्यालात, उनके मक़ासिद, उनकी दिलचस्पियाँ और उनकी उमंगें तब्दील होती हैं। जब ऐसे पाक बातिन लोगों की तादाद रफ़्ता-रफ़्ता बढती है और वह लोग एक ताक़त और क़ुव्वत के तौर पर ख़ुद को मुनज़्ज़म करके बातिल की राह में सीसा पिलाई हुई दीवार बन कर खड़े हो जाते हैं तो तागूती तूफ़ान अपना रुख बदलने पर मजबूर हो जाते हैं। यूँ अहले हक़ की क़ुर्बानियों से निज़ाम बदलता है, मआशरा फिर से राहे हक़ पर गामज़न होता है और इन्क़लाब की सहरे पुर नूर तुलूअ होती है। लेकिन याद रखें इस इन्क़लाब के लिये फ़िक्री व अमली बुनियाद और इस कठिन सफ़र में ज़ादेराह की फ़राहमी सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरानी तालीमात से मुमकिन है। इसी से इन्सान के अंदर की दुनिया में इन्क़लाब आता है। इसी अक्सीर से उसकी क़ल्बे माहियत होती है और फिर मिट्टी का यह अंबार यकायक शमशीर बेज़नहार का रूप धार लेता है। अल्लामा इक़बाल ने इस लतीफ़ नुक्ते की वज़ाहत इस तरह की है:

*चूं बहा दर रफ़त जां दीगर शूद*
*जां चूं दीगर शद जहां दीगर शूद*

यानि जब यह क़ुरान किसी इन्सान के दिल के अंदर उतर जाता है तो उसके दिल और उसकी रूह को बदल कर रख देता है। और एक बन्दा-ए-मोमिन के अंदर का यही इन्क़लाब बिलआखिर आलमी इन्क़लाब की सूरत इख्तियार कर सकता है।

وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾

*"और यह कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।"*

## आयत 54

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ

*"जैसा कि मामला हुआ आले फ़िरऔन का और जो उनसे पहले थे।"*

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ

*"उन्होंने अपने रब की आयात तो झुठलाया तो हमने उनको हलाक कर डाला उनके गुनाहों की पादाश में"*

وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

*"और आले फ़िरऔन को हमने ग़र्क़ कर दिया, और यह सब के सब ज़ालिम थे।"*

## आयत 55

اِنَّ شَرَّ الدَّوَاۗبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

*"यक़ीनन बदतरीन चौपाये अल्लाह के नज़दीक यही लोग हैं जो कुफ़्र करते हैं और ईमान नहीं लाते।"*

यही बात इससे पहले हम सूरतुल आराफ़ की आयत नम्बर 179 में भी पढ़ चुके हैं कि यह लोग इन्सान नज़र आते हैं, हक़ीक़त में इन्सान नहीं हैं: {لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ

{اَعۡیُنٌ لَّا یُبۡصِرُوۡنَ بِہَا ۫ وَ لَہُمۡ اٰذَانٌ لَّا یَسۡمَعُوۡنَ بِہَا ؕ اُولٰٓئِکَ کَالۡاَنۡعَامِ بَلۡ ہُمۡ اَضَلُّ
यानि हक़ीक़त में वह लोग चौपायों के मानिंद हैं बल्कि उनसे भी गये गुज़रे हैं। उन्हीं लोगों को यहाँ "شَرَّ الدَّوَآبِّ" कहा गया है, कि यही वह हैवान नुमा इन्सान हैं जो तमाम जानवरों से बुरे हैं। जो अक़्ल, शऊर और ईमान की नेअमतों के मुक़ाबले में कुफ़्र की रविश इख्तियार करके दुनिया की लज़्ज़तों पर रीझ गए हैं।

## आयत 56

اَلَّذِیۡنَ عٰہَدۡتَّ مِنۡہُمۡ ثُمَّ یَنۡقُضُوۡنَ عَہۡدَہُمۡ فِیۡ کُلِّ مَرَّۃٍ وَّ ہُمۡ لَا یَتَّقُوۡنَ ﴿۵۶﴾

*"वह लोग जिनसे (ऐ नबी ﷺ) आपने मुआहिदा किया था, फिर वह हर मरतबा अपना अहद तोड़ देते हैं और वह (इस बारे में) डरते नहीं हैं।"*

यह इशारा यहूदे मदीना की तरफ़ है। रसूल अल्लाह ﷺ जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये तो आप ﷺ ने आते ही यहूदियों से मुज़ाकरात शुरू किये नतीजतन मदीने के तीनों यहूदी क़बाइल से शहर के मुश्तरका के दिफ़ा का मुआहिदा कर लिया। प्रोफ़ेसर मन्टगुमरी वाट (1909 से 2006 ई.) ने इस मुआहिदे को आप ﷺ का एक बहुत बड़ा मुदब्बिराना कारनामा क़रार दिया है। उसने इस सिलसिले में आप ﷺ की मामला फ़हमी और सियासी बसीरत को शानदार अल्फ़ाज़ में खिराजे तहसीन पेश किया है। ज़ाहिरी तौर पर अगरचे यहूदी इस मुआहिदे के पाबन्द थे मगर

ख़ुफ़िया तौर पर मुसलमानों के ख़िलाफ़ साज़िशों से भी बाज़ नहीं आते थे। उन्होंने हर मुश्किल मरहले पर इस मुआहिदे का पास ना करते हुए आप ﷺ के दुश्मनों के साथ साज़-बाज़ की, हत्ता कि गज़वा-ए-अहज़ाब के इन्तहाई नाज़ुक मौक़े पर क़ुरैश को ख़ुफ़िया तौर पर पैगामात भिजवाए कि आप लोग बाहर से शहर पर हमला कर दें, हम अंदर से तुम्हारी मदद करेंगे।

## आयत 57

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝۵۷

*"तो अगर आप इन्हें जंग में पा जाएँ तो इनको ऐसी सज़ा दें कि जो इनके पीछे हैं उनको भी खौफ़ज़दा कर दें, ताकि वह इबरत हासिल करें।"*

यह यहूदी आप लोगों के ख़िलाफ़ कुफ्फ़ारे मक्का के साथ मिल कर ख़ुफ़िया तौर पर साज़िशें तो हर वक़्त करते ही रहते हैं, लेकिन अगर इनमें से कुछ लोग मैदाने जंग में भी पकड़े जाएँ कि वह क़ुरैश की तरफ़ से जंग में शरीक हुए हों तो ऐसी सूरत में इनको ऐसी इबरतनाक सज़ा दो कि क़ुरैशे मक्का जो पीछे बैठ कर इनकी ड़ोरें हिला रहे हैं और इन साज़िशों की मंसूबा बंदियाँ कर रहे हैं उनके होश भी ठिकाने आ जाएँ।

## आयत 58

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَاۗءٍ ۭ

*"और अगर आपको अंदेशा हो जाए किसी क़ौम की तरफ़ से बदअहदी का तो फेंक दीजिये (उनका मुआहिदा) उनकी तरफ़ खुल्लम-खुल्ला।"*

पिछली आयत में इन्फ़रादी फ़अल के तौर पर मुआहिदे की ख़िलाफ़वरज़ी का ज़िक्र था। मसलन किसी क़बीले का कोई फ़र्द इस तरह की किसी साज़िश में मुलव्विस पाया जाए तो मुमकिन है ऐसी सूरत में उसके क़बीले के लोग या सरदार उससे बरीउज्ज़िम्मा हो जाएँ कि यह उस शख्स का ज़ाती और इन्फ़रादी फ़अल है और इज्तमाई तौर पर हमारा क़बीला बदस्तूर मुआहिदे का पाबन्द है। लेकिन इस आयत में क़ौमी सतह पर इस मसले का हल बताया गया है कि ऐ नबी ﷺ! अगर आपको किसी क़ौम या क़बीले की तरफ़ से मुआहिदे की ख़िलाफ़वरज़ी का अंदेशा हो तो ऐसी सूरत में आप उनके मुआहिदे को अलल ऐलान मंसूख (abrogate) कर दें। क्योंकी अल्लाह तआला अहले ईमान को अख्लाक़ के जिस मैयार पर देखना चाहता है उसमें यह मुमकिन नहीं कि बज़ाहिर मुआहिदा भी क़ायम रहे और अन्दरूनी तौर पर उनके ख़िलाफ़ इक़दाम की मंसूबाबंदी भी होती रहे, बल्कि ऐसी सूरत में आप ﷺ खुल्लम-खुल्ला यह ऐलान कर दें कि आज से मेरे और तुम्हारे दरमियान कोई मुआहिदा नहीं।

मौलाना मौदूदी रहि. ने 1948 में जिहादे कश्मीर के बारे में अपनी राय का इज़हार इसी क़ुरानी हुक्म की रोशनी में किया था, कि हिन्दुस्तान के साथ हमारे सिफ़ारती

ताल्लुक़ात के होते हुए यह इक़दाम क़ुरान और शरीअत की रू से ग़लत है और इस्लाम के नाम पर बनने वाली ममलकत की हुकूमत को ऐसी पालिसी ज़ेब नहीं देती। पाकिस्तान को अल्लाह पर भरोसा करते हुए अपनी पालिसी का खुल्लम-खुल्ला ऐलान करना चाहिये। मेज़ के ऊपर बाहमी तआवुन के मुआहिदे करना, दोस्ती के हाथ बढाना और मेज़ के नीचे से एक दूसरे की टांगे खींचना दुनियादारों का वतीरा तो हो सकता है अहले ईमान का तरीक़ा नहीं। मौलाना मौदूदी रहि. की यह राय अगरचे इस आयत के ऐन मुताबिक़ थी मगर उस वक़्त उनकी इस राय के ख़िलाफ़ अवाम में ख़ासा इश्तआल पैदा हो गया था।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الۡخَآئِنِیۡنَ ﴿۵۸﴾

*“यक़ीनन अल्लाह ख्यानत करने वालों को पसंद नहीं करता।”*

# आयात 59 से 66 तक

وَلَا یَحۡسَبَنَّ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا سَبَقُوۡا ؕ اِنَّهُمۡ لَا
یُعۡجِزُوۡنَ ﴿۵۹﴾ وَاَعِدُّوۡا لَهُمۡ مَّا اسۡتَطَعۡتُمۡ مِّنۡ قُوَّةٍ
وَّمِنۡ رِّبَاطِ الۡخَیۡلِ تُرۡهِبُوۡنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّکُمۡ
وَاٰخَرِیۡنَ مِنۡ دُوۡنِهِمۡ ۚ لَا تَعۡلَمُوۡنَهُمۡ ۚ اَللّٰهُ
یَعۡلَمُهُمۡ ؕ وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ شَیۡءٍ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ یُوَفَّ

اِلَيۡكُمۡ وَاَنۡتُمۡ لَا تُظۡلَمُوۡنَ ﴿۶۰﴾ وَاِنۡ جَنَحُوۡا لِلسَّلۡمِ
فَاجۡنَحۡ لَهَا وَتَوَكَّلۡ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ
﴿۶۱﴾ وَاِنۡ يُّرِيۡدُوۡۤا اَنۡ يَّخۡدَعُوۡكَ فَاِنَّ حَسۡبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ
الَّذِىۡۤ اَيَّدَكَ بِنَصۡرِهٖ وَبِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۙ﴿۶۲﴾ وَاَلَّفَ بَيۡنَ
قُلُوۡبِهِمۡ ؕ لَوۡ اَنۡفَقۡتَ مَا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا مَّاۤ اَلَّفۡتَ
بَيۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ وَلٰـكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيۡنَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ
﴿۶۳﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ حَسۡبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۶۴﴾ ع يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ حَرِّضِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ عَلَى
الۡقِتَالِ ؕ اِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ عِشۡرُوۡنَ صٰبِرُوۡنَ يَغۡلِبُوۡا
مِائَتَيۡنِ ۚ وَاِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ مِّائَةٌ يَّغۡلِبُوۡۤا اَلۡفًا مِّنَ
الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَفۡقَهُوۡنَ ﴿۶۵﴾ اَلۡـٰٔنَ
خَفَّفَ اللّٰهُ عَنۡكُمۡ وَعَلِمَ اَنَّ فِيۡكُمۡ ضَعۡفًا ؕ فَاِنۡ يَّكُنۡ
مِّنۡكُمۡ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغۡلِبُوۡا مِائَتَيۡنِ ۚ وَاِنۡ يَّكُنۡ
مِّنۡكُمۡ اَلۡفٌ يَّغۡلِبُوۡۤا اَلۡفَيۡنِ بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ
الصّٰبِرِيۡنَ ﴿۶۶﴾

## आयत 59

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ

*"और ना समझें वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया है कि वह बच निकले हैं।"*

गज़वा-ए-बदर में कुफ्फ़ार के एक हज़ार अफ़राद में से बहुत से लोग सही सलामत बच भी निकले थे। यह उनके बारे में फ़रमाया जा रहा है कि वह ग़लत फ़हमी में ना रहें कि वो बाज़ी ले गए हैं।

اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ۝۵۹

*"वह (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकेंगे।"*

वह हमारे क़ाबू से बाहर नहीं जा सकेंगे।

## आयत 60

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ

*"और तैयार रखो उनके (मुक़ाबले के) लिये अपनी इस्तताअत की हद तक ताक़त और बंधे हुए घोड़े"*

यहाँ मुसलमानों को वाज़ेह तौर पर हुक्म दिया जा रहा है कि अब जबकि तुम्हारी तहरीक तसादुम के मरहले में दाख़िल हो चुकी है तो तुम लोग अपने वसाइल के मुताबिक़, मक़दूर भर फ़न हर्ब (जंग) की सलाहियत व आहलियत, अस्लाह और घोड़े वगैरह जिहाद के लिये तैयार रखो। अगरचे एक मोमिन को अल्लाह की नुसरत पर तवक्कुल

करना चाहिये, मगर तवक्कुल का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि वह हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे और उम्मीद रखे कि सब कुछ अल्लाह की मदद से ही हो जायेगा। बल्कि तवक्कुल यह है कि अपनी इस्तताअत के मुताबिक़ अपने तमाम मुम्किना माद्दी और तकनीकी वसाइल मुहैय्या रखे जाएँ और फिर अल्लाह की नुसरत पर तवक्कुल किया जाए।

यहाँ मुसलमानों को अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ भरपूर दिफ़ाई सलाहियत हासिल करने की हत्तल वसीअ कोशिश करने का हुक्म दिया गया है। तैयारी का यह हुक्म हर दौर के लिये है। आज अगर अल्लाह तआला ने पाकिस्तान को एटमी सलाहियत से नवाज़ा है तो यह सलाहियत मुल्क व क़ौम की क़ुव्वत व ताक़त की अलामत भी है और तमाम आलमे इस्लाम की तरफ़ से पाकिस्तान के पास एक अमानत भी। अगर इस सिलसिले में किसी दबाव के तहत, किसी भी क़िस्म का कोई समझौता (compromise) किया गया तो यह अल्लाह, उसके दीन और तमाम आलमे इस्लाम से एक तरह की ख्यानत होगी। लिहाज़ा आज वक़्त की यह अहम ज़रूरत है कि पाकिस्तानी क़ौम अपने दुश्मनों से होशियार रहते हुए इस सिलसिले में जुर्रातमन्दाना पालिसी अपनाये, ताकि इसके दुश्मनों के लिये एटमी हथियारों की सूरत में क़ुव्वते मज़ाहमत का तवाज़ुन (deterrence) क़ायम रहे।

تُرۡهِبُوۡنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمۡ

*"(ताकि) तुम इससे अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों को डरा सको"*

وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۭ

*"और कुछ दूसरों को (भी) जो इनके अलावा हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है।"*

यानि तुम्हारी आस्तीनों के साँप मुनाफ़िक़ीन जो दर परदा तुम्हारी तबाही और बरबादी के दर पे रहते हैं। तुम्हारी नज़रों से तो वह छुपे हुए हैं मगर अल्लाह तआला उनको ख़ूब जानता है।

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝۶۰

*"और जो कुछ भी तुम अल्लाह की राह में खर्च करोगे इसका सवाब पूरा-पूरा तुम्हें दिया जायेगा और तुम पर कोई ज़्यादती नहीं होगी।"*

यानि अगर अस्लाह खरीदना है, साज़ो-सामान फ़राहम करना है, घोड़े तैयार करने हैं तो इस सब कुछ के लिये अखराजात तो होंगे। लिहाज़ा जंगी तैयारी के साथ ही इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह का हुक्म भी आ गया, इस ज़मानत के साथ कि जो कोई जितना भी इस सिलसिले में अल्लाह के रास्ते में खर्च करेगा उसको वादे के मुताबिक़ पूरा-पूरा अजर दिया जायेगा और किसी की ज़र्रा बराबर भी हक़ तल्फ़ी नहीं होगी। यहाँ इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह के बारे में सूरतुल बक़रह के रुकूअ 36 और 37 में दिये गए अहकाम को ज़हन में दोबारा ताज़ा करने की ज़रूरत है। मतलब यह

है कि ऐ मुसलमानों! अब तुम्हारी तहरीक का वह मरहला शुरू हो चुका है जहाँ तुम्हारा जंग के लिये मुमकिन हद तक तैयारी करना और कील-कांटे से लैस होना नागुज़ीर हो गया है। लिहाज़ा अब आगे बढ़ो और इस अज़ीम मक़सद के लिये दिल खोल कर खर्च करो। अल्लाह तुम्हें एक के बदले सात सौ तक देने का वादा कर चुका है, बल्कि यह भी आखरी हद नहीं है। जज़्बा-ए-ईसार व ख़ुलूस जिस क़दर ज़्यादा होगा यह अजर व सवाब इसी क़दर बढ़ता चला जायेगा। लिहाज़ा अपना माल सेंत-सेंत कर रखने के बजाय अल्लाह की राह में खर्च कर डालो, ताकि दुनिया में अल्लाह के दिन के गलबे के लिये काम में आ जाए और आखिरत में तुम्हारी फ़लाह का ज़ामिन बन जाये।

## आयत 61

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا

*"और (ऐ नबी ﷺ!) अगर वह अपने बाज़ू झुका दें अमन के लिये तो आप भी झुक जाएँ इसके लिये"*

अगर मुखालिफ़ फ़रीक़ सुलह पर आमादा नज़र आए तो आप ﷺ भी अमन की ख़ातिर मुनासिब शराइत पर उनसे सुलह कर लें।

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭاِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝61

*"और अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए, यक़ीनन वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।"*

यानि आप ﷺ उनकी मख़फ़ी चालों से फ़िकरमंद ना हों, अल्लाह पर तवक्कुल रखें और सुलह का जवाब सुलह से ही दें।

## आयत 62

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ

*"और अगर वह इरादा रखते हों आप ﷺ को धोखा देने का, तब भी (आप ﷺ घबराइये नहीं) आप ﷺ के लिये अल्लाह काफ़ी है।"*

गोया उनकी साज़िशों और रेशादवानियों के ख़िलाफ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़मानत दी जा रही है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝۶۲

*"और वही तो है (अल्लाह) जिसने आपकी मदद की है अपनी नुसरत से और अहले ईमान के ज़रिये से।"*

यह नुक्ता क़ाबिले गौर है कि अल्लाह तआला ने रसूल अल्लाह ﷺ की मदद अहले ईमान के ज़रिये से की। यानि अल्लाह तआला ने अपने ख़ास फ़ज़ल व करम से आपको ऐसे मुख्लिस और जाँनिसार सहाबा रज़ि. अता किये कि जहाँ आप ﷺ का पसीना गिरा वहाँ उन्होंने अपने खून की नदियाँ बहा दीं। अल्लाह तआला की इस ख़ुसूसी इमदाद की शान उस वक़्त ख़ूब निखर कर सामने आती है जब हम मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के सहाबा रज़ि. के मुक़ाबले में हज़रत मूसा अलै. के साथियों का तरज़े अमल देखते हैं। जब हज़रत मूसा अलै. ने अपनी क़ौम के लोगों से फ़रमाया कि तुम अल्लाह की राह में जंग के लिये निकलो, तो उन्होंने

(सूरतुल मायदा 24) साफ़ कह दिया था: {فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ} "तो जाइये आप और आपका रब दोनों जाकर लड़ें, हम तो यहाँ बैठे हैं।" जिस पर हज़रत मूसा अलै. ने बेज़ारी से यहाँ तक कह दिया था: {رَبِّ اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِىْ وَاَخِىْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ} (सूरतुल मायदा 25) "ऐ मेरे रब! मैं तो अपनी जान और अपने भाई के अलावा किसी पर कोई इख्तियार नहीं रखता, लिहाज़ा आप हमारे और इस फ़ासिक़ क़ौम के दरमियान अलैहदगी कर दें।"

एक तरफ़ यह तर्ज़े अमल है जबकि दूसरी तरफ़ नबी अकरम ﷺ के सहाबा रज़ि. का अंदाज़े इख्लास और जज़्बा-ए-जाँनिसारी है। गज़वा-ए-बदर से पहले जब हुज़ूर ﷺ ने मक़ामे सफराअ पर सहाबा रज़ि. से मशावरत की (और यह बड़ी कांटेदार मशावरत थी) तो कुछ लोग मुसलसल ज़ोर दे रहे थे कि हमे क़ाफ़िले की तरफ़ चलना चाहिये और वह अपने इस मौक़फ़ के हक़ में बड़ी ज़ोरदार दलीलें दे रहे थे, मगर हुज़ूर ﷺ हर बार फ़रमा देते कि कुछ और लोग भी मशवरा दें! इस पर मुहाजरीन में से हज़रत मिक़दाद रज़ि. ने खड़े होकर यही बात की थी कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! जिधर आपका रब आपको हुक्म दे रहा है उसी तरफ़ चलिये, आप हमें हज़रत मूसा अलै. के साथियों की तरह ना समझें, जिन्होंने (सूरतुल मायदा 24) कह दिया था: {فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ}। हम आप ﷺ के साथी हैं, आप ﷺ जो हुक्म दें हम हाज़िर हैं। इस मौक़े पर हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ और

हज़रत उमर रज़ि. ने भी इज़हारे ख्याल फ़रमाया, लेकिन हुज़ूर ﷺ अंसार की राय मालूम करना चाहते थे। इसलिये कि बैत उक़बा-ए-सानिया के मौक़े पर अंसार ने यह वादा किया था कि मदीने पर हमला हुआ तो हम आप ﷺ की हिफ़ाज़त करेंगे, लेकिन यहाँ मामला मदीने से बाहर निकल कर जंग करने का था, लिहाज़ा जंग का फ़ैसला अंसार की राय मालूम किये बगैर नहीं किया जा सकता था। हज़रत सआद बिन मआज़ रज़ि. ने आप ﷺ की मंशा को भाँप लिया, लिहाज़ा वह खड़े हुए और अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ शायद आप ﷺ का रुए सुखन हमारी (अन्सार की) तरफ़ है। आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ! इस पर उन्होंने कहा: لَقَدْ اٰمَنَّا بِكَ وَصَدَّقْنَاكَ...... हम आप ﷺ पर ईमान ला चुके हैं, हम आप ﷺ की तसदीक़ कर चुके हैं, हम आप ﷺ को अल्लाह का रसूल मान चुके हैं और आप ﷺ से समअ-व-इतआत का पुख्ता अहद बाँध चुके हैं, अब हमारे पास आप ﷺ के हुक्म की तामील के अलावा कोई रास्ता (option) नहीं है। क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, अगर आप अपनी सवारी इस समंदर में डाल देंगे तो हम भी आपके पीछे अपनी सवारियाँ समंदर में दाल देंगे। और खुदा की क़सम, अगर आप ﷺ हमें कहेंगे तो हम बरकुल ग्माद (यमन का शहर) तक जा पहुँचेंगे, चाहे इसमें हमारी ऊँटनियाँ लागर हो जाएँ। हमको यह हरगिज़ नागवार नही है कि आप ﷺ कल हमें लेकर दुश्मन से जा टकराएँ। हम जंग में साबित क़दम रहेंगे, मुक़ाबले में सच्ची जाँनिसारी दिखायेंगे, और बईद नहीं कि अल्लाह आप ﷺ को हमसे वह कुछ दिखवा दे जिसे देख कर आप ﷺ की आँखे ठंडी हो जाएँ। पस

अल्लाह की बरकत के भरोसे पर आप ﷺ हमें ले चालें! हज़रत सआद रज़ि. की इस तक़रीर के बाद हुज़ूर ﷺ का चेहरा खुशी से चमक उठा और आप ﷺ ने बदर की तरफ़ कूच करने का हुक्म दिया। यह एक झलक है उस मदद की जो अल्लाह की तरफ़ से आप ﷺ के इन्तहाई सच्चे और मुख्लिस सहाबा रज़ि. की सूरत में हुज़ूर ﷺ के शामिले हाल थी।

## आयत 63

وَاَلَّفَ بَيۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ‌ؕ لَوۡ اَنۡفَقۡتَ مَا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا مَّاۤ اَلَّفۡتَ بَيۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ

*"और इन (अहले ईमान) के दिलों में उसने उलफ़त पैदा कर दी। अगर आप ज़मीन की सारी दौलत भी ख़र्च कर देते तो इनके दिलों में यह उलफ़त पैदा नहीं कर सकते थे"*

وَلٰـكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيۡنَهُمۡ‌ؕ

*"लेकिन यह तो अल्लाह ने उनके माबैन (ऐसी) उलफ़त पैदा कर दी।"*

सूरह आले इमरान की आयत 103 में अल्लाह तआला ने अपने इस फ़ज़ले ख़ास का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में किया है:

وَاذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ اِذۡ كُنۡتُمۡ اَعۡدَآءً فَاَلَّفَ بَيۡنَ قُلُوۡبِكُمۡ فَاَصۡبَحۡتُمۡ بِنِعۡمَتِهٖۤ اِخۡوَانًا ۚ وَكُنۡتُمۡ عَلٰى شَفَا حُفۡرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنۡقَذَكُمۡ مِّنۡهَا‌ؕ

"और अपने उपर अल्लाह की उस नेअमत को याद करो कि तुम लोग एक दूसरे के दुश्मन थे, फ़िर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में बाहम उलफ़त पैदा कर दी तो उसकी नेअमत से तुम भाई-भाई बन गए, और तुम लोग तो आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे जहाँ से अल्लाह ने तुम्हें बचाया है।"

اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٦٣

*"यक़ीनन वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।"*

## आयत 64

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٤

*"ऐ नबी (ﷺ) आपके लिये काफ़ी है अल्लाह और वह जो पैरवी कर रहे हैं आपकी अहले ईमान में से।"*

अगर इस आयत को पिछली आयत के साथ तसल्सुल से पढ़ा जाए तो इसका तर्जुमा यही होगा जो उपर किया गया है, लेकिन इसका दूसरा तर्जुमा यूँ होगा: "ऐ नबी (ﷺ) अल्लाह काफ़ी है आपके लिये भी और जो आपकी पैरवी करने वाले मुसलमान हैं उनके लिये भी।" इबारत का अंदाज़ ऐसा है कि इसमें यह दोनों मफ़ाहीम आ गए हैं।

## आयत 65

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ۭ

*"ऐ नबी (ﷺ) तरगीब दिलाइये अहले ईमान को क़िताल की।"*

हिजरत के बाद 9 साल तक क़िताल के लिये तरगीब, तशवीक़ और तहरीस के ज़रिये ही ज़ोर दिया गया। यह तहरीस गाढ़ी होकर "तहरीज़" बन गयी। उस दौर में मुजाहिदीन की फज़ीलत बयान की गई, उनसे बुलंद दरजात का वादा किया गया (निसा:95) मगर क़िताल को हर एक के लिये फ़र्ज़े ऐन क़रार नहीं दिया गया। लेकिन 9 हिजरी में गज़वा-ए-तबूक़ के मौक़े पर जिहाद के लिये निकलना तमाम अहले ईमान पर फ़र्ज़ कर दिया गया। उस वक़्त तमाम अहले ईमान के लिये नफ़ीरे आम थी और किसी को बिला उज़्र पीछे रहने की इजाज़त नहीं थी।

اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ

*"अगर तुम में से बीस अफ़राद होंगे सबर करने वाले (साबित क़दम) तो वह दो सौ अफ़राद पर ग़ालिब आ जायेंगे"*

وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

*"और अगर होंगे तुम में से सौ अफ़राद तो वह ग़ालिब आ जायेंगे कुफ्फ़ार के एक हज़ार अफ़राद पर"*

*“यह इसलिये कि वह ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते।”*

بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

यहाँ समझ ना रखने से मुराद यह है कि उन्हें अपने मौक़फ़ की सच्चाई का यक़ीन नहीं है। एक तरफ़ वह शख्स है जिसे अपने नज़रिये और मौक़फ़ की हक्क़ानियत पर पुख्ता यक़ीन है, उसका ईमान है कि वह हक़ पर है और हक़ के लिये लड़ रहा है। दूसरी तरफ़ उसके मुक़ाबले में वह शख्स है जो नज़रियाती तौर पर डांवाडोल है, किसी का तनख्वाह याफ़ता है या किसी के हुक्म पर मजबूर होकर लड़ रहा है। अब इन दोनो अश्खास की कारकर्दगी में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ होगा। चुनाँचे कुफ्फ़ार को जंग में साबित क़दमी और इसतक़लाल की वह कैफ़ियत हासिल हो ही नहीं सकती जो नज़रिये की सच्चाई पर जान क़ुरबान करने के जज़्बे से पैदा होती है। दोनों अतराफ़ के अफ़राद की नज़रियाती कैफ़ियत के इसी फ़र्क़ की बुनियाद पर कुफ्फ़ार के एक सौ अफ़राद पर दस मुसलमानों को कामयाबी की नवीद सुनाई गई है। इसके बाद वाली आयत अगरचे ज़मानी लिहाज़ से कुछ अरसा बाद नाज़िल हुई मगर मज़मून के तसल्सुल के बाइस यहाँ शामिल कर दी गई है।

## आयत 66

اَلۡـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنۡكُمۡ وَعَلِمَ اَنَّ فِيۡكُمۡ ضَعۡفًا ؕ

*"अब अल्लाह ने तुम पर से तख़फ़ीफ़ कर दी है और अल्लाह के इल्म में है कि तुम्हारे अंदर कुछ कमज़ोरी आ गई है।"*

यह किस कमज़ोरी का ज़िक्र है और यह कमज़ोरी कैसे आई? इस नुक्ते को अच्छी तरह समझ लें। जहाँ तक मुहाजरीन और अंसार में से उन सहाबा किराम रज़ि. का ताल्लुक़ है जो साबिक़ूनल अव्वलून में से थे तो उनके अंदर (मआज़ अल्लाह) किसी क़िस्म की भी कोई कमज़ोरी नहीं थी, लेकिन जो लोग नये मुसलमान हो रहे थे उनकी तरबियत अभी उस अंदाज़ में नहीं हो पाई थी जैसे पुराने लोगों की हुई थी। उनके दिलों में अभी ईमान पूरी तरह रासिख नहीं हुआ था और मुसलमानों की मज्मुई तादाद में ऐसे नये लोगों का तनासुब रोज़-ब-रोज़ बढ़ रहा था। मसलन अगर पहले हज़ार लोगों में पचास या सौ नए लोग हों तो औसत कुछ और था, लेकिन अब उनकी तादाद खासी ज़्यादा होती जा रही थी तो अब औसत कुछ और होगा। लिहाज़ा औसत के ऐतबार से मुसलमानों की सफ़ों में पहले की निसबत अब कमज़ोरी आ गई थी।

فَاِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغۡلِبُوۡا مِائَتَيۡنِ ۚ

*"पस अगर तुम में एक सौ साबित क़दम रहने वाले होंगे तो वह दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे"*

وَاِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ اَلۡفٌ يَّغۡلِبُوۡۤا اَلۡفَيۡنِ بِاِذۡنِ اللّٰهِ‌ؕ

*"और अगर तुम में एक हज़ार होंगे तो वह दो हज़ार पर ग़ालिब आ जाएँगे अल्लाह के हुक्म से।"*

وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ۝٦٦

*"और यक़ीनन अल्लाह सबर करने वालों (साबित क़दम रहने वालों) के साथ है।"*

# आयात 67 से 71 तक

مَا كَانَ لِنَبِىٍّ اَنۡ يَّكُوۡنَ لَهٗۤ اَسۡرٰى حَتّٰى يُثۡخِنَ فِى
الۡاَرۡضِ‌ؕ تُرِيۡدُوۡنَ عَرَضَ الدُّنۡيَا ‌ۖ وَاللّٰهُ يُرِيۡدُ
الۡاٰخِرَةَ‌ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝٦٧ لَوۡلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ
سَبَقَ لَمَسَّكُمۡ فِيۡمَاۤ اَخَذۡتُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۝٦٨ فَكُلُوۡا
مِمَّا غَنِمۡتُمۡ حَلٰلًا طَيِّبًا ‌ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ
رَّحِيۡمٌ ۝٦٩ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلۡ لِّمَنۡ فِىۡۤ اَيۡدِيۡكُمۡ مِّنَ
الۡاَسۡرٰٓى ۙ اِنۡ يَّعۡلَمِ اللّٰهُ فِىۡ قُلُوۡبِكُمۡ خَيۡرًا يُّؤۡتِكُمۡ
خَيۡرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنۡكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ‌ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ

وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾

## आयत 67

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ۭ

*"किसी नबी के लिये यह ज़ेबा नहीं कि उसके क़ब्ज़े में क़ैदी हों जब तक कि वह (काफ़िरों को क़त्ल करके) ज़मीन में ख़ूब ख़ूँरेज़ी ना कर दे।"*

यह आयत गज़वा-ए-बदर में पकड़े जाने वाले क़ैदियों के बारे में नाज़िल हुई। गज़वा-ए-बदर में क़ुरैश के सत्तर लोग क़ैदी बने। उनके बारे में रसूल अल्लाह ﷺ ने सहाबा रज़ि. से मशावरत की। हज़रत अबु बकर रज़ि. की राय थी कि इन लोगों के साथ नरमी की जाए और फ़िदया वगैरह लेकर इन्हें छोड़ दिया जाए। खुद हुज़ूर ﷺ चूँकि रऊफ़ व रहीम और रफ़ीक़ुल क़ल्ब थे इसलिये आप ﷺ की भी यही राय थी। मगर हज़रत उमर रज़ि. इस ऐतबार से बहुत सख्तगीर थे (اَشَدُّھُمْ فِیْ اَمْرِ اللّٰہِ عُمَرُ)। आपकी राय यह थी कि यह लोग आज़ाद होकर फ़िर कुफ़्र के लिये तक़वियत का बाइस बनेंगे, इसलिये जब तक कुफ़्र की कमर पूरी तरह टूट नहीं जाती इनके साथ नरमी ना की जाए। आपका इसरार था कि तमाम क़ैदियों को क़त्ल कर दिया जाए, बल्कि मुहाजरीन अपने क़रीब-तरीन अज़ीज़ों को ख़ुद अपने हाथों से क़त्ल करें। बाद में इन क़ैदियों को फ़िदया लेकर छोड़ने का फ़ैसला हुआ और

इस पर अमल दरामद भी हो गया। इस फ़ैसले पर इस आयत के ज़रिये गिरफ़्त हुई कि जब तक बातिल की कमर पूरी तरह से तोड़ ना दी जाए उस वक़्त तक हमलावर कुफ्फ़ार को जंगी क़ैदी बनाना दुरुस्त नहीं। इन्हें क़ैदी बनाने का मतलब यह है कि वह ज़िन्दा रहेंगे, और आज नहीं तो कल इन्हें छोड़ना ही पड़ेगा। लिहाज़ा वह फिर से बातिल की ताक़त का सबब बनेंगे और फिर से तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ेंगे।

تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ

*"तुम दुनिया का साज़ो सामान चाहते हो"*

यह फ़िदये की तरफ़ इशारा है। अब ना तो रसूल अल्लाह ﷺ की यह नीयत हो सकती थी (मआज़ अल्लाह) और ना ही हज़रत अबु बकर रज़ि. की, लेकिन अल्लाह तआला का मामला ऐसा है कि उसके यहाँ जब अपने मुक़र्रिब बन्दों की गिरफ़्त होती है तो अल्फ़ाज़ बज़ाहिर बहुत सख्त इस्तेमाल किया जाते हैं। चुनाँचे इन अल्फ़ाज़ में भी एक तरह की सख्ती मौजूद है, लेकिन ज़ाहिर है कि यह बात ना हुज़ूर ﷺ के लिये है और ना हज़रत अबु बकर रज़ि. के लिये।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾

*"और अल्लाह के पेशे नज़र आख़िरत है। और अल्लाह ज़बरदस्त, हिकमत वाला है।"*

## आयत 68

لَوۡلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمۡ فِيۡمَاۤ اَخَذۡتُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۝٦٨

*"अगर अल्लाह की तरफ़ से बात पहले से तय ना हो चुकी होती तो जो कुछ (फ़िदया वगैरह) तुमने लिया है इसके बाइस तुम पर बड़ा सख्त अज़ाब आता।"*

इससे मुराद सूरह मुहम्मद का वह हुक्म है (आयत 4) जो बहुत पहले नाज़िल हो चुका था। इसकी तफ़सील हम इंशा अल्लाह सूरह मुहम्मद के मुताअले के दौरान पढेंगे कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इस हुक्म की ताबीर (interpretation) में किस तरह फ़िदया लेने की गुन्जाईश निकाली थी। यह दरअसल क़ानून की तशरीह व ताबीर का मामला है। जैसा कि सूरतुल ज़ुमर की आयत 18 में इरशाद है: {الَّذِيۡنَ يَسۡتَمِعُوۡنَ الۡقَوۡلَ فَيَتَّبِعُوۡنَ اَحۡسَنَهٗ} यानि वह लोग जो किसी बात को सुन कर पैरवी करते हैं उसमें से बेहतरीन की और इसके आला तरीन दर्जे तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। चुनाँचे इस क़ानून की ताबीर में भी ऐसे ही हुआ। चूँकि मज़कूरा हुक्म के अंदर यह गुन्जाईश या रिआयत मौजूद थी इसलिये हुज़ूर ﷺ ने अपनी तबियत की नरमी के सबब इसको इख्तियार फ़रमा लिया। आयत ज़ेरे नज़र के अंदर से भी यही इशारा मिलता है कि सूरह मुहम्मद में नाज़िल शुदा हुक्म में रिआयत की गुन्जाईश मौजूद थी, इसलिये तो इस हुक्म का हवाला देकर फ़रमाया गया कि अगर वह हुक्म पहले नाज़िल ना हो चुका होता तो जो भी तुमने फ़िदया

वगैरह लिया है इसके बाइस तुम पर बड़ा अज़ाब आता। रिवायात में आता है कि हुज़ूर ﷺ और हज़रत अबु बकर रज़ि. इस आयत के नुज़ूल के बाद रोते रहे हैं। बरहाल इस फ़ैसले में किसी सरीह हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं थी और जो भी राय इख्तियार की गयी थी वह इज्तहादी थी और आप ﷺ ने इज्तहाद के ज़रिये इस हुक्म में से नरमी और रिआयत का एक पहलू इख्तियार कर लिया था।

## आयत 69

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ

*"तो अब खाओ जो कुछ तुम्हें मिला है ग़नीमत में से (कि वह तुम्हारे लिये) हलाल और तैय्यब (है)"*

एक माले ग़नीमत तो वह था जो मुसलामानों को ऐन हालते जंग में मिला था, और दूसरे इस माल को भी ग़नीमत क़रार देकर बिला कराहत हलाल और जायज़ क़रार दे दिया गया जो क़ैदियों से बतौर फ़िदया हासिल किया गया था।

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

*"और अल्लाह का तक़वा इख्तियार करो, यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।"*

## आयत 70

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ

*"ऐ नबी (صلى الله عليه وسلم) कह दीजिये उन लोगों से जो आपके क़ब्ज़े में क़ैदी हैं"*

इस आयत का मफ़हूम समझने के लिये पसमंज़र के तौर पर गज़वा-ए-बदर के क़ैदियों के बारे में दो बातें ज़हन में रखिये। एक तो इन क़ैदियों में बहुत से वह लोग भी शामिल थे जो अपनी मरज़ी से जंग लड़ने नहीं आए थे। वह अपने सरदारों के दबाव या बाज़ दूसरी मस्लहतों के तहत बा दिले नाख्वास्ता जंग में शरीक हुए थे। दूसरी अहम बात उनके बारे में यह थी कि इनमें से बहुत से लोग बाज़ मुसलामानों के बहुत क़रीबी रिश्तेदार थे। ख़ुद नबी अकरम صلى الله عليه وسلم के हक़ीक़ी चचा हज़रत अब्बास रज़ि. बिन अब्दुल मुत्तलिब भी इन क़ैदियों में शामिल थे। इनके बारे में गुमाने ग़ालिब यही है कि वह ईमान तो ला चुके थे मगर इस वक़्त तक इन्होंने अपने ईमान का ऐलान नहीं किया था। रिवायात में है कि हज़रत अब्बास रज़ि. जिन रस्सियों में बंधे हुए थे उनके बंद बहुत सख्त थे। वह तकलीफ़ के बाइस बार-बार कराहते तो हुज़ूर صلى الله عليه وسلم उनकी आवाज़ सुन कर बेचैन हो जाते थे, मगर क़ानून तो क़ानून है, लिहाज़ा आप صلى الله عليه وسلم ने उनके लिये किसी रिआयत की ख्वाहिश का इज़हार नहीं फ़रमाया। मगर जब उनकी तकलीफ़ तबियत पर ज़्यादा गिराँ गुज़री तो आप صلى الله عليه وسلم ने हुक्म दिया कि तमाम क़ैदियों के बंद ढीले कर दिये जाएँ। इसी तरह आप صلى الله عليه وسلم के दामाद अबुल आस भी क़ैद होकर आए थे और जब आप صلى الله عليه وسلم की बड़ी सहाबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि. ने अपने शौहर को छुड़ाने के लिये अपना हार फ़िदये के तौर पर भेजा, जो उनको हज़रत

ख़दीजा रज़ि. ने उनकी शादी के मौक़े पर दिया था तो हुज़ूर ﷺ के लिये बड़ी रिक्क़त आमेज़ सूरते हाल पैदा हो गयी। आप ﷺ ने जब वह हार देखा तो आप ﷺ की आँखों में आँसू आ गए। हज़रत ख़दीजा रज़ि. के साथ गुज़ारी हुई सारी ज़िन्दगी, आपकी खिदमत गुज़ारी और वफ़ा शआरी की याद मुजस्सम होकर निगाहों के सामने आ गयी। आप ﷺ ने फ़रमाया कि आप लोग अगर इजाज़त दें तो यह हार वापस कर दिया जाए ताकि माँ की निशानी बेटी के पास ही रहे। चुनाँचे सबकी इजाज़त से वह हार वापस भिजवा दिया गया। यूँ क़ैदियों के साथ अक्सर मुहाजरीन के ख़ूनी रिश्ते थे, इसलिए कि यह सब लोग एक ही ख़ानदान और एक ही क़बीले से ताल्लुक़ रखते थे। यहाँ नबी अकरम ﷺ से खिताब करके कहा जा रहा है कि आपके क़ब्ज़े में जो क़ैदी हैं आप उनसे कह दीजिए:

إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنكُمْ

*"अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पायेगा तो जो कुछ तुमसे ले लिया गया है वह उससे बेहतर तुम्हें दे देगा"*

यानि तुम्हारी नीयतों का मामला तुम्हारे और अल्लाह के माबैन है, जबकि बरताव तुम्हारे साथ खालीसतन क़ानून के मुताबिक़ होगा। तुम सब लोग जंग में कुफ्फ़ार का साथ देने के लिये आये थे और अब क़ानूनन जंगी क़ैदी हो। जंग में कोई अपनी खुशी से आया था या मजबूरन, कोई दिल में ईमान लेकर आया था या कुफ़्र की हालत में आया था, इन सब बातों की हक़ीक़त को अल्लाह ख़ूब जानता है और वह दिलों

की नीयतों के मुताबिक़ ही तुम सबके साथ मामला करेगा और जिसके दिल में ख़ैर और भलाई पायेगा उसको कहीं बेहतर अंदाज़ में वह उस भलाई का सिला देगा।

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۷۰

*"और तुम्हें बख्श देगा, और अल्लाह बख्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।"*

## आयत 71

وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ

*"और अगर यह लोग आप (ﷺ) से ख्यानत करना चाहें तो इससे पहले यह अल्लाह से भी ख्यानत करते रहे हैं"*

فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۷۱

*"तो अल्लाह ने उनको पकड़वा दिया। और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है।"*

यानि इन क़ैदियों में ऐसे भी होंगे जो आप ﷺ से झूठ बोलेंगे, झूठे बहाने बनायेंगे, बेजा मअज़रतें पेश करेंगे। तो इस नौइयत की ख्यानतें यह अल्लाह से भी करते रहे हैं और इनके ऐसे ही करतूतों की पादाश में इनको यह सज़ा दी गयी है कि अब यह लोग आप ﷺ के क़ाबू में हैं।

अब अगली आयात गोया इस सूरह-ए-मुबारका का "हासिल कलाम" यानि concluding आयात हैं।

# आयात 72 से 75 तक

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا
اُولٰۗىِٕكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ
يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰي
يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ
النَّصْرُ اِلَّا عَلٰي قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۭ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٧٢ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ
وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ۝٧٣ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا
وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا
اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ۝٧٤ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا
وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ مِنْكُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

بَعۡضُهُمۡ اَوۡلٰى بِبَعۡضٍ فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ
شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۷۵﴾

## आयत 72

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
وَهَاجَرُوۡا وَجٰهَدُوۡا
بِاَمۡوَالِهِمۡ وَاَنۡفُسِهِمۡ فِىۡ
سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَالَّذِيۡنَ
اٰوَوْا وَّنَصَرُوۡۤا اُولٰۤٮِٕكَ
بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ ؕ

*"यक़ीनन वह लोग जो ईमान लाये और जिन्होंने हिजरत की और जिहाद किया अपने मालों और अपनी जानों के साथ अल्लाह की राह में, और वह लोग जिन्होंने इन्हें पनाह दी और उनकी मदद की, यह सब लोग एक दूसरे के साथी हैं।"*

उस वक़्त तक मुसलमान मआशरा दो अलैहदा-अलैहदा गिरोहों में मुन्क़सिम था, एक गिरोह मुहाजरीन का था और दूसरा अंसार का। अगरचे मुहाजरीन और अंसार को भाई-भाई बनाया जा चुका था, लेकिन इस तरह के ताल्लुक़ से पूरा क़बाइली निज़ाम एक दम तो तब्दील नहीं हो जाता। उस वक़्त तक सूरते हाल यह थी कि गज़वा-ए-बदर से पहले जो आठ मुहिम्मात हुज़ूर ﷺ ने मुख्तलिफ़ इलाक़ों में भेजीं उनमें आप ﷺ ने किसी अंसारी सहाबी रज़ि. को शरीक नहीं फ़रमाया। अंसार पहली दफ़ा गज़वा-ए-बदर में शरीक हुए। इस तारीख़ी हक़ीक़त को मद्दे नज़र रखा जाए तो यह नुक्ता वाज़ेह हो जाता है कि आयत के पहले हिस्से में

मुहाजरीन का ज़िक्र हिजरत के अलावा जिहाद की तख़सीस के साथ क्यों हुआ है? यानि अन्सारे मदीना तो जिहाद में बाद में शामिल हुए, हिजरत के डेढ़ साल बाद तक तो जिहादी मुहिम्मात में हिस्सा सिर्फ़ मुहाजरीन ही लेते रहे थे। यहाँ अंसार की शान यह बताई गयी: {وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا} कि इन्होंने अपने दिलों और अपने घरों में मुहाजरीन के लिये जगह पैदा की और हर तरह से उनकी मदद की।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

*"और वह लोग जो ईमान लाए लेकिन उन्होंने हिजरत नहीं की, तुम्हारा (अब) उनके साथ कोई ताल्लुक़ नहीं"*

حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ

*"हत्ता कि वह हिजरत करें।"*

सूरतुन्निसा में (जो इस सूरत के बाद नाज़िल हुई है) हिजरत ना करने वालों के बारे में वाज़ेह हुक्म (आयत 89, 90) में मौजूद है। वहाँ उन्हें मुनाफ़िक़ीन और कुफ्फ़ार जैसे सुलूक का मुस्तहिक़ क़रार दिया गया है कि उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो इल्ला यह कि उनका ताल्लुक़ किसी ऐसे क़बीले से हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहिदा हो।

आयत ज़ेरे नज़र में भी वाज़ेह तौर पर बता दिया गया है कि जिन लोगों ने हिजरत नहीं की उनके साथ तुम्हारा कोई रिश्ता-ए-विलायत व रफ़ाक़त नहीं है। यानि ईमाने हक़ीक़ी तो दिल का मामला है जिसकी कैफ़ियत सिर्फ़

अल्लाह जनता है, लेकिन क़ानूनी तक़ाज़ों के लिये ईमान का ज़ाहिरी मैयार हिजरत क़रार पाया। जिन लोगों ने ईमान लाने के बाद मक्का से मदीना हिजरत की, उन्होंने अपने ईमान का ज़ाहिरी सुबूत फ़राहम कर दिया, और जिन लोगों ने हिजरत नहीं की मगर ईमान के दावेदार रहे, उन्हें क़ानूनी तौर पर मुसलमान तस्लीम नहीं किया गया। मसलन बदर के क़ैदियों में से कोई शख्स अगर यह दावा करता है कि मैं तो ईमान ला चुका था, जंग में तो मजबूरन शामिल हुआ था, तो इसका जवाब इस उसूल के मुताबिक़ यही है कि चूँकि तुमने हिजरत नहीं की, लिहाज़ा तुम्हारा शुमार उन्हीं लोगों के साथ होगा जिनके साथ मिल कर तुम जंग करने आये थे। इस लिहाज़ से इस आयत का रुए सुखन भी असीराने बदर (बदर के क़ैदियों) की तरफ़ है।

उनमें से अगर कोई शख्स इस्लाम का दावेदार है तो वह क़ानून के मुताबिक़ फ़िदया देकर आज़ाद हो, वापस मक्का जाए, फिर वहाँ से बाक़ायदा हिजरत करके मदीना आ जाए तो उसे साहिबे ईमान तस्लीम किया जाएगा। फिर वह तुम्हारा हिमायती है और तुम उसके हिमायती होंगे।

وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ

*"और अगर वह तुमसे दीन के मामले में मदद माँगें तो उनकी मदद करना तुम पर वाजिब है"*

यानि वह लोग जो ईमान लाये लेकिन मक्के में ही रहे या अपने-अपने क़बीले में रहे और उन लोगों ने हिजरत नहीं की, अगर वह दीन के मामले में तुम लोगों से मदद माँगें तो तुम उनकी मदद करो।

إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ

*"मगर किसी ऐसी क़ौम के ख़िलाफ़ (नहीं) कि उनके और तुम्हारे दरमियान मुआहिदा हो।"*

अगरचे दारुल इस्लाम वालों पर उन मुसलमानों की हिमायत व मुदाफ़अत की ज़िम्मेदारी नहीं है जिन्होंने दारुल कुफ़्र से हिजरत नहीं की है, ताहम वह दीनी अख़ुवत के रिश्ते से खारिज़ नहीं हैं। चुनाँचे वह अगर अपने मुसलमान भाईयों से इस दीनी ताल्लुक़ की बिना पर मदद के तालिब हों तो उनकी मदद करना ज़रूरी है, बशर्ते कि यह मदद किसी ऐसे क़बीले के मुक़ाबले में ना माँगी जा रही हो जिससे मुसलमानों का मुआहिदा हो चुका है। मुआहिदे का अहतराम बरहाल मुक़द्दम है।

وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾

*"और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।"*

## आयत 73

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ

*"और वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया वह आपस में एक-दूसरे के साथी हैं।"*

अरब के क़बाइली मआशरे में बाहमी मुआहिदों और विलायत का मामला बहुत अहम होता था। ऐसे मुआहिदों की तमाम ज़िम्मेदारियों को बड़ी संजीदगी से निभाया जाता था। मसलन अगर किसी शख्स पर किसी क़िस्म का

तावान (नुक़सान) पड़ जाता था तो उसके वली और हलीफ़ उसके तावान की रक़म पूरी करने के लिये पूरी ज़िम्मेदारी से अपना-अपना हिस्सा डालते थे। विलायत की अहमियत के पेशे नज़र इसकी शराइत और हुदूद वाज़ेह तौर पर बता दी गईं कि कुफ्फ़ार बाहम एक-दूसरे के हलीफ़ हैं, जबकि अहले ईमान का रिश्ता-ए-विलायत आपस में एक-दूसरे के साथ है। लेकिन वह मुसलमान जिन्होंने हिजरत नहीं की, उनका अहले ईमान के साथ विलायत का कोई रिश्ता नहीं। अलबत्ता अगर ऐसे मुसलमान मदद के तलबगार हों तो अहले ईमान ज़रूर उनकी मदद करें, बशर्ते कि यह मदद किसी ऐसे क़बीले के ख़िलाफ़ ना हो जिनका मुसलमानों के साथ मुआहिदा हो चुका है।

اِلَّا تَفۡعَلُوۡهُ تَكُنۡ فِتۡنَةٌ فِى الۡاَرۡضِ وَفَسَادٌ كَبِيۡرٌ ﴿۷۳﴾

*"अगर तुम यह (इन क़वाइद व ज़वाबित की पाबंदी) नहीं करोगे तो ज़मीन में फ़ितना फैलेगा और बहुत बड़ा फ़साद बरपा हो जायेगा।"*

तुम लोगों का हर काम क़वाइद व ज़वाबित के मुताबिक़ होना चाहिये। फ़र्ज़ करें कि मक्का में एक मुसलमान है, वह मदीने के मुसलमानों को ख़त लिखता है कि मुझे यहाँ सख्त अज़ियत पहुँचाई जा रही है, आप लोग मेरी मदद करें। दूसरी तरफ़ उसके क़बीले का मुसलमानों के साथ सुलह और अमन मुआहिदा है। अब यह नहीं हो सकता कि मुसलमान अपने उस भाई की मदद के लिये उसके क़बीले पर चढ़ दौड़ें, क्योंकि अल्लाह तआला किसी भी क़िस्म की वादा खिलाफ़ी और नाइन्साफ़ी को पसंद नहीं करता। उस मुसलमान को

दूसरे तमाम मुसलमानों की तरह हिजरत करके दारुल इस्लाम पहुँचना चाहिये और अगर वह हिजरत नहीं कर सकता तो फिर वहाँ जैसे भी हालात हों उसे चाहिये कि उन्हें बरदाश्त करे। चुनाँचे वाज़ेह अंदाज़ में फ़रमा दिया गया कि अगर तुम इन मामलात में क़वानीन व ज़वाबित की पासदारी नहीं करोगे तो ज़मीन में फ़ितना व फ़साद बरपा हो जाएगा। अब वह आयत आ रही है जिसका ज़िक्र सूरह के आग़ाज़ में परकार (compass) की तशबीह के हवाले से हुआ था।

## आयत 74

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا

*"और वह लोग जो ईमान लाये और जिन्होंने हिजरत की और जिहाद किया अल्लाह की राह में (यानि मुहाजरीन) और वह लोग (अंसारे मदीना) जिन्होंने उन्हें पनाह दी और उनकी नुसरत की"*

اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ؀

*"यही लोग हैं सच्चे मोमिन। उनके लिये है मगफ़िरत और रिज़्क़े करीम।"*

यहाँ पर मुहाजरीन और अंसार के उन दोनों गिरोहों का इकट्ठे ज़िक्र करके उन मोमिनीन सादिक़ीन की ख़ुसूसियात के हवाले से एक हक़ीक़ी मोमिन की तारीफ़ (definition)

के दूसरे रुख की झलक दिखाई गयी है, जबकि इसके पहले हिस्से या रुख के बारे में हम इसी सूरत की आयत 2 और 3 में पढ़ आये हैं। लिहाज़ा आगे बढ़ने से पहले मज़कूरा आयात के मज़मून को एक दफ़ा फिर ज़हन में ताज़ा कर लीजिये।

इस तफ़सील का ख़ुलासा यह है कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है (بُنِیَ الْاِسْلَامُ عَلٰی خَمْسٍ......), यानि कलमा-ए-शहादत, नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात। यह पाँच अरकान मुसलमान होने के लिये ज़रूरी हैं, लेकिन हक़ीक़ी मोमिन होने के लिये इनमें दो चीज़ों का मज़ीद इज़ाफ़ा होगा, जिनका ज़िक्र हमें सूरतुल हुजरात की आयत 15 में मिलता है: "यक़ीने क़ल्बी" और "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह।" यानि ईमान में ज़बान की शहादत के साथ "यक़ीने क़ल्बी" का इज़ाफ़ा होगा और आमाल में नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात के साथ "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह" का। गोया यह सात चीज़ें या सात शर्तें पूरी होंगी तो एक शख्स बंदा-ए-मोमिन कहलायेगा। उस बंदा-ए-मोमिन की शख्सियत का जो नक़्शा इस सूरत की आयत 2 और 3 में दिया गया है उसके मुताबिक़ उसके दिल में यक़ीन वाला ईमान है, अल्लाह की याद से उसका दिल लरज़ उठता है, आयाते क़ुरानी पढ़ता है या सुनता है तो दिल में ईमान बढ़ जाता है। वह हर मामले में अल्लाह की ज़ात पर पूरा भरोसा रखता है, नमाज़ क़ायम करता है, ज़कात अदा करता है और अपना माल अल्लाह की राह में खर्च करता है। इन खुसूसियात के साथ {اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا} की मुहर लगा दी गयी और इस मुहर के साथ वहाँ पर (आयत 4) मोमिन की शख्सियत का एक रुख या एक सफ़हा मुकम्मल हो गया।

अब बंदा-ए-मोमिन की शख्सियत का दूसरा सफ़हा या रुख आयत ज़ेरे नज़र में यूँ बयान हुआ है कि जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह लाज़मी शर्त के तौर पर इसमें शामिल कर दिया गया और फिर इस पर भी वही मुहर सब्त की गयी है: {اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا} चुनाँचे यह दोनों रुख मिल कर बंदा-ए-मोमिन की तस्वीर मुकम्मल हो गयी। एक शख्सियत की तस्वीर के यह दो रुख ऐसे हैं जिनको अलग-अलग नहीं किया जा सकता। ये दो सफ़हे हैं जिनसे मिल कर एक वरक़ बनता है। सहाबा किराम रज़ि. की शख्सियतों के अंदर ये दोनों रुख एक साथ पाए जाते थे, लेकिन जैसे-जैसे उम्मत ज़वाल पज़ीर हुई, बंदा-ए-मोमिन की शख्सियत की खुसूसियात के भी हिस्से बखरे कर दिए गए। बक़ौले अल्लामा इक़बाल:

*उडाये कुछ वरक़ लाले ने, कुछ नरगिस ने, कुछ गुल ने*
*चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्ताँ मेरी*

आज मुसलमानों की मज्मुई हालत यह है कि अगर कुछ हल्क़े ज़िक्र के लिए मखसूस हैं तो उनको जिहाद और फ़लसफ़ा-ए-जिहाद से कोई सरोकार नहीं। दूसरी तरफ़ जिहादी तहरिकें हैं तो उनको रूहानी कैफ़ियात से शनासाई नहीं। लिहाज़ा आज उम्मत के दुखों के मदावा (ईलाज) करने के लिये ऐसे अहले ईमान की ज़रूरत है जिनकी शख्सियात में यह दोनों रंग इकट्ठे एक साथ जलवागर हों। जब तक मोमिनीन सादिक़ीन की ऐसी शख्सियात वजूद में नहीं आएँगी, जिनमें सहाबा किराम रज़ि. की तरह दोनों पहलुओं में तवाज़ुन हो, उस वक़्त तक मुसलमान उम्मत की बिगड़ी तक़दीर नहीं संवर सकती। अगरचे सहाबा किराम रज़ि. जैसी कैफ़ियात का पैदा होना तो आज नामुम्किनात में से

है, लेकिन किसी ना किसी हद तक उन हस्तियों का अक्स अपनी शख्सियात में पैदा करने और एक ही शख्सियत के अंदर इन दोनों खुसूसियात का कुछ ना कुछ तवाज़ुन पैदा करने की कोशिश तो की जा सकती है। मसलन इनमें से एक कैफ़ियत एक शख्सियत के अंदर 25 फ़ीसद हो और दूसरी कैफ़ियत भी 25 फ़ीसद के लगभग हो तो क़ाबिले क़ुबूल है। और अगर ऐसा हो कि रूहानी कैफ़ियत तो 70 फ़ीसद हो मगर जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह का जज़्बा सिफ़र है या जिहाद का जज़्बा तो 80 फ़ीसद है मगर रूहानियत कहीं ढूंढे से भी नहीं मिलती तो ऐसी शख्सियत नज़रियाती लिहाज़ से गैर मुतवाज़न होगी। बरहाल एक बंदा-ए-मोमिन की शख्सियत की तकमील के लिये ये दोनों रुख नागुज़ीर हैं। इनको इकट्ठा करने और एक शख्सियत में तवाज़ुन के साथ जमा करने की आज के दौर में सख्त ज़रूरत है।

## आयत 75

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓىِٕكَ مِنْكُمْ ۭ

*“और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिल कर जिहाद किया, तो (ऐ मुसलमानों!) वह तुम में से ही हैं।”*

वह तुम्हारी जमात, इसी उम्मत और हिज़बुल्लाह का हिस्सा है।

وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ۭ

*"और रहमी रिश्तेदार अल्लाह के क़ानून में एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं।"*

यानि शरीअत के क़वानीन में खून के रिश्ते मुक़द्दम रखे गए हैं। मसलन विरासत का क़ानून खून के रिश्तों को बुनियाद बना कर तरतीब दिया गया है। इसी तरह शरीअत के तमाम क़वाइद व ज़वाबित में रहमी रिश्तों की अपनी एक तरजीही हैसियत है। ख़ूनी रिश्तों के इन क़ानूनी तरजीहात को भाई-चारे और विलायत के ताल्लुक़ात के साथ गड-मद ना किया जाए।

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۷۵ ع

*"यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है।"*

بارك الله لى ولكم فى القرآن العظيم ونفعنى واياكم بالآيات والذكر الحكيم۔

बारक अल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरानुल अज़ीम, व नफ़ाअनी, व इय्याकुम बिल्आयाति वल् ज़िकरुल हकीम!!

❀ ❀ ❀

# सूरतुत्तौबा

## तम्हीदी कलिमात

सूरतुत्तौबा कई खुतबात पर मुश्तमिल है और इनमें से हर ख़ुतबा अलग पसमंज़र में नाज़िल हुआ है। जब तक इन मुख्तलिफ़ खुतबात के पसमंज़र और ज़माना-ए-नुज़ूल का अलग-अलग तअय्युन दुरुस्त अंदाज़ में ना हो जाए, मुतालक़ा आयात की दुरुस्त तौजीह व तशरीह करना मुमकिन नहीं। चुनाँचे जिन लोगों ने इस सूरत की तफ़सीर करते हुए पूरी अहतियात से तहक़ीक़ नहीं की, वो ख़ुद भी मुगालतों का शिकार हुए और दूसरों को भी शुकूक़ व शुब्हात में मुब्तला करने का बाइस बने हैं। इस लिहाज़ से यह सूरत क़ुरान हकीम की मुश्किल तरीन सूरत है और इसकी तफ़हीम के लिये इन्तहाई मोहतात तहक़ीक़ और गहरे तदब्बुर की ज़रूरत है।

**सूरतुत्तौबा और हुज़ूर ﷺ की बेअसत के दो पहलू:** मुहम्मद ﷺ से क़ब्ल हर पैग़म्बर को एक ख़ास इलाक़े और ख़ास क़ौम की तरफ़ मबऊस किया गया, मगर आप ﷺ अपनी क़ौम (बनी इस्माईल) की तरफ़ भी रसूल बन कर आये और क़यामत तक के लिये पूरी दुनिया के तमाम इन्सानों की तरफ़ भी। यह फज़ीलत तमाम अम्बिया व रुसुल में सिर्फ़ आप ﷺ के लिये मख़सूस है कि आप ﷺ को दो बेअसतों के साथ मबऊस फ़रमाया गया, एक बेअसते ख़ुसूसी और दूसरी बेअसते अमूमी। आप ﷺ की बेअसत के इन

दोनों पहलुओं के हवाले से सूरतुल तौबा की आयात में भी एक बड़ी ख़ूबसूरत तक़सीम मिलती है। वह इस तरह कि इस सूरत के भी बुनियादी तौर पर दो हिस्से हैं। इनमें से एक हिस्सा आप ﷺ की बेअसत के ख़ुसूसी पहलु से मुताल्लिक़ है, जबकि दूसरे हिस्से का ताल्लुक़ आपकी बेअसत के अमूमी पहलु से है। चुनांचे सूरत के इन दोनों हिस्सों के मौज़ूआत व मज़ामीन को समझने के लिये ज़रूरी है कि पहले हुज़ूर ﷺ की बेअसत के इन दोनों पहलुओं के फ़लसफ़े को अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लिया जाये।

**हुज़ूर ﷺ की बेअसते ख़ुसूसी:** मुहम्मद अरबी ﷺ की ख़ुसूसी बेअसत मुशरिकीने अरब या बनु इस्माईल की तरफ़ थी। आप ﷺ का ताल्लुक़ भी उसी क़ौम से था और आप ﷺ ने उन लोगों के अंदर रह कर, खुद उनकी ज़बान में, अल्लाह का पैग़ाम उन तक पहुँचा दिया और उन पर आखरी हद तक इत्मामे हुज्जत भी कर दिया। इसी ज़िमन में फ़िर मुशरिकीने अरब पर अल्लाह के उस क़दीम क़ानून का निफ़ाज़ भी अमल में आया कि जब किसी क़ौम की तरफ़ कोई रसूल भेजा जाए और वह रसूल अपनी दावत के सिलसिले में उस क़ौम पर इत्मामे हुज्जत कर दे, फ़िर अगर वह क़ौम अपने रसूल की दावत को रद्द कर दे तो उस पर अज़ाबे इस्तेसाल मुसल्लत कर दिया जाता है। इस सिलसिले में मुशरिकीने अरब पर अज़ाबे इस्तेसाल की नौइयत मारौज़ी हालात के पेशे नज़र पहली क़ौमों के मुक़ाबले में मुख्तलिफ़ नज़र आती है। इस अज़ाब की पहली क़िस्त गज़वा-ए-बदर में मुशरिकीने मक्का की हज़ीमत व शिकस्त की सूरत में सामने आई जबकि दूसरी और आखरी क़िस्त का ज़िक्र इस सूरत के आग़ाज़ में किया गया है। बहरहाल अपनी

बेअसते ख़ुसूसी के हवाले से हुज़ूर ﷺ ने ज़ज़ीरा नुमाए अरब में दीन को ग़ालिब कर दिया, और वहाँ आप ﷺ की हयाते मुबारका ही में अक़ामते दीन का अमली नक़्शा अपनी पूरी आब व ताब के साथ जलवागर हो गया।

**हुज़ूर ﷺ की बेअसते अमूमी:** नबी अकरम ﷺ की बेअसते अमूमी पूरी इंसानियत की तरफ़ क़यामत तक के लिये है। इस सिलसिले में दावत का आगाज़ आप ﷺ ने सुलह हुदैबिया (6 हिजरी) के बाद फ़रमाया। इससे पहले आप ﷺ ने कोई मुबल्लिग़ या दाई अरब के बाहर नहीं भेजा, बल्कि तब तक आप ﷺ ने अपनी पूरी तवज्जो ज़ज़ीरा नुमाए अरब तक मरकूज़ रखी और अपने तमाम वसाइल उसी ख़ित्ते में दीन को ग़ालिब करने के लिये सर्फ़ किये। लेकिन ज्यों ही आप ﷺ को इस सिलसिले में ठोस कामयाबी मिली, यानि क़ुरैश ने आप ﷺ को बतौरे फ़रीक़ सानी के तस्लीम करके आप ﷺ से सुलह कर ली, (क़ुरान ने सूरतुल फ़तह की पहली आयत में इस सुलह को “फ़तह मुबीन” क़रार दिया है) तो आप ﷺ ने अपनी बेअसते अमूमी के तहत दावत का आगाज़ करते हुए अरब से बाहर मुख्तलिफ़ सलातीन व उमरा (leaders) की तरफ़ ख़ुतूत भेजने शुरू कर दिए। इस सिलसिले में आप ﷺ ने जिन फ़रमानरवाओं को ख़ुतूत लिखे, उनमें क़ेसर-ए-रोम, ईरान के बादशाह कसरा, मिस्र के बादशाह मक़ोक़स और हब्शा के फ़रमानरवा नजाशी (यह ईसाई हुक्मरान उस नजाशी का जानशीन था जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था, और जिनकी गाएबाना नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर ﷺ ने ख़ुद पढाई थी) के नाम शामिल हैं। [नोट: माज़ी क़रीब में ये चारों ख़ुतूत असल मतन (original text) के साथ असल

शक्ल में दरयाफ्त हो चुके हैं।] आप ﷺ के इन्हीं ख़ुतूत के रद्देअमल के तौर पर सल्तनते रोमा के साथ मुसलमानों के टकराव का आगाज़ हुआ, जिसका नतीजा नबी अकरम ﷺ की हयाते तैय्यबा ही में जंगे मौता और गज़वा-ए-तबूक की सूरत में निकला। बहरहाल इन तमाम हालात व वाक़िआत का ताल्लुक़ आप ﷺ की बेअसते अमूमी से है, जिसकी दावत का आगाज़ आप ﷺ की ज़िंदगी मुबारक ही में हो गया था, और फ़िर ख़ुतबा हज्जतुल विदा के मौक़े पर आप ﷺ ने वाज़ेह तौर पर यह फ़रीज़ा उम्मत के हर फ़र्द की तरफ़ मुन्तक़िल फ़रमा दिया। चुनाँचे अब ता-क़यामे-क़यामत आप ﷺ पर ईमान रखने वाला हर मुसलमान दावत व तबलीग़ और अक़ामते दीन के लिये मेहनत व कोशिश का मुक़ल्लफ़ है।

**मौज़ुआत:**

मज़ामीन व मौज़ुआत के हवाले से यह सूरत दो हिस्सों पर मुश्तमिल है, जिनकी तफ़सील दरजा ज़ेल है:

**हिस्सा अव्वल:** यह हिस्सा सूरत के पहले पाँच रुकूओं पर मुश्तमिल है और इसका ताल्लुक़ रसूल अल्लाह ﷺ की बेअसते ख़ुसूसी के तकमीली मरहले से है। आयात की तरतीब के मुताबिक़ अगरचे यह पाँच रुकूअ भी मज़ीद तीन हिस्सों में बंटे हुए हैं, मगर मौज़ू के ऐतबार से देखा जाए तो यह हिस्सा हमें दो खुतबात पर मुश्तमिल नज़र आता है, जिनका अलग-अलग तआरुफ़ ज़ेल की सूरत में दिया जा रहा है।

**पहला ख़ुतबा:** पहला ख़ुतबा दूसरे और तीसरे रुकूअ पर मुश्तमिल है और यह फ़तह मक्का (8 हिजरी) से पहले नाज़िल हुआ। इन आयात में मुसलमानों को फ़तह मक्का के

लिये निकलने पर आमादा किया गया है। यह मसला बहुत नाज़ुक और हस्सास था। मुसलमान मुहाजरीन की मुशरिकीने मक्का के साथ बराहेरास्त क़रीबी रिश्तेदारियाँ थीं, उनके ख़ानदान और क़बीले मुश्तरक़ (common) थे, हत्ता के बहुत से मुसलमानों के अहलो अयाल मक्का में मौज़ूद थे। कुछ ग़रीब, बेसहारा मुसलमान, जो मुख्तलिफ़ वजुहात की बिना पर हिजरत नहीं कर सके थे, अभी तक मक्के में फँसे हुए थे। अब सवाल यह था कि अगर जंग होगी, मक्के पर हमला होगा तो इन सबका क्या बनेगा? क्या गन्दुम के साथ घुन भी पिस जायेगा? दूसरी तरफ़ क़ुरैशे मक्का का बज़ाहिर यह ऐज़ाज़ भी नज़र आता था कि वह बैतुल्लाह के मुतवल्ली थे और हुज्जाज की ख़िदमत करते थे। इस हवाले से कहीं सादा दिल मुसलमान अपने खद्शात का इज़हार कर रहे थे तो कहीं मुनाफ़िक़ीन इन सवालात की आड़ लेकर लगाई-बुझाई में मसरूफ़ थे। चुनाँचे इन आयात का मुताअला करते हुए यह पसमंज़र मद्देनज़र रहना चाहिये।

**दूसरा ख़ुतबा:** दूसरा ख़ुतबा पहले, चौथे और पाँचवें रुकूअ पर मुश्तमिल है और यह ज़ुल क़अदह 9 हिजरी के बाद नाज़िल हुआ। मौज़ू की अहमियत के पेशेनज़र इसमें से पहली छ: आयात को मुक़द्दम करके सूरत के आग़ाज़ में लाया गया है। ये वही आयात हैं जिनके साथ हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अली रज़ि. को क़ाफ़िला-ए-हज के पीछे भेजा था। इसकी तफ़सील यूँ है कि 9 हिजरी में हुज़ूर ﷺ ख़ुद हज पर तशरीफ़ नहीं ले गये थे, उस साल आप ﷺ ने हज़रत अबुबकर सिद्दीक़ रज़ि. को अमीरे हज बना कर भेजा था। हज का यह क़ाफ़िला ज़ुल क़अदह 9 हिजरी में रवाना हुआ और इसके रवाना होने के बाद यह आयात नाज़िल हुईं।

चुनाँचे नबी अकरम ﷺ ने हज़रत अली रज़ि. को भेजा कि हज के मौक़े पर अलल ऐलान यह अहकामात सबको सुना दिए जाएँ। सन 9 हिजरी के इस हज में मुशरिकीने मक्का भी शामिल थे। चुनाँचे वहाँ हज के इज्तमा में हज़रत अली रज़ि. ने यह आयात पढ़ कर सुनाईं, जिनके तहत मुशरिकीन के साथ हर क़िस्म के मुआहिदे से ऐलाने बराअत कर दिया गया और यह वाज़ेह कर दिया गया कि आईन्दा कोई मुशरिक हज के लिये ना आये। मुशरिकीने अरब के लिये चार माह की मोहलत का ऐलान किया गया कि इस मोहलत से फ़ायदा उठाते हुए वह ईमान लाना चाहें तो ले आएँ, वरना उनका क़त्ले आम होगा।

यह आयात चूँकि क़ुरान करीम की सख्ततरीन आयात हैं, इसलिये ज़रूरी है कि इनके पसमंज़र को अच्छी तरह समझ लिया जाए। ये अहकामात दरअसल उस अज़ाबे इस्तेसाल के क़ायम मुक़ाम हैं जो क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह, क़ौमे शुएब, क़ौमे लूत और आले फिरऔन पर आया था। इन तमाम क़ौमों पर अज़ाबे इस्तेसाल अल्लाह के उस अटल क़ानून के तहत आया था जिसका ज़िक्र क़ब्ल अज़ भी हो चुका है। इस क़ानून के तहत मुशरिकीने मक्का अब अज़ाबे इस्तेसाल के मुस्तहिक़ हो चुके थे, इसलिये कि हुज़ूर ﷺ ने उन्हीं की ज़बान में अल्लाह के अहकामात उन तक पहुँचा कर उन पर हुज्जत तमाम कर दी थी। इस सिलसिले में अल्लाह की मशियत के मुताबिक़ उनको जो मोहलत दी गई थी वह भी ख़त्म हो चुकी थी। चुनाँचे उन पर अज़ाबे इस्तेसाल की पहली क़िस्त मैदाने बदर में नाज़िल की गई और दूसरी और आखरी क़िस्त के तौर पर अब उन्हें अल्टीमेटम दे दिया गया कि तुम्हारे पास सोचने और फ़ैसला

करने के लिये सिर्फ़ चार माह हैं। इस मुद्दत में ईमान लाना चाहो तो ले आओ वरना क़त्ल कर दिए जाओगे। इस हुकुम के अंदर उनके लिये यह आप्शन खुद-ब-खुद मौजूद था कि वह चाहें तो ज़ज़ीरा नुमाए अरब से बाहर भी जा सकते हैं, मगर अब इस ख़ित्ते के अंदर वह बहैसियते मुशरिक के नहीं रह सकते, क्योंकि अब ज़ज़ीरा नुमाए अरब को शिर्क से बिल्कुल पाक कर देने और मोहम्मद रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की बेअसते ख़ुसूसी की तकमीली शान के ज़हूर का वक़्त आ पहुँचा था।

**एक अश्काल की वज़ाहत:** यहाँ एक अश्काल इस वजह से पैदा होता है कि आयात की मौजूदा तरतीब खुतबात की ज़मानी तरतीब के बिल्कुल बरअक्स है। जो ख़ुतबा पहले (8 हिजरी में) नाज़िल हुआ है वह सूरत में दूसरे रुकूअ से शुरू हो रहा है, जबकि बाद (9 हिजरी में) नाज़िल होने वाली आयात को मुक़द्दम करके इनसे सूरत का आगाज़ किया गया है। फिर यह दूसरा खुतबा भी आयात की तरतीब के बाइस दो हिस्सों में तक़सीम हो गया है। इसकी इब्तदाई छ: आयात पहले रुकूअ में आ गई हैं, जबकि बक़िया आयात चौथे और पाँचवें रुकूअ में हैं। दरअसल तरतीब आयात में इस पेचीदगी की वजह क़ुरान का वह ख़ास असलूब है जिसके तहत किसी इन्तहाई अहम बात को मौज़ू की मन्तक़ी और रिवायती तरतीब में से निकाल कर शहसुर्खी (हेड लाइन) के तौर पर पहले बयान कर दिया जाता है। इस असलूब को समझने के लिये सूरतुल अनफ़ाल के आग़ाज़ का अंदाज़ ज़हन में रखिये। वहाँ माले ग़नीमत का मसला इन्तहाई अहम और हस्सास नौइयत का था, जिस पर तफ़सीली बहस तो बाद में होना मक़सूद थी, लेकिन इस ज़िमन में बुनियादी उसूल सूरत की

पहली आयत में बयान कर दिया गया और मसले की ख़ुसूसी अहमियत के पेशेनज़र इस मौज़ू से सूरत का आग़ाज़ फ़रमाया गया। बिल्कुल इसी अंदाज़ में इस सूरत का आगाज़ भी एक इन्तहाई अहम मसले के बयान से किया गया, अलबत्ता इस मसले की बक़िया तफ़सील बाद में चौथे और पाँचवें रुकूअ में बयान हुई।

**हिस्सा दुव्वम:** इस सूरत का दूसरा हिस्सा छठे रुकूअ से लेकर आखिर तक ग्यारह रुकूओं पर मुश्तमिल है और इसका ताल्लुक़ हुज़ूर ﷺ की बेअसते अमूमी से है। इसलिये कि इस हिस्से का मरकज़ी मौज़ू गज़वा-ए-तबूक है और गज़वा-ए-तबूक तहमीद थी, उस जद्दो-जहद की जिसका आगाज़ अक़ामते दीन के सिलसिले में ज़ज़ीरा नुमाए अरब से बाहर बैनुल अक़वामी सतह पर होने वाला था। इन ग्यारह रुकूओं में से इब्तदाई चार रुकूअ तो वह हैं जो गज़वा-ए-तबूक के लिये मुसलमानों को ज़हनी तौर पर तैयार करने से मुताल्लिक़ हैं, चंद आयात वह हैं जो तबूक जाते हुए दौराने सफ़र नाज़िल हुईं, चंद आयात तबूक में क़याम के दौरान और चंद तबूक से वापसी पर रास्ते में नाज़िल हुईं, जबकि इनमें चंद आयात ऐसी भी हैं जो तबूक से वापसी के बाद नाज़िल हुईं।

## आयात 1 से 6 तक

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۝1 فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ
يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْۗءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ
وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۭ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿٣﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا
عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٤﴾ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ
الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ
فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا
سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾ وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ
ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۧ﴿٦﴾

## आयत 1

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ①

*"ऐलाने बराअत है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन लोगों की जानिब जिनसे (ऐ मुसलमानों!) तुमने मुआहिदे किये थे मुशरिकीन में से।"*

यह अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसे तमाम मुआहिदे ख़त्म करने का दो टूक अल्फ़ाज़ में ऐलान है जो मुसलमानों ने मुशरिकीन के साथ कर रखे थे। ये ऐलान चूँकि इन्तहाई अहम और हस्सास नौइयत का था और क़तई (categorical) अंदाज़ में किया गया था, इसलिये इसके साथ कुछ शराइत या इस्तशनाई शक़ौ का ज़िक्र भी किया गया जिनकी तफ़सील आईन्दा आयात में आएगी। सूरतुल तौबा के ज़िमन में एक और बात लायक़-ए-तवज्जो है कि यह क़ुरान की वाहिद सूरत है जिसके आगाज़ में "बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम" नहीं लिखी जाती। इसका सबब हज़रत अली रज़ि. ने यह बयान फ़रमाया है कि यह सूरत तो नंगी तलवार लेकर यानि मुशरिकीन के लिये क़त्ले आम का ऐलान लेकर नाज़िल हुई है, लिहाज़ा अल्लाह तआला की रहमानियत और रहीमियत की सिफ़ात के साथ इसके मज़ामीन की मुनासबत नहीं है।

## आयत 2

فَسِيۡحُوۡا فِى الۡاَرۡضِ اَرۡبَعَةَ اَشۡهُرٍ

*"तो घूम-फिर लो इस ज़मीन में चार माह तक"*

यानि इस जज़ीरा नुमाए अरब में तुम्हें रहने और घूमने-फिरने के लिये सिर्फ़ चार महीने की मोहलत दी जा रही है।

وَّاعۡلَمُوۡۤا اَنَّكُمۡ غَيۡرُ مُعۡجِزِى اللّٰهِ‌ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخۡزِى الۡكٰفِرِيۡنَ ۝۲

*"और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते और यह भी कि अल्लाह काफ़िरों को रुसवा करके रहेगा।"*

अब इन मुशरिकीन के लिये अल्लाह के अज़ाब की आख़री क़िस्त आकर रहेगी। ये क़तई ऐलान तो ऐसे मुआहिदों के ज़िमन में था जिनमे कोई मियाद मुअय्यन नहीं थी, जैसे आम दोस्ती के मुआहिदे, जंग ना करने के मुआहिदे वगैरह। ऐसे तमाम मुआहिदों को चार माह की पेशगी वारनिंग के साथ ख़त्म कर दिया गया। यह एक माक़ूल तरीक़ा था जो सूरतुल अनफ़ाल की आयत 58 में बयान करदा उसूल { فَانۡۢبِذۡ اِلَيۡهِمۡ عَلٰى سَوَآءٍ } के मुताबिक़ इख्तियार किया गया। यानि मुआहिदे को अलल ऐलान दूसरे फ़रीक़ की तरफ़ फेंक दिया गया, और फिर फ़ौरन अक़दाम भी नहीं किया गया, बल्कि चार माह की मोहलत भी दे दी गई।

## आयत 3

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ

*"और ऐलाने आम है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से लोगों के लिये हज-ए-अकबर के दिन"*

उमरे को चूँकि "हज-ए-असगर" कहा जाता है इसलिये यहाँ उमरे के मुक़ाबले में हज को "हज-ए-अकबर" कहा गया है। इस सिलसिले में हमारे यहाँ अवाम में जो यह बात मशहूर है कि हज अगर जुमा के दिन हो तो वह हज-ए-अकबर होता है, एक बेबुनियाद बात है।

اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ڏ وَرَسُوْلُهٗ ۭ

*"कि अल्लाह बरी है मुशरिकीन से और उसका रसूल भी।"*

यह ऐलान चूँकि हज के इज्तेमा में किया गया था और हज के लिये जज़ीरा नुमाए अरब के तमाम ऐतराफ़ व अकनाफ़ से लोग आए हुए थे, लिहाज़ा इस मौक़े पर ऐलान करने से गोया अरब के तमाम लोगों के लिये ऐलाने आम हो गया कि अब अल्लाह और उसका रसूल ﷺ मुशरिकीन से बरीउल ज़िम्मा हैं और उनके साथ किसी भी क़िस्म का कोई मुआहिदा नहीं रहा।

فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ

*"तो अगर तुम तौबा करलो तो तुम्हारे लिये बेहतर है।"*

وَاِنۡ تَوَلَّيۡتُمۡ فَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّكُمۡ غَيۡرُ مُعۡجِزِى اللّٰهِ‌ؕ

*"और अगर तुम रूगरदानी करोगे तो सुन रखो कि तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते।"*

وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍۙ ۝٣

*"और (ऐ नबी ﷺ!) बशारत दे दीजिये इन काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब की।"*

## आयत 4

اِلَّا الَّذِيۡنَ عٰهَدْتُّمۡ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ

*"सिवाय उन मुशरिकीन के जिनसे (ऐ मुसलमानों!) तुमने मुआहिदे किये थे"*

ثُمَّ لَمۡ يَنۡقُصُوۡكُمۡ شَيۡـًٔـا وَّلَمۡ يُظَاهِرُوۡا عَلَيۡكُمۡ اَحَدًا

*"फिर उन्होंने कुछ कमी नहीं की तुम्हारे साथ, और ना तुम्हारे ख़िलाफ़ मदद की किसी की भी"*

यहाँ मियादी मुआहिदों के सिलसिले में इस्तशना का ऐलान किया जा रहा है। यानि मुशरिकीन के साथ मुसलमानों के ऐसे मुआहिदे जो किसी ख़ास मुद्दत तक हुए थे, उनके बारे में इरशाद हो रहा है कि अगर यह मुशरिकीन तुम्हारे साथ किये गए किसी मुआहिदे को बख़ूबी निभा रहे हैं और तमाम शरायत की पाबंदी कर रहे हैं:

فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ

*"तो मुकम्मल करो उनके साथ उनका मुआहिदा मुक़र्रर मुद्दत तक।"*

यानि मुशरिकीन के साथ एक ख़ास मुद्दत तक तुम्हारा कोई मुआहिदा हुआ था और उनकी तरफ़ से अभी तक उसमें किसी क़िस्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी भी नहीं हुई, तो उस मुआहिदे की जो भी मुद्दत है वह पूरी करो। इसके बाद उस मुआहिदे की तजदीद (renewal) नहीं होगी।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

*"यक़ीनन अल्लाह तक़वा इख्तियार करने वालों को पसंद करता है।"*

## आयत 5

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ

*"फिर जब यह मोहतरम महीने गुज़र जाएँ"*

यहाँ मोहतरम महीनों से मुराद वह चार महीने हैं जिनकी मुशरिकीन को मोहलत दी गई थी। चार महीने की यह मोहलत या अमान गैर मियादी मुआहिदों के लिये थी, जबकि मियादी मुआहिदों के बारे में फ़रमाया गया कि उनकी तयशुदा मुद्दत तक पाबंदी की जाए। लिहाज़ा जैसे-जैसे किसी गिरोह की मुद्दते अमान खत्म होती जायेगी इस लिहाज़ से उसके ख़िलाफ़ अक़दाम किया जायेगा। बहरहाल जब यह मोहलत और अमान की मुद्दत गुज़र जाये:

فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ

*"तो क़त्ल करो इन मुशरिकीन को जहाँ पाओ, और पकड़ो इनको, और घेराव करो इनका, और इनके लिये हर जगह घात लगा कर बैठो।"*

इन अल्फ़ाज़ में मौजूद सख्ती को महसूस करते हुए उस मंज़र और माहौल को ज़हन में लाइये जब ये आयात बतौर ऐलाने आम पढ़ कर सुनाई जा रही थीं और अंदाज़ा कीजिये कि इनमें से एक-एक लफ्ज़ उस माहौल में किस क़दर अहम और पुर तासीर होगा। उस इज्तेमा में मुशरिकीन भी मौजूद थे और उनके लिये यह ऐलान और अल्टीमेटम यक़ीनन बहुत बड़ी ज़िल्लत व रुसवाई का बाइस था।

जब यह छ: आयात नाज़िल हुईं तो रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने हज़रत अली रज़ि. क़ाफ़िला-ए-हज के पीछे रवाना किया और उन्हें ताकीद की कि हज के इज्तेमा में मेरे नुमाइंदे की हैसियत से यह आयात बतौरे ऐलाने आम पढ़ कर सुना दें। इसलिये कि अरब के रिवाज के मुताबिक़ किसी बड़ी शख्सियत की तरफ़ से अगर कोई अहम ऐलान करना मक़सूद होता तो उस शख्सियत का कोई क़रीबी अज़ीज़ ही ऐसा ऐलान करता था। जब हज़रत अली रज़ि. क़ाफ़िला-ए-हज से जाकर मिले तो क़ाफ़िला पड़ाव पर था। अमीरे क़ाफ़िला हज़रत अबुबकर सिद्दीक़ी रज़ि. थे। ज्योंहि हज़रत अली रज़ि. आपसे मिले तो आपने पहला सवाल किया:

अमीरुन अव मामूरुन? यानि आप अमीर बना कर भेजे गए हैं या मामूर? मुराद यह थी कि पहले मेरी और आप की हैसियत का तअय्युन कर लिया जाए। अगर आपको अमीर बना कर भेजा गया है तो मैं आपके लिये अपनी जगह खाली कर दूँ और ख़ुद आपके सामने मामूर की हैसियत से बैठूँ। इस पर हज़रत अली ने जवाब दिया कि मैं मामूर हूँ, अमीरे हज आप ही हैं, अलबत्ता हज के इज्तेमा में आयाते इलाही पर मुश्तमिल अहम ऐलान रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ से मैं करूँगा। इस वाक़िये से यह ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर ﷺ ने सहाबा किराम रज़ि. की तरबियत बहुत ख़ूबसूरत अंदाज़ में फ़रमाई थी और आप ﷺ की इसी तरबियत के बाइस उनकी जमाअती ज़िंदगी इन्तहाई मुनज्ज़म थी। और आज मुसलमानों का यह हाल है की यह दुनिया की इन्तहाई गैरमुनज्ज़म क़ौम बन कर रह गए हैं।

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۭاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

*"फ़िर अगर वह तौबा करलें, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उनका रास्ता छोड़ दो। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है।"*

यानि अगर वह शिर्क से ताएब होकर मुसलमान हो जाएँ, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात देना क़ुबूल करलें तो फिर उनसे मुआखज़ा नहीं।

## आयत 6

وَاِنۡ اَحَدٌ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ اسۡتَجَارَكَ فَاَجِرۡهُ حَتّٰى يَسۡمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ

*"और अगर मुशरिकीन में से कोई शख्स आप से पनाह तलब करे, तो उसे पनाह दे दो यहाँ तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले"*

जज़ीरा नुमाए अरब में बहुत से लोग ऐसे भी होंगे जिन्होंने अभी तक रसूल अल्लाह ﷺ की दावत को संजीदगी से सुना ही नहीं होगा। इतने बड़े अल्टीमेटम के बाद मुमकिन है उनमें से कुछ लोग सोचने पर मजबूर हुए हों कि इस दावत को समझना चाहिये। चुनाँचे इस हवाले से हुकुम दिया जा रहा है कि अगर कोई शख्स तुम लोगों से पनाह तलब करे तो ना सिर्फ़ उसे पनाह दे दी जाए, बल्कि उसे मौक़ा भी फ़राहम किया जाए कि वह क़ुरान के पैग़ाम को अच्छी तरह सुन ले। यहाँ पर "कलामुल्लाह" के अल्फ़ाज़े क़ुरानी गोया शहादत दे रहे हैं कि यह क़ुरान अल्लाह का कलाम है।

ثُمَّ اَبۡلِغۡهُ مَاۡمَنَهٗ

*"फिर उसे उसकी अमन की जगह पर पहुँचा दो।"*

यानि ऐसे शख्स को फ़ौरी तौर पर फ़ैसला करने पर मजबूर ना किया जाए कि इस्लाम क़ुबूल करते हो या नहीं? अगर क़ुबूल नहीं करते तो अभी तुम्हारी गरदन उड़ा दी जाएगी, बल्कि कलामुल्लाह सुनने का मौक़ा फ़राहम करने के बाद उसे समझने और सोचने के लिये मोहलत दी जाए और उसे ब-हिफ़ाज़त उसके घर तक पहुँचाने का इंतेज़ाम किया जाए।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ 6

*"यह इसलिये कि ये ऐसे लोग हैं जो इल्म नहीं रखते।"*

यानि यह लोग अभी तक भी ग़फ़लत का शिकार हैं। इन्होंने अभी तक संजीदगी से सोचा ही नहीं कि यह दावत है क्या!

जिस मज़मून से सूरत की इब्तदा हुई थी वह यहाँ आरज़ी तौर पर ख़त्म हो रहा है, अब दोबारा इस मज़मून का सिलसिला चौथे रुकूअ के साथ जाकर मिलेगा। इसके बाद अब दो रुकूअ (दूसरा और तीसरा) वह आयेंगे जो फ़तह मक्का से क़ब्ल नाज़िल हुए और इनमें मुसलमानों को क़ुरैशे मक्का के साथ जंग करने के लिये आमादा किया जा रहा है।

## आयात 7 से 16 तक

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ 7 كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ 8 اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ
وَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي
الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ وَاِنْ
نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ
دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ
لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴿١٢﴾ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا
اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ
صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ ۙ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ
وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا

رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑯

फ़तह मक्का के क़ब्ल सूरते हाल ऐसी थी कि मक्का मुकर्रमा पर हमला करने के सिलसिले में बहुत से लोग़ तज़बज़ुब और उलझन का शिकार थे। बाज़ मुसलमानों के बीवी-बच्चे और बहुत से कमज़ोर मुसलमान जो हिजरत नहीं कर पाए थे, अभी तक मक्का में फँसे हुए थे। अक्सर लोगों को खदशा था कि अगर मक्का पर हमला हुआ तो बहुत खून ख़राबा होगा और मक्का में मौजूद तमाम मुसलमान इसकी ज़द में आ जाएँगे। अगरचे बाद में बिलफ़अल जंग की नौबत ना आई मगर मुख्तलिफ़ ज़हनों में ऐसे अंदेशे बहरहाल मौजूद थे। इस सिलसिले में ज़्यादा बैचेनी मुनाफिक़ीन ने फ़ैलाई हुई थी। चुनाँचे इन आयात में मुसलमानों को मक्का पर हमला करने के लिये आमादा किया जा रहा है।

**आयत 7**

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ

*"कैसे हो सकता है मुशरिकीन के लिये कोई अहद अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक?"*

यहाँ पर उस पसमंज़र को ज़हन में ताज़ा करने की ज़रूरत है जिसमें यह आयात नाज़िल हुईं। इससे क़ब्ल मुसलमानों

और मुशरिकीने मक्का के दरमियान सुलह हुदैबिया हो चुकी थी, लेकिन उस मुआहिदे को खुद क़ुरैश के एक क़बीले ने तोड़ दिया। बाद में जब क़ुरैश को अपनी गलती और मामले की संजीदगी का अहसास हुआ तो उन्होंने अपने सरदार अबुसूफ़ियान को तजदीदे सुलह की दरख्वास्त के लिये रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में भेजा। मदीना पहुँच कर अबुसूफ़ियान सिफारिश के लिये हज़रत अली रज़ि. और अपनी बेटी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि. (उम्मुल मोमिनीन) से मिले। इन दोनों शख्सियात की तरफ़ से उनकी सिरे से कोई हौसला अफ़ज़ाई नहीं की गई। बल्कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि. के यहाँ तो अबुसूफ़ियान को अजीब वाक़िया पेश आया। वह जब अपनी बेटी के यहाँ गए तो हुज़ूर ﷺ का बिस्तर बिछा हुआ था, वह बिस्तर पर बैठने लगे तो उम्मे हबीबा रज़ि. ने फ़रमाया कि अब्बा जान ज़रा ठहरिये! इस पर वह खड़े के खड़े रह गए। बेटी ने बिस्तर तह कर दिया और फ़रमाया कि हाँ अब्बाजान अब बैठ जाइये। अबु सूफ़ियान के लिये यह कोई मामूली बात नहीं थी, वह क़ुरैश के सबसे बड़े सरदार और रईस थे और बिस्तर तह करने वाली उनकी अपनी बेटी थी। चुनाँचे उन्होंने पूछा: बेटी! क्या यह बिस्तर मेरे लायक़ नहीं था या मैं इस बिस्तर के लायक़ नहीं? बेटी ने जवाब दिया: अब्बाजान! आप इस बिस्तर के लायक़ नहीं। यह अल्लाह के नबी ﷺ का बिस्तर है और आप मुशरिक हैं! चुनाँचे अबु सूफ़ियान अब कहें तो क्या कहें! वह तो आये थे बेटी से सिफारिश करवाने के लिये और यहाँ तो मामला ही बिल्कुल उलट हो गया। चुनाँचे मतलब की बात के लिये तो ज़बान भी ना खुल सकी होगी।

बरहाल अबुसूफ़ियान ने रसूल अल्लाह ﷺ से मिल कर तजदीद सुलह की दरख्वास्त की मगर हुज़ूर ﷺ ने क़ुबूल नहीं फ़रमाई। इन हालात में मुमकिन है कि कुछ लोगों ने चमिगोइयां की हों कि देखें जी क़ुरैश का सरदार खुद चल कर आया था, सुलह की भीख माँग रहा था, सुलह बेहतर होती है, हुज़ूर ﷺ क्यों सुलह नहीं कर रहे, वगैरह-वगैरह। चुनाँचे इस पसमंज़र में फ़रमाया जा रहा है कि अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के नज़दीक इन मुशरिकीन के लिये अब कोई मुआहिदा कैसे क़ायम रह सकता है? यानि इनके किसी अहद की ज़िम्मेदारी अल्लाह और उसके रसूल ﷺ पर किस तरह बाक़ी रह सकती है?

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

*"सिवाय उन लोगों के जिनके साथ तुमने मुआहिदा किया था मस्जिदे हराम के पास।"*

इस मुआहिदे से मुराद सुलह हुदैबिया है।

فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ⑦

*"तो जब तक वह तुम्हारे लिये (इस पर) क़ायम रहें तुम भी उनके लिये (मुआहिदे पर) क़ायम रहो। बेशक अल्लाह मुत्तक़ीन को पसंद करता है।"*

यानि जब तक मुशरिकीन सुलह के इस मुआहिदे पर क़ायम रहे, तुम लोगों ने भी इसकी पूरी-पूरी पाबंदी की, मगर अब जबकि वह खुद ही इसे तोड़ चुके हैं तो अब तुम्हारे ऊपर इस सिलसिले में कोई अखलाक़ी दबाव नहीं है कि लाज़िमन इस मुआहिदे की तजदीद की जाय। रसूल अल्लाह ﷺ को

मालूम था कि अब इन मुशरिकीन में इतना दम नहीं है कि वह मुक़ाबला कर सकें। इन हालात में मुआहिदे की तजदीद का मतलब तो यह था कि कुफ़्र और शिर्क को अपनी मज़मूम सरगर्मियों (enjoyment) के लिये फिर से खुली छुट्टी (fresh lease of existence) मिल जाय। इसलिये हुज़ूर ﷺ ने मुआहिदे तजदीद क़ुबूल नहीं फरमाई।

## आयत 8

كَيْفَ وَإِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ

*"कैसे (कोई मुआहिदा क़ायम रह सकता है उनसे!) जबकि अगर वह तुम पर ग़ालिब आ जाएँ तो हरगिज़ लिहाज़ नहीं करेंगे तुम्हारे बारे में किसी क़राबत का और ना अहद का।"*

ऐसे लोगों से आख़िर कोई मुआहिदा क्यों कर क़ायम रह सकता है जिनका किरदार यह हो कि अगर वह तुम पर गलबा हासिल कर लें तो फिर ना क़राबतदारी का लिहाज़ करें और ना मुआहिदे के तक़द्दुस का पास।

يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ

*"राज़ी करना चाहते हैं तुम लोगों को अपने मुँह (की बातों) से"*

अब वह सुलह की तजदीद की ख़ातिर आए हैं तो इसके लिये बज़ाहिर ख़ुशामद और चापलूसी कर रहे हैं। वह चाहते हैं कि इस तरह आप लोगों को राज़ी कर लें।

وَتَأۡبٰی قُلُوۡبُهُمۡ ۚ وَاَكۡثَرُهُمۡ فٰسِقُوۡنَ ۚ﴿۸﴾

*"जबकि इनके दिल (अब भी) इन्कारी हैं, और इनकी अक्सरियत फ़ासिक़ीन पर मुश्तमिल है।"*

जो बाते वह ज़बान से कर रहे हैं वह उनके दिल की आवाज़ नहीं है। दिल से वह अभी भी नेक नियती के साथ सुलह पर आमादा नहीं हैं।

## आयत 9

اِشۡتَرَوۡا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِیۡلًا

*"इन्होंने अल्लाह की आयात को फ़रोख्त किया हक़ीर सी क़ीमत के ऐवज़"*

इन्होंने अल्लाह तआला की आयात की क़दर नहीं की और इनके बदले में हक़ीर सा दुनियावी फ़ायदा हासिल कर लिया। इन्होंने मोहम्मद ﷺ को अल्लाह का रसूल जानते हुए और हक़ को पहचानते हुए सिर्फ़ इसलिये रद्द कर दिया है कि इनकी चौधराहटें क़ायम रहें, लेकिन इन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा कि इन्होंने बहुत घाटे का सौदा किया है।

فَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِیۡلِهٖ ؕ اِنَّهُمۡ سَآءَ مَا كَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹﴾

*"पस वह लोगों को रोकते रहे अल्लाह के रास्ते से (और खुद भी रुकते रहे) यक़ीनन बहुत ही बुरा है जो कुछ ये कर रहे हैं।"*

صَدَّ, يَصُدُّ, صَدًّا, इस फ़अल के अंदर रुकने और रोकने, दोनों के मायने पाए जाते हैं।

## आयत 10

لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ

*"नहीं लिहाज़ करते किसी मोमिन के हक़ में ना किसी क़राबत का और ना किसी में मुआहिदे का।"*

وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ⑩

*"और यही लोग हैं जो हद से तज़ावुज करने वाले हैं।"*

## आयत 11

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ۭ

*"फिर भी अगर वह तौबा कर लें, और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं।"*

अल्लाह ने उनके लिये अब भी तौबा का दरवाज़ा खुला रखा हुआ है। अब भी अगर वह इस्लाम क़ुबूल कर लें और शआरे दीनी को अपना लें तो वह तुम्हारी दीनी बिरादरी में शामिल हो सकते हैं।

وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ⑪

*"और हम अपनी आयात की तफ़सील बयान कर रहे हैं उन लोगों के लिये जो इल्म रखते हैं।"*

**आयत 12**

وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ

*"और अगर वह तोड़ डालें अपने क़ौल व क़रार को अहद करने के बाद और ऐब लगाएँ तुम्हारे दीन में"*

فَقَاتِلُوْٓا اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ

*"तो तुम जंग करो कुफ़्र के इन इमामों से, इनकी क़समों का कोई ऐतबार नहीं"*

यह बहुत अहम और क़ाबिले तवज्जो नुक्ता है। ज़ज़ीरा नुमाए अरब के अंदर काफ़िर और मुशरिक तो बहुत थे मगर यहाँ ख़ुसूसी तौर पर कुफ़्र और शिर्क के पेशवाओं से जंग करने का हुक्म दिया जा रह है। ये "اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ" (कुफ़्र के ईमाम) क़ुरैश थे। वह काबा के मुतवल्ली और तमाम क़बाइल के बुतों के मुजावर थे। दूसरी तरफ़ सियासी, मआशरती और मआशी लिहाज़ से मक्का को "उम्मुल क़ुरा" की हैसियत हासिल थी और वह उनके ज़ेरे तसल्लुत था। उस वक़्त अगरचे ज़ज़ीरा नुमाए अरब में ना कोई मरकज़ी हुकूमत थी और ना ही कोई बाक़ायदा मरकज़ी दारुल हुकूमत था, मगर फ़िर भी इस पूरे ख़ित्ते का मरकज़ी शहर और मअनवी सदर मुक़ाम मक्का ही था, और इस मरकज़ी शहर और उम्मुल क़ुरा में वाक़ेअ

अल्लाह के घर को क़ुरैश ने शिर्क का अड्डा बनाया हुआ था। इसलिये जब तक उनको शिकस्त देकर मक्का को कुफ़्र और शिर्क से पाक ना कर दिया जाता, ज़ज़ीरा नुमाए अरब के अंदर दीन के गलबे का तसव्वुर नहीं किया जा सकता था। इसलिये यहाँ {فَقَاتِلُوْٓا اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ} का वाज़ेह हुकुम दिया गया है, कि जब तक कुफ़्र के इन सरगनों का सिर नहीं कुचला जाएगा और शिर्क के इस मरकज़ी अड्डे को ख़त्म नहीं किया जाएगा उस वक़्त तक सरज़मीने अरब में दीन के कुल्ली गलबे की राह हमवार नहीं होगी।

لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ⑫

*"शायेद कि (इस तरह) वह बाज़ आ जाएँ।"*

यानि इन पर सख्ती की जाएगी तो शायद बाज़ आ जाएँगे, नरमी से यह मानने वाले नहीं हैं।

## आयत 13

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ

*"तुम्हे क्या हो गया है कि तुम जंग नहीं करना चाहते ऐसी क़ौम से जिन्होंने अपने क़ौल व क़रार तोड़ दिए और रसूल को जिलावतन करने का क़सद किया"*

ऐ मुसलमानों! मुशरिकीने मक्का ने सुलह हुदैबिया को ख़ुद तोड़ा है, जबकि तुम्हारी तरफ़ से इस मुआहिदे की कोई ख़िलाफ़वरज़ी नहीं हुई थी, और ये वही लोग तो हैं जिन्होंने अल्लाह के रसूल ﷺ को मक्का से जिलावतनी पर मजबूर किया था। तो आख़िर क्या वजह है कि अब जब इनसे जंग

करने का हुकुम दिया जा रहा है तो तुम में से कुछ लोग तज़बज़ुब (कशमकश) का शिकार हो रहे हैं।

وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ

*"और इन्होंने ही आग़ाज़ किया था तुम्हारे साथ पहली मरतबा।"*

यानि मक्का के अंदर मुसलमानों को सताने और तकलीफें पहुँचाने की कारस्तानियाँ हों या गज़वा-ए-बदर में जंग छेड़ने का मामला हो या सुलह हुदैबिया के तोड़ने का वाक़िया, तुम्हारे साथ हर ज़्यादती और बेअसूली की पहल हमेशा इन लोगों ही की तरफ़ से होती रही है।

اَتَخْشَوْنَهُمْ

*"क्या तुम इनसे डर रहे हो?"*

ये मुतजस्साना सवाल (searching question) का अंदाज़ है कि ज़रा अपने गिरेबानों में झाँको, अपने दिलों को टटोलो, क्या वाक़ई तुम इनसे डर रहे हो? क्या तुम पर कोई बुज़दिली तारी हो गई है? आख़िर तुम क़ुरैश के ख़िलाफ़ इक़दाम से क्यों घबरा रहे हो?

فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾

*"अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो।"*

अब इसके बाद इक़दाम करने का आखरी हुकुम क़तई अंदाज़ में दिया जा रहा है।

**आयत 14**

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴﴾

*"तुम इनसे जंग करो, अल्लाह इन्हें अज़ाब देगा तुम्हारे हाथों, और इनको रुसवा करेगा, और तुम्हारी मदद करेगा इनके मुक़ाबले में और बहुत से अहले ईमान के सीनों को ठंडक अता फ़रमाएगा।"*

## आयत 15

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ

*"और उनके दिलों के गुस्से को निकाल देगा।"*

अल्लाह तआला इस इक़दाम के नतीजे के तौर पर मुसलमानों के सीनों की जलन को दूर करेगा और उन्हें ठंडक अता फ़रमाएगा। मक्का में अभी भी ऐसे लोग मौजूद थे जिनको क़ुरैश की तरफ़ से तकलीफ़ें पहुँचाई जा रही थी। अभी भी मुसलमान बच्चों, औरतों और ज़ईफ़ों पर मज़ालिम ढाये जा रहे थे। चुनाँचे जब तुम्हारे हमले के नतीजे में इन ज़ालिमों की दुरगत बनेगी तो मज़लूम मुसलमानों के सीनों की जलन भी कुछ कम होगी।

وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۵﴾

*"और अल्लाह जिसको चाहेगा तौबा की तौफ़ीक़ देगा। अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है।"*

अब जो आयत "اَمۡ حَسِبۡتُمۡ" के अल्फ़ाज़ से शुरू हो रही है वह अपने ख़ास अंदाज़ और लहज़े के साथ क़ुरान में तीन मरतबा आई है। दो मरतबा इससे पहले और तीसरी मरतबा यहाँ। सूरतुल बक़रह की आयत 214 में फ़रमाया: { اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ وَلَمَّا يَاۡتِكُمۡ مَّثَلُ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ‌ؕ } सूरह आले इमरान की आयत 142 में फ़रमाया: { اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ وَلَمَّا يَعۡلَمِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ جٰهَدُوۡا مِنۡكُمۡ} और यहाँ फ़रमाया: { اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تُتۡرَكُوۡا وَلَمَّا يَعۡلَمِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ جٰهَدُوۡا مِنۡكُمۡ} (इसी सूरत की आयत 16)।

एक ही मौज़ू की हामिल इन तीनों आयात के ना सिर्फ़ अल्फ़ाज़ आपस में मिलते हैं, बल्कि इनमें एक अजीबो-ग़रीब मुशाबिहत यह भी है कि हर आयत के नंबर के हिंद्सों का हासिल जमा 7 आता है।

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تُتۡرَكُوۡا وَلَمَّا يَعۡلَمِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ جٰهَدُوۡا مِنۡكُمۡ

*"क्या तुमने गुमान कर लिया है कि तुम यूँ ही छोड़ दिए जाओगे, हालांकि अभी तो अल्लाह ने यह देखा ही नहीं कि तुम में से कौन वह लोग हैं जो जिहाद करने वाले हैं"*

दूसरी क़ौमों के ख़िलाफ़ बरसर पैकार होना और बात है, तुम्हें अब अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ जिहाद करने के लिये जाना है। गोया इस हुकुम के अंदर निस्बतन सख्त इम्तिहान है। चुनाँचे अल्लाह तुम्हारा यह इम्तिहान भी लेना चाहता है।

وَلَمۡ يَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوۡلِهٖ وَلَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَلِيۡجَةً ‌ؕ

*"और जो नहीं रखते अल्लाह, उसके रसूल और अहले ईमान के अलावा किसी के साथ क़ल्बी दोस्ती का कोई ताल्लुक़।"*

ये दुनियावी रिश्तों के खुशनुमा बंधन जब तक ईमान की तलवार से कटेंगे नहीं, उस वक़्त तक अल्लाह और दीन के साथ तुम्हारा ख़ुलूस कैसे साबित होगा!

وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۞ ١٦

*"और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है।"*

## आयात 17 से 24 तक

مَا كَانَ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ اَنۡ يَّعۡمُرُوۡا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيۡنَ
عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ بِالۡكُفۡرِ‌ ؕ اُولٰٓـئِكَ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ۖۚ وَفِى
النَّارِ هُمۡ خٰلِدُوۡنَ ۞ ١٧ اِنَّمَا يَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنۡ
اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى
الزَّكٰوةَ وَلَمۡ يَخۡشَ اِلَّا اللّٰهَ‌ فَعَسٰۤى اُولٰٓـئِكَ اَنۡ
يَّكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ ۞ ١٨ اَجَعَلۡتُمۡ سِقَايَةَ الۡحَـآجِّ
وَعِمَارَةَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَـرَامِ كَمَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ

الۡاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ ؕ لَا یَسۡتَوٗنَ عِنۡدَ
اللّٰہِ ؕ وَاللّٰہُ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِیۡنَ
اٰمَنُوۡا وَہَاجَرُوۡا وَجٰہَدُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِاَمۡوَالِہِمۡ
وَاَنۡفُسِہِمۡ ۙ اَعۡظَمُ دَرَجَۃً عِنۡدَ اللّٰہِ ؕ وَاُولٰٓئِکَ ہُمُ
الۡفَآئِزُوۡنَ ﴿۲۰﴾ یُبَشِّرُہُمۡ رَبُّہُمۡ بِرَحۡمَۃٍ مِّنۡہُ
وَرِضۡوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّہُمۡ فِیۡہَا نَعِیۡمٌ مُّقِیۡمٌ ﴿ۙ۲۱﴾
خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَاۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰہَ عِنۡدَہٗۤ اَجۡرٌ عَظِیۡمٌ ﴿۲۲﴾
یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡۤا اٰبَآءَکُمۡ وَاِخۡوَانَکُمۡ
اَوۡلِیَآءَ اِنِ اسۡتَحَبُّوا الۡکُفۡرَ عَلَی الۡاِیۡمَانِ ؕ وَمَنۡ
یَّتَوَلَّہُمۡ مِّنۡکُمۡ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۳﴾ قُلۡ
اِنۡ کَانَ اٰبَآؤُکُمۡ وَاَبۡنَآؤُکُمۡ وَاِخۡوَانُکُمۡ
وَاَزۡوَاجُکُمۡ وَعَشِیۡرَتُکُمۡ وَاَمۡوَالُۨ اقۡتَرَفۡتُمُوۡہَا
وَتِجَارَۃٌ تَخۡشَوۡنَ کَسَادَہَا وَمَسٰکِنُ تَرۡضَوۡنَہَاۤ اَحَبَّ
اِلَیۡکُمۡ مِّنَ اللّٰہِ وَرَسُوۡلِہٖ وَجِہَادٍ فِیۡ سَبِیۡلِہٖ
فَتَرَبَّصُوۡا حَتّٰی یَاۡتِیَ اللّٰہُ بِاَمۡرِہٖ ؕ وَاللّٰہُ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ
الۡفٰسِقِیۡنَ ﴿۲۴﴾

## आयत 17

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ

*"मुशरिकों का यह हक़ नहीं है कि वह आबाद करें अल्लाह की मस्जिदों को अपने ऊपर कुफ़्र की गवाही देते हुए।"*

ये मस्जिदें तो अल्लाह के घर हैं, यह काबा अल्लाह का घर और तौहीद का मरकज़ है, जबकि क़ुरैश अलल ऐलान कुफ़्र पर डटे हुए हैं और अल्लाह के घर के मुतवल्ली भी बने बैठे हैं। ऐसा क्यों कर मुमकिन है? अल्लाह के इन दुश्मनों का इसकी मसाजिद के ऊपर कोई हक़ कैसे हो सकता है?

اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ⑰

*"ये वह लोग हैं जिनके सारे आमाल ज़ाया हो गए हैं, और आग ही में वह रहेंगे हमेशा-हमेशा।"*

बैतुल्लाह की देखभाल और हाजियों की ख़िदमत जैसे वह आमाल जिन पर मुशरिकीने मक्का फूले नहीं समाते, ईमान के बगैर अल्लाह के नज़दीक उनके इन आमाल की कोई हैसियत नहीं है। उनके कुफ़्र के सबब अल्लाह ने उनके तमाम आमाल ज़ाया कर दिए हैं।

## आयत 18

اِنَّمَا يَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمۡ يَخۡشَ اِلَّا اللّٰهَ

*"यक़ीनन अल्लाह की मस्जिदों को तो वह लोग आबाद करते हैं जो ईमान लाये अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर, नमाज़ क़ायम करें, ज़कात अदा करें, और ना डरे किसी से सिवाय अल्लाह के"*

فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ ۝۱۸

*"तो उम्मीद है कि यही लोग राहयाब होंगे।"*

## आयत 19

اَجَعَلۡتُمۡ سِقَايَةَ الۡحَآجِّ وَعِمَارَةَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ كَمَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ‌ؕ

*"क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम को आबाद रखने को बराबर कर दिया है उस शख्स (के आमाल) के जो ईमान लाया अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर और उसने जिहाद किया अल्लाह की राह में?"*

मुशरिकीने मक्का इस बात पर बहुत नाज़ां (गौरवान्वित) हैं कि उन्होंने बैतुल्लाह को आबाद रखा हुआ है और वह हाजियों को पानी पिलाने जैसा कारे-खैर सरअंजाम देते हैं, तो क्या उनके ये अमूर (काम) ईमान बिल्लाह, ईमान बिलआखिरत और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के बराबर हो जाएँगे?

لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩

*“ये बराबर नहीं हो सकते अल्लाह के नज़दीक। और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।”*

**आयत 20**

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

*“वह लोग जो ईमान लाए, जिन्होंने हिजरत की और जिहाद किया अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ, उनका बहुत अज़ीम रुतबा है अल्लाह के नज़दीक।”*

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝٢٠

*“और वही लोग हैं कामयाब होने वाले।”*

## आयत 21

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾

*“उन्हें बशारत देता है उनका रब अपनी रहमते ख़ास और रज़ामंदी की और उन बाग़ात की जिनके अंदर उनके लिये हमेशा रहने वाली नेअमतें होंगी।”*

## आयत 22

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

*“जिनमें वह रहेंगे हमेशा-हमेश। यक़ीनन अल्लाह ही के पास है बहुत बड़ा अज्र।”*

अगली दो आयात अपने मौज़ू और फ़लसफा-ए-दीन के ऐतबार से बहुत अहम हैं। जैसा कि इससे पहले भी ज़िक्र हो चुका है, मक्का पर चढ़ाई के सिलसिले में बाज़ मुसलमानों में तज़बज़ुब पाया जाता था। इसकी एक बहुत ही अहम वज़ह यह थी कि मुशरिकीने मक्का में से अक्सर के साथ मुहाजरीन की बहुत क़रीबी अज़ीज़ दारियाँ थीं। अभी तक तो कुछ उम्मीद थी कि शायद वह लोग ईमान ले आयेंगे, मगर अब साफ़ नज़र आ रहा था कि मक्का पर चढ़ाई की सूरत में अपने क़रीबी अज़ीज़ों के ख़िलाफ़ लड़ना होगा, अपने भाईयों, बेटों

और बापों के गले काटना होंगे। इंसानी सतह पर ये कोई आसान काम नहीं था, मगर अल्लाह तआला को अभी मुसलमानों का ये मुश्किलतरीन इम्तिहान लेना भी मक़सूद था। लिहाज़ा ये आयात इस ज़िमन में अल्लाह की मरज़ी और दीने हक़ का असूल बहुत वाज़ेह और दो टूक अल्फ़ाज़ में बयान कर रही हैं।

## आयत 23

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡۤا اٰبَآءَكُمۡ وَاِخۡوَانَكُمۡ اَوۡلِيَآءَ اِنِ اسۡتَحَبُّوا الۡكُفۡرَ عَلَى الۡاِيۡمَانِ‌ؕ

*“ऐ अहले ईमान! अपने बापों और भाईयों को दिली दोस्त और हिमायती मत बनाओ अगर इन्होंने ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसंद किया है।”*

अगर अब भी तुम्हारे दिलों में अपने काफ़िर अक़रबा (क़रीब वालों) के लिये मोहब्बत मौजूद है तो इसका मतलब यह है कि फ़िर ईमान के साथ तुम्हारा रिश्ता मज़बूत नहीं है। अल्लाह, उसके दीन और तौहीद के लिये तुम्हारे जज़्बात में गैरत व हमियत नहीं है।

وَمَنۡ يَّتَوَلَّهُمۡ مِّنۡكُمۡ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۳﴾

*“और तुम में से जो कोई भी उनके साथ विलायत (दोस्ती) का ताल्लुक़ रखेंगे तो ऐसे लोग (खुद भी) ज़ालिम ठहरेंगे।”*

अब वह आयत आ रही है जो इस मौज़ू पर क़ुरान करीम की अहम तरीन आयत है।

## आयत 24

قُلۡ اِنۡ كَانَ اٰبَآؤُكُمۡ وَاَبۡنَآؤُكُمۡ وَاِخۡوَانُكُمۡ وَاَزۡوَاجُكُمۡ وَعَشِيۡرَتُكُمۡ وَاَمۡوَالُ ۨاقۡتَرَفۡتُمُوۡهَا وَتِجَارَةٌ تَخۡشَوۡنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرۡضَوۡنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيۡكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَجِهَادٍ فِىۡ

*“(ऐ नबी صلی اللہ علیہ وسلم! इनसे) कह दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीवियाँ (और बीवियों के लिए शौहर), तुम्हारे रिश्तेदार और वह माल जो तुमने बहुत मेहनत से कमाए हैं, और वह तिजारत जिसके मंदे का तुम्हें बहुत ख़तरा रहता है, और वह मकानात जो तुम्हें बहुत पसंद हैं, (अगर ये सब चीज़ें) तुम्हें महबूब तर हैं अल्लाह, उसके रसूल और उसके रस्ते में जिहाद से, तो इंतेज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला सुना दे।”*

سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى

يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۭ

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝۲۴

*"और अल्लाह ऐसे फ़ासिकों को राहयाब नहीं करता।"*

यहाँ आठ चीज़ें गिनवा दी गई हैं कि अगर इन आठ चीज़ों की मोहब्बतों में से किसी एक या सब मोहब्बतों का जज़्बा अल्लाह, उसके रसूल और उसके रस्ते में जिहाद की मोहब्बतों के जज़्बे के मुक़ाबले में ज़्यादा है तो फ़िर अल्लाह के फ़ैसले का इंतेज़ार करो। यह बहुत सख्त और रौंगटे खड़े कर देने वाला लहज़ा और अंदाज़ है। हम में से हर शख्स को चाहिये कि अपने बातिन में एक तराज़ू नसब करे। उसके एक पलड़े में ये आठ मोहब्बतें डालें और दूसरे में अल्लाह, उसके रसूल और जिहाद की तीन मोहब्बतें डालें और फ़िर अपना जायज़ा ले कि मैं कहाँ खड़ा हूँ! चूँकि इंसान खुद अपने नफ्स से खूब वाक़िफ़ है {بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ} (सूरह क़ियामा, आयत 14) इसलिये उसे अपने बातिन की सही सूरतेहाल मालूम हो जायेगी। बरहाल इस सिलसिले में हर मुस्लमान को मालूम होना चाहिये कि अगर तो उसकी सारी ख्वाहिशें, मोहब्बतें और हुक़ूक़ (बीवी, औलाद, नफ्स वगैरह के हुक़ूक़) इन तीन मोहब्बतों के ताबेअ हैं तो उसके मामलाते ईमान दुरुस्त हैं, लेकिन अगर मज़कूरा आठ चीज़ों में से किसी एक भी चीज़ की मोहब्बत का ग्राफ़

ऊपर चला गया तो बस यूँ समझें कि वहाँ तौहीद ख़त्म है और शिर्क शुरू! इसी फ़लसफ़े को अल्लामा इक़बाल ने अपने इस शेअर में इस तरह पेश किया है:

*ये माल व दौलते दुनिया, ये रिश्ता व पेवंद*
*बुताने वहम व गुमाँ, ला इलाहा इल्लल्लाह!*

आयत ज़ेरे नज़र में जो आठ चीज़ें गिनवाई गई हैं उनमें पहली पाँच "रिश्ता व पेवंद" के ज़ुमरे में आती हैं जबकी आखरी तीन "माल व दौलते दुनिया" की मुख्तलिफ़ शक्लें हैं। अल्लामा इक़बाल फ़रमाते हैं कि इन चीज़ों की असल में कोई हक़ीक़त नहीं है, यह हमारे वहम और तवाह्हुम के बनाए हुए बुत हैं। जब तक ला ईलाहा इल्लल्लाह की शमशीर से इन बुतों को तोड़ा नहीं जायेगा, बंदा-ए-मोमिन के नहां ख़ाना-ए-दिल में तौहीद का अलम (झंडा) बुलंद नहीं होगा।

दूसरे और तीसरे रुकूअ पर मुश्तमिल वह ख़ुत्बा जो रमज़ान 8 हिजरी से क़ब्ल नाज़िल हुआ था यहाँ ख़त्म हुआ। अब चौथे रुकूअ के आग़ाज़ से सिलसिला-ए-कलाम फिर से सूरत की इब्तदाई छ: आयात के साथ जोड़ा जा रहा है।

## आयात 25 से 29 तक

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ
اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا
وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ
مُّدْبِرِيْنَ ۝۲۵ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝26 ثُمَّ
يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝27 يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا
الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ
عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ
مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَاۗءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝28 قَاتِلُوا
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا
يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ
الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰي يُعْطُوا الْجِزْيَةَ
عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝29ۧ

## आयत 25

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ

*"(ऐ मुसलमानों!) अल्लाह ने तुम्हारी मदद की है बहुत से मौक़ों पर और (ख़ास तौर पर) हुनैन के दिन"*

जैसा कि क़ब्ल अज़ बयान हो चुका है, पहले, चौथे और पाँचवें रुकूअ पर मुश्तमिल ये ख़ुतबा ज़ुल क़ाअदा 9 हिजरी में नाज़िल हुआ था, जबकि इससे पहले गज़वा-ए-हुनैन शवाल 8 हिजरी में वक़ूअ पज़ीर हो चुका था।

اِذۡ اَعۡجَبَتۡكُمۡ كَثۡرَتُكُمۡ *"जब तुम्हे अपनी कसरत पर नाज़ हो गया था"*

मामला यूँ नहीं था कि लश्कर में शामिल तमाम मुसलमानों को अपनी कसरत पर नाज़ और फ़ख्र महसूस हो रहा था। गज़वा-ए-हुनैन में मुसलमानों की तादाद बाराह हज़ार थी, जो इससे पहले कभी किसी गज़वा में इकट्ठी नहीं हुई थी। इनमें से दस हज़ार मुसलमान तो वह थे जो फ़तह मक्का के वक़्त हुज़ूर ﷺ के हमराह थे, और दो हज़ार लोग मक्का से शामिल हुए थे। मक्का से शामिल होने वालो में अक्सरियत उन नौमुस्लिमों की थी जो मक्का फ़तह हो जाने के बाद ईमान लाये थे। यह भी मुमकिन है कि उनमें कुछ मुशरिक भी हों जो अब मुसलमानों की रिआया होने के बाइस मआवनीन व खादमीन की हैसियत से लश्कर में शामिल हो गए हों। मुसलमानों की यह लश्कर कशी हवाज़िन और शक़ीफ़ के क़बाइल के ख़िलाफ़ थी जो ताइफ़ और उसके इर्द-गिर्द की शादाब वादियों में आबाद थे। मुसलमान इससे क़ब्ल बार-हा (कई बार) क़लील तादाद और मामूली अस्लाह से कुफ्फ़ार की बड़ी-बड़ी फ़ौजों को शिकस्त दे चुके थे। चुनाँचे बाज़ मुसलमानों की ज़बान से अपनी कसरत के ज़अम में ये अल्फ़ाज़ निकल गए कि "आज मुसलमानों पर कौन ग़ालिब आ सकता है!" दूसरी तरफ़ हवाज़न और शक़ीफ़ के क़बाइल ने पहले से अपने तीरअंदाज़ दस्ते पहाड़ियों और घाटियों पर तैनात कर रखे थे और मौज़ों

मक़ामात पर सफ़ आराई कर ली थी। ये लोग बड़े माहिर तीरअंदाज़ थे। मुसलमानों का लश्कर जब वादी-ए-हुनैन में पहुँचा तो पहाड़ियों पर मौजूद तीरअंदाज़ों ने तीरों की बौछार कर दी। लश्कर नशेब में था, तीर बुलंदी से आ रहे थे और दोनों तरफ़ से आ रहे थे। इससे लश्कर में भगदड मच गई और बाराह हज़ार का लश्कर ज़रार तितर-बितर हो गया। जब हरावल दस्ते (घुड़सवार) से लोग अज़तरारी कैफ़ियत में पलट कर भागे तो रेले की सूरत में बहुत से दूसरे लोगों को भी अपने साथ धकेलते चले गए। बाज़ रिवायात में आता है कि रसूल अल्लाह ﷺ के साथ सिर्फ़ 30 या 40 आदमी रह गए थे। अल्लामा शिबली रहि. ने "सीरतुलनबी ﷺ" में यही लिखा है कि 30, 40 आदमी रह गए थे, लेकिन सैय्यद सुलेमान नदवी रहमतुल्लाह ने बाद में अपने उस्ताद की राय पर इख्तलाफ़ी नोट लिखा कि तीन सौ या चार सौ आदमी आप ﷺ के साथ रह गए थे। लेकिन बाराह हज़ार के लश्कर में से तीन या चार सौ आदमियों का रह जाना भी कोई मामूली वाक़िया नही था। इस सूरतेहाल में हुज़ूर ﷺ अपनी सवारी से नीचे उतर आये, आप ﷺ ने अलम (झंडा) खुद अपने हाथ में लिया और बाआवाज़-ए-बुलंद रजज़ पढ़ा: اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِب اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِب कि मैं नबी हूँ इसमें कोई शक नहीं! (यानि मैं यक़ीनन नबी हूँ, चाहे ये बाराह हज़ार लोग मेरा साथ दे तब भी, और अगर कोई भी साथ ना दे तब भी)। और मैं अब्दुल मुतल्लिब का बेटा हूँ, यानि मैं अब्दुल मुतल्लिब का पोता मैदाने जंग में ब-नफ्से नफ़ीस मौजूद हूँ। फिर आप ﷺ ने लोगों को पुकारा اِلَيَّ يَا عِبَادَ اللّٰهِ "अल्लाह के बन्दों, मेरी तरफ़ आओ!" इसके बाद आप ﷺ ने क़रीब ही मौजूद अपने चचा हज़रत

अब्बास रज़ि. को, जिनकी आवाज़ काफ़ी बुलंद थी, हुकुम दिया कि अंसार व मुहाजरीन को पुकारे। उन्होंने बुलन्द आवाज़ से पुकारा: असहाबे बदर कहाँ हो? असहाबे शजरह (बैअत रिज़वान वालों) कहाँ हो? इस पर लोग रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ पलटना शुरू हुए और लश्कर फिर से इकट्ठा हुआ। इसके बाद एक भरपूर जंग लड़ने के बाद मुसलमानो को फ़तह हासिल हुई। आयत ज़ेरे नज़र का इशारा इस पूरे वाक़िये की तरफ़ है।

فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

*"तो वह (कसरत) तुम्हारे कुछ काम ना आ सकी और ज़मीन पूरी फ़राखी के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ मोड़ कर भाग खड़े हुए।"*

## आयत 26

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ

*"फ़िर अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाई (अपनी तरफ़ से) तस्कीन अपने रसूल और अहले ईमान पर और (उस वक़्त भी) ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा"*

وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ 26

*"और अज़ाब दिया काफ़िरों को। और यक़ीनन काफ़िरों का बदला यही है।"*

## आयत 27

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ 27

*"फ़िर इसके बाद (भी) अल्लाह तौबा नसीब फ़रमायेगा अपने बन्दों में से जिसको चाहेगा। और अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है।"*

## आयत 28

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ

*"ऐ अहले ईमान! ये मुशरिक यक़ीनन नापाक हैं, लिहाज़ा इस साल के बाद ये मस्जिदे हराम के क़रीब ना फटकने पाएँ।"*

यानि इस साल (9 हिजरी) के हज में तो मुशरिकीन भी शामिल हैं, मगर आईन्दा कभी कोई मुशरिक हज के लिये

नहीं आ सकेगा और ना किसी मुशरिक को बैतुल्लाह या मस्जिदे हराम के क़रीब आने की इजाज़त होगी।

وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً

*"और अगर तुम्हें अंदेशा हो फ़क़र (गरीबी) का"*

فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَاۗءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ؀٢٨

*"तो अनक़रीब अल्लाह तुम्हें गनी कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर वह चाहेगा। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, हिकमत वाला है।"*

अगर किसी के ज़हन में यह ख्याल आये कि इस हुकुम के बाद हाजियों की तादाद कम हो जाएगी और उनके नज़रानों और क़ुर्बानियों से होने वाली आमदानी में भी कमी आ जाएगी, तो उसे अल्लाह की ज़ात पर पूरा-पूरा भरोसा रखना चाहिये। अनक़रीब इस क़दर दुनियावी दौलत तुम लोगों को मिलेगी कि तुम संभाल नहीं सकोगे। चुनाँचे रसूल अल्लाह ﷺ के विसाल के बाद चंद सालों के अंदर-अंदर हालात यक्सर तबदील हो गए। सलतनते फ़ारस और सलतनते रोमा की फ़तूहात के बाद माले ग़नीमत का गोया सैलाब उमड़ आया और इस क़दर माल मुसलमानों के लिये संभालना वाक़ई मुश्किल हो गया। यही सूरते हाल थी जिसके बारे में हुज़ूर ﷺ ने अपनी ज़िंदगी के आख़री अय्याम (दिनों) में फ़रमाया था:

فَوَاللّٰہِ لَا الْفَقْرُ اَخْشٰی عَلَیْکُمْ ، وَلٰکِنْ اَخْشٰی عَلَیْکُمْ اَنْ تُبْسَطَ عَلَیْکُمُ الدُّنْیَا کَمَا بُسِطَتْ عَلٰی مَنْ کَانَ قَبْلَکُمْ ، فَتَنَافَسُوْھَا کَمَا تَنَافَسُوْھَا ، وَتُھْلِکَکُمْ کَمَا اَھْلَکَتْھُمْ

"पस अल्लाह की क़सम (ऐ मुसलमानों!) मुझे तुम पर फ़क़्र व अहतियाज का कोई अंदेशा नहीं है, बल्कि मुझे तुम पर इस बात का अंदेशा है कि तुम पर दुनिया कुशादा कर दी जाएगी (तुम्हारे क़दमों में माल व दौलत के अम्बार लग जाएँगे) जैसे कि तुमसे पहले लोगों पर कुशादा की गई, फ़िर तुम इसके लिये एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करोगे जैसे कि वो लोग करते रहे, फ़िर ये तुम्हें तबाह व बरबाद करके रख देगी जैसे कि इसने उन लोगों को तबाह व बरबाद कर दिया।"(20)

## आयत 29

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى

*"जंग करो तुम इन लोगों से जो ना अल्लाह पर ईमान रखते हैं, ना यौमे आख़िरत पर और ना हराम ठहराते हैं अल्लाह और उसके रसूल की हराम करदा चीज़ों को, और ना क़बूल करते हैं दीने हक़ की ताबेदारी को, उन लोगों में से जिनको किताब दी गई थी, यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज़्या पेश करें और छोटे (ताबेअ) बन कर रहें।"*

يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ
وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾

इस आयत में भी दीन का बहुत अहम फ़लसफ़ा बयान हुआ है। इस हुकुम में मुशरिकीने अरब और नस्ले इंसानी के बाक़ी लोगों के दरमियान फर्क़ किया गया है। सूरतुत्तौबा की आयत 5 की रू से मुशरिकीने अरब को जो मोहलत या अमान दी गई थी उस मुद्दत के गुज़रने के बाद उनके लिये तो कोई और रास्ता (option) इसके अलावा नहीं था कि या वह ईमान ले आएँ या उन्हें क़त्ल कर दिया जाएगा, या वह ज़ज़ीरा नुमाए अरब छोड़ कर चले जाएँ। उनका मामला तो इसलिये ख़ुसूसी था कि मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ ने अल्लाह के रसूल की हैसियत से उन पर आखरी दर्जे में इत्मामे हुज्जत कर दिया था, और आप ﷺ का इन्कार करके वह लोग अज़ाबे इस्तेसाल के हक़दार हो चुके थे। मगर यहूद व नसारा और बाक़ी पूरी नौए इन्सानी के लिये इस ज़िमन में क़ानून मुख्तलिफ़ है। ज़ज़ीरा नुमाए अरब से बाहर के लोगों के लिये और क़यामत तक तमाम दुनिया के इंसानों के लिये वह चैलेंज नहीं कि ईमान लाओ वरना क़त्ल कर दिए जाओगे। क्योंकि इसके बाद अब हुज़ूर ﷺ बहैसियते रसूल मअनवी तौर पर तो मौजूद हैं मगर ब-नफ्से नफ़ीस मौजूद नहीं, कि बराहेरास्त कोई क़ौम आप ﷺ की दावत को रद्द करके अज़ाबे इस्तेसाल की मुस्तहिक़ हो जाए। चुनाँचे बाक़ी तमाम नौए इंसानी के अफ़राद का मामला यह है कि उनसे क़िताल किया जाएगा यहाँ तक कि वो दीन की बालादस्ती को बहैसियत एक निज़ाम के क़ुबूल कर लें, मगर इन्फ़रादी

तौर पर किसी को क़ुबूले इस्लाम के लिये मजबूर नहीं किया जाएगा। हर कोई अपने मज़हब पर कारबंद रहते हुए इस्लामी रियासत के एक शहरी के तौर पर रह सकता है, मगर ऐसी सूरतेहाल में गैर मुस्लिमों को जिज़्या देना होगा। इसी फ़लसफ़े के तहत खिलाफ़ते राशदा के दौर में किसी भी मुल्क पर लश्कर कशी करने से पहले तीन शराइत पेश की जाती थी। पहली ये कि ईमान ले आओ, ऐसी सूरत में तुम हमारे बराबर के शहरी होंगे। अगर ये क़ुबूल ना हो तो अल्लाह के दीन की बालादस्ती क़ुबूल करके इस्लामी रियासत के फ़रमाबरदार शहरी बन कर रहना और जिज़्या देना क़ुबूल कर लो। ऐसी सूरत में तुम लोगों को आज़ादी होगी कि तुम यहूदी, ईसाई, मजूसी, हिन्दू वगैरह जो चाहो बन कर रहो। लेकिन अगर यह भी क़ाबिले क़ुबूल ना हो और तुम लोग इस ज़मीन पर बातिल का निज़ाम क़ायम रखना चाहो तो फ़िर इसका फ़ैसला जंग से होगा।

## आयात 30 से 35 तक

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى
الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ
يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ
ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٣٠ اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ
اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا

اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ
بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى
وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ
يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا
فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ
وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا
كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

## आयत 30

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ

*"और यहूद ने कहा (अक़ीदा गढ़ लिया) कि उज़ैर अलै० अल्लाह का बेटा है और नसारा ने कहा (अक़ीदा गढ़ लिया) कि मसीह अलै० अल्लाह का बेटा है।"*

ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ

*"ये इनके मुहँ की बातें हैं। ये नक़ल कर रहे हैं उन लोगों की बातों की जिन्होंने कुफ़्र किया था इनसे पहले।"*

इनकी इन बातों या मनगढ़त अक़ीदों की कोई हक़ीकत नहीं है, बल्कि ये लोग अपने से पहले वाले मुशरिकीन के अक़ाइद की नक़ल कर रहे हैं। "मिथ्राज़िम" एक क़दीम मज़हब था जिसका मरकज़ मिस्र था। इस मज़हब में पहले से ये तसलीस मौजूद थी: "God the Father, Horus the Son of God Isis the Mother Goddess." यानि ख़ुदा, ख़ुदा का बेटा और उसकी माँ आईसिस देवी। ये पहली तसलीस थी जो मिस्र में बनी। फिर जब सेंट पॉल ने ईसाईयत की तबलीग़ शुरू की और उसका दायरा गैर इस्राइलियों (gentiles) तक वसीअ कर दिया तो अहले मिस्र की नक्क़ाली में तसलीस जैसे नज़रियात ईसाइयत में शामिल कर लिए गए ताकि इन नए लोगों को ईसाइयत इख्तियार

करने में आसानी हो। चुनाँचे ईसाइयत में जो पहली तसलीस शामिल की गई वह यही थी कि "ख़ुदा, ख़ुदा का बेटा यशु और मरियम मुक़द्दस।" तो उन्होंने क़दीम मज़ाहिब की नक्क़ाली में ये तसलीस ईजाद की थी।

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٣٠

*"अल्लाह इन्हें हलाक करे, ये कहाँ से बिचलाये गए हैं!"*

**आयत 31**

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ

*"इन्होंने अपने अहबार व रहबान को रब बना लिया अल्लाह के सिवा और मसीह इब्ने मरियम को भी।"*

ईसाईयों में दूसरी बड़ी गुमराही ये पैदा हुई थी कि उन्होंने अपने उलमा व मशाइख और हज़रत ईसा अलै० को भी अलुहियत में हिस्सेदार बना लिया था। हज़रत ईसा अलै० तो उनके यहाँ बाक़ायदा तीन ख़ुदाओं में से एक थे और इस हैसियत में वह आपकी परस्तिश भी करते थे, मगर अहबार व रहबान को रब मानने की कैफ़ियत ज़रा मुख्तलिफ़ थी। हज़रत अदि बिन हातिम रज़ि. (जिन्होंने ईसाईयत से इस्लाम क़ुबूल किया था) हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर

हुए और इस आयत के बारे में वज़ाहत की दरख्वास्त की तो आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया:

> اَمَا اِنَّهُمْ لَمْ يَكُوْنُوْا يَعْبُدُوْنَهُمْ وَلٰكِنَّهُمْ كَانُوْا اِذَا اَحَلُّوْا شَيْءًا
> اسْتَحَلُّوْهُ وَاِذَا حَرَّمُوْا عَلَيْهِمْ شَيْءًا حَرَّمُوْهُ
>
> "वह उन (अहबार व रहबान) की इबादत तो नहीं करते थे, लेकिन जब वह किसी शय को हलाल क़रार देते तो ये उसे हलाल मान लेते और जब किसी शय को हराम क़रार देते तो उसे हराम मान लेते।"(21)

यानि हलाल व हराम के बारे में क़ानूनसाज़ी का हक़ सिर्फ़ अल्लाह ताअला को हासिल है, और अगर कोई दूसरा इस हक़ को इस्तेमाल करता है तो गोया वह अल्लाह की अलुहियत में हिस्सेदार बन रहा है, और जो कोई अल्लाह के अलावा किसी का यह हक़ तसलीम करता है वह गोया उसे अल्लाह के सिवा अपना रब तस्लीम कर रहा है।

आज भी पॉप को पूरा इख्तियार हासिल है कि वह जो चाहे फ़ैसला करे। जैसा कि उसने एक फ़रमान के ज़रिये से यहूदियों को दो हज़ार साल पुराने इस इल्ज़ाम से बरी कर दिया, कि उन्होंने हज़रत मसीह अलै० को सूली पर चढ़ाया था। गोया उसे तारीख तक को बदल देने का इख्तियार है, इसी तरह वह किसी हराम चीज़ को हलाल और हलाल को हराम क़रार दे सकता है। इस तरह के तसव्वुरात हमारे यहाँ इस्माईलियों में भी पाए जाते हैं। उनका ईमामे हाज़िर मासूम होता है और उसे इख्तियार हासिल है कि वह जिस चीज़ को चाहे हलाल कर दे और जिस चीज़ को चाहे हराम कर दे। इस तरह उन्होंने शरीअत को साक़ित (void) कर दिया है। ताहम ये मामला बिलखुसूस गुजरात (इन्डिया) के

इलाक़े में बसने वाले इस्माईलियों का है, जबकी हन्ज़ह में जो इस्माईली आबाद हैं उनके यहाँ शरीअत मौजूद है, क्योंकि ये पुराने इस्माईली हैं जो बाहर से आकर यहाँ आबाद हुए थे। गुज़रात (इन्डिया) के इलाक़े में इस्माईलियों ने जब मक़ामी आबादी में अपने नज़रियात की तबलीग़ शुरू की तो उन्होंने वही किया जो सेंट पॉल ने किया था। उन्होंने शरीअत को साक़ित कर दिया और हिन्दुओं के अक़ीदे के मुताबिक़ अवतार का अक़ीदा अपना लिया। मक़ामी हिन्दू आबादी में अपने नज़रियात की आसान तरवीज़ के लिये उन्होंने हज़रत अली रज़ि. को दसवें अवतार के रूप में पेश किया (हिन्दुओं के यहाँ नौ अवतार का अक़ीदा राइज़ था)। लिहाज़ा "दशतम अवतार" का अक़ीदा मुस्तक़िल तौर पर उनके यहाँ राइज़ हो गया। इसके अलावा उनके हाज़िर ईमाम को मुकम्मल इख्तियार है कि वह शरीअत के जिस हुकुम को चाहे मंसूख कर दे, किसी हलाल चीज़ को हराम कर दे या किसी हराम को हलाल कर दे।

وَمَآ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوۡۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبۡحٰنَهٗ عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ۝۳۱

*"उन्हें नहीं हुकुम दिया गया था मगर इसी बात का कि वह पूजें सिर्फ़ एक इलाह को, नहीं है कोई मअबूद उसके सिवा। वह पाक है उससे जो शिर्क ये लोग कर रहे हैं।"*

## आयत 32

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ

*"ये चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को बुझा दें अपने मुहँ (की फूंकों) से"*

وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۳۲

*"और अल्लाह को हरगिज़ मंज़ूर नहीं है मगर यह कि वह अपने नूर का इत्माम फ़रमा कर रहे, चाहे ये काफ़िरों को कितना ही नागवार गुज़रे।"*

इस असलूब में यहूदियों पर एक तरह का तंज़ है कि वह ख़ुफ़िया साज़िशों के ज़रिये से इस दीन को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं और कभी अलल ऐलान मैदान में आकर मुक़ाबला करने की जुर्रात नहीं करते। इस आयत की तर्जुमानी मौलाना ज़फ़र अली खान ने अपने एक शेअर में इस तरह की है:

*नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे खंदा ज़न*
*फूंकों से ये चिराग बुझाया ना जायेगा!*

**आयत 33**

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى

*"वही तो है जिसने भेजा है अपने रसूल को अलहुदा और दीने हक़ देकर ताकि ग़ालिब कर दे इसे कुल के कुल दीन (निज़ामे ज़िन्दगी) पर, ख्वाह यह मुशरिकों को कितना ही नागवार गुज़रे।"*

الدِّيۡنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوۡ كَرِهَ
الۡمُشۡرِكُوۡنَ ﴿۳۳﴾

यह आयत बहुत वाज़ेह अंदाज़ में मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की रिसालत की इम्तियाज़ी या तकमीली शान का मज़हर है। जैसे कि पहले भी ज़िक्र हो चुका है, हुज़ूर ﷺ की रिसालत का बुनियादी मक़सद तो दूसरे अम्बिया व रुसुल की तरह तबशीर, इन्ज़ार, तज़कीर, दावत और तबलीग़ है, जिसका तज़किरा सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 165 में बा-अल्फ़ाज़ मौजूद है: {رُسُلًا مُّبَشِّرِيۡنَ وَمُنۡذِرِيۡنَ لِئَلَّا يَكُوۡنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ بَعۡدَ الرُّسُلِ ؕ} लेकिन इसके अलावा हुज़ूर ﷺ की बेअसत का एक इम्तियाज़ी और ख़ुसूसी मक़सद भी है और वह है तकमीले रिसालत, यानि दीन को बिलफ़अल क़ायम और ग़ालिब करना। इन दो आयात में आप ﷺ की रिसालत की इसी तकमीली शान का ज़िक्र है। आयत का यह जोड़ा बिल्कुल इसी तरतीब से सूरतुस्सफ़ (आयत 8 और 9) में भी आया है। इनमें से पहली आयत सूरतुस्सफ़ में थोड़े से फ़र्क़ के साथ आयी है: {يُرِيۡدُوۡنَ لِيُطۡفِـُٔوۡا نُوۡرَ اللّٰهِ بِاَفۡوَاهِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوۡرِهٖ وَلَوۡ كَرِهَ الۡكٰفِرُوۡنَ} जबकि दूसरी आयत ज्यों कि त्यों है, उसमें और सूरतुत्तौबा की इस आयत में बिल्कुल कोई फ़र्क़ नहीं है। मैंने इस आयत पर चौबीस सफ़हात पर मुश्तमिल एक मक़ाला लिखा था जो “नबी अकरम ﷺ का मक़सदे बेअसत” के उन्वान से शाया होता है। इस किताब में यह साबित किया गया है कि हुज़ूर ﷺ की बेअसत के ख़ुसूसी या इम्तियाज़ी

मक़सद की कुल्ली अंदाज़ में तकमील यानि दुनिया में दीन को क़ायम और ग़ालिब करने की जद्दो-जहद हम सब पर हुज़ूर ﷺ के उम्मती होने की हैसियत से फ़र्ज़ है। अगरचे बहुत से लोगों ने इस फ़र्ज़ से जान छुड़ाने के लिये भी दलाइल दिए हैं कि दीन को हम इंसानों ने नहीं बल्कि अल्लाह ने ग़ालिब करना है, लेकिन इस किताब के मुताअले से आप पर वाज़ेह होगा कि इस फ़र्ज़ से फ़रार का कोई रास्ता नहीं है।

## आयत 34

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ

*"ऐ अहले ईमान, यक़ीनन बहुत से उलमा और दरवेश हड़प करते हैं लोगों के माल बातिल तरीक़े से"*

मुख्तलिफ़ मुसलमान उम्मतों में मज़हबी पेशवाओं के लिये मुख्तलिफ़ नाम और अलक़ाब राइज रहे हैं। बनी इसराइल के यहाँ उन्हें अहबार और रहबान कहा जाता था। आयत ज़ेरे नज़र के मुताबिक़ इस तबक़े में अक्सरियत ऐसे लोगों की रही है जो बातिल और नाज़ायज़ ज़राए से माल व दौलत जमा करने और जायदाद बनाने के मकरूह धंधे में मुलव्विस रहे हैं। एक आम दुनियादार आदमी ज़ायज़ तरीक़े से माल व दौलत कमाता है या जायदाद बनाता है तो इसमें कोई क़बाहत नहीं। मगर एक ऐसा शख्स जो दीन की ख़िदमत में

मसरुफ़ है और इसी हक़ीक़त से जाना पहचाना जाता है, अगर वह भी माल व दौलत जमा करने और जायदाद बनाने में मशगूल हो जाए, और मज़ीद यह कि दीन को इस्तेमाल करते हुए और अपनी दीनी हैसियत को नीलाम करते हुए लोगों के माल हड़प करने लगे और माल व दौलत जमा करने ही को अपना मक़सदे ज़िन्दगी बना ले, तो ऐसा इंसान आसमान की छत के नीचे बदतरीन इंसान होगा। अपनी उम्मत के उलमा के बारे में हुज़ूर ﷺ की एक बहुत इबरत अंगेज़ हदीस है:

عَنْ عَلِیٍّ ؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) : (یُوْشِكُ اَنْ یَّاْتِیَ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا یَبْقٰی مِنَ الْاِسْلَامِ اِلَّا اسْمُهٗ، وَلَا یَبْقٰی مِنَ الْقُرْآنِ اِلَّا رَسْمُهٗ، مَسَاجِدُهُمْ عَامِرَةٌ وَهِیَ خَرَابٌ مِنَ الْهُدٰی، عُلَمَاؤُهُمْ شَرٌّ مَنْ تَحْتَ اَدِیْمِ السَّمَاءِ، مِنْ عِنْدِهِمْ تَخْرُجُ الْفِتْنَةُ وَفِیْهِمْ تَعُوْدُ

हज़रत अली रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे अंदेशा है कि लोगों पर एक वक़्त ऐसा आयेगा जब इस्लाम में से इसके नाम के सिवा कुछ नहीं बचेगा और क़ुरान में से इसके रस्मुल ख़त के सिवा कुछ बाक़ी नहीं रहेगा। उनकी मस्जिदे बहुत आबाद (और शानदार) होंगी मगर वह हिदायत से खाली होंगी। उनके उलमा आसमान की छत के नीचे बदतरीन मख्लूक़ होंगे, फ़ितना उन्हीं में से बरामद होगा और उन्हीं में लौट जायेगा।"(22)

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

*"और रोकते हैं लोगों को अल्लाह के रास्ते से।"*

जब कोई दीनी तहरीक उठती है, कोई अल्लाह का मुख्लिस बंदा लोगों को दीन की तरफ़ बुलाता है, तो इन मज़हबी पेशवाओं को अपनी मसनदें ख़तरे में नज़र आती हैं। वह नहीं चाहते कि उनके अक़ीदतमंद उन्हें छोड़ कर किसी दूसरी दावत की तरफ़ मुतवज्जह हों, क्योंकि उन्हीं अक़ीदतमंदों के नज़रानों ही से तो उनके दौलत के अंबारों में इज़ाफ़ा हो रहा होता है और उनकी जायदादें बन रही होती हैं। वह आख़िर क्योंकर चाहेंगे कि उनके नाम लेवा किसी दूसरी दावत पर लब्बैक कहें।

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

*"और वह लोग जो जमा करते हैं अपने पास सोना और चांदी और ख़र्च नहीं करते उसको अल्लाह की राह में, तो उनको बशारत दे दीजिये दर्दनाक अज़ाब की।"*

इस आयत के हवाले से अबुज़र गफ्फ़ारी रज़ि. की ज़ाती राय यह थी कि सोना और चाँदी अपने पास रखना मुतल्लक़न हराम है। मगर दूसरे सहाबा किराम रज़ि., हज़रत अबुज़र गफ्फ़ारी की इस राय से मुत्तफ़िक़ नहीं थे। चुनाँचे दीन का आम क़ानून इस सिलसिले में यही है कि अगर किसी ने कोई

माल जायज़ तरीक़े से कमाया हो और वह उसमें से ज़कात भी अदा करता हो तो इस माल को वह अपने पास रख सकता है, चाहे इसकी मिक़दार कितनी ही ज़्यादा हो और चाहे वह सोने या चांदी ही की शक्ल में हो। ऐसा माल एक शख्स की मौत के बाद उसके वुरसाअ (वारिसों) को जायज़ माल के तौर पर क़ानूने विरासत के मुताबिक़ मुन्तक़िल भी होगा। चुनाँचे अल्लाह ताअला का नाज़िल करदा क़ानूने विरासत खुद इस बात पर दलील है कि माल व दौलत को अपनी मिल्कियत में रखना नाजायज़ नहीं है, क्योंकि अगर माल जमा नहीं होगा तो विरासत किस चीज़ की होगी और क़ानूने विरासत का अमलन क्या मक़सद रह जाएगा? इस लिहाज़ से क़ुरान के वह अहकाम रूहानी और अख्लाक़ी तालीम के ज़ुमरे में आते हैं जिनमें बार-बार माल खर्च करने की तरगीब दी गई है और इस सिलसिले में (قُلِ الْعَفْوَ) (अल बक़रह 219) के अल्फ़ाज़ भी मौजूद हैं। यानि जो भी ज़ायद अज़ ज़रूरत हो उसे अल्लाह की राह में खर्च कर दिया जाए। चुनाँचे हज़रत उस्मान रज़ि. के दौरे खिलाफ़त में हज़रत अबुज़र गफ्फारी रज़ि. की मुखालफ़त के बावजूद क़ानूनी नुक़ता-ए-नज़र से यही फ़ैसला हुआ था कि सोना-चाँदी अपने पास रखना मुतलक़न हराम नहीं है, मगर हज़रत अबुज़र गफ्फारी रज़ि. अपनी राय में किसी क़िस्म की लचक पैदा करने पर आमादा ना हुए। चूँकि आपके इख्तलाफ़ की शिद्दत के बाइस मदीना के माहौल में एक इज़तराबी कैफ़ियत पैदा हो रही थी, इसलिये हज़रत उस्मान रज़ि. ने आप को हुकुम दिया कि वह मदीने से बाहर चले जाएँ। इस पर आप रज़ि. मदीने से निकल गए और सहरा में एक झोपड़ी बना कर उसमें रहने लगे।

मेरे नज़दीक इस आयत का हुक्म अहबार और रहबान यानि मज़हबी पेशवाओं के साथ मखसूस है। इसमें वह सब लोग शामिल हैं जिन्होंने अपना वक़्त और अपनी सलाहियतें दीन की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर रखी हैं और उनका अपना कोई ज़रिया-ए-आमदनी नहीं है। ऐसे मज़हबी पेशवाओं को लोग हदिये देते हैं और उनकी माली मआवनत करते हैं ताकि वह अपनी ज़रूरियाते ज़िन्दगी को पूरा कर सकें। जैसे हुज़ूर ﷺ खुद बैतुलमाल से अपनी ज़रूरियात पूरी करते थे, अज़वाजे मुताहरात रज़ि. को नान नफक़ा भी देते थे और अपने अज़ीज़ व अक़ारब के साथ हुस्ने सुलूक भी करते थे, मगर बैतुलमाल से कुछ मयस्सर ना होने की सूरत में फ़ाक़े भी करते थे। इसी तरह खुलफ़ा-ए-राशिदीन रज़ि. की मिसाल भी है। चुनाँचे ऐसे मज़हबी पेशवाओं पर भी लाज़िम है कि वह दूसरों के हदिये और वताइफ़ (तोहफें) सिर्फ़ मारूफ़ अंदाज़ में अपनी और अपने ज़ेरे किफ़ालत अफ़राद की ज़रूरियाते ज़िंदगी पूरी करने के लिये इस्तेमाल में लाएँ। लेकिन अगर ये लोग अपनी मज़कूरह हैसियत से फ़ायदा उठाते हुए दौलत इकठ्ठी करना और जायदादें बनाना शुरू कर दें, और फ़िर ये जायदादें क़ानूने विरासत के तहत उनके वुरसाअ को मुन्तक़िल हों तो ऐसी सूरत में इन लोगों पर इस आयत के अहकाम का हरफ़ ब हरफ़ इन्तबाक़ होगा। चुनाँचे आज भी अगर आप उलमा-ए-हक़ और उलमा-ए-सू के बारे में मालूम करना चाहें तो मेरे नज़दीक ये आयत इसके लिये एक तरह का लिटमस टेस्ट (litmus test) है। अगर कोई मज़हबी पेशवा या आलिम अपने दीनी कैरियर के नतीजे में जायदाद बना कर और अपने पीछे दौलत छोड़

कर मरा हो तो वह बिला शक व शुबह उलमा-ए-सू में से है।

## आयत 35

يَّوۡمَ يُحۡمٰى عَلَيۡهَا فِىۡ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكۡوٰى بِهَا جِبَاهُهُمۡ وَجُنُوۡبُهُمۡ وَظُهُوۡرُهُمۡ‌ؕ

*"जिस दिन इन (सोने और चांदी) को तपाया जाएगा जहन्नम की आग में और फ़िर दागा जाएगा इनसे इनकी पेशानियों, इनके पहलुओं और इनकी पीठों को।""*

هٰذَا مَا كَنَزۡتُمۡ لِاَنۡفُسِكُمۡ فَذُوۡقُوۡا مَا كُنۡتُمۡ تَكۡنِزُوۡنَ ﴿۳۵﴾

*"(और साथ कहा जाएगा) ये है जो तुमने अपने लिए इकठ्ठा किया था, तो अब चखो मज़ा इसका जो कुछ तुम जमा करते थे।"*

## आयात 36, 37

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوۡرِ عِنۡدَ اللّٰهِ اثۡنَا عَشَرَ شَهۡرًا فِىۡ كِتٰبِ
اللّٰهِ يَوۡمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ مِنۡهَاۤ اَرۡبَعَةٌ
حُرُمٌ‌ؕ ذٰ لِكَ الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظۡلِمُوۡا فِيۡهِنَّ
اَنۡفُسَكُمۡ وَقَاتِلُوا الۡمُشۡرِكِيۡنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوۡنَكُمۡ

كَآفَّةً ؕ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۳۶﴾ اِنَّمَا
النَّسِىۡٓءُ زِيَادَةٌ فِى الۡكُفۡرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
يُحِلُّوۡنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوۡنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوۡا عِدَّةَ مَا
حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمۡ سُوۡۤءُ
اَعۡمَالِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۳۷﴾

**आयत 36**

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوۡرِ عِنۡدَ اللّٰهِ اثۡنَا عَشَرَ شَهۡرًا فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوۡمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ

*"बेशक अल्लाह के यहाँ महीनों की तादाद बारह है, अल्लाह के क़ानून में, जिस दिन से उसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को"*

अल्लाह के क़ायम करदा तकवीनी निज़ाम और तशरीई क़ानून के तहत महीनों की तादाद बारह मुक़र्रर की गई है।

مِنۡهَاۤ اَرۡبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ

*"इनमें से चार महीने मोहतरम हैं।"*

इन चार महीनों (ज़िलक़अद, ज़िलहिज्जा, मोहर्रम और रजब) को "अशहरे हुरुम" कहते हैं और इनमें जंग वगैरह जायज़ नहीं।

ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ

*"यही है सीधा दीन, तो इनके मामले में अपने ऊपर ज़ुल्म ना करो"*

क़ानूने खुदावन्दी के मुताबिक़ ये चार महीने शुरू से मोहतरम हैं, लिहाज़ा तुम लोग इन महीनों के बारे में अपने ऊपर ज़ुल्म ना करो। इसमें क़ुरैश के उस रिवाज की तरफ़ इशारा है जिसके तहत वह मोहतरम महीनों को अपनी मरज़ी से बदलते रहते थे। किसी मुहिम या लड़ाई के दौरान में अगर कोई माहे हराम आ जाता तो उस महीने के अहतराम में जंग व जिदाल बंद करने के बजाय वह ऐलान कर देते कि इस साल इस महीने के बजाय फ़लां महीना माहे हराम के तौर पर मनाया जाएगा। इस तरह उन्होंने पूरा कैलेन्डर गडमड कर रखा था। लेकिन महीनों के अदल-बदल और उलट-फेर से गुज़रते हुए क़ुदरते खुदावन्दी से 10 हिजरी में कैलेन्डर वापस अपनी असली हालत पर पहुँच गया था। इसलिये रसूल अल्लाह ﷺ ने अपने खुतबा-ए-हज्जतुल विदा में फ़रमाया था: ((اِنَّ الزَّمَانَ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهٖ يَوْمَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ..))[23] यानि ज़माने की ये तक़वीम (कैलेन्डर) पूरा चक्कर लगा कर सारी गलतियों और तरामीम में से गुज़रते हुए अब ठीक उसी जगह पर पहुँच गई है जिस पर अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया था।

وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝

*"और मुशरिकिन से सब मिल कर जंग करो जैसे वह सब इकट्ठे होकर तुमसे जंग करते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।"*

**आयत 37**

اِنَّمَا النَّسِيْۗءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

*"ये महीनों को हटा कर आगे-पीछे कर लेना तो कुफ़्र में एक इज़ाफ़ा है, जिसके ज़रिये से गुमराही में मुबतला किये जाते हैं वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया"*

यानि अमन के महीनों को अपनी जगह से हटा कर आगे-पीछे कर देना कुफ़्र में मज़ीद एक काफ़िराना हरकत है।

يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ

*"एक साल हलाल कर लेते हैं इस (महीने) को और एक साल उसे हराम क़रार देते हैं, ताकि तादाद पूरी कर लें उसकी जो अल्लाह ने हराम ठहराए हैं"*

فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۭ

*"और (इस तरह) हलाल कर लेते हैं वह (महीना) जो अल्लाह ने हराम किया है।"*

यानि इस तरह उलट-फेर करके वह इन महीनों को हलाल कर लेते जो असल में अल्लाह ने हराम ठहराए हैं। मुशरिकीने अरब भी बारह महीनों में से चार महीनों को मोहतरम मानते थे मगर अपनी मरज़ी से इन महीनों को आगे-पीछे करते रहते और साल के आख़िर तक इनकी तादाद पूरी कर देते।

زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ؀

*"(इसी तरह) इनके लिये मुज़य्यन कर दिये गए उनके बुरे आमाल। और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता।"*

यहाँ वह पाँच रुकूअ ख़त्म हुए जिनका ताल्लुक़ नबी अकरम ﷺ की बेअसते ख़ुसूसी से है। इन आयात में इस सिलसिले में तकमीली और आख़री अहकाम दे दिए गए हैं। अब छठे रुकूअ से गज़वा-ए-तबूक के मौज़ू का आग़ाज़ हो रहा है। इसके पसमंज़र के ज़िमन में चंद बातें फिर से ज़हन में ताज़ा कर लें।

सन 6 हिजरी में सुलह हुदैबिया के फ़ौरन बाद रसूल अल्लाह ﷺ ने अरब से बाहर मुख्तलिफ़ फ़रमाँरवाओं की तरफ़ अपने ख़तूत और ऐलची भेजने शुरू किए। इस सिलसिले में आप ﷺ का नामा-ए-मुबारक बसरा (शाम) के रईस शरहबील बिन अम्र की तरफ़ भी भेजा गया। यह शख्स रोमन एम्पायर का बाज़गुज़ार था। इसके पास हुज़ूर ﷺ का नामा-ए-मुबारक हज़रत हारिस बिन उमैर अज़दी रज़ि. लेकर गए थे। शरहबील ने तमाम अखलाक़ी व

सिफ़ारती आदाब को बालाए ताक़ रखते हुए हज़रत हारिस रज़ि. को शहीद करा दिया। लिहाज़ा सफ़ीर के क़त्ल को ऐलाने जंग समझते हुए हुज़ूर ﷺ ने तीन हज़ार साहबा रज़ि. पर मुश्तमिल एक लश्कर तैयार करके हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि. की ज़ेरे क़यादत शाम की तरफ़ भेजा। जब ये लश्कर मौता पहुँचा तो इन्होंने एक लाख़ रोमियों का लश्कर अपने ख़िलाफ़ सफ़ आरा पाया। मुखालिफ़ लश्कर की तादाद का अंदाज़ा करने के बाद मुसलमानों में मुक़ाबला करने या ना करने के बारे में मशवरा हुआ। चुनाँचे शौक़े शहादत में इन्होंने मुक़ाबला करने का फ़ैसला किया।

*शहादत है मतलूब व मक़सूदे मोमीन,*
*ना माले ग़नीमत ना किशवर कशाई! (इक़बाल)*

जमादुलऊला 8 हिजरी को इन दोनों लश्करों के दरमियान मौता के मुक़ाम पर जंग हुई। मुसलमान लश्कर के लिये रसूल अल्लाह ﷺ ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि. के अलावा ख़ुसूसी तौर पर दो मज़ीद कमान्डर भी मुक़र्रर फ़रमाए थे। आप ﷺ ने फ़रमाया था कि अगर ज़ैद रज़ि. शहीद हो जाएँ तो ज़ाफर बिन अबी तालिब रज़ि. (ज़ाफर तयार रज़ि) कमान संभालेंगे, और अगर वह भी शहीद हो जाएँ तो अब्दुल्लाह बिन रवाह अंसारी रज़ि. लश्कर के अमीर होंगे। चुनाँचे आप ﷺ के मुक़र्रर करदा तीनों कमान्डर इसी तरतीब से एक के बाद दीगर शहीद हो गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ि. की शहादत के बाद हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि. ने अज़ खुद लश्कर की कमान संभाली, और कामयाब हिकमते अम्ली के तहत अपने लश्कर को रोमियों के नरगे से निकालने में कामयाब हो गए।

जंगे मौता से पैदा होने वाली सूरतेहाल में हुज़ूर ﷺ ने ऐलाने आम फ़रमाया कि रोमियों के मुक़ाबले के लिये तमाम मुम्किना वसाइल बरवेकार लाते हुए एक बड़ा लश्कर तबूक के लिये रवाना किया जाए। इस मरतबा आप ﷺ ने ख़ुद लश्कर के साथ जाने का फ़ैसला फ़रमाया। तबूक मदीने से शिमाल की जानिब तक़रीबन साड़े तीन सौ मील की मुसाफ़त पर हिजाज़ का आखरी शहर है। ये वह इलाक़ा था जहाँ से आगे उस ज़माने में रोमन एम्पायर की सरहद शुरू होती थी। गज़वा-ए-तबूक में शिरकत के लिये आप ﷺ ने ऐलाने आम फ़रमाया था। यानि जंग के क़ाबिल हर साहिबे ईमान शख्स के लिये फ़र्ज़ था कि वह इस मुहिम में शरीक हो। यह अहले ईमान के लिए सख्त इम्तिहान और आज़माइश का वक़्त था। क़हत का ज़माना, शदीद गरमी का मौसम, तवील सहराई सफ़र, वक़्त की सुपर पावर से मुक़ाबला और सब पर मुसतज़ाद यह कि फ़सल संभालने का मौसम सर पर खड़ा था। गोया एक से बढ कर एक मसला था और एक से बढ कर एक इम्तिहान! मदीने के बेशतर लोगों की साल भर की मईशत का दारोमदार ख़जूर की फ़सल पर था, जो उस वक़्त पक कर तैयार खड़ी थी। मुहिम पर निकलने का मतलब यह था कि पकी हुई खजूरों को दरख्तों पर ही छोड़ कर जाना होगा। औरतें चूँकि खजूरों को दरख्तों से उतारने का मुश्किल काम नहीं कर सकती थीं, इसलिये पकी पकाई फ़सल ज़ाया जाती साफ़ नज़र आ रही थी।

दूसरी तरफ़ इस मुहिम का ऐलान मुनाफ़िक़ीन पर बहुत भारी साबित हुआ और उनकी सारी खबासतें इसकी वजह से तशत अज़बाम हो गईं। चुनाँचे आईन्दा ग्यारह रुकुओं की

आयात अपने अन्दर इस सिलसिले के छोटे-बड़े बहुत से मौज़ुआत समेटे हुए हैं, मगर दूसरे मज़ामीन के दरमियान में एक मज़मून जो मुसलसल चल रहा है वह मुनाफ़िक़ीन का तज़किरा है। गोया यह मज़मून एक धागा है जिसमें दूसरे मज़ामीन मोतियों की तरह पिरोए हुए हैं। अगरचे इससे पहले सूरतुन्निसा में मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र बड़ी तफ़सील से आ चुका है, लेकिन आईन्दा ग्यारह रुकुअ इस मौज़ू पर क़ुरान के ज़रवा-ए-सनाम का दर्जा रखते हैं।

बरहाल रसूल अल्लाह ﷺ तीस हज़ार का लश्कर लेकर तबूक तशरीफ़ ले गए। मुक़ाबले में अगरचे हरक़ुल (क़ैसरे रोम) ब-नफ्से नफ़ीस मौजूद था, लेकिन शायद वह पहचान चुका था कि आप ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, चुनाँचे वह मुक़ाबले में आने की जुर्रात ना कर सका। हुज़ूर ﷺ ने कुछ अरसा तबूक में क़याम फ़रमाया। इस दौरान में इर्द-गिर्द के बहुत से क़बाइल ने आकर आप ﷺ से मुआहिदे किए। इस मुहिम में अगरचे जंग की नौबत ना आई मगर मुसलमान लश्कर का मदीने से तबूक जाकर रोमन एम्पायर की सरहदों पर दस्तक देना और हरक़ुल का मुक़ाबल करने की बजाए कन्नी कतरा जाना, कोई मामूली वाक़िया नहीं था। चुनाँचे ना सिर्फ़ उस इलाक़े में मुसलमानों की धाक बैठ गई बल्कि इस्लामी रियासत की सरहदें अम्ली तौर पर तबूक तक वसीअ हो गईं। दूसरी तरफ़ जंगे मौता की वजह से मुसलमानों की साख को जो नुक़सान पहुँचा था उसकी भरपूर अंदाज़ में तलाफ़ी हो गई। सलतनते रोम के साथ छेड़छाड़ का यह सिलसिला जो गज़वा-ए-तबूक की सूरत में शुरू हुआ, इसमें मज़ीद पेशरफ्त दौरे सिद्दीक़ी रज़ि. में हुई। हुज़ूर ﷺ के विसाल के फ़ौरन बाद मदीने से लश्करे

ओसामा रज़ि. की रवानगी भी इस सिलसिले की अहम कड़ी थी।

## आयात 38 से 42 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَا لَـكُمۡ اِذَا قِيۡلَ لَـكُمُ انْفِرُوۡا فِىۡ
سَبِيۡلِ اللّٰهِ اثَّاقَلۡتُمۡ اِلَى الۡاَرۡضِ ؕ اَرَضِيۡتُمۡ بِالۡحَيٰوةِ
الدُّنۡيَا مِنَ الۡاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا فِى
الۡاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيۡلٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّا تَنۡفِرُوۡا يُعَذِّبۡكُمۡ عَذَابًا
اَلِيۡمًا ۙ وَّيَسۡتَبۡدِلۡ قَوۡمًا غَيۡرَكُمۡ وَلَا تَضُرُّوۡهُ شَيۡـًٔـا ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۳۹﴾ اِلَّا تَنۡصُرُوۡهُ فَقَدۡ
نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذۡ اَخۡرَجَهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ثَانِىَ اثۡنَيۡنِ اِذۡ
هُمَا فِى الۡغَارِ اِذۡ يَقُوۡلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰهَ
مَعَنَا ۚ فَاَنۡزَلَ اللّٰهُ سَكِيۡنَتَهٗ عَلَيۡهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوۡدٍ لَّمۡ
تَرَوۡهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوا السُّفۡلٰى ؕ وَكَلِمَةُ
اللّٰهِ هِىَ الۡعُلۡيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ﴿۴۰﴾ اِنْفِرُوۡا
خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوۡا بِاَمۡوَالِكُمۡ وَاَنۡفُسِكُمۡ فِىۡ
سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّـكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ

تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۱﴾ لَوۡ کَانَ عَرَضًا قَرِیۡبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوۡكَ وَلٰكِنۡۢ بَعُدَتۡ عَلَیۡهِمُ الشُّقَّةُ وَسَیَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسۡتَطَعۡنَا لَخَرَجۡنَا مَعَكُمۡ یُهۡلِكُوۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ وَاللّٰهُ یَعۡلَمُ اِنَّهُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ﴿۴۲﴾

## आयत 38

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مَا لَكُمۡ اِذَا قِیۡلَ لَكُمُ انۡفِرُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ اثَّاقَلۡتُمۡ اِلَی الۡاَرۡضِ ؕ

*“ऐ ईमान के दावेदारों! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि निकलो अल्लाह की राह में तो तुम धँसे जाते हो ज़मीन की तरफ़।”*

अगरचे यह वज़ाहत सूरतुन्निसा में भी हो चुकी है मगर इस नुक्ते को दोबारा ज़हननशीन कर लें कि क़ुरान करीम में मुनाफ़िक़ीन से ख़िताब “یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا” के सीगे में ही होता है, क्योंकि ईमान का दावा तो वह भी करते थे और क़ानूनी और ज़ाहिरी तौर पर वह भी मुस्लमान थे।

اَرَضِيۡتُمۡ بِالۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا مِنَ الۡاٰخِرَةِ‌ ۚ

*"(सोचो!) क्या तुमने आख़िअत के बजाए दुनिया की ज़िंदगी को क़ुबूल कर लिया है?"*

यह भी एक मुतजस्साना सवाल (searching question) है। यानि तुम दावेदार तो हो ईमान बिलआख़िरत के, लेकिन अगर तुम अल्लाह की राह में जंग के लिये निकलने को तैयार नहीं हो तो इसका मतलब यह है कि तुम आख़िरत हाथ से देकर दुनिया के ख़रीदार बनने जा रहे हो। तुम आख़िरत की नेअमतों को छोड़ कर दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हो बैठे हो।

فَمَا مَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا فِى الۡاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيۡلٌ ۞٣٨

*"तो (जान लो कि) दुनिया की ज़िंदगी का साज़ो सामान आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत क़लील है।"*

## आयत 39

اِلَّا تَنۡفِرُوۡا يُعَذِّبۡكُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمًا  ۙ وَّيَسۡتَبۡدِلۡ قَوۡمًا غَيۡرَكُمۡ وَلَا تَضُرُّوۡهُ شَيۡـًٔـا‌ ؕ

*"अगर तुम नहीं निकलोगे (अल्लाह की राह में तो) वह तुम्हें अज़ाब देगा दर्दनाक अज़ाब और तुम्हें हटा कर किसी और क़ौम को ले आएगा, और तुम उसका कुछ भी नुक़सान नहीं कर सकोगे।"*

अल्लाह को तो अपने दीन का झंडा उठवाना है, अगर तुम नहीं उठाओगे तो तुम्हें हटा कर इस मक़सद के लिये किसी और क़ौम को आगे ले आएगा।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝٣٩

*"और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।"*

**आयत 40**

اِلَّا تَنۡصُرُوۡهُ فَقَدۡ نَصَرَهُ اللّٰهُ

*"अगर तुम इन (रसूल ﷺ) की मदद नहीं करोगे तो (कुछ परवाह नहीं) अल्लाह ने तो उस वक़्त उनकी मदद की थी"*

اِذۡ اَخۡرَجَهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ثَانِىَ اثۡنَيۡنِ اِذۡ هُمَا فِى الۡغَارِ

*"जब काफ़िरों ने उनको (मक्का से) निकाल दिया था (इस हाल में कि) आप ﷺ दो में से दूसरे थे, जबकि वह दोनों ग़ार में थे"*

यानि वह सिर्फ़ दो अश्खास थे, मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ ख़ुद और अबुबकर सिद्दीक़ रज़ि.।

اِذۡ يَقُوۡلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ

*"जबकि वह अपने साथी से कह रहे थे कि गम ना करो, अल्लाह हमारे साथ है।"*

जब हज़रत अबुबकर रज़ि. ने कहा था कि हुज़ूर ये लोग तो ग़ार के दहाने तक पहुँच गए हैं, अगर किसी ने ज़रा भी नीचे झाँक कर देख लिया तो हम नज़र आ जाएँगे, तो हुज़ूर ﷺ

ने फ़रमाया था कि गम और फ़िक्र मत करें, अल्लाह हमारे साथ है।

فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا

*"तो अल्लाह ने अपनी सकीनत नाज़िल फ़रमाई उन पर और उनकी मदद फ़रमाई उन लश्करों से जिन्हें तुम नहीं देखते"*

وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۭ

*"और काफ़िरों की बात को पस्त कर दिया।"*

इस वाक़िये का नतीजा ये निकला कि बिलआख़िर काफ़िर ज़ेर हो गए और पूरे ज़ज़ीरा नुमाए अरब के अन्दर अल्लाह का दीन ग़ालिब हो गया।

وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝۴۰

*"और अल्लाह ही का कलिमा सबसे ऊँचा है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।"*

## आयत 41

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

*"निकलो ख्वाह हल्के हो या बोझल"*

ये जो हल्के और बोझल के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं इससे इन लोगों की कैफ़ियत मुराद है, और इस कैफ़ियत के दो पहलु हो सकते हैं। एक पहलु तो दाख़ली है, यानि बोझल

दिल के साथ निकलो या आमादगी के साथ, अब निकलना तो पड़ेगा, क्योंकि अब बात सिर्फ़ तहरीज़ व तरगीब तक नहीं रही, बल्कि जिहाद के लिये नफ़ीरे आम हो चुकी है, लिहाज़ा अब अल्लाह के रस्ते में निकलना फ़र्ज़े ऐयन हो चुका है। इसका दूसरा पहलु खारज़ी है और इस पहलु से मफ़हूम ये होगा कि चाहे तुम्हारे पास साज़ो सामान और अस्लाह वगैरह काफ़ी है तब भी निकलो और अगर साज़ो सामान कम है तब भी।

وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝41

*"और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने अमवाल से और अपनी जानों से। यही तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम इल्म रखते हो।"*

**आयत 42**

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ

*"अगर माले ग़नीमत क़रीब होता और सफ़र भी छोटा होता तो (ऐ नबी ﷺ) ये आपकी पैरवी करते, लेकिन इनको तो बड़ी भारी पड़ रही है दूर की मुसाफ़त।"*

अगर इन मुनाफ़िक़ीन को तवक्क़ो होती कि माले ग़नीमत आसानी से मिल जाएगा और हदफ़ भी कहीं क़रीब होता तो

ये लोग़ ज़रूर आप का साथ देते, मगर अब तो हालत ये है कि तबूक की मुसाफ़त का सुन कर इनके दिल बैठे जा रहे हैं।

रसूल अल्लाह ﷺ की आदते मुबारका थी कि आप किसी भी मुहिम के हदफ़ वगैरह को हमेशा सीगा राज़ में रखते थे। जंग या मुहिम के लिये निकलना होता तो तैयारी का हुक्म दे दिया जाता, मगर यह ना बताया जाता कि कहाँ जाना है और मंसूबा क्या है। इसी तरह फ़तह मक्का के मंसूबे को भी आख़री वक़्त तक ख़ुफ़िया रखा गया था। मगर गज़वा-ए-तबूक की तैयारी के हुक्म के साथ ही आप ﷺ ने तमाम तफ़सीलात भी अलल ऐलान सबको बता दी थीं कि लश्कर की मंज़िले मक़सूद तबूक है और हमारा टकराव सलतनते रोमा से है, ताकि हर शख्स हर लिहाज़ से अपना जायज़ा ले ले और दाखली व खारजी दोनों पहलुओं से तैयारी कर ले। साज़ो सामान भी मुहैय्या कर ले और अपने हौसले की भी जाँच-परख कर ले।

وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ

*"और अनक़रीब ये लोग क़समें खायेंगे अल्लाह की कि अगर हमारे अन्दर इस्तताअत होती तो हम ज़रूर निकलते तुम लोगों के साथ।"*

यानि क़समें खा-खा कर बहाने बनाएँगे और अपनी फ़रज़ी मजबूरियों का रोना रोयेंगे।

يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾

*"ये लोग अपने आप को हलाक कर रहे हैं, और अल्लाह को मालूम है कि ये बिल्कुल झूठे हैं।"*

# आयात 43 से 60 तक

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ
الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾
اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ
عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ
اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا
زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ
الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا
لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ
كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا
تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ
بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ
تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ
وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا
كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى
الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ
بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ
مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ
يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَا
مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا
بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى
وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَا تُعْجِبْكَ

اَمۡوَالُهُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُهُمۡ ؕ اِنَّمَا يُرِيۡدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمۡ بِهَا
فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَتَزۡهَقَ اَنۡفُسُهُمۡ وَهُمۡ
كٰفِرُوۡنَ ﴿۵۵﴾ وَيَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمۡ لَمِنۡكُمۡ ؕ وَمَا
هُمۡ مِّنۡكُمۡ وَلٰكِنَّهُمۡ قَوۡمٌ يَّفۡرَقُوۡنَ ﴿۵۶﴾ لَوۡ يَجِدُوۡنَ
مَلۡجَاً اَوۡ مَغٰرٰتٍ اَوۡ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوۡا اِلَيۡهِ وَهُمۡ
يَجۡمَحُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّلۡمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ
فَاِنۡ اُعۡطُوۡا مِنۡهَا رَضُوۡا وَاِنۡ لَّمۡ يُعۡطَوۡا مِنۡهَاۤ اِذَا هُمۡ
يَسۡخَطُوۡنَ ﴿۵۸﴾ وَلَوۡ اَنَّهُمۡ رَضُوۡا مَاۤ اٰتٰٮهُمُ اللّٰهُ
وَرَسُوۡلُهٗ ۙ وَقَالُوۡا حَسۡبُنَا اللّٰهُ سَيُـؤۡتِيۡنَا اللّٰهُ مِنۡ
فَضۡلِهٖ وَرَسُوۡلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوۡنَ ﴿۵۹﴾ اِنَّمَا
الصَّدَقٰتُ لِلۡفُقَرَآءِ وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَالۡعٰمِلِيۡنَ عَلَيۡهَا
وَالۡمُؤَلَّفَةِ قُلُوۡبُهُمۡ وَفِى الرِّقَابِ وَالۡغٰرِمِيۡنَ وَفِىۡ
سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَابۡنِ السَّبِيۡلِ ؕ فَرِيۡضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۶۰﴾

**आयत 43**

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ

*"(ऐ नबी ﷺ!) अल्लाह आपको माफ़ फ़रमाए (या अल्लाह ने आपको माफ़ फ़रमा दिया) आपने इन्हें क्यों इजाज़त दे दी?"*

यानि आप ﷺ के पास कोई मुनाफ़िक़ आया और अपनी किसी मजबूरी का बहाना बना कर जिहाद से रुख्सत चाही तो आप ﷺ ने अपनी नर्म मिज़ाजी की वजह से उसे इजाज़त दे दी। अब उस शख्स को तो गोया सनद मिल गई कि मैंने हुज़ूर ﷺ से रुख्सत ली है। जिहाद के लिये निकलने का इसका इरादा तो उसका था ही नहीं, मगर इजाज़त मिल जाने से उसकी मुनाफ़क़त का परदा चाक नहीं हुआ। इजाज़त ना मिलती तो वाज़ेह तौर पर मालूम हो जाता कि उसने हुज़ूर ﷺ के हुक्म की नाफ़रमानी की है। इस तरह कई मुनाफ़िक़ीन आए और अपनी मजबूरियों का बहाना बना कर आप ﷺ से रुख्सत ले गए।

حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝۴۳

*"यहाँ तक कि आप के लिये वाज़ेह हो जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और आप (ये भी) जान लेते कि कौन झूठे हैं।"*

## आयत 44

لَا یَسۡتَاۡذِنُکَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ اَنۡ یُّجَاهِدُوۡا بِاَمۡوَالِهِمۡ وَ اَنۡفُسِهِمۡ ؕ

*"वह लोग जो अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर ईमान रखते हैं वह आपसे इजाज़त के तालिब हो ही नहीं सकते कि वह जिहाद ना करें अपने अमवाल और अपनी जानों के साथ।"*

सच्चे मोमिन ऐसी सूरतेहाल में ऐसा कभी नहीं कर सकते कि वह जिहाद से माफ़ी के लिये दरख्वास्त करें, क्योंकि वह जानते हैं कि जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह ईमान का लाज़मी तक़ाज़ा है। क़ब्ल अज़ बयान हो चुका है कि सूरतुल हुजरात की आयत 15 में ईमान की जो तारीफ़ (definition) की गई है उसमें तसदीक़ क़ल्बी और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह को ईमान के अरकान क़रार दिया गया है। इस आयत का ज़िक्र सूरतुल अन्फ़ाल की आयत 12 और आयत 74 के ज़िमन में भी गुज़र चुका है। इसमें जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह को वाज़ेह तौर पर ईमान की लाज़मी शर्त क़रार दिया गया है।

وَ اللّٰہُ عَلِیۡمٌۢ بِالۡمُتَّقِیۡنَ ﴿۴۴﴾

*"और अल्लाह मुत्तक़ी बन्दों से ख़ूब वाक़िफ़ है।"*

**आयत 45**

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ

*"आपसे रुख्सत तो वही माँग रहे हैं जो अल्लाह और यौमे आखिरत पर ईमान नहीं रखते, और उनके दिल शकूक में पड़ गए हैं"*

यहाँ सूरतुल हुजरात की मज़कूरा आयात के अल्फ़ाज़ "ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا" ज़हन में दोबारा ताज़ा कर लीजिये कि मोमिन तो वही हैं जो ईमान लाने के बाद शक में ना पड़ें, और यहाँ "وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ" के अल्फ़ाज़ से वाज़ेह फ़रमा दिया कि इन मुनाफ़िक़ीन के दिलों के अन्दर तो शकूक व शुबहात मुस्तक़िल तौर पर डेरे डाल चुके हैं।

فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

*"और वह अपने इसी शक व शुबह के अन्दर मुतरद्दिद (सिमित) हैं।"*

अपने ईमान के अन्दर पैदा होने वाले शकूक व शुबहात की वजह से वह तज़बज़ुब में पड़े हुए हैं और जिहाद के लिये निकलने के बारे में फ़ैसला नहीं कर पा रहे। कभी उनको मुसलमानों के साथ चलने में मसलहत नज़र आती कि ना जाने से ईमान का ज़ाहिरी भरम भी जाता रहेगा, मगर फिर फ़ौरन ही मुसाफ़त की मशक्क़त के तस्सवुर से दिल बैठ जाता, दुनियावी मफ़ादात का तस्सवुर पाँव की बेड़ी बन जाता और फिर से झूठे बहाने बनने शुरू हो जाते।

## आयत 46

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً

*"और अगर इन्होंने निकलने का इरादा किया होता तो इसके लिये साज़ो सामान फ़राहम करते"*

ऐसे तवील और कठिन सफ़र के लिये भरपूर तैयारी की ज़रूरत थी, बहुत सा साज़ो सामान दरकार था, मगर इसके लिये उनका कुछ भी तैयारी ना करना और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना खुद ही साबित करता है कि इन्होंने जाने का इरादा तक नहीं किया।

وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٤٦

*"लेकिन (हक़ीक़त यह है कि) अल्लाह ने पसंद ही नहीं किया उनका उठना (और निकलना) तो इनको रोक दिय और कह दिया गया कि बैठे रहो तुम भी बैठे रहने वालों के साथ।"*

इस फ़रमान में जो हिकमत थी उसकी तफ़सील इस तरह बयान फ़रमाई गई:

## आयत 47

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

*"अगर ये निकलते (ऐ मुसलमानों!) तुम्हारे साथ तो हरगिज़ इज़ाफ़ा ना करते तुम्हारे लिये मगर खराबी ही का"*

उनके दिलों में चूँकि रोग था, इसलिये लश्कर के साथ जाकर भी ये लोग फ़ितने ही उठाते, लड़ाई-झगड़ा कराने की कोशिश करते और साज़िशें करते। लिहाज़ा इनके बैठे रहने और सफ़र में आप लोगों के साथ ना जाने में भी बेहतरी पोशीदा थी। गोया बंदा-ए-मोमिन के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से हर तरह खैर ही खैर है, जबकि मुनाफ़िक़ के लिये हर हालत में शर ही शर है।

وَّلَاْاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ

*"और घोड़े दौड़ाते तुम्हारे माबैन, फ़ितना पैदा करने के लिये।"*

وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

*"और तुम्हारे अन्दर इनके जासूस भी हैं। और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है।"*

इसका दूसरा तर्जुमा यह है कि "तुम्हारे दरमियान इनकी बातें सुनने वाले भी हैं।" यानि तुम्हारे दरमियान ऐसे नेक दिल और सादा लोह मुसलमान भी हैं जो इन मुनाफ़िक़ीन के बारे में हुस्ने ज़न रखते हैं। ऐसे मुसलामानों के इन मुनाफ़िक़ीन के साथ दोस्ताना मरासिम भी हैं और वह इनकी बातों को बड़ी तवज्जो से सुनते हैं। चुनाँचे अगर यह मुनाफ़िक़ीन तुम्हारे साथ लश्कर में मौजूद होते और कोई फ़ितना उठाते तो ऐन मुमकिन था कि तुम्हारे वह साथी अपनी सादा लोही के बाइस इनके उठाये हुए फ़ितने का शिकार हो जाते।

## आयत 48

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ

*"ये पहले भी फ़ितना उठाते रहे हैं"*

याद रहे कि यही लफ़्ज़ "फ़ितना" उस हदीस में भी आया है जिसका ज़िक्र उलमा-ए-सू के किरदार के सिलसिले में क़ब्ल अज़ आयत 34 के ज़िमन में हो चुका है: ((عُلَمَاؤُهُمْ شَرٌّ مَنْ تَحْتَ اَدِيْمِ السَّمَاءِ ، مِنْ عِنْدِهِمْ تَخْرُجُ الْفِتْنَةُ وَفِيْهِمْ تَعُوْدُ)) यानि उनके उलमा आसमान के नीचे बदतरीन लोग होंगे, फ़ितना उन्हीं में से बरामद होगा और उन्हीं में पलट जाएगा।" यानि वह आपस में लड़ाई-झगड़ों, फ़तवा परदाज़ियों और तिफ़रक़ा बाज़ियों में मसरूफ़ होंगे।

وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

*"और (ऐ नबी ﷺ!) आपके लिये मामलात को उलट-पलट करने की कोशिश करते रहे हैं"*

ये लोग अपनी इम्कानी हद तक कोशिश करते रहे हैं कि आप ﷺ के ममलात को तलपट कर दें।

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝۴۸

*"यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का अम्र ग़ालिब हो गया और इन्हें ये पसंद नहीं था।"*

यानि ज़ज़ीरा नुमाए अरब की हद तक इन लोगों की ख्वाहिशों और कोशिशों के अलल रग़म अल्लाह का दीन ग़ालिब हो गया।

## आयत 49

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۭ

*“और इनमें से वह भी है जो कहता है कि मुझे रुख्सत दे दीजिये और मुझे फ़ितने में ना डालिये।”*

ये मुनाफ़िक़ और मरदूद शख्स जुद बिन क़ैस था (लानतुल्लाह अलैय)। जब रसूल अल्लाह ﷺ ने गज़वा-ए-तबूक के लिये तैयारी का ऐलान फ़रमाया तो यह शख्स आप ﷺ के पास हाज़िर हुआ और अजीब इस्तहज़ाईया अंदाज़ में आप ﷺ से रुख्सत चाही कि हुज़ूर मुझे तो रहने ही दें, क्योंकि मैं हुस्न परस्त क़िस्म का इंसान हूँ और लश्कर जा रहा है शाम के इलाक़े की तरफ़, जहाँ की औरतें बहुत हसीन होती हैं। मैं वहाँ की ख़ूबसूरत औरतों को देख कर खुद पर क़ाबू नहीं रख सकूँगा और फ़ितने में मुब्तला हो जाऊँगा, लिहाज़ा आप मुझे इस फ़ितने में मत डालें और मुझे पीछे ही रहने दें।

اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۭ

*“आगाह हो जाओ फ़ितने में तो ये लोग पड़ चुके।”*

यानि यह शख्स और इसके दूसरे साथी तो पहले ही बदतरीन फ़ितने का शिकार हो चुके हैं जो इस तरह के बहाने तराशने की जसारत कर रहे हैं। इनका यह रवैया जिस सोच की

ग़माज़ी (अफ़सोस) कर रहा है इससे मज़ीद बड़ा फ़ितना और कौनसा होगा!

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝۴۹

*"और यक़ीनन जहन्नुम इन काफ़िरों का इहाता किये हुए है।"*

## आयत 50

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ

*"(ऐ नबी ﷺ) अगर आपको कोई अच्छी बात पहुँचती है तो इन्हें वह बुरी लगती है।"*

अगर आप ﷺ को कहीं से कोई कामयाबी मिलती है, कोई अच्छी ख़बर आपके लिये आती है तो इन्हें यह सब कुछ नागवार लगता है।

وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ

*"और अगर आपको कोई तकलीफ़ आ जाती है तो कहते हैं कि हमने तो अपना ममला पहले ही दुरुस्त कर लिया था"*

कि हम कोई इन लोगों की तरह बेवक़ूफ़ थोड़े हैं, हमने तो पहले ही इन बुरे हालात से अपनी हिफ़ाज़त का बंदोबस्त कर लिया था।

وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝٥٠

*"और वह लौट जाते हैं ख़ुशिया मनाते हुए।"*

वह इस सूरतेहाल में बड़े शादाँ व फ़रहां फ़िरते हैं कि मुसलमानों पर मुसीबत आ गई और हम बच गए।

अगली दो आयात मआरका-ए-हक़ व बातिल में एक बंदा-ए-मोमिन के लिये बहुत बड़ा हथियार हैं। इसलिये हर मुसलमान को ये दोनों आयात ज़बानी याद कर लेनी चाहियें।

## आयत 51

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ

*"आप कह दीजिए कि हम पर कोई मुसीबत नहीं आ सकती सिवाय इसके जो अल्लाह ने हमारे लिये लिख दी हो। वही हमारा मौला है।"*

हम पर जो भी मुसीबत आती है वह अल्लाह ही की मरज़ी और इजाज़त से आती है। उसके इज़्न के बगैर कायनात में एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। वह हमारा कारसाज़ और परवरदिगार है। अगर उसकी मशियत हो कि हमें कोई तकलीफ़ आए तो सर आँखों पर "सरे तस्लीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आए।" जो उसकी रज़ा हो हम भी उसी पर राज़ी हैं। अगर उसकी तरफ़ से कोई तकलीफ़ आ जाए तो इसमें भी हमारे लिए खैर है "हरचे साक़ी मा रेख्त ऐयन अल्ताफ़ अस्त" (हमारा साक़ी हमारे प्याले में जो भी डाल

दे उसका लुत्फ़ व करम ही है)। महबूब की शमशीर से ज़िबह होना यक़ीनन बहुत बड़े ऐज़ाज़ की बात है और ये ऐज़ाज़ किसी गैर के नसीब में क्यों हो, जबकि हमारी गरदने हर वक़्त इस सआदत के लिये हाज़िर हैं:

*ना शोद नसीबे दुश्मन कि शोद हलाके तैगत*
*सरे दोस्तां सलामत कि तू खंज़र आज़माई!*

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

*"और अल्लाह ही पर तवक्कुल करना चाहिये अहले ईमान को।"*

**आयत 52**

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۭ

*"(इनसे) कहिये कि तुम हमारे बारे में किस शय का इन्तेज़ार कर सकते हो सिवाय दो निहायत उम्दा चीज़ों में से किसी एक के!"*

"अल हुसनैन" अल्हुस्ना की तस्निया (द्विवचन) है, जो अहसन की मोअन्नस (स्त्रीलिंग) है। यह अफ़अल अलतफ़ज़ील का सीगा है। चुनाँचे अल हुसनैन के मायने हैं दो निहायत अहसन सूररें। जब कोई बंदा-ए-मोमिन अल्लाह के रास्ते में किसी मुहिम पर निकलता है तो उसके लिये तो दोनों इम्कानी सूरतें ही अहसन हैं, अल्लाह की राह में शहीद हो जाए तो वह भी अहसन:

*शहादत है मतलूब व मक़सूदे मोमिन*
*ना माले गनीमत ना किशवर कशाई!*

और अगर कामयाब होकर आ जाए तो भी अहसन। दोनों सूरतों में कामयाबी ही कामयाबी है। तीसरी कोई सूरत तो है ही नहीं। लिहाज़ा एक बंदा-ए-मोमिन को खौफ़ काहे का?

*जो हक़ की ख़ातिर जीते हैं मरने से कहीं डरते हैं जिगर*
*जब वक़्ते शहादत आता है दिल सीनों में रक़्सा होते हैं!*

وَنَحۡنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمۡ اَنۡ يُّصِيۡبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنۡ عِنۡدِهٖۤ اَوۡ بِاَيۡدِيۡنَا ۖ

*“और (ऐ मुनाफ़िक़ों!) हम मुंतज़िर हैं तुम्हारे बारे में कि अल्लाह तुम्हें पहुँचाये कोई अज़ाब अपने पास से या हमारे हाथों”*

हमें भी तुम्हारे बारे में इंतेज़ार है कि तुम्हारे करतूतों के सबब अल्लाह तआला तुम पर ख़ुद कोई अज़ाब नाज़िल कर दे या ऐयन मुमकिन है कि कभी हमें इजाज़त दे दी जाए और हम तुम्हारी गरदने उड़ायें।

فَتَرَبَّصُوۡۤا اِنَّا مَعَكُمۡ مُّتَرَبِّصُوۡنَ ۝۵۲

*“तो तुम भी इंतेज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहे हैं।”*

## आयत 53

قُلۡ اَنۡفِقُوۡا طَوۡعًا اَوۡ كَرۡهًا لَّنۡ يُّتَقَبَّلَ مِنۡكُمۡ ؕ اِنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا فٰسِقِيۡنَ ۝۵۳

*“कह दीजिये कि चाहे खुशी से खर्च करो या मजबूरी से, तुमसे क़ुबूल नहीं किया जाएगा। इसलिये कि तुम नाफ़रमान लोग हो।”*

यहाँ मुनाफ़िक़ीन के एक दूसरे हरबे का ज़िक्र है कि कुछ माल असबाब चंदे के तौर पर ले आए और बहाना बनाया कि मुझे फ़लां-फ़लां मजबूरी है, मैं ख़ुद तो जाने से माज़ूर हूँ, मुझे रुख्सत दे दें और ये साज़ो-सामान क़ुबूल कर लें। ऐसी सूरतेहाल के जवाब में फ़रमाया जा रहा है कि अब जबकि जिहाद के लिये ब-नफ्से नफ़ीस निकलना फ़र्ज़े ऐयन है, इस सूरतेहाल में रुपया-पैसा और साज़ो-सामान इसका बदल नहीं हो सकता।

## आयत 54

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ

*“और नहीं मानेअ हुई कोई चीज़ कि इनसे इनके नफ़क़ात (अमवाल का खर्च करना) को क़ुबूल किया जाता, मगर यह कि इन्होंने कुफ्र किया है अल्लाह और उसके रसूल के साथ”*

وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝54

*“और नमाज़ के लिये नहीं आते मगर बहुत ही कसल मंदी से और खर्च नहीं करते मगर कराहत के साथ।”*

यानि अब जो चंदा ये लोग पेश कर रहे हैं वह तो जान बचाने के लिये दे रहे हैं कि हमसे साज़ो-सामान ले लिया जाए और हमें इस मुहिम पर जाने से माफ़ रखा जाए।

## आयत 55

فَلَا تُعۡجِبۡكَ اَمۡوَالُهُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُهُمۡ ؕ

*"तो (ऐ नबी ﷺ!) आपको इनके अमवाल और इनकी औलाद से ताज्जुब ना हो।"*

इनको देख कर आप लोग ये ना समझें कि माल व दौलत और औलाद की कसरत इनके लिये अल्लाह की बड़ी नेअमतें हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं है, बल्कि ऐसे लोगों को तो अल्लाह ऐसी नेअमतें इसलिये देता है कि इनका हिसाब इसी दुनिया में बेबाक़ हो जाए और आख़िरत में इनके लिये कुछ ना बचे। और ऐसा भी होता है कि बाज़ अवक़ात दुनिया की इन्हीं नेअमतों को अल्लाह तआला इन्सान के लिये बाइसे अज़ाब बना देता है।

اِنَّمَا يُرِيۡدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمۡ بِهَا فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا

*"अल्लाह तो चाहता है कि इन्हीं चीज़ों के ज़रिये से इन्हें दुनियावी ज़िंदगी में अज़ाब दे"*

अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसे हालात भी पैदा हो सकते हैं कि यही औलाद जिसको इन्सान बड़े लाड़-प्यार और अरमानों से पाल-पोस कर बड़ा करता है इसके लिये सोहाने रूह बन जाए और यही माल व दौलत जिसे वह जान जोखों में दाल कर जमा करता है उसकी जान का वबाल साबित हो।

وَتَزۡهَقَ اَنۡفُسُهُمۡ وَهُمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿۵۵﴾

*"और इनकी जानें निकले इसी कुफ़्र की हालत में।"*

अल्लाह तआला चाहता है कि ये लोग दुनिया की ज़िंदगी में अपनी दौलत ही से लिपटे रहें और अपनी औलाद की मोहब्बत में इस क़दर मगन रहें कि जीते जी इन्हें आँखे खोल कर हक़ को देखने और पहचानने की फ़ुरसत ही नसीब ना हो, और इसी हालत में ये लोग आख़री अज़ाब के मुस्तहिक़ बन जाएँ।

## आयत 56

وَيَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمۡ لَمِنۡكُمۡ ؕ

*"और वह क़समें खा-खा कर कहते हैं कि हम भी आप लोगों के साथ हैं।"*

हम भी मुसलमान हैं, आप लोगों के साथी हैं, हमारी बात का ऐतबार कीजिये।

وَمَا هُمۡ مِّنۡكُمۡ وَلٰكِنَّهُمۡ قَوۡمٌ يَّفۡرَقُوۡنَ ﴿۵۶﴾

*"लेकिन (ऐ मुसलमानों! हक़ीक़त में) ये लोग तुम में से नहीं हैं, बल्कि असल में ये डरे हुए लोग हैं।"*

असल में ये लोग इस्लाम के ग़लबे के तसव्वुर से खौफ़ज़दा हैं और खौफ़ के मारे अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर कर रहे हैं।

## आयत 57

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۵۷

*"अगर ये पा लें कहीं कोई पनाहगाह या कोई ग़ार या कोई सर छुपाने की जगह, तो ये उसकी तरफ़ भाग जाएँ अपनी रस्सियाँ तुड़ाते हुए।"*

जैसे कोई जानवर खौफ़ के मारे अपनी रस्सी तुड़ा कर भागता है, इसी तरह की कैफ़ियत इन पर भी तारी है। इस इज़्तरारी कैफ़ियत में अगर ज़ज़ीरा नुमाए अरब में इन्हें कहीं भी कोई पनाहगाह मिल जाती या किसी भी तरह का कोई ठिकाना जान बचाने के लिये नज़र आ जाता तो वह खौफ़ के मारे यहाँ से भाग गए होते।

## आयत 58

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ

*"और (ऐ नबी ﷺ) इनमें से वह भी हैं जो आप पर इल्ज़ाम लगाते हैं सदक़ात के बारे में।"*

ज़कात व सदक़ात का माल रसूल अल्लाह ﷺ ख़ुद तक़सीम फ़रमाते थे। एक दफ़ा यूँ हुआ कि माल की तक़सीम के दौरान एक मुनाफ़िक़ ने आप ﷺ को टोक दिया: يَا مُحَمَّدُ اعْدِلْ "ऐ मोहम्मद ﷺ इन्साफ़ (के साथ तक़सीम)

कीजिये!" उसकी मुराद यह थी कि आप नाइन्साफ़ी कर रहे हैं। इस पर हुज़ूर ﷺ को गुस्सा आया और आपने फ़रमाया: ((وَيۡلَكَ وَمَنۡ يَعۡدِلُ اِذَا لَمۡ اَكُنۡ اَعۡدِلُ))(24) "तुम बरबाद हो जाओ, अगर मैं अदल नहीं करूँगा तो कौन करेगा?"

فَاِنۡ اُعۡطُوۡا مِنۡهَا رَضُوۡا وَاِنۡ لَّمۡ يُعۡطَوۡا مِنۡهَاۤ اِذَا هُمۡ يَسۡخَطُوۡنَ ۝٥٨

*"तो अगर इसमें से इन्हें (ख़ातिर ख्वाह) दे दिया जाए तो ये राज़ी रहते हैं और अगर इसमें से इन्हें (इस क़दर) ना दिया जाए तो फ़ौरन नाराज़ हो जाते हैं।"*

**आयत 59**

وَلَوۡ اَنَّهُمۡ رَضُوۡا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗ ۙ وَقَالُوۡا حَسۡبُنَا اللّٰهُ سَيُؤۡتِيۡنَا اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ وَرَسُوۡلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوۡنَ ۝٥٩

*"और अगर वह राज़ी रहते उस पर जो कुछ दिया उन्हें अल्लाह ने और उसके रसूल ने, और वह कहते कि अल्लाह हमारे लिये काफ़ी है, अनक़रीब अल्लाह और उसके रसूल हमें (फिर भी) अपने फ़ज़ल से नवाज़ते रहेंगे, यक़ीनन हम अल्लाह की तरफ़ रगबत करने वाले हैं (तो इनके हक़ में बेहतर होता)।"*

अगर उन लोगों की सोच मुसबत (positive) होती और वह अल्लाह और उसके रसूल के बारे में अच्छा गुमान रखते तो

उनके लिये बेहतर होता। अब वह मशहूर आयत आ रही है जिसमें ज़कात के मसारिफ़ बयान हुए हैं।

**आयत 60**

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا

*“सदक़ात तो बस मुफ़लिसों और मोहताजों और आमलीने सदक़ात के लिये हैं”*

सदक़ात से मुराद यहाँ ज़कात है। وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا में महकमा-ए-ज़कात के छोटे-बड़े तमाम मुलाज़मीन शामिल हैं जो ज़कात इकट्ठी करने, उसका हिसाब रखने और उसे मुस्तहक़ीन में तक़सीम करने या उस महकमे में किसी भी हैसियत में मामूर हैं, इन सब मुलाज़मीन की तनख्वाहें इसी ज़कात में से दी जाएँगी।

وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ

*“और उनके लिये जिनकी तालीफ़ क़ुलूब मतलूब हो”*

जब दीन की तहरीक और दावत चल रही हो तो मआशरे के बाज़ साहिबे हैसियत अफ़राद की तालीफ़े क़ुलूब के लिये ज़कात की रक़म इस्तेमाल की जा सकती है ताकि ऐसे लोगों को कुछ दे दिला कर उनकी मुखालफ़त का ज़ोर कम किया जा सके। फ़ु-क़हा के नज़दीक दीन के ग़ालिब हो जाने के बाद ये मुद्दत ख़त्म हो गई है, लेकिन अगर फ़िर कभी इस क़िस्म की सूरतेहाल दरपेश हो तो ये मद फ़िर से बहाल हो जाएगी।

وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ

*"और गरदनों के छुड़ाने में, और जिन पर तावान पड़ा हो (उनके लिये)"*

ऐसा मक़रूज़ जो क़र्ज़ के बोझ से निकलने की क़ुदरत ना रखता हो या ऐसा शख्स जिस पर कोई तावान पड़ गया हो, ऐसे लोगों की गुलो खलासी के लिये ज़कात की रक़म से मदद की जा सकती है।

وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

*"और अल्लाह की राह में"*

यानि अल्लाह की राह में जिहाद में और दावत व अक़ामाते दीन की जद्दो-जहद में भी ये रक़म ख़र्च हो सकती है। लेकिन ज़कात व सदक़ात के सिलसिले में यह नुक्ता बहुत अहम है कि पहली तरजीह के तौर पर अव्वलीन मुस्तहक़ीन व गुराबा, यतामा, मसाकीन और बेवाएँ हैं जो वाक़ई मोहताज हों। अलबत्ता अगर ज़कात की कुछ रक़म ऐसे लोगों की मदद के बाद बच जाए तो वह दीन के दूसरे कामों में सर्फ़ की जा सकती है।

وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

*"और मुसाफ़िरों (की इमदाद) में। यह अल्लाह की तरफ़ से मुअय्यन हो गया है। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।"*

{فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ} के अल्फ़ाज़ अहकामे विरासत के सिलसिले में सूरतुन्निसा की आयत 11 में भी आए हैं।

# आयात 61 से 66 तक

وَمِنۡهُمُ الَّذِيۡنَ يُؤۡذُوۡنَ النَّبِىَّ وَيَقُوۡلُوۡنَ هُوَ
اُذُنٌ ؕ قُلۡ اُذُنُ خَيۡرٍ لَّـكُمۡ يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤۡمِنُ
لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَرَحۡمَةٌ لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ ؕ وَالَّذِيۡنَ
يُؤۡذُوۡنَ رَسُوۡلَ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۶۱﴾ يَحۡلِفُوۡنَ
بِاللّٰهِ لَـكُمۡ لِيُرۡضُوۡكُمۡ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗۤ اَحَقُّ اَنۡ
يُّرۡضُوۡهُ اِنۡ كَانُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۶۲﴾ اَلَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّهٗ مَنۡ
يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا
فِيۡهَا ؕ ذٰلِكَ الۡخِزۡىُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۶۳﴾ يَحۡذَرُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ اَنۡ
تُنَزَّلَ عَلَيۡهِمۡ سُوۡرَةٌ تُنَبِّئُهُمۡ بِمَا فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ قُلِ
اسۡتَهۡزِءُوۡا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخۡرِجٌ مَّا تَحۡذَرُوۡنَ ﴿۶۴﴾ وَلَـئِنۡ
سَاَلۡتَهُمۡ لَيَـقُوۡلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوۡضُ وَنَلۡعَبُ ؕ قُلۡ
اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوۡلِهٖ كُنۡتُمۡ تَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۶۵﴾ لَا
تَعۡتَذِرُوۡا قَدۡ كَفَرۡتُمۡ بَعۡدَ اِيۡمَانِكُمۡ ؕ اِنۡ نَّعۡفُ عَنۡ

طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾

## आयत 61

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ

*"और इनमें वह लोग भी हैं जो नबी (ﷺ) को ईज़ा पहुँचाते हैं और कहते हैं यह तो निरे कान हैं।"*

यह तो निरे कान ही कान हैं। मुराद यह है कि हर एक की बात सुन लेते हैं और हम जो भी झूठा-सच्चा बहाना बनाते हैं उसे मान लेते हैं, गोया बिल्कुल ही बे-बसीरत हैं (मआज़ अल्लाह!) वह ऐसी बाते करके रसूल अल्लाह ﷺ की तौहीन करते थे और आपको अज़ीयत पहुँचाते थे।

قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ

*"आप कहिये कि ये कान तुम्हारी बेहतरी के लिये हैं, वह यक़ीन रखते हैं अल्लाह पर और बात मान लेते हैं अहले ईमान की।"*

यहाँ पर "يُؤْمِنُ" के साथ "ب" और "ل" के इस्तेमाल से मायनो का वाज़ेह फ़र्क़ मुलाहिज़ा हो। يُؤْمِنُ آمَنَ 'ب' के साथ ईमान लाने और 'ل' के साथ बात मानने और यक़ीन कर लेने के मायने में आता है। यानि हमारे रसूल ﷺ

जानते हैं कि तुम झूठ बोल रहे हो मगर यह आप ﷺ की शराफ़त, नजाबत और मुरव्वत है कि तुम्हारी झूठी बातें सुन कर भी तुम्हें यह नहीं कहते कि तुम झूठ बोल रहे हो, और सब कुछ जानते हुए भी तुम्हारा पोल नहीं खोलते। ये तुम्हारी हिमाक़त की इन्तहा है कि तुम अपने ज़अम (ख्याल) में रसूल अल्लाह ﷺ को धोखा दे रहे हो। तुम लोगों को अल्लाह के रसूल ﷺ की बसीरत का कुछ भी अंदाज़ा नहीं है। आप ﷺ तो अल्लाह के रसूल हैं, जबकि एक बंदा-ए-मोमिन की बसीरत की भी कैफ़ियत ये है कि वह अल्लाह के नूर से देखता है। अज़रुए हदीसे नबवी ﷺ: ((اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ))(25)

وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ

*"और जो तुम में से वाक़ई मोमिन हैं उनके हक़ में रहमत हैं।"*

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

*"और जो ईज़ा पहुँचाते हैं अल्लाह के रसूल (ﷺ) को उनके लिये बड़ा दर्दनाक अज़ाब है।"*

## आयत 62

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ

*"(ऐ मुसलमानों!) ये तुम्हारे के सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हे राज़ी करें।"*

इस मुहिम की तैयारी के दौरान मुनाफ़िक़ीन का तरीक़ेकार यह था कि वह झूठे बहाने बना कर रसूल अल्लाह ﷺ से रुख्सत ले लेते, और फिर क़समें खा-खा कर मुसलमानों को भी यक़ीन दिलाने की कोशिश करते कि हम आपके मुख्लिस साथी हैं, आप लोग हम पर शक ना करें।

وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٦٢

*"अल्लाह और उसका रसूल इस बात के ज्यादा हक़दार हैं कि वह उन्हें राज़ी करें अगर वह वाक़िअतन मोमिन हैं।"*

## आयत 63

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ۝٦٣

*"क्या वह जानते नहीं कि जो कोई भी अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करेगा तो उसके लिये जहन्नम की आग है, जिसमें वह हमेशा-हमेश रहेगा। यह बहुत बड़ी रुसवाई है।"*

## आयत 64

يَحۡذَرُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ اَنۡ تُنَزَّلَ عَلَيۡهِمۡ سُوۡرَةٌ تُنَبِّئُهُمۡ بِمَا فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ‌ ؕ

*"ये मुनाफ़िक़ डरते रहते हैं कि कहीं मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरत नाज़िल ना हो जाए जो इनको हमारे दिलों की हालत बता दे।"*

इनके दिलों में चूँकि चोर है इसलिये इन्हें हर वक़्त यह धड़का लगा रहता है कि कहीं वही के ज़रिये इनके झूठ का परदा चाक ना कर दिया जाए।

قُلِ اسۡتَهۡزِءُوۡا‌ ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخۡرِجٌ مَّا تَحۡذَرُوۡنَ‏ ﴿۶۴﴾

*"आप कहिये कि अभी तुम इस्तेहज़ा करते रहो, यक़ीनन (एक वक़्त आयेगा कि) अल्लाह ज़ाहिर करके रहेगा जिससे तुम डर रहे हो।"*

## आयत 65

وَلَٮِٕنۡ سَاَلۡتَهُمۡ لَيَـقُوۡلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوۡضُ وَنَلۡعَبُ‌ ؕ

*"और अगर आप इनसे पूछेंगे तो कहेंगे कि हम तो यूँही बात-चीत और दिल्लगी कर रहे थे।"*

रसूल अल्लाह ﷺ से फ़रमाया जा रहा है कि ये मुनाफ़िक़ीन जो आए दिन आप और मुसलमानों के ख़िलाफ़ हरज़ाह सराई करते रहते हैं, अगर आप इसके बारे में इनसे बाज़पुर्स (पूछताछ) करें तो फ़ौरन कहेंगे कि हमारी गुफ्तगू संजीदा नौइयत (serious type) की नहीं थी, हम तो वैसे ही हँसी-मज़ाक और दिल्लगी कर रहे थे।

قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾

*"आप कहिये क्या तुम अल्लाह, उसकी आयात और उसके रसूल के साथ इस्तेहज़ा कर रहे थे?"*

तो क्या अब *"बाज़ी-बाज़ी बारीशे बाबा हम बाज़ी!"* के मिस्दाक़ अल्लाह, उसकी आयात और उसका रसूल ﷺ भी तुम्हारे इस्तेहज़ा और तमस्खुर का तख्ता-ए-मश्क़ बनेंगे?

## आयत 66

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ

*"अब बहाने मत बनाओ, तुम कुफ़्र कर चुके हो अपने ईमान के बाद।"*

اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ

*"अगर हम तुम्हारी एक जमाअत से दरगुज़र भी कर लेंगे तो किसी दूसरी जमाअत को अज़ाब भी देंगे, इसलिये कि वह मुजरिम हैं।"*

طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝٦٦

यानि अब वह वक़्त आ रहा है कि तुम्हें तुम्हारे इन करतूतों के सबब सज़ाएँ भी मिलेंगी।

## आयात 67 से 72 तक

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ
بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ
اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝٦٧ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ هِيَ
حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٦٨ۙ
كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ
اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ
فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ
بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ
سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللّٰهُ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ
عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

**आयत 67**

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ

*"मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक दूसरे में से हैं।"*

इन सब मुनाफ़िक़ीन का आपस में गठजोड़ है, अन्दर से ये सब एक हैं।

يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ لْمَعْرُوْفِ

*"ये बदी का हुक्म देते हैं और नेकी से रोकते हैं"*

यानि अल्लाह के अहकाम के ख़िलाफ़ ये लोग "अम्रबिलमुनकर और नही अनिल मारूफ़" की पालिसी पर अमल कर रहे हैं। दूसरों से हमदर्दी जता कर उन्हें नेकी से रोकने की कोशिश करते हैं कि देखो अपने खून-पसीने की कमाई को इधर-उधर मत ज़ाया करो, बल्कि इसे अपने और अपने बच्चों के मुस्तक़बिल के लिये संभाल कर रखो।

وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ

*"और अपने हाथों को बंद रखते हैं।"*

यानि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते।

نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾

*"इन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने (भी) इन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया। यक़ीनन ये मुनाफ़िक़ ही नाफ़रमान हैं।"*

## आयत 68

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

*"अल्लाह ने वादा किया है इन मुनाफ़िक़ मर्दों, मुनाफ़िक़ औरतों और तमाम कुफ्फ़ार से जहन्नम की आग का, जिसमे वह हमेशा-हमेश रहेंगे।"*

هِىَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۙ؀ ٦٨

*"बस वही उनके लिये किफ़ायत करेगी। और अल्लाह ने इन पर लानत फ़रमा दी है और इनके लिये अज़ाब है क़ायम रहने वाला।"*

ऐसा अज़ाब जो इनको मुसलसल दिया जाएगा और उसकी शिद्दत कभी कम ना होगी।

## आयत 69

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

*"(तुम मुनाफ़िक़ लोग) उन लोगों के मानिन्द हो जो तुमसे पहले थे"*

كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ

*"वह तुमसे कहीं बढ़ कर थे ताक़त में और कहीं ज्यादा थे माल और औलाद में।"*

तुमसे पहले जो काफ़िर क़ौमें गुज़री हैं, मसलन क़ौमे आद, क़ौमे समूद वगैरह वह ताक़त, माल व दौलत और तादाद के लिहाज़ से तुमसे बहुत बढ़ कर थीं।

فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ

*"तो उन्होंने अपने हिस्से से फ़ायदा उठा लिया और अब तुमने भी अपने हिस्से से फ़ायदा उठा लिया है"*

यानि तुम्हारी मुद्दते मोहलत ख़त्म होने को है, अब तुम लोग बहुत जल्द अपने अंजाम को पहुँचने वाले हो।

كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ

*"जैसे कि उन लोगों ने अपने हिस्से का फ़ायदा उठाया था जो तुमसे पहले थे"*

وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ط

*"और वैसी ही बहसों में तुम भी पड़े जैसी बहसों में वह पड़े थे।"*

तुमने भी इसी तरह की रविश इख्तियार की जैसी उन्होंने इख्तियार की थी।

اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

*"ये वह लोग हैं जिनके तमाम आमाल दुनिया और आख़िरत में ज़ाया हो गए। और यही लोग हैं खसारे में रहने वाले।"*

## आयत 70

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ

*"क्या इनके पास उन लोगों की ख़बरें नहीं आ चुकी हैं जो इनसे पहले थे? क़ौमे नूह, आद, समूद और क़ौमे इब्राहीम"*

यह क़ुरान मज़ीद वाहिद मक़ाम है जहाँ क़ौमे इब्राहीम का तज़किरा इस अंदाज़ में आया है कि शायद आपकी क़ौम पर भी अज़ाब आया हो, लेकिन वाज़ेह तौर पर ऐसे किसी अज़ाब का ज़िक्र पूरे क़ुरान में कहीं नहीं है।

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ

*"और मदयन के लोगों और उन बस्तियों की (खबरें) जो उलट दी गईं।"*

اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝70

*"उनके पास आये उनके रसूल वाज़ेह निशानियाँ (या अहकाम) लेकर। पस अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला नहीं था, बल्कि वह अपने ऊपर खुद ही ज़ुल्म ढहाते रहे।"*

## आयत 71

وَالْمُؤْمِنُوْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ

*“और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें, ये सब एक दूसरे के साथी हैं।”*

يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ
وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ۭ

*“वह नेकी का हुक्म देते हैं, बदी से रोकते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करते हैं।”*

اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ
اللّٰهُ ۭاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿71﴾

*“यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह रहमत फ़रमाएगा। यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त, हिकमत वाला है।”*

## आयत 72

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ
طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ

*"अल्लाह ने वादा किया है मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से उन बाग़ात का जिनके नीचे नदियाँ बहती होंगी, वह उसमें हमेशा रहेंगे, और बहुत उम्दा मकानात (का वादा) हमेशा रहने वाले बाग़ात में।"*

وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾

*"और अल्लाह की रज़ा तो सबसे बड़ी नेअमत है। यही तो है बहुत बड़ी कामयाबी।"*

जन्नत की सारी नेअमतें अपनी जगह, मगर अहले जन्नत के लिये सबसे बड़ी नेअमत यह होगी कि अल्लाह उनसे राज़ी हो जाएगा।

# आयात 73 से 80 तक

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ
عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ
وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا

نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ
يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي
الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ
اللّٰهَ لَىِٕنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ
وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ
قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ
وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿۷۷﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۷۸﴾ ۚ
اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي
الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ
فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿۷۹﴾ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ اِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝۸۰

## आयत 73

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ

*"ऐ नबी! जिहाद कीजिये कुफ्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से, और इन पर सख्ती कीजिये।"*

यह आयत बिल्कुल इन्हीं अल्फ़ाज़ के साथ सूरतुल तहरीम में भी आई है जो अट्ठाईसवें पारे की आख़री सूरत है। यहाँ क़ाबिले गौर नुक्ता यह है कि इस आयत में जिहाद ब-माअनी क़िताल इस्तेमाल नहीं हुआ। मुनाफ़िक़ीन के साथ आपने कभी जंग नहीं की। लिहाज़ा यहाँ जिहाद से मुराद क़िताल से निचले दरजे की जद्दोजहद (دُوْنَ الْقِتَالِ) है कि ऐ नबी ﷺ! आप मुनाफ़िक़ीन की रेशादवानियों का तोड़ करने के लिये जिहाद करें, इनकी साज़िशों को नाकाम बनाने के लिये जद्दोजहद करें। चुनाँचे बाज़ रिवायात में आता है कि जब रसूल अल्लाह ﷺ गज़वा-ए-तबूक से वापस आ रहे थे तो इसी हवाले से आप ﷺ ने फ़रमाया था: ((رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْاَصْغَرِ اِلَى الْجِهَادِ الْاَكْبَرِ))(26) यानि हम छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ़ लौट आए हैं। अब इसकी ताबीरें मुख्तलिफ़ की गई हैं कि उस ज़माने की सुपर पावर सल्तनते रोमा के ख़िलाफ़ जिहाद को आप ﷺ ने "जिहादे असगर"

फ़रमाया और फ़िर फ़रमाया कि अब "जिहादे अकबर" तुम्हारे सामने है। आम तौर पर इस हदीस की तौजीह इस तरह की गई है कि नफ्स के ख़िलाफ़ जिहाद सबसे बड़ा जिहाद है। जैसा कि एक हदीस में आता है कि एक दफ़ा आप ﷺ से पूछा गया: اَیُّ الْجِهَادِ اَفْضَلُ यानि सबसे अफ़ज़ल जिहाद कौनसा है? तो जवाब में आप ﷺ ने फ़रमाया: ((اَنْ تُجَاهِدَ نَفْسَكَ وَهَوَاكَ فِيْ ذَاتِ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ))(27) "ये कि तुम जिहाद करो अपने नफ्स और अपनी ख्वाहिशात के ख़िलाफ़ अल्लाह तआला की इताअत में।" लिहाज़ा इसी हदीस की बुनियाद पर जिहादे अकबर वाली मज़कूरा हदीस की तशरीह इस तरह की गई है कि जिहाद बिलनफ्स दुश्मन के ख़िलाफ़ क़िताल से भी बड़ा जिहाद है। लेकिन मेरे नज़दीक इस हदीस का असल मफ़हूम समझने के लिये इसके मौक़े महल और पसमंज़र के हालात को पेशेनज़र रखना ज़रूरी है। मदीने के अन्दर मुनाफ़िक़ीन दरअसल मुसलमानों के हक़ में मारे आस्तीन थे। अब उनके ख़िलाफ़ रसूल अल्लाह ﷺ को जिहाद का हुक्म दिया जा रहा है, मगर यह मामला इतना आसान और सादा नहीं था। इन मुनाफ़िक़ीन के औस और ख़ज़रज के लोगों के साथ ताल्लुक़ात थे और उनके ख़िलाफ़ अक़दाम करने से अंदरूनी तौर पर कई तरह के मसाइल जन्म ले सकते थे। मगर इस आयत के नुज़ूल के बाद तबूक से वापस आकर आप ﷺ ने मुनाफ़िक़ीन के ख़िलाफ़ इस तरह के कई सख्त अक़दामात किये थे। जैसे आप ﷺ ने मस्जिद ज़रार को गिराने और जलाने का हुक्म दिया, और फिर इस पर अमल भी कराया। यह बहुत बड़ा अक़दाम था। मुनाफ़िक़ीन मस्जिद के तक़द्दुस के नाम पर लोगों को मुशतअल (उग्र) भी कर सकते थे। दरअसल यही वह बड़ा

जिहाद था जिसकी तरफ़ मज़कूरा हदीस में इशारा मिलता है, क्योंकि इन हालात में अपनी सफ़ों के अन्दर छुपे हुए दुश्मनों के वार से बचना और उनके ख़िलाफ़ नबर्द आज़मा होना (निपटना) मुसलमानों के लिये वाक़ई बहुत मुश्किल मरहला था।

وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾

*"और इनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरी जगह है।"*

## आयत 74

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۭ

*"वह अल्लाह की क़सम खा कर कहते हैं कि उन्होंने यह बात नहीं की।"*

यह जिस बात का ज़िक्र है उसकी तफ़सील अट्ठाईसवें पारे की सूरतुल मुनाफ़िक़ीन में आएगी। बहरहाल यहाँ सिर्फ़ इतना जान लेना ज़रूरी है कि तबूक से वापसी के सफ़र पर अब्दुल्लाह बिन अबी के मुँह से किसी नौजवान मुसलमान ने ग़लत बात सुनी तो उसने आकर रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم से उसका ज़िक्र कर दिया। आप صلی اللہ علیہ وسلم ने तलब फ़रमा कर बाज़पुर्स की तो वह साफ़ मुकर गया कि इस नौजवान ने ख्वाह मख्वाह फ़ितना उठाने की कोशिश की है।

وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ

*"हालाँकि उन्होंने कहा है कुफ़्र का कलमा"*

अब्दुल्लाह बिन अबी के मुकर जाने पर यह आयत नाज़िल हुई। अल्लाह तआला ने उस नौजवान को सच्चा क़रार दिया और उस मुनाफ़िक़ के झूठ का परदा चाक कर दिया।

وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا

*"और वह कुफ़्र कर चुके अपने इस्लाम के बाद, और उन्होंने इरादा किया था उस शय का जो वह हासिल ना कर सके।"*

यह जिस वाक़िये की तरफ़ इशारा है वह भी गज़वा-ए-तबूक से वापसी के सफ़र में पेश आया था। पहाड़ी रास्ते में एक मौक़े पर रसूल अल्लाह ﷺ का गुज़र एक ऐसी तंग घाटी से हुआ जहाँ से एक वक़्त में सिर्फ़ एक ऊँट गुज़र सकता था। इस मौक़े पर आप ﷺ काफ़िले से अलैहदा थे और आप ﷺ के साथ सिर्फ़ दो सहाबा हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि. और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि. थे। इस तंग जगह पर कुछ मुनाफ़िक़ीन ने रात की तारीकी से फ़ायदा उठाते हुए आप ﷺ पर हमला कर दिया। उन्होंने पहचाने जाने के डर से ढाटे बाँध रखे थे और चाहते थे कि हुज़ूर ﷺ को (नाऊज़ुबिल्लाह) शहीद कर दें। बहरहाल आप ﷺ के जाँनिसार सहाबा रज़ि. ने हमलावारों को मार भगाया और वह अपने नापाक मंसूबे में कामयाब ना हो सके। इस मौक़े पर रसूल अल्लाह ﷺ ने अपने इन दो सहाबा को हमलावारों में से हर एक के नाम बता दिए और उनके अलावा भी तमाम मुनाफ़िक़ीन के नाम बता दिए। मगर साथ ही आप ﷺ ने इन दोनों हज़रात को ताकीद फ़रमा दी कि वह ये नाम किसी को ना बताएँ और आप

ﷺ के इस राज़ को अपने पास ही महफ़ूज़ रखें। इसी वज़ह से हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि. सहाबा में "साहिबु सिर्रिन नबिय्यु ﷺ" (नबी ﷺ के राज़दान) के लक़ब से मशहूर हो गए थे।

وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

*"और ये लोग अपने अनाद का मज़ाहिरा नहीं कर रहे मगर इसी लिये कि अल्लाह और उसके रसूल ने इन्हें गनी कर दिया है अपने फ़ज़्ल से।"*

यानि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उसके रसूल ﷺ की मेहरबानी से ये लोग माले ग़नीमत और ज़कात व सदक़ात में से बा-फ़रागत हिस्सा पाते रहे।

فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ

*"अब भी अगर ये तौबा कर लें तो इनके लिये बेहतर है।"*

وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ

*"और अगर ये पीठ मोडेंगे तो अल्लाह इन्हें बहुत दर्दनाक अज़ाब देगा दुनिया में भी और आखिरत में भी।"*

وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾

*"और पूरी ज़मीन में इनका ना कोई दोस्त होगा और ना कोई मददगार।"*

अब वह तीन आयात आ रही हैं जिनका हवाला मेरी तक़ारीर में अक्सर आता रहता है। इनमें मदीने के मुनाफ़िक़ीन की एक ख़ास क़िस्म का तज़किरा है, मगर मुसलमाने पाकिस्तान के लिये इन आयात का मुताअला बतौरे ख़ास मक़ामे इबरत भी है और लम्हा-ए-फिक्रिया भी।

## आयत 75

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝75

*"और इनमें वह लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया था कि अगर वह हमें अपने फ़ज़्ल से नवाज़ देगा तो हम ख़ूब सदक़ा व खैरात करेंगे और नेक बन जाएँगे।"*

## आयत 76

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝76

*"फ़िर जब अल्लाह ने इन्हें नवाज़ दिया अपने फ़ज़्ल से (गनी कर दिया) तो इन्होंने उस दौलत के साथ बुख्ल किया और पीठ मोड़ ली और ऐराज़ किया।"*

## आयत 77

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ

*“तो अल्लाह ने सज़ा के तौर पर डाल दिया इनके दिलों में निफ़ाक़”*

अल्लाह से वादा करके उससे फिर जाने की दुनिया में ये नक़द सज़ा है कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के दिलों में निफ़ाक़ पैदा फ़रमा देते हैं, और बदक़िस्मती से यही रोग आज मुसलमानाने पाकिस्तान के दिलों में पैदा हो चुका है। गोया पाकिस्तानी क़ौम बहैसियत मजमुई इस सज़ा की मुस्तहिक़ हो चुकी है। मुसलमानाने बर्रेसगीर ने तहरीके पाकिस्तान के दौरान अल्लाह से एक वादा किया था और यह वादा एक नारा बन कर बच्चे-बच्चे की ज़बान पर आ गया था: “पाकिस्तान का मतलब क्या? ला इलाहा इल्लल्लाह!” गोया दुनिया के नक़्शे पर यह नया मुल्क इस्लाम के नाम पर बना, इस्लाम के लिये बना। इस ज़िमन में हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने वोट देकर अपना फ़र्ज़े किफ़ाया अदा कर दिया कि तुम जाकर पाकिस्तान में इस्लाम का निज़ाम क़ायम करो, हम पर जो गुज़रेगी सो गुज़रेगी। मगर मुसलमानाने पाकिस्तान ने इस सिलसिले में अब तक क्या किया है? कहाँ है इस्लाम और कहाँ है ला इलाहा इल्लल्लाह? ये पाकिस्तानी क़ौम की अल्लाह के साथ इज्तमाई बेवफ़ाई और बदअहदी की मिसाल है। इस बदअहदी का नतीजा ये हुआ कि अल्लाह ने तीन क़िस्म के निफ़ाक़ इस क़ौम पर मुसल्लत कर दिये। एक बाहमी निफ़ाक़, जिसके बाइश ये क़ौम अब क़ौम नहीं रही फ़िरक़ों में बट चुकी है और इसमें मुख्तलिफ़ अस्बियतें पैदा हो चुकी हैं। सूबाइयत, मज़हबी फ़िरक़ा वारियत वगैरह ने बाहमी इत्तेहाद पारा-पारा कर

दिया है। दूसरे जब यह निफ़ाक़ हमारे दिलों का रोग बना तो इससे शख्सी किरदार और फ़िर क़ौमी किरदार का बेड़ा ग़र्क हो गया। इसके बारे में एक मुत्तफ़िक़ अलैह हदीस मुलाहिज़ा कीजिये। हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ [وَفِيْ رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ : وَإِنْ صَامَ وَصَلّٰى وَزَعَمَ أَنَّهُ مُسْلِمٌ] إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ

“मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं [और मुस्लिम की एक रिवायत में ये अल्फ़ाज़ भी हैं: “अगरचे रोज़ा रखता हो, नमाज़ पढ़ता हो और अपने आप को मुसलमान समझता हो।”] (1) जब बोले झूठ बोले (2) जब वादा करे तो ख़िलाफ़ वरज़ी करे (3) जब अमीन बनाया जाए तो ख्यानत करे।”

इस हदीस को कसौटी समझ कर अपनी क़ौम के किरदार को परख लीजिये। जो जितना बड़ा है उतना ही बड़ा झूठा हैं, उतना ही बड़ा वादा ख़िलाफ़ है और उतना ही बड़ा खाइन है (इल्ला माशाअल्लाह!)

तीसरा निफ़ाक़ जो इस क़ौम के हिस्से में आया वह बहुत ही बड़ा है और वह है आइन का निफ़ाक़। आप जानते हैं कि किसी मुल्क की अहम तरीन दस्तावेज़ उसका दस्तूर होता है, जबकि इस मुल्क के आइन को भी मुनाफ़िक़त का पुलिन्दा बना कर रख दिया गया है। हमारे आइन में एक हाथ से इस्लाम दाख़िल किया जाता है और दूसरे हाथ से निकाल लिया जाता है। अल्फ़ाज़ देखो तो इस्लाम ही इस्लाम है, तामील देखो तो इस्लाम कहीं नज़र नहीं आता। ज़रा इन अल्फ़ाज़ को देखें, आइन में कितनी बड़ी बात लिख दी गई है: No ligislation will be done repugnant to the

Quran and the Sunnah. यानि क़ुरान व सुन्नत के ख़िलाफ़ कोई क़ानून साज़ी नहीं हो सकती। इन अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करें तो मालूम होता है कि सूरतुल हुजरात की पहली आयत का तरजुमा करके दस्तूर में लिख दिया गया है, लेकिन मुल्क और मआशरे के अन्दर इसके अमली पहलु पर नज़र डालें तो क़ुरान व सुन्नत के अहकाम पर अमल होता कहीं भी नज़र नहीं आता। गोया यह अल्फ़ाज़ सिर्फ़ आईनी और क़ानूनी तकाज़ा पूरा करने के लिये लिख दिये गए हैं, इन पर अमल करने का कोई इरादा नहीं है। बस एक इस्लामी नज़रियाती कौन्सिल बना दी गई है जो अपनी सिफारिशात पेश करती रहती है। ये सिफारिशात सालाना रिपोर्टस के तौर पर बाक़ायदगी से पेश होती रहती हैं, मगर इनकी कोई तामील नहीं होती। इस तरह फ़ेडरल शरीअत कोर्ट भी दिखावे का एक इदारा है। बड़े-बड़े उलमा इसके तहत बड़ी-बड़ी तनख्वाहें और मराआत ले रहे हैं, मगर अमली पहलु देखो तो दस्तूरे पाकिस्तान उनके दायरा-ए-अमल से ही खारिज़ है। इसी तरह अदालती क़वानीन, आईली क़वानीन, माली क़वानीन वगैरह सब फ़ेडरल शरीअत कोर्ट के दायरा-ए-इख्तियार से बाहर हैं। गर्ज़ दस्तूर की सतह पर इतनी बड़ी मुनाफ़िक़त शायद पूरी दुनिया में कहीं ना हो। बहरहाल ये है एक हल्की सी झलक पाकिस्तानी क़ौम की उस सज़ा की जो इन्हें वादा खिलाफ़ी के जुर्म के नतीजे में दी गई है।

اِلٰى يَوۡمِ يَلۡقَوۡنَهٗ

*"(और यह निफ़ाक़ अब रहेगा) उस दिन तक जिस दिन ये लोग मुलाक़ात करेंगे उससे"*

इस निफ़ाक़ से अब उनकी जान रोज़े क़यामत तक नहीं छुटेगी। ये काँटा उनके दिलों से निकलेगा नहीं।

بِمَآ اَخۡلَفُوا اللّٰہَ مَا وَعَدُوۡہُ وَ بِمَا کَانُوۡا یَکۡذِبُوۡنَ ﴿۷۷﴾

*"बसबब उस वादा खिलाफ़ी के जो इन्होंने अल्लाह से की और बसबब उस झूठ के जो वह बोलते रहे।"*

## आयत 78

اَلَمۡ یَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰہَ یَعۡلَمُ سِرَّہُمۡ وَ نَجۡوٰىہُمۡ وَ اَنَّ اللّٰہَ عَلَّامُ الۡغُیُوۡبِ ﴿ۚ۷۸﴾

*"क्या इन्हें मालूम नहीं है कि अल्लाह जानता है इनके भेदों को और इनकी सरगोशियों को, और यह कि अल्लाह तमाम गैब का जानने वाला है।"*

## आयत 79

اَلَّذِیۡنَ یَلۡمِزُوۡنَ الۡمُطَّوِّعِیۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ فِی الصَّدَقٰتِ

*"जो ताअन करते हैं दिल की खुशी से नेकी करने वाले अहले ईमान पर (उनके) सदक़ात के बारे में"*

जब रसूल अल्लाह ﷺ ने तबूक की मुहिम के लिये इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह की तरगीब दी तो मुसलमानों की तरफ़ से ईसार और इख्लास के अजीब व ग़रीब मज़ाहिर देखने में आये। अबु अक़ील रज़ि. एक अंसारी सहाबी थे, उनके पास देने को कुछ नहीं था। उन्होंने रात भर एक यहूदी के यहाँ मज़दूरी की और सारी रात कुंवे से पानी निकाल-निकाल कर उसके बाग़ को सैराब करते रहे। सुबह उन्हें मज़दूरी के तौर पर कुछ खजूरें मिलीं। उन्होंने उनमें से आधी खजूरें तो घर में बच्चों के लिये छोड़ दीं और बाक़ी आधी हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में लाकर पेश कर दीं। आप ﷺ उस सहाबी के ख़ुलूस व इख्लास और हुस्ने अमल से बहुत खुश हुए और फ़रमाया कि ये खजूरें सब माल व असबाब पर भारी हैं। लिहाज़ा आप ﷺ की हिदायत के मुताबिक़ उन्हें सामान के पूरे ढेर के ऊपर फ़ैला दिया गया। लेकिन वहाँ जो मुनाफ़िक़ीन थे उन्होंने हज़रत अबु अक़ील रज़ि. का मज़ाक उड़ाया और फ़िक़रे कसे कि जी हाँ, क्या कहने! बहुत बड़ी क़ुरबानी दी है! इन खजूरों के बगैर तो ये मुहिम कामयाब हो ही नहीं सकती थी, वगैरह-वगैरह।

وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝79

*"और जिनके पास अपनी मेहनत व मशक्क़त के सिवा कुछ है ही नहीं (और वह उसमें से भी ख़र्च करते हैं) तो वह (मुनाफ़िक़ीन) उनका मज़ाक उड़ाते हैं। अल्लाह उनका मज़ाक उड़ाता है, और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।"*

## आयत 80

اِسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ اَوۡ لَا تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ ؕ اِنۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ سَبۡعِيۡنَ مَرَّةً فَلَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَهُمۡ ؕ

*"(ऐ नबी ﷺ!) आप इनके लिये अस्तगफ़ार करें या इनके लिये अस्तगफ़ार ना करें। अगर आप सत्तर मरतबा भी इनके लिये अस्तगफ़ार करेंगे तब भी अल्लाह इन्हें हरगिज़ माफ़ नहीं फ़रमाएगा।"*

यह आयत सूरतुन्निसा की आयत 145 { اِنَّ الۡمُنٰفِقِيۡنَ فِى الدَّرۡكِ الۡاَسۡفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ } के बाद मुनाफ़िक़ीन के हक़ में सख्त तरीन आयत है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَفَرُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِيۡنَ ۝۸۰

*"ये इसलिये कि ये लोग अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र कर चुके हैं, और अल्लाह ऐसे फ़ासिक़ों को हिदायत नहीं देता।"*

# आयात 81 से 89 तक

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ
وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ
اَشَدُّ حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾ فَلْيَضْحَكُوْا
قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ
فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا
وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ
اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓي
اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰي قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ
كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾
وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ
كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ
مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا

بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۷﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ
الْخَيْرٰتُ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۸۸﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ
لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۸۹﴾

## आयत 81

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

*"बहुत खुश हो गए पीछे रह जाने वाले अपने बैठे रहने पर अल्लाह के रसूल के (जाने के) बाद, और उन्होंने नापसंद किया कि वह जिहाद करते अपनी जानों और मालों के साथ अल्लाह की राह में"*

وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ

*"और (दूसरों से भी) कहने लगे कि इस गरमी में मत निकलो।"*

ये लोग ख़ुद भी अल्लाह के रस्ते में ना निकले और दूसरों को भी रोकने की कोशिश में रहे कि हम तो रुख्सत ले आए हैं, तुम भी होश के नाख़ून लो, इस क़दर शदीद गरमी में सफ़र के लिये मत निकलो।

قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝٨١

*"(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कह दीजिये जहन्नम की आग इससे कहीं ज़्यादा गरम है, काश इन लोगों को फ़हम हासिल होता।"*

**आयत 82**

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨٢

*"तो इन्हें चाहिये कि हँसे कम और रोएँ ज़्यादा, बदला उसका जो कमाई इन्होंने की है।"*

**आयत 83**

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ

*"पस (ऐ नबी ﷺ) अगर अल्लाह आपको लौटा कर ले जाए इनके किसी गिरोह के पास"*

मज़मून से ज़ाहिर हो रहा है कि ये आयत मक़ामे तबूक पर नाज़िल हुई है। सूरत के इस दूसरे हिस्से के पहले चार रुकुओं (छठे रुकूअ से लेकर नौवें रुकूअ तक) के बारे में तो यक़ीन से

कहा जा सकता है कि वह गज़वा-ए-तबूक पर रवानगी से क़ब्ल नाज़िल हुए थे। इनके बाद की आयात मुख्तलिफ़ मौक़ों पर नाज़िल हुईं, कुछ जाते हुए रास्ते में, कुछ तबूक में क़याम के दौरान और कुछ वापस आते हुए रास्ते में।

فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ

*"फ़िर वह आपसे इजाज़त माँगे (आपके साथ) निकलने के लिये"*

यानि किसी मुहिम पर, किसी और दुश्मन के ख़िलाफ़ आप ﷺ के साथ जिहाद में शरीक होना चाहें:

فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا

*"तो कह दीजियेगा कि अब तुम मेरे साथ कभी नही निकलोगे"*

गज़वा-ए-तबूक की मुहिम में तुम्हारा आख़री इम्तिहान हो चुका है और उसमें तुम लोग नाकाम हो चुके हो।

وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ

*"और अब मेरे साथ होकर तुम किसी दुश्मन के साथ जंग नहीं करोगे। तुम पहली मरतबा राज़ी हो गए थे बैठे रहने पर"*

जब जिहाद के लिये नफ़ीर आम हुई और सब पर निकलना फ़र्ज़ क़रार पाया तो तुम अपने घरों में बैठे रहने पर राज़ी हो गए।

فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ۝۸۳

*"तो (अब हमेशा के लिये) बैठे रहो पीछे रहने वालों के साथ।"*

## आयत 84

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤی اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰی قَبْرِهٖ ؕ

*"और (ऐ नबी ﷺ) इनमें से कोई मर जाए तो उसकी नमाज़े जनाज़ा कभी भी अदा ना करें और उसकी क़ब्र पर भी खड़े ना हों।"*

यह गोया अब उनकी रुसवाई का सामान हो रहा है। अब तक तो मुनाफ़िक़त पर परदे पड़े हुए थे मगर इस आयत के नुज़ूल के बाद रसूल अल्लाह ﷺ जब किसी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से इन्कार फ़रमाते थे तो सबको मालूम हो जाता था कि वह मुनाफ़िक़ मरा है।

اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾

*"यक़ीनन उन्होंने कुफ़्र किया है अल्लाह और उसके रसूल के साथ और वह मरे हैं इसी हाल में कि वह नाफ़रमान थे।"*

## आयत 85

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ

*"और आपको पसन्द ना आये उनके अमवाल और उनकी औलाद।"*

यानि आप इनके माल और औलाद को वक़अत मत दीजिये (माल और औलाद से उम्मीद मत रखिये)। ये आयत इसी

सूरत में 55 नंबर पर मामूली फ़र्क़ के साथ पहले भी आ चुकी है।

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

*"अल्लाह तो यही चाहता है कि इन्हें अज़ाब दे इन्हीं चीज़ों के ज़रिये से दुनिया में और इनकी जानें निकलें इसी हालत-ए-कुफ़्र में।"*

## आयत 86

وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ

*"और जब कोई सूरत नाज़िल होती है कि ईमान लाओ अल्लाह पर और जिहाद करो उसके रसूल के साथ मिलकर तो रुख्सत माँगते हैं आपसे म-क़ुदरत वाले भी"*

وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٨٦﴾

*"और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिये कि हम बैठे रहने वालों में शामिल हो जाएँ।"*

## आयत 87

رَضُوۡا بِاَنۡ یَّکُوۡنُوۡا مَعَ الۡخَوَالِفِ

*“वह इस पर राज़ी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों में शामिल हो जाएँ”*

इस अंदाज़े बयान में उन पर गहरा तंज़ है। यानि जंग करना मर्दों का काम है जबकि ख्वातीन और बच्चे ऐसे मौक़े पर पीछे घरों में रह जाते हैं। चुनाँचे अब जब तमाम मर्दों पर लाज़िम है कि वह गज़वा-ए-तबूक के लिये निकलें, तो ये मुनाफ़िक़ीन तरह-तरह के बहानो से रुख्सत चाहते हैं। गोया इन्होंने पीछे घरों में रह जाने वाली औरतों का किरदार अपने लिये पसंद कर लिया है।

وَطُبِعَ عَلٰی قُلُوۡبِہِمۡ فَہُمۡ لَا یَفۡقَہُوۡنَ ﴿۸۷﴾

*“और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई है, पस अब वह समझ नहीं सकते।”*

## आयत 88

لٰکِنِ الرَّسُوۡلُ وَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَہٗ جٰہَدُوۡا بِاَمۡوَالِہِمۡ وَاَنۡفُسِہِمۡ ؕ

*“लेकिन (इसके बरअक्स) रसूल और वह लोग जो आपके साथ ईमान लाए, उन्होंने जिहाद किया अल्लाह की राह में अपने अमवाल से भी और अपनी जानों से भी।”*

وَاُولٰٓىِٕكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۡ وَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾

*“और यही वह लोग हैं जिनके लिये भलाईयाँ हैं, और यही लोग हैं फ़लाह पाने वाले।”*

फ़लाह महज़ एक लफ्ज़ ही नहीं बल्कि कुरान की एक जामेअ इस्तलाह (term) है। इस इस्तलाह पर तफ़सीली गुफ़तगू इंशाअल्लाह सूरतुल मोमिनून के आग़ाज़ में होगी।

**आयत 89**

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾

*“अल्लाह ने इनके लिये बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिनके दामन में (या जिनके नीचे) नदियाँ बहती होंगी, जिनमें वह हमेशा-हमेश रहेंगे। यही है बहुत बड़ी कामयाबी।”*

## आयात 90 से 99 तक

وَجَاۗءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ

الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ

كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى

الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا
يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ ۭ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ۭ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ (٩١) وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ
لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۠ تَوَلَّوْا
وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا
يُنْفِقُوْنَ ۭ (٩٢) اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ
يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَاۗءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ
الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ (٩٣) يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ۭ
قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ
اَخْبَارِكُمْ ۭ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ
اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ (٩٤) سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ
اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ اِنَّهُمْ
رِجْسٌ ۡ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا

يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾ يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ
تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾ اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا
وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ
يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَاۗىِٕرَ ۭ
عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ
الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ
مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ۭ اَلَآ
اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۭ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

## आयत 90

وَجَاۗءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ

*"और आए आपके पास बहाने बनाने वाले बद्दू भी कि उनको रुख्सत दे दी जाए"*

'आराब' जमा है 'अराबी' की यानि बद्दू, देहाती, बादया नशीन लोग। जिहाद के लिये इस नफ़ीरे आम का इतलाक़

मदीने के ऐतराफ़ व जवानिब की आबादियों में बसने वाले मुसलमानों पर भी होता था। अब उनका ज़िक्र हो रहा है कि उनमें से भी लोग आ-आ कर बहाने बनाने लगे कि उन्हें इस मुहिम पर जाने से माफ़ रखा जाए।

وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

*"और बैठे रहे वो लोग जिन्होंने झूठ कहा था अल्लाह से और उसके रसूल से।"*

उन्होंने जो वादे किये थे वह झूठे निकले या जो उज्ऱ (बहाने) वह लोग रुख्सत के लिये पेश कर रहे थे वह सब बे-बुनियाद थे।

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾

*"अनक़रीब दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा उन लोगों को जो इनमें से कुफ़्र पर अड़े रहेंगे।"*

## आयत 91

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ

*"कुछ गुनाह (और इल्ज़ाम) नहीं ज़ईफों पर, ना बीमारों पर, और ना ही उन लोगों पर जिनके पास खर्च करने के लिये कुछ नहीं"*

आख़िर इतना तवील सफ़र करने के लिये ज़रूरी था कि आदमी तंदरुस्त व तवाना हो, उसके पास सवारी का

इंतेज़ाम हो, रास्ते में खाने-पीने और दूसरी ज़रूरियात के लिये सामान मुहैय्या हो, लेकिन अगर कोई शख्स ज़ईफ़ है, बीमार है, या इस क़दर नादार है कि सफ़र के अखराजात के लिये उसके पास कुछ भी नहीं तो अल्लाह की नज़र में वह वाक़िअतन मजबूर व माज़ूर है। लिहाज़ा ऐसे लोगों से कोई मुआखज़ा नहीं। उनको इस बात का कोई इल्ज़ाम नहीं दिया जा सकता।

إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ

*"जबकि वह अल्लाह और उसके रसूल के साथ मुख़लिस हों।"*

مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩١﴾

*"ऐसे मोहसिनीन पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह ग़फ़ूर और रहीम है।""*

यानि मंदरजा बाला (ऊपर लिखी हुई) वजूहात में से किसी वजह से कोई शख्स वाक़ई माज़ूर है मगर सच्चा और पक्का मोमिन है, खुलूसे दिल से अल्लाह और उसके रसूल का वफ़ादार है, उसका दीन दरजा-ए-अहसान तक पहुँचा हुआ है, तो ऐसे साहिबे ईमान और मोहसिन लोगों पर कोई मलामत नहीं।

## आयत 92

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ

*"और ना ही उन पर (कोई इल्ज़ाम है) जो आए आपके पास कि आप उनके लिये सवारी का इंतेज़ाम कर दें तो आपने फ़रमाया मेरे पास भी कोई चीज़ नहीं जिस पर मैं तुम लोगों को सवार कर सकूँ"*

تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

*"(तो मजबूरन) वह लौट गए और उनकी आँखों से आँसू जारी थे, इस रंज से कि उनके पास कुछ नहीं जिसे वह ख़र्च कर सकें।"*

यानि वह लोग जो दिलो-जान से चाहते थे कि इस मुहिम में शरीक हों, मगर वसाइल की कमी की वजह से शिरकत नहीं कर पा रहे थे, अपनी इस महरूमी पर वह वाक़िअतन सदमे और रंजो-गम से हलकान हो रहे थे। एक तरफ़ ऐसे मोमिनीन सादिक़ीन थे और दूसरी तरफ़ वह साहिबे हैसियत (اُولُوا الطَّوْلِ) लोग जिनके पास सब कुछ मौजूद था, वसाइल व ज़राए की कमी नहीं थी, तंदरुस्त व तवाना थे, लेकिन इस सब कुछ के बावजूद वह अल्लाह की राह में निकलने को तैयार नहीं थे।

**आयत 93**

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ

*"इल्ज़ाम तो उन लोगों पर है जो आपसे रुख्सत माँगते हैं जबकि वह गनी (मालदार) हैं।"*

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ

*"वह राज़ी हो गए इस पर कि हो जाएँ पीछे रहने वाली औरतों के साथ"*

وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

*"और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर कर दी है, पस वह सही इल्म से बे-बहरा (unbelievable) हो चुके हैं।"*

## आयत 94

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ

*"बहाने बनाएँगे वह तुम्हारे पास आकर जब तुम लोग उनके पास लौट कर जाओगे।"*

يَعْتَذِرُونَ चूँकि फ़अल मुज़ारअ है इसलिये इसका तरजुमा हाल (present) में भी हो सकता है और मुस्तक़बिल (future) में भी। अगर तो ये आयात तबूक से वापसी के सफ़र के दौरान नाज़िल हुई हैं तो तरजुमा वह होगा जो ऊपर किया गया है, लेकिन अगर इनका नुज़ूल रसूल अल्लाह ﷺ के मदीने तशरीफ़ लाने के बाद हुआ है तो

तरजुमा यूँ होगा: "बहाने बना रहे हैं वह तुम्हारे पास आकर जब तुम लोग उनके पास लौट कर आ गए हो।"

قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ط

*"आप कह दीजिये (या कह दीजियेगा) कि बहाने मत बनाओ, हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, अल्लाह ने हमें पूरी तरह मुत्तलाअ कर दिया है तुम्हारी खबरों से।"*

मुहिम पर जाने से क़ब्ल तो हुज़ूर ﷺ अपनी तबई शराफ़त और मुरव्वत के बाइस मुनाफ़िक़ीन के झूठे बहानों पर भी सकूत फ़रमाते रहे थे, लेकिन अब चूँकि ब-ज़रिया-ए-वही उनके झूठ के सारे परदे चाक कर दिए गए थे इसलिये फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ! अब आप डंके की चोट उनसे कह दीजिये कि अब हम तुम्हारी किसी बात पर यक़ीन नहीं करेंगे, क्योंकि अब अल्लाह तआला ने तुम्हारी बातिनी कैफ़ियात से हमें मुत्तलाअ कर दिया है।

وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ

*"अब अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे"*

यानि आईन्दा तुम्हारे तर्ज़े अमल और रवैय्ये (attitude) का जायज़ा लिया जाएगा।

ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

*"फ़िर तुम्हें लौटा दिया जाएगा उस (अल्लाह) की तरफ़ जो गायब और हाज़िर का जानने वाला है, फ़िर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे थे।"*

فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

## आयत 95

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ
إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ
لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ

*"अभी ये तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खायेंगे (या खा रहे हैं) जबकि तुम लोग उनकी तरफ़ लौट कर जाओगे (या आ गए हो) ताकि आप उनसे चश्म पोशी बरतें।"*

فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ
رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ
جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

*"तो (ठीक है) आप उनसे ऐराज़ बरतें। ये नापाक लोग हैं और इनका ठिकाना आग़ है, बदला उसका जो कमाई ये करते रहे हैं।"*

## आयत 96

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا
عَنْهُمْ ۖ

*"ये क़समें खायेंगे (या खा रहे हैं, ऐ मुसलमानों!) तुम्हारे सामने ताकि तुम इनसे राज़ी हो जाओ।"*

अब ये उन मुनाफ़िक़ीन की दुनियादारी के लिहाज़ से मजबूरी थी। एक मआशरे के अन्दर सबका इकठ्ठे रहना-सहना था। औस और ख़ज़रज के अन्दर उनकी रिश्तेदारियाँ थीं। ऐसे माहौल में वह समझते थे कि अगर मुसलमानों के दिल उनकी तरफ़ से साफ़ ना हुए तो वह उस मआशरे के अन्दर एक तरह से अछूत बन कर रह जायेंगे। इसलिये वह मुसलमानों के अन्दर अपना ऐतमाद फिर से बहाल करने के लिये हर तरह से दौड़-धूप कर रहे थे, मुसलमानों से मुलाक़ातें करते थे, उनको अपनी मजबूरियाँ बताते थे और उनके सामने क़समें खा-खा कर अपने इख्लास का यक़ीन दिलाने की कोशिश करते थे।

فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

*"तो अगर तुम इनसे राज़ी हो भी गए तो अल्लाह इन नाफ़रमानों से राज़ी होने वाला नहीं है।"*

## आयत 97

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

*"ये बद्दू लोग कुफ़्र व निफ़ाक़ में ज़्यादा सख्त हैं और ज़्यादा इस लायक़ हैं कि नावाक़िफ़ हों उस चीज़ की हद्दूद से जो अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाई है। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, कमाल हिकमत वाला है।"*

यानि अहले मदीना तो मुसलसल रसूल अल्लाह ﷺ की सोहबत से फ़ैज़याब हो रहे थे, आप ﷺ से जुमा के खुतबात सुनते थे और आप ﷺ की नसीहत का एक सिलसिला शबो-रोज़ उनके दरमियान चलता रहता था। मगर इन बादियानशीन लोगों को तालीम व तअल्लम के ऐसे मौक़े मयस्सर नहीं थे। लिहाज़ फ़ितरी और मन्तक़ी तौर पर कुफ़्र व शिर्क और निफ़ाक़ की शिद्दत इन लोगों में निसबतन ज़्यादा थी।

## आयत 98

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا

*"और इन बद्दुओं में ऐसे लोग भी हैं कि जो कुछ उन्हें ख़र्च करना पड़ता है उसे वह तावान समझते हैं"*

यानि ज़कात, उश्र वगैरह की अदायगी जो इस्लामी निज़ामे हुकूमत के तहत उन पर आयद हुई है ये लोग उसको तावान समझते हुए बड़ी नागवारी से अदा करते हैं, इसलिये कि इससे पहले उस इलाक़े में ना तो कोई ऐसा निज़ाम था और ना ही ये लोग महसुलात वगैरह अदा करने के आदी थे।

وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ

*"और वह मुन्तज़िर हैं तुम लोगों पर किसी गर्दिशे ज़माने के।"*

ये लोग बड़ी बेसब्री से इंतेज़ार कर रहे हैं कि गर्दिशे ज़माने के बाइस मुसलमानों के ख़िलाफ़ कुछ ऐसे हालात पैदा हो जाएँ जिनसे मदीने की यह इस्लामी हुकूमत ख़त्म हो जाए और वह इन पाबंदियों से आज़ाद हो जाएँ।

عَلَيۡهِمۡ دَآئِرَةُ السَّوۡءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۹۸﴾

*"(असल में) बुरी गर्दिश खुद इनके ऊपर मुसल्लत है। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।"*

इनकी मुनाफ़िक़त जो इनके दिलों का रोग बन चुकी है, वही असल में बुराई है जो इन पर मुसल्लत है।

## आयत 99

وَمِنَ الۡاَعۡرَابِ مَنۡ يُّؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنۡفِقُ قُرُبٰتٍ عِنۡدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوۡلِ ؕ

*"और इन बद्दुओं में वह लोग भी हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, और जो वह ख़र्च करते हैं (अल्लाह की राह में) उसको समझते हैं अल्लाह के क़ुर्ब और रसूल की दुआओं का ज़रिया।"*

यानि ये बादियानशीन लोग सबके सब ही कुफ़्र और निफ़ाक़ पर कारबंद और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह को तावान समझने वाले नहीं हैं, बल्कि इनमें सच्चे मोमिन भी हैं, जो ना सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते में शौक़ से खर्च करते हैं बल्कि इस इन्फ़ाक़ को तक़र्रुब इललल्लाह का ज़रिया समझते हैं। इन्हें यक़ीन है कि दीन के लिये माल ख़र्च करने से अल्लाह के रसूल की दुआएँ भी उनके शामिल हाल हो जाएँगी।

اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۭ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ۧ

*"आगाह हो जाओ, यह (उनका इन्फ़ाक़) वाक़िअतन उनके लिये बाइसे तक़र्रुब है, अनक़रीब अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यक़ीनन अल्लाह माफ़ फरमाने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।"*

# आयात 100 से 110 तक

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ
وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْھُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْھُمْ
وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَھُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٠٠ وَمِمَّنْ
حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ڕ وَمِنْ اَهْلِ
الْمَدِيْنَةِ ڀ مَرَدُوْا عَلَي النِّفَاقِ ۣ لَا تَعْلَمُھُمْ ۭ نَحْنُ
نَعْلَمُھُمْ ۭ سَنُعَذِّبُھُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ
عَظِيْمٍ ۝١٠١ۚ وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا
عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّـــًٔا ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ
عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠٢ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ

صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ
صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ
يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ
الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ
اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ
وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ۚ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ
اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا
وَّتَفْرِيْقًۢا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا
الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ
فِيْهِ اَبَدًا ۭ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَي التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ
يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ۭ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ
يَّتَطَهَّرُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ اَفَمَنْ اَسَّسَ
بُنْيَانَهٗ عَلٰي تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ

اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ
جَهَنَّمَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ١٠٩ لَا يَزَالُ
بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ
قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ١١٠

अब अहले ईमान के माबैन हिफज़े मरातब का मज़मून आ रहा है, क्योंकि किसी भी मआशरे में तमाम इंसान बराबर नहीं होते:

*ख़ुदा पंज अन्गशत यकसाँ ना कर्द*
*ना हर ज़न-ज़न अस्त व ना हर मर्द-मर्द!*

मदीने के उस मआशरे में भी सब लोग नज़रियाती तौर पर बराबर नहीं थे, हत्ता कि जो मुनाफ़िक़ीन थे वह भी सब एक जैसे मुनाफ़िक नहीं थे। चूँकि इंसानी फ़ितरत तो तबदील नहीं होती इसलिये आइन्दा भी जब कभी किसी मुसलमान मआशरे में कोई दीनी तहरीक उठेगी तो उसी तरह सूरते हाल पेश आयेगी। तहरीक के अरकान के दरमियान दर्जाबंदी का एक वाज़ेह और ग़ैर मुबह्हम अदराक नागुज़ीर होगा। लिहाज़ा ये दर्जाबंदी हिकमते क़ुरानी का एक बहुत अहम मौज़ू है और इस ऐतबार से ये आयात बहुत अहम हैं।

## आयत 100

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ
مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ

*"और पहले पहल सबक़त करने वाले मुहाजरीन और अंसार में से, और वह जिन्होंने उनकी पैरवी की नेकोकारी के साथ"*

وَالۡاَنۡصَارِ وَالَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡهُمۡ بِاِحۡسَانٍ ۙ

رَّضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡهُ وَاَعَدَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ تَحۡتَهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ

*"अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वह अल्लाह से राज़ी हो गए, और उसने उनके लिये वह बाग़ात तैयार किये हैं जिनके नीचे नदियाँ बहती होंगी, उनमें वह हमेशा-हमेश रहेंगे।"*

ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ۝۱۰۰

*"यही है बहुत बड़ी कामयाबी।"*

इस दरजा बंदी के मुताबिक़ अहले ईमान के ये दो मरातब बुलंदतरीन हैं। यानि सबसे ऊपर السّٰبِقُوۡنَ الۡاَوَّلُوۡنَ और इसके बाद इनके पैरोकार। (इससे पहले एक दरजा बंदी हम सूरतुन्निसा की आयत 69 में अम्बिया, सिद्दिक़ीन, शुहदाअ और सालेहीन के मरातिब में भी देख चुके हैं। मगर वह दरजा बंदी किसी और ऐतबार से है जिसकी तफ़सील का यह मौक़ा नहीं)। बुनियादी तौर पर इन दोनों गिरोहों के लोग नेक सीरत हैं जो फ़ितरते सलीमा और अक़्ले सलीम से नवाज़े गए हैं। अलबत्ता इनकी आपस की दरजा बंदी में जो फ़र्क़ है वह इनकी तबियत और हिम्मत के फ़र्क़ के बाइस है। इनमें से दरजा अव्वल (السّٰبِقُوۡنَ الۡاَوَّلُوۡنَ) पर फ़ाएज़ दरअसल

वह लोग हैं जो हक़ को सामने आते ही फ़ौरन क़ुबूल कर लेते हैं। हक़ इनके लिये इस क़दर कीमती मताअ है कि उसकी क़ुबूलियत में ज़रा सी ताखीर भी इन्हें गवारा नहीं होती। वह इतने बाहिम्मत लोग होते हैं कि क़ुबूले हक़ का फ़ैसला करते हुए वह उसके नतीजे व अवाक़ब (अंजाम) के बारे में सोच-विचार में नहीं पड़ते। वह इस ख्याल को ख़ातिर में नहीं लाते कि इसके बाद इन्हें क्या कुछ छोड़ना होगा और क्या कुछ भुगतना पड़ेगा। ना वह लोग यह देखते हैं कि उनके आगे इस रास्ते पर पहले से कोई चल भी रहा है या नहीं, और अगर नहीं चल रहा तो किसी और के आने का इंतेज़ार कर लें, सबसे पहले, अकेले वह क्यूँकर इस पुरख़तर वादी में कूद पड़ें! वह इन सब पहलुओं पर सोचने में वक़्त ज़ाया नहीं करते, हक़ को क़ुबूल करने में कोई समझौता नहीं करते, किसी मसलिहत को ख़ातिर में नहीं लाते, अक़्ल के दलाएल की मन्तिक़ में नहीं पड़ते और "हरचे बादाबाद, मा कशी दर आब अन्दा खतीम" के मिस्दाक़ आतिश-ए-इबतला में कूद जाते हैं। बक़ौले इक़बाल:

*बे ख़तर कूद पड़ा आतिश-ए-नमरूद में इश्क*
*अक़्ल है कि महवे तमाशाए लबे बाम अभी!*

दूसरे दरजे में वह लोग हैं जो इन اَلسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ के इत्तबाअ में दाई-ए-हक़ की पुकार पर लब्बैक कहते हैं। ये भी सलीमुल फ़ितरत लोग होते हैं, हक़ को पहली नज़र में पहचानने की सलाहियत रखते हैं और इसकी क़ुबूलियत के लिये आमादा भी होते हैं, मगर इनमे हिम्मत क़दरे कम होती है। ये "हरचे बादाबाद" वाला नारा बुलंद नहीं कर सकते और चाहते हैं कि यह नई पगडंडी ज़रा रास्ते की शक्ल इख्तियार कर ले, हमारे आगे कोई दो-चार लोग चलते हुए

नज़र आएँ, तो हम भी उनके पीछे चल पड़ेंगे। यानि इसमें मामला नीयत के किसी ख़लल का नहीं, सिर्फ़ हिम्मत की कमी का है। और वह भी इसलिये कि इनकी तबाअ ही इस नहज पर बनाई गई हैं, जैसे हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ((اَلنَّاسُ مَعَادِنُ كَمَعَادِنِ الْفِضَّةِ وَالذَّهَبِ))(28) "इंसान (मअदनियात की) कानों की तरह है, जैसे चांदी और सोने की कानें होती हैं।" यानि जिस तरह मअदनियात की क़िस्में होती हैं उसी तरह इंसानों की भी मुख्तलिफ़ अक़साम हैं। ज़ाहिर है आप सोने की कच धात (ore) को साफ़ करेंगे तो ख़ालिस सोना हासिल होगा। चांदी की ore को ख्वाह कितना ही साफ़ करलें वह सोना नहीं बन सकती। इसी तरह इंसानों के तबाअ में जो बुनियादी फ़र्क़ होता है उसके सबब सब इंसान बराबर नहीं हो सकते।

बहरहाल यहाँ पर अल्लाह तआला ने "السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ" और उनके इत्तबाअ में हक़ को क़ुबूल करने वालों का ज़िक्र एक साथ किया है, क्योंकि इन मुत्तबिईन (इत्तबाअ करने वालों) ने भी हक़ को हक़ समझ कर क़ुबूल किया है, पूरी नेक नियती से क़ुबूल किया है और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये क़ुबूल किया है। इस सिलसिले में कोई और गर्ज़, कोई और आमिल, कोई और मफ़ाद इनके पेशे नज़र नहीं था। बस थोड़ी सी हिम्मत की कमी थी जिसकी वजह से वह सबक़त ना ले सके, मगर दूसरे दरजे पर फ़ाएज़ हो गए।

अब यहाँ एक अहम बात यह नोट करने की है कि "السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ" महाजरीन में से भी हैं और अन्सार में से भी, और फिर इनमें इनके अपने-अपने मुत्तबिईन हैं। अन्सार

चूँकि कहीं दस साल बाद ईमान लाये थे, इसलिये अगर ज़मानी ऐतबार से देखा जाए तो गिरोहे महाजरीन में से जो असहाबे मुत्तबिईन क़रार पाए हैं वह अन्सार के “السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ” से भी पहले ईमान लाये थे, मगर इस दरजा बंदी और मरातब में वह उनसे पीछे ही रहे। इसलिये कि यहाँ पहले या बाद में आने का ऐतबार ज़मानी लिहाज़ से नहीं, बल्कि यह मिज़ाज का मामला है और उस पहले रद्दे अमल का मामला है जो किसी के मिज़ाज से उस वक़्त ज़हूर पज़ीर हुआ जब उसने पहली दफ़ा हक़ को पहचाना। लिहाज़ा अगरचे अहले मदीना (जो बाद में अन्सार कहलाए) बहुत बाद में ईमान लाए थे मगर इनमें भी वह लोग “السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ” ही क़रार पाए थे जिन्होंने हक़ को पहचान कर फ़ौरन लब्बैक कहा, फ़िर ना नताएज की परवाह की और ना कोई मसलिहत उनके आड़े आई।

## आयत 101

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛ

*“और जो तुम्हारे आस-पास के बादिया नशीन हैं इनमें मुनाफ़िक़ भी हैं।”*

आला तरीन मरातब वाले असहाब के ज़िक्र के बाद अब बिल्कुल निचली सतह के लोगों का तज़किरा हो रहा है।

وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۣ

*"और अहले मदीना में भी, जो निफ़ाक़ पर अड़ चुके हैं"*

ये वह लोग हैं जिनके निफ़ाक़ का मर्ज़ अब आख़री मरहले में पहुँच कर ला ईलाज हो चुका है और अब इस मर्ज़ से इनके शिफ़ायाब होने का कोई इम्कान नहीं है। मुनाफ़िक़त के मर्ज़ की भी टी. बी. की तरह तीन stages होती हैं। झूठे बहाने बनाना इस मर्ज़ की इब्तदा हैं, जबकि बात-बात पर झूठी क़समें खाना दूसरी स्टेज की अलामत है, और जब यह मर्ज़ तीसरी और आख़री स्टेज पर पहुँचता है तो इसकी वाज़ेह अलामत मुनाफिक़ीन की अहले ईमान के साथ ज़िद और दुश्मनी की सूरत में ज़ाहिर होती है। इसलिये कि अहले ईमान तो दीन के तमाम मुतालबात ख़ुशी-ख़ुशी पूरे करते हैं, जिस मुहिम से बचने के लिये मुनाफिक़ीन बहाने तराशने में मसरूफ़ होते हैं अहले ईमान बिला हील व हुज्जत उसके लिये दिलो जान से हाज़िर होते हैं। मोमिनीन सादिक़ीन का यह रवैय्या मुनाफिक़ीन के लिये एक अज़ाब से कम नहीं होता, जिसके बाइस आए दिन उनकी सबकी होती है और आए दिन उनकी मुनाफ़िक़त की पोल खुलती रहती है। यही वजह है कि मुनाफिक़ीन को मुसलमानों से नफ़रत और अदावत हो जाती है और यही इस मर्ज़ की आख़री स्टेज है।

لَا تَعۡلَمُهُمۡ ؕ نَحۡنُ نَعۡلَمُهُمۡ ؕ سَنُعَذِّبُهُمۡ مَّرَّتَيۡنِ

*"आप इन्हें नहीं जानते, हम इन्हें जानते हैं। हम इन्हें दोहरा अज़ाब देंगे"*

मुनाफ़िक़ीने मदीना तो हर रोज़ नए अज़ाब से गुज़रते थे। हर रोज़ कहीं ना कहीं अल्लाह की राह में निकलने का मुतालबा होता था और हर रोज़ उन्हें झूठी क़समें खा-खा कर, बहाने बना-बना कर जान छुडानी पड़ती थी। इस लिहाज़ से उनकी ज़िंदगी मुसलसल अज़ाब में थी।

ثُمَّ يُرَدُّوۡنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيۡمٍ ۚ﴿۱۰۱﴾

*"फ़िर वह लौटा दिए जाएँगे एक बहुत बड़े अज़ाब की तरफ़।"*

दुनिया का अज़ाब कितना भी हो आख़िरत के अज़ाब के मुक़ाबले में तो कुछ भी नहीं। लिहाज़ा दुनिया के अज़ाब झेलते-झेलते एक दिन उन्हें बहुत बड़े अज़ाब का सामना करने के लिये पेश होना पड़ेगा।

اَلسّٰبِقُوۡنَ الۡاَوَّلُوۡنَ, इन के मुत्तबिईन और फिर मुनाफिक़ीन के ज़िक्र के बाद अब कुछ ऐसे लोगों का ज़िक्र होने जा रहा है जो इन दोनों इन्तहाओं के दरमियान हैं। इन लोगों का ज़िक्र भी दो अलग-अलग दरजों में हुआ है। इनमें पहले जिस गिरोह का ज़िक्र आ रहा है वह अगरचे मुख्लिस मुसलमान थे मगर इनमें हिम्मत की कमी थी। चलना भी चाहते थे मगर चल नहीं पाते थे। किसी क़दर चलते भी थे मगर कभी कोताही भी हो जाती थी। हिम्मत करके आगे

बढ़ते थे लेकिन कभी कसल मंदी और सुस्ती का ग़लबा भी हो जाता था।

## आयत 102

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ

*"और कुछ दूसरे लोग हैं जो अपने गुनाहों का ऐतराफ़ करते हैं"*

वह अपनी कोताहियों को छुपाने के लिये झूठ नहीं बोलते, झूठी क़समें नहीं खाते, झूठे बहाने नहीं बनाते, बल्कि खुले आम ऐतराफ़ कर लेते हैं कि हमसे गलती हो गई, मामलाते ज़िंदगी की मसरूफ़ियात और अहलो अयाल की मशगूलियात ने हमें इस क़दर उलझाया कि हम दीनी फ़राइज़ की अदायगी में कोताही का इरतकाब कर बैठे। जब गलती का ऐसा खुला ऐतराफ़ हो गया तो निफ़ाक़ का अहतमाल जाता रहा। लिहाज़ा उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ मिल गई।

خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ

*"इन्होंने अच्छे और बुरे आमाल को गड़मड़ कर दिया है।"*

नेक आमाल भी करते हैं मगर कभी कोई गलती भी कर बैठते हैं। ईसार व इन्फ़ाक़ भी करते हैं मगर दुनियादारी के झमेलों में उलझ कर कहीं कोई तक़सीर भी हो जाती है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

*"उम्मीद है कि अल्लाह इनकी तौबा को क़ुबूल फ़रमायेगा। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला हैं।"*

एक रिवायत के मुताबिक़ यह आयत हज़रत अबु लुबाबा रज़ि. और उनके चंद साथियों के बारे में नाज़िल हुई। उन लोगों से सुस्ती और दुनियादारी की मसरूफियात के बाइस यह कोताही हुई कि वह गज़वा-ए-तबूक पर ना जा सके, मगर जल्द ही उन्हें अहसास हो गया कि उनसे बहुत बड़ी गलती सरज़द हो गई है। चुनाँचे उन्होंने शदीद अहसासे नदामत के बाइस रसूल अल्लाह ﷺ के वापस मदीना तशरीफ़ लाने से पहले अपने आप को मस्जिदे नबवी के सतूनों से बाँध लिया कि अब या तो हुज़ूर ﷺ तशरीफ़ लाकर हमारी तौबा की क़ुबूलियत का ऐलान फ़रमाएंगे और हमें अपने दस्ते मुबारक से खोलेंगे या फिर हम यहीं बंधे-बंधे अपनी जानें दे देंगे। हुज़ूर ﷺ की वापसी पर ये आयात नाज़िल हुईं तो आप ﷺ ने तशरीफ़ ले जाकर उन्हें खोला और ख़ुशख़बरी सुनाई कि उनकी तौबा क़ुबूल हो गई है। तौबा करने और तौबा की क़ुबूलियत का यह वही असूल था जो हम सूरतुन्निसा में पढ़ आये हैं: {اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْۗءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰۗىِٕكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِـيْمًا} यानि कोई गलती या कोताही सरज़द होने के फ़ौरन बाद इंसान के अन्दर ईमानी जज़्बात लौट आएँ, उसे अहसासे नदामत हो, और वह तौबा कर ले तो अल्लाह तआला ने ऐसी तौबा को क़ुबूल करने का ज़िम्मा लिया है।

मगर इन असहाब रज़ि. को यह ऐज़ाज़ नसीब हुआ कि इनकी तौबा की क़ुबूलियत के बारे में ख़ुसूसी हुक्म नाज़िल हुआ।

## आयत 103

خُذۡ مِنۡ اَمۡوَالِهِمۡ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمۡ وَتُزَكِّيۡهِمۡ بِهَا

*“इनके अमवाल में से सदक़ात क़ुबूल फरमा लीजिये, इस (सदक़े) के ज़रिये से आप इन्हें पाक करेंगे और इनका तज़किया करेंगे”*

रिवायत में आता है कि यह असहाब रज़ि. अपने अमवाल के साथ ख़ुद हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे कि तौबा की क़ुबूलियत के शुकराने के तौर पर हम अल्लाह की राह में ये अमवाल पेश करते हैं। चूँकि ये लोग मुख्लिस मोमिन थे, सिर्फ़ सुस्ती और कमज़ोरी के बाइस कोताही हुई थी, इसलिये अल्लाह तआला ने कमाल मेहरबानी से आप ﷺ को ये सदक़ात क़ुबूल करने की इजाज़त फ़रमाई। जबकि मुनाफिक़ीन के सदक़ात क़ुबूल करने से आप ﷺ को मना फ़रमा दिया गया था।

وَصَلِّ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمۡ ؕ

*“और इनके लिये दुआ कीजिये, यक़ीनन आपकी दुआ इनके हक़ में सुकून बख्श है।”*

आप ﷺ की दुआ उनके लिये बाइसे इत्मिनान होगी और उन्हें तसल्ली हो जाएगी कि उनकी ख़ता माफ़ हो गई है और उनकी तौबा क़ुबूल की जा चुकी है।

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١٠٣

*"और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।"*

## आयत 104

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

*"क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और उनके सदक़ात को क़ुबूलियत अता फ़रमाता है"*

यानि अल्लाह के बन्दों को मालूम होना चाहिये कि वह अल तव्वाब भी है और अपने बन्दों के सदक़ात को शर्फ़े क़ुबूलियत भी बख्शता है। रसूल अल्लाह ﷺ ने सदक़ा व खैरात वगैरह के माल को अपने लिये और अपनी औलाद के लिये हराम क़रार दिया है। मगर अल्लाह का अपने बन्दों पर यह ख़ास अहसान है कि वह "अल गनी" है, बे नियाज़ है, उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, मगर फिर भी वह अपने बन्दों से उनके नफ़क़ात व सदक़ात को क़ुबूल फ़रमाता है।

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝١٠٤

*"और यह कि वह बहुत ही तौबा क़ुबूल फ़रमाने वाला, और रहम फ़रमाने वाला है।"*

## आयत 105

وَقُلِ اعۡمَلُوۡا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمۡ وَرَسُوۡلُهٗ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ ؕ

*"और आप इनसे कह दीजिये कि तुम अमल करो, अब अल्लाह और उसका रसूल और अहले ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे।"*

अब फिर से मेहनत करो, सरफ़रोशी और जान फशानी का मुज़ाहिरा करो, आइन्दा तुम्हारे आमाल का जायज़ा लिया जायेगा कि मुतालबाते दीन के बारे में तुम्हारा क्या रवैय्या है और यह कि फिर से कोई कोताही, लग्ज़िश वगैरह तो नहीं होने पा रही।

وَسَتُرَدُّوۡنَ اِلٰى عٰلِمِ الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۚ‏ ﴿۱۰۵﴾

*"और अनक़रीब तुम्हे लौटा दिया जायेगा उसकी तरफ़ जो हर ग़ायब और और हाज़िर का जानने वाला है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे थे।"*

क़यामत के दिन तुम्हें अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होना है, जो तुम्हारे सारे किये-धारे से तुमको आगाह कर देगा। वहाँ तुम्हारे सारे आमाल तुम्हारे सामने पेश कर दिए जाएँगे। इस बारे में सूरतुल ज़िल्ज़ाल (आयत 7 व 8) में यूँ फ़रमाया गया: {فَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرًا يَّرَهٗ} {وَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ} "तो जिसने ज़र्रा भर नेकी की होगी वह उसे (ब-चश्म खुद) देख लेगा। और जिसने ज़र्रा भर बुराई की होगी

वह उसे (ब-चश्म खुद) देख लेगा। इसके बाद वहाँ दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा।

## आयत 106

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ١٠٦

*"और कुछ दूसरे लोग हैं जिनके मामले को अल्लाह के फ़ैसले तक मौअख्खर कर दिया गया है, चाहे उन्हें अज़ाब दे और चाहे तो उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।"*

ये ज़ुअफ़ाअ (कमज़ोरों) में से दूसरी क़िस्म के लोगों का ज़िक्र है, जिनका मामला मौअख्खर (postponed) कर दिया गया था। ये तीन असहाब थे: कअब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैय्या और मरारा बिन अलरबीअ रज़ि., इनमें से एक सहाबी हज़रत कअब बिन मालिक अंसारी रज़ि. ने अपना वाक़िया बड़ी तफ़सील से बयान किया है जो कुतुब अहादीस और तफ़ासीर में मन्क़ूल है। मौलाना मौदूदी रहि. ने भी तफ़हीमुल क़ुरान में बुख़ारी शरीफ़ के हवाले से यह तवील हदीस नक़ल की है। यह बहुत सबक़ आमोज़ और इबरत अंगेज़ वाक़िया है। इसे पढ़ने के बाद मदीना के उस मआशरे, हुज़ूर ﷺ के ज़ेरे तरबियत अफ़राद के अंदाज़े फ़िक्र और जमाती ज़िंदगी के नज़म व ज़ब्त की जो तस्वीर हमारे सामने आती है वह हैरानकुन भी है और ईमान अफ़रोज़ भी।

ये तीनो हज़रात सच्चे मुसलमान थे, मुहिम पर जाना भी चाहते थे मगर सुस्ती की वजह से ताखीर हो गई और

इस तरह वह जाने से रह गए। हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि. ख़ुद फ़रमाते हैं कि मैं उस ज़माने में बहुत सेहतमंद और ख़ुशहाल था, मेरी ऊँटनी भी बहुत तवाना और तेज़ रफ़्तार थी। जब सुस्ती की वजह से मैं लश्कर के साथ रवाना ना हो सका तो भी मेरा ख्याल था कि मैं आज-कल में रवाना हो जाऊँगा और रास्ते में लश्कर से जा मिलूंगा। मैं इसी तरह सोचता रहा और रवाना ना हो सका। हत्ता कि वक़्त निकल गया और फिर एक दिन अचानक मुझे यह अहसास हुआ कि अब ख्वाह मैं कितनी भी कोशिश कर लूँ, लश्कर के साथ नहीं मिल सकता।

जब रसूल अल्लाह ﷺ तबूक से वापस तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने पीछे रह जाने वालों को बुलाकर बाज़पुर्स शुरू की। मुनाफिक़ीन आप ﷺ के सामने क़समे खा-खा कर बहाने बनाते रहे और आप ﷺ उनकी बातों को मानते रहे। जब कअब बिन मालिक रज़ि. की बारी आई तो हुज़ूर ﷺ ने उनको देख कर तबस्सुम फ़रमाया। ज़ाहिर बात है कि हुज़ूर ﷺ जानते थे कि कअब बिन मालिक रज़ि. सच्चे मोमिन हैं। आप ﷺ ने उनसे दरयाफ्त फ़रमाया कि तुम्हें किस चीज़ ने रोका था? उन्होंने साफ़ कह दिया कि लोग झूठी क़समे खा-खा कर छुट गए हैं, अल्लाह ने मुझे भी ज़बान दी है, मैं भी बहुत सी बाते बना सकता हूँ, मगर हक़ीकत यह है कि मुझे कोई उज़्र मानेअ नहीं था। मैं इन दिनों जितना सेहतमन्द था उतना पहले कभी ना था, जितना गनी और ख़ुशहाल था पहले कभी ना था। मुझे कोई उज़्र मानेअ नहीं था सिवाय इसके कि शैतान ने मुझे वरगलाया और ताखीर हो गई। इनके बाक़ी दो साथियों ने भी इसी तरह सच बोला और कोई बहाना ना बनाया।

इन तीनो हज़रात के बारे में नबी अकरम ﷺ ने हुक्म दिया कि कोई शख्स इन तीनों से बात ना करे और यूँ इनका मुकम्मल तौर पर मआशरती मुक़ातआ (social boycott) हो गया, जो पूरे पचास दिन जारी रहा। हज़रत कअब रज़ि. फ़रमाते हैं इस दौरान एक दिन इन्होंने अपने चचाज़ाद भाई और बचपन के दोस्त से बात करना चाही तो उसने भी जवाब ना दिया। जब इन्होंने उससे कहा कि अल्लाह के बन्दे तुम्हें तो मालूम है कि मैं मुनाफ़िक़ नहीं हूँ तो उसने जवाब में सिर्फ़ इतना कहा कि अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं। चालीस दिन बाद हुज़ूर ﷺ के हुक्म पर इन्होंने अपनी बीवी को भी अलैहदा कर दिया। इसी दौरान वाली-ए-गस्सान की तरफ़ से इन्हें एक ख़त भी मिला, जिसमें लिखा था कि हमने सुना है कि आपके साथी आप पर ज़ुल्म ढहा रहे हैं, आप बाईज्ज़त आदमी हैं, आप ऐसे नहीं हैं कि आपको ज़लील किया जाए, लिहाज़ा आप हमारे पास आ जाएँ, हम आपकी क़दर करेंगे और अपने यहाँ आला मरातब से नवाजेंगे। यह भी एक बहुत बड़ी आज़माइश थी, मगर इन्होंने वह ख़त तन्नूर में झोंक कर शैतान का यह वार भी नाकाम बना दिया। इनकी इस सज़ा के पचासवें दिन इनकी माफ़ी और तौबा की क़ुबूलियत के बारे में हुक्म नाज़िल हुआ (आयत 118) और इस तरह अल्लाह ने इन्हें इस आज़माइश और इबतला में सुर्ख रू फ़रमाया। बायकाट के इख्तताम पर हर फ़र्द की तरफ़ से इन हज़रात के लिये ख़ुलूस व मोहब्बत के ज़ज्बात का जिस तरह से इज़हार हुआ और फिर इन तीनों असहाब रज़ि. ने अपनी आज़माइश और इबतला के दौरान इख्लास और इस्तक़ामत की दास्तान जिस खूबसूरती से

रक़्म की, यह एक दीनी जमाती ज़िंदगी की मिसाली तस्वीर है।

## आयत 107

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۭ

*"और वह लोग जिन्होंने एक मस्जिद बनाई है ज़रर (नुक़सान) और कुफ़्र के लिये और अहले ईमान में तफ़रीक़ पैदा करने के लिये और उन लोगों को घात फ़राहम करने के लिये जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल से जंग कर रहे हैं।"*

ज़िरारन बाब-ए-मुफ़ाअला है, यानि उन्होंने मस्जिद बनाई है ज़िद्दम-ज़िददा, मुक़ाबले में और दावते हक़ को नुक़सान पहुँचाने के लिये। यह मस्जिद मुनाफिक़ीन ने मस्जिदे क़ुबा के क़रीबी इलाक़े में बनाई थी। इसकी तामीर के पीछे अबु आमिर राहिब का हाथ था। इस शख्स का ताल्लुक़ क़बीला खज़रज से था। वह ज़माना-ए-जाहिलियत में ईसाईयत क़ुबूल करके राहिब बन गया था और अरब में अहले किताब के बहुत बड़े आलिम के तौर पर जाना जाता था। जैसा कि वरक़ा बिन नौफ़ल, जो क़ुरैशी थे और उन्होंने भी बुतपरस्ती छोड़ कर ईसाईयत इख्तियार कर ली थी, और अपने ज़माने के इतने बड़े आलिम थे कि तौरात इब्रानी ज़बान में लिखा करते थे। वह बहुत नेक और सलीमुल फ़ितरत इंसान थे।

जब हज़रत खदीजा रज़ि. हुज़ूर ﷺ को लेकर उनके पास गईं तो उन्होंने आप ﷺ की तस्दीक़ की और बताया कि आप ﷺ के पास वही नामूस आया है, जो हज़रत मूसा और हज़रत ईसा (अलै०) के पास आता था। उन्होंने तो यहाँ तक कहा था कि काश मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहूँ जब आपकी क़ौम आपको यहाँ से निकाल देगी। हुज़ूर ﷺ ने जब हैरत से पूछा कि क्या ये लोग मुझे यहाँ से निकाल देंगे? तो उन्होंने बताया कि हाँ! मामला ऐसा ही है, आपकी दावत के नतीजे में आपकी क़ौम आपकी दुश्मन बन जाएगी।

मगर अबु आमिर राहिब का रवैय्या इसके बरअक्स था। वह रसूल अल्लाह ﷺ का शदीद-तरीन दुश्मन बन गया। क़ुरैशे मक्का की बदर में शिकस्त के बाद यह शख्स मक्का में जाकर आबाद हो गया और अहले मक्का को हुज़ूर ﷺ और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उकसाता रहा। चुनाँचे गज़वा-ए-ओहद के पीछे भी इसी शख्स की साज़िशें कारफ़रमा थीं, बल्कि मैदाने ओहद में जब दोनों लश्कर आमने-सामने हुए तो इसने लश्कर से बाहर निकल कर अन्सारे मदीना को ख़िताब करके उन्हें वरगलाने की कोशिश भी की थी। इसके बाद भी तमाम जंगों में यह मुसलमानों के ख़िलाफ़ बरसरे पैकार रहा, मगर हुनैन की जंग के बाद जब उसे महसूस हुआ कि अब ज़ज़ीरा नुमाए अरब में उसके लिये कोई जगह नहीं रही तो वह मायूस होकर शाम चला गया और वहाँ जाकर भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ साज़िशों में मसरूफ़ रहा। इसके लिये उसने मुनाफ़िक़ीने मदीना के साथ मुसलसल राब्ता रखा और उसी के कहने पर मुनाफ़िक़ीन ने मस्जिदे ज़रार तामीर की जो नाम को तो मस्जिद थी मगर हक़ीक़त में

साज़िशी अनासिर की कमीनगाह और फ़ितने का एक मरकज़ थी।

وَلَيَحۡلِفُنَّ اِنۡ اَرَدۡنَاۤ اِلَّا الۡحُسۡنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشۡهَدُ اِنَّهُمۡ لَـكٰذِبُوۡنَ ۝۱۰۷

*"और वह क़समें खा-खा कर कहेंगे कि हमने तो नेकी ही का इरादा किया था, मगर अल्लाह गवाही देता है कि ये बिल्कुल झूठे हैं।"*

अब जवाब तलबी पर ये मुनाफ़िक़ीन क़समे खा-खा कर अपनी सफ़ाई पेश करने की कोशिश करेंगे कि हमारी कोई बुरी नीयत नहीं थी, हमारा इरादा तो नेकी और भलाई ही का था, असल में दूसरी मस्जिद ज़रा दूर पड़ती थी जिसकी वजह से हम तमाम नमाज़ें जमात के साथ अदा नहीं कर सकते थे, इसलिये हमने सोचा कि अपने मोहल्ले में एक मस्जिद बना लें ताकि तमाम नमाज़ें आसानी से बा-जमात अदा कर सकें, वगैरह-वगैरह।

**आयत 108**

لَا تَقُمۡ فِيۡهِ اَبَدًا ؕ

*"(ऐ नबी ﷺ!) आप उसमें कभी खड़े ना हों।"*

मस्जिद बनाने के बाद ये मुनाफ़िक़ीन हुज़ूर ﷺ के पास ये दरख्वास्त लेकर आए थे कि आप ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ ले आएँ तो बड़ी बरकत होगी। मगर अल्लाह तआला ने आप ﷺ को बरवक़्त रोक दिया कि आप ﷺ वहाँ तशरीफ़ ना ले जाएँ।

لَمَسۡجِدٌ اُسِّسَ عَلَی التَّقۡوٰی مِنۡ اَوَّلِ یَوۡمٍ اَحَقُّ اَنۡ تَقُوۡمَ فِیۡہِ ؕ

*"यक़ीनन वह मस्जिद जिसकी बुनियाद पहले दिन से ही तक़वे पर रखी गई थी, वह ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि आप उसमें खड़े हों (नमाज़ पढ़ें)।"*

इससे मुराद मस्जिदे क़ुबा है जो क़रीब ही थी और जिसकी बुनियाद रसूल अल्लाह ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक से रखी थी। यह मुक़ाम उस वक़्त के मदीने की आबादी से तीन मील के फासले पर था। जब आप ﷺ हिजरत करके मदीना तशरीफ़ ले गए तो यह आप ﷺ का पहला पड़ाव था। आपने इस मुक़ाम पर क़याम फ़रमाया था और यहाँ इस मस्जिद की बुनियाद रखी थी।

فِیۡہِ رِجَالٌ یُّحِبُّوۡنَ اَنۡ یَّتَطَہَّرُوۡا ؕ وَ اللّٰہُ یُحِبُّ الۡمُطَّہِّرِیۡنَ ﴿۱۰۸﴾

*"इसमें वह लोग हैं जो पसंद करते हैं कि वह बहुत पाक रहें। और अल्लाह ऐसे लोगों को पसंद करता है जो बहुत ज़्यादा पाक रहते हैं।"*

मस्जिदे क़ुबा वाले मुसलमानों से पूछा गया कि आप लोगों के किस अमल की वजह से अल्लाह तआला ने आपकी तहारत की तारीफ़ फ़रमाई है? तो उन्होंने जवाब दिया कि हम लोग क़ज़ा-ए-हाजत के बाद ढ़ेले भी इस्तेमाल करते हैं और फ़िर पानी से भी तहारत हासिल करते हैं। चुनाँचे आम तौर पर यही समझा गया है कि अल्लाह तआला ने यहाँ तहारत के इस मैयार की तारीफ़ फ़रमाई है।

## आयत 109

اَفَمَنۡ اَسَّسَ بُنۡيَانَهٗ عَلٰى تَقۡوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضۡوَانٍ خَيۡرٌ

*"तो क्या भला जिसने अपनी इमारत की बुनियाद रखी हो अल्लाह के तक़वे और उसकी रज़ा पर, वह बेहतर है"*

اَمۡ مَّنۡ اَسَّسَ بُنۡيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانۡهَارَ بِهٖ فِىۡ نَارِ جَهَنَّمَ‌ؕ

*"या वह कि जिसने अपनी तामीर की बुनियाद रखी एक ऐसी खाई के किनारे पर जो गिरा चाहती है, तो वह उसको लेकर गिर गई जहन्नम में?"*

यानि जब इंसान कोई इमारत तामीर करना चाहता है तो उसके लिये किसी मज़बूत और ठोस जगह का इन्तखाब करता है। अगर वह किसी खोखली जगह पर या किसी खाई वगैरह के किनारे पर इमारत तामीर करेगा तो जल्द या बदेर वह इमारत गिर कर ही रहेगी। दरअसल ये मुनाफिक़ीन की तदबीरों और साजिशों की मिसाल दी गई है कि इनकी मिसाल ऐसी है जैसे वह जहन्नम की गहरी खाई के किनारे पर अपनी इमारतें तामीर कर रहे हों, चुनाँचे वह किनारा भी गिर कर रहेगा और खुद इनको और इनकी तामीरात को भी जहन्नम में गिराएगा।

وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝١٠٩

*"और अल्लाह ऐसे जालिमों को राहयाब नहीं करता।"*

## आयत 110

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۞

*"यह इमारत जो इन्होंने बनाई है इनके दिलों में शकूक़ व शुबहात पैदा किये रखेगी, इल्ला यह कि इनके दिलों के टुकड़े कर दिए जाएँ। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।"*

इन मुनाफिक़ीन के दिलों के अन्दर मुनाफ़क़त की जड़ें इतनी गहरी जा चुकी हैं कि इसके असरात का ज़ाएल होना अब मुमकिन नहीं रहा। इसकी मिसाल यूँ समझिये कि अगर किसी के पूरे जिस्म में कैंसर फ़ैल चुका हो तो मामूली ऑपरेशन करने से वह ठीक नहीं हो सकता, क्योंकि कैंसर के असरात तो जिस्म के एक-एक रेशे में सरायत कर चुके हैं। अब अगर सारे जिस्म को टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए तब शायद उसकी जड़ों को निकालना मुमकिन हो। लिहाज़ा इन मुनाफिक़ीन के दिल हमेशा शकूक़ व शुबहात के अंधेरों में ही डूबे रहेंगे, इन्हें ईमान व यक़ीन की रौशनी कभी नसीब नहीं होगी, इल्ला ये कि इन के दिल टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाएँ।

अब अगली दो आयात में बहुत अहम मज़मून आ रहा है।

# आयात 111, 112

اِنَّ اللّٰهَ اشۡتَرٰی مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ وَ اَمۡوَالَهُمۡ
بِاَنَّ لَهُمُ الۡجَنَّةَ ؕ یُقَاتِلُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ فَیَقۡتُلُوۡنَ
وَ یُقۡتَلُوۡنَ ۟ وَعۡدًا عَلَیۡهِ حَقًّا فِی التَّوۡرٰىةِ وَ الۡاِنۡجِیۡلِ
وَ الۡقُرۡاٰنِ ؕ وَ مَنۡ اَوۡفٰی بِعَهۡدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسۡتَبۡشِرُوۡا
بِبَیۡعِكُمُ الَّذِیۡ بَایَعۡتُمۡ بِهٖ ؕ وَ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ
الۡعَظِیۡمُ ﴿۱۱۱﴾ اَلتَّآئِبُوۡنَ الۡعٰبِدُوۡنَ الۡحٰمِدُوۡنَ
السَّآئِحُوۡنَ الرّٰكِعُوۡنَ السّٰجِدُوۡنَ الۡاٰمِرُوۡنَ
بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ النَّاهُوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَ الۡحٰفِظُوۡنَ
لِحُدُوۡدِ اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱۱۲﴾

## आयत 111

اِنَّ اللّٰهَ اشۡتَرٰی مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ وَ اَمۡوَالَهُمۡ بِاَنَّ لَهُمُ الۡجَنَّةَ ؕ

*"यक़ीनन अल्लाह ने ख़रीद ली हैं अहले ईमान से उनकी जानें भी और उनके माल भी इस क़ीमत पर कि उनके लिये जन्नत है।"*

यह दो तरफ़ा सौदा है जो एक साहिबे ईमान बन्दे का अपने रब के साथ हो जाता है। बंदा अपने जान व माल बेचता है और अल्लाह उसके जान व माल को जन्नत के एवज़ (बदले में) ख़रीद लेता है।

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ ۣ

*"वह जंग करते हैं अल्लाह की राह में, फिर क़त्ल करते भी हैं और क़त्ल होते भी हैं।"*

जैसे जंग-ए-बदर में मुसलमानों ने सत्तर काफ़िरों को जहन्नम रसीद किया, और मैदाने ओहद में सत्तर अहले ईमान शहीद हो गए।

وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ

*"यह वादा अल्लाह के ज़िम्मे है सच्चा, तौरात, इन्जील और क़ुरान में।"*

यहाँ बैयनल सतूर (between the lines) में दरअसल यह यक़ीन दिहानी कराई गई है कि यह सौदा अगरचे उधार का सौदा है मगर यह एक पुख्ता अहद है जिसको पूरा करना अल्लाह के ज़िम्मे है। इसलिये इसके बारे में कोई वसवसा तुम्हारे दिलों में ना आने पाए। दरअसल यह उस सोच का जवाब है जो तबीअ बशरी (ह्यूमन नेचर) की कमज़ोरी के सबब इंसानी ज़हन में आती है। इंसान को बुनियादी तौर पर "नौ नक़द ना तेरह उधार" वाला फ़लसफ़ा ही अच्छा लगता है कि कामयाब सौदा तो वही होता है जो एक हाथ दो और दूसरे हाथ लो के असूल के मुताबिक़ हो। मगर यहाँ

तो दुनियावी ज़िंदगी में सब कुछ क़ुर्बान करने की तरगीब दी जा रही है और इसके ईनाम के लिये वादा-ए-फ़र्दा का इंतेज़ार करने को कहा जा रहा है कि इस क़ुर्बानी का ईनाम मरने के बाद आख़िरत में मिलेगा। लिहाज़ा एक आम इंसान उस "जन्नत मौऊदा (वादा की हुई जन्नत)" का हल्का सा तसव्वुर ही अपने ज़हन में ला सकता है। इस सिलसिले में यक़ीन की पुख्तगी तो सिर्फ़ ख्वास को ही नसीब होती है। चुनाँचे अहले ईमान को उधार के इस सौदे पर इत्मिनान दिलाया जा रहा है कि अल्लाह की तरफ़ से इस वादे की तौसीक़ (validation) तीन दफ़ा हो चुकी है, तौरात में, इन्जील में और फिर क़ुरान मजीद में भी।

وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ١١١

*"और अल्लाह से बढ़ कर अपने अहद को वफ़ा करने वाला कौन है? पस खुशियाँ मनाओ अपनी इस बय (ख़रीद) पर जिसका सौदा तुमने उसके साथ किया है। और यही है बड़ी कामयाबी।"*

بَايَعْتُمْ بِهٖ यानी आपस में जो सौदा तुमने किया। मुबाइयत बाब-ए-मुफ़ाअला بَايَعَ يُبَايِعُ (आपस में सौदा करना) सलासी मुजर्रद بَاعَ يَبِيْعُ (बेचना) से है। यहीं से लफ्ज़ "बैयत" निकला है। एक बंदा जो बैयत करता है उसमें वह अपने आपको अल्लाह के हवाले करता है। लिहाज़ा हुज़ूर صلى الله عليه وسلم के हाथ पर सहाबा रज़ि. ने जो बैयत की, उसका

मतलब यही था कि उन्होंने खुद को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया। अल्लाह तो चूँकि सामने मौजूद नहीं था इसलिये बज़ाहिर यह बैयत हुज़ूर ﷺ के हाथ मुबारक पर हुई थी, मगर अल्लाह ने इसे अपनी तरफ़ मंसूब करते हुए फ़रमाया कि ऐ नबी (ﷺ) जो लोग आपसे बैयत करते हैं दरअसल वह अल्लाह से ही बैयत करते हैं और वक़्त बैयत उनके हाथों के ऊपर एक तीसरा ग़ैर मरई हाथ अल्लाह का भी मौज़ूद होता है। (अल फ़तह:10)

ये सौदा और ये बैय जिसका ज़िक्र आयत ज़ेरे नज़र में हुआ है ईमान का लाज़मी तक़ाज़ा है। दुआ है कि अल्लाह तआला हम में से हर एक को ये सौदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हम अल्लाह के हाथ अपनी जानें और अपने अमवाल बेच दें। अब इस सौदे के असरात अमली तौर पर जब इंसानी शख्सियत पर मुरत्तब होंगे तो उसमें से आमाले सालेहा का ज़हूर होगा। लिहाज़ा इस कैफ़ियत का नक़्शा आईन्दा आयत में खींचा गया है।

## आयत 112

اَلتَّآىِٕبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآىِٕحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ

*“तौबा करने वाले, (अल्लाह की) बंदगी करने वाले, (अल्लाह की) हम्द करने वाले, दुनियवी आसाइशों से लाताल्लुक़ रहने वाले, रुकूअ करने वाले, सज्दा करने वाले”*

سَآىِٕحُوْنَ के मायने हैं “सियाहत (सफ़र) करने वाले।” लेकिन इससे मुराद महज़ सैर व सियाहत नहीं बल्कि इबादत व

रियाज़त के लिये घरबार छोड़ कर निकल खड़े होना है। पिछली उम्मतों में रूहानी तरक्क़ी के लिये लोग लज़्ज़ाते दुनियवी को तर्क करके और इंसानी आबादियों से लातााल्लुक़ होकर जंगलों में चले जाते थे और रहबानियत इख्तियार कर लेते थे, मगर हमारे दीन में ऐसी सियाहत और रहबानियत की इजाज़त नहीं। चुनाँचे हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाय: ((لَا رَهْبَانِيَّةَ فِي الْاِسْلَامِ وَلَا سِيَاحَةَ))(29) "इस्लाम में ना रहबानियत है ना सियाहत।" साबक़ा अदयान (पहले धर्मों) के बरअक्स इस्लाम ने सियाहत और रहबानियत का जो तसव्वुर मुतआरफ़ कराया है इसके लिये अबु अमामा बाहली रज़ि. से मरवी यह हदीस मुलाहिज़ा कीजिये कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

اِنَّ لِكُلِّ اُمَّةٍ سِيَاحَةً وَاِنَّ سِيَاحَةَ اُمَّتِي الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ، وَاِنَّ لِكُلِّ اُمَّةٍ رَهْبَانِيَّةً وَرَهْبَانِيَّةُ اُمَّتِي الرِّبَاطُ فِي نُحُوْرِ الْعَدُوِّ

"हर उम्मत के लिये सियाहत का एक तरीक़ा था और मेरी उम्मत की सियाहत जिहाद फ़ी सबिलिल्लाह है, और हर उम्मत की एक रहबानियत थी, जबकि मेरी उम्मत की रहबानियत दुश्मन के सामने डट कर खड़े होना है।"(30)

एक सहाबी रज़ि. ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह मुझे सियाहत की इजाज़त दीजिये तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ((اِنَّ سِيَاحَةَ اُمَّتِي الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ))(31) गोया हमारी उम्मत के लिये 'सियाहत' का इतलाक़ जिहाद व क़िताल के लिये घर से निकलने और इस रास्ते में सऊबतें (सामान) उठाने पर होगा।

ये छ: औसाफ़ (गुण) जो ऊपर गिनवाए गए हैं इनका ताल्लुक़ इंसानी शख्सियत के नज़रियाती पहलु से है। अब इसके बाद तीन ऐसी ख़ुसूसियात का ज़िक्र होने जा रहा है जो इंसान की अमली जद्दो-जहद से मुताल्लिक़ हैं और दावत व तहरीक की सूरत में मआशरे पर असर अंदाज़ होती हैं।

الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ١١٢

*"नेकी का हुक्म देने वाले, बदी से रोकने वाले, अल्लाह की हुदूद की हिफाज़त करने वाले। और (ऐ नबी ﷺ) आप इन अहले ईमान को बशारत दे दीजिये।"*

अम्र बिल मारूफ़ (अच्छे काम का हुक्म देना) गोया दीन के लिये अमली जद्दो-जहद का नुक़्ता-ए-आग़ाज़ है। यह जद्दो-जहद जब आगे बढ़ कर नही अनिल मुन्कर बिल यद (बुराई को हाथ से रोकने) के मरहले तक पहुँचती है तो फिर इन ख़ुदाई फौजदारों की ज़रूरत पड़ती है जिनको यहाँ {وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ} का लक़ब दिया गया है। ये लोग अगर पूरी तरह मुनज्ज़म (organized) हों तो अपनी तन्ज़ीमी (संगठनात्मक) ताक़त के बल पर खड़े होकर ऐलान करें कि अब हम अपने मआशरे में मुनकरात (बुराई) का सिक्का नहीं चलने देंगे और किसी को अल्लाह की हुदूद को तोड़ने की इजाज़त नहीं देंगे। अल्लाह हुम्मा रब्बना अजअलना मिन्हुम! मन्हजे इन्क़लाबे नबवी ﷺ में इस मरहले के ज़िमन में आज इज्तेहाद की ज़रूरत है कि मौजूदा हालात

में नही अनिल मुन्कर बिल यद के लिये इज्तमाई और मुनज़्ज़म जद्दो-जहद की सूरत क्या होगी।

## आयात 113 से 118

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا
لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ
اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا
تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ۭ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ
حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ
هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَي النَّبِيِّ
وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ
الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ
ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَّعَلَي

الثَّلٰثَةِ الَّذِيۡنَ خُلِّفُوۡا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتۡ عَلَيۡهِمُ
الۡاَرۡضُ بِمَا رَحُبَتۡ وَضَاقَتۡ عَلَيۡهِمۡ اَنۡفُسُهُمۡ
وَظَنُّوۡۤا اَنۡ لَّا مَلۡجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيۡهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ
لِيَتُوۡبُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۱۸﴾

## आयत 113

مَا كَانَ لِلنَّبِىِّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ يَّسۡتَغۡفِرُوۡا لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ وَلَوۡ كَانُوۡۤا اُولِىۡ قُرۡبٰى

*“नबी और अहले ईमान के लिये यह रवा नहीं कि वह इस्तगफार करें मुशरिकीन के लिये ख्वाह वह उनके क़राबतदार ही हों”*

مِنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُمۡ اَصۡحٰبُ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۱۳﴾

*“इसके बाद जबकि उन पर वाज़ेह हो चुका कि वह लोग जहन्नमी हैं।”*

## आयत 114

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ

*"और नहीं था इस्तगफार करना इब्राहिम अलै. का अपने वालिद के हक़ में मगर एक वादे की बुनियाद पर जो उन्होंने उससे किया था।"*

जब हज़रत इब्राहिम अलै. के वालिद ने आपको घर से निकाला था तो जाते हुए आपने यह वादा किया था, उस वादे का ज़िक्र सूरह मरियम में इस तरह किया गया है: {قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا} "मैं अपने रब से आपके लिये बख्शीश की दरख्वास्त करूँगा, बेशक वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है।"

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ۭ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

*"और जब आप पर वाज़ेह हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो आपने इससे ऐलाने बेज़ारी कर दिया। यक़ीनन इब्राहिम बहुत दर्दे दिल रखने वाले और हलीमुल तबीअ थे।"*

हज़रत इब्राहिम अलै. वादे के मुताबिक़ अपने वालिद की ज़िंदगी में उसके लिये दुआ करते रहे कि जब तक वह ज़िन्दा था तो उम्मीद थी कि शायद अल्लाह तआला उसे हिदायत की तौफ़ीक़ दे दे, लेकिन जब उसकी मौत वाक़ेअ हो गई तो आपने इस्तगफार बंद कर दिया कि ज़िंदगी में जब वह कुफ़्र पर ही अड़ा रहा और इसी हालत में उसकी मौत वाक़ेअ हो गई तो साबित हो गया कि अब उसके लिये तौबा का दरवाज़ा बंद हो गया है।

## आयत 115

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوۡمًا بَعۡدَ اِذۡ هَدٰىهُمۡ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمۡ مَّا يَتَّقُوۡنَ ؕ

*"और अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं है कि किसी क़ौम को गुमराह कर दे इसके बाद कि उन्हें हिदायत दी हो जब तक उन पर वाज़ेह ना कर दे कि उन्हें किस चीज़ से बचना है।"*

यह गोया माफ़ी का ऐलान है उन लोगों के लिये जो इस हुक्म के नाज़िल होने से पहले अपने मुशरिक वालिदैन या रिश्तेदारों के लिये दुआ करते रहे थे।

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۱۱۵﴾

*"यक़ीनन अल्लाह हर शय का जानने वाला है।"*

## आयत 116

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿۱۱۶﴾

*"यक़ीनन अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही। वही ज़िन्दा रखता है और वही मौत देता है। और तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा नहीं है कोई हिमायती और ना कोई मददगार।"*

## आयत 117

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ

*"अल्लाह मेहरबान हुआ नबी (ﷺ) पर, और मुहाजरीन व अंसार पर भी, जिन्होंने आपका इत्तेबाअ किया (साथ दिया) मुश्किल वक़्त में"*

यह तबूक की मुहिम की तरफ़ इशारा है। तारीख में यह मुहिम "जैश अल उसरह" के नाम से मशहूर है। यह वह ज़माना था जब खुश्क साली के बाइस मदीने में क़हत का समां था। इन हालात में इतने बड़े लश्कर का इतनी लम्बी मुसाफ़त पर वक़्त की सुपर पावर से नबर्द आज़मा होने (निपटने) के लिये जाना वाक़ई बहुत बड़ी आज़माइश थी। जो लोग इस आज़माइश में साबित क़दम रहे, यह उनके लिये रहमत व शफक्क़त का एक ऐलाने आम है।

مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ

*"इसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिल में कुछ कजी आने लगी थी"*

बर बनाए तबअ बशरी (as a human nature) कहीं ना कहीं, कभी ना कभी इंसान में कुछ कमज़ोरी आ ही जाती है। जैसे गज़वा-ए-ओहद में भी दो मुसलमान क़बाइल बनु हारसा और बनु सलमा के लोगों के दिलों में आरज़ी तौर पर थोड़ी सी कमज़ोरी आ गई थी।

ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّهٗ بِهِمۡ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۱۷﴾

*"फ़िर अल्लाह ने उन पर नज़र-ए-रहमत फ़रमाई। यक़ीनन वह उनके हक़ में बहुत मेहरबान, रहम फरमाने वाला है।"*

## आयत 118

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيۡنَ خُلِّفُوۡا ؕ

*"और उन तीन पर भी (अल्लाह ने रहमत की निगाह की) जिनका मामला मौअख्खर कर दिया गया था।"*

ये तीन सहाबा कअब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैय्या और मरारह बिन रबीअ रज़ि. के लिये ऐलाने माफ़ी है। इन तीन असहाब रज़ि. का ज़िक्र आयत 106 में हुआ था और वहाँ इनके मामले को मौअख्खर कर दिया गया था। पचास दिन के मआशरती मक़ाताअ (social boycott) की सज़ा के बाद इनकी माफ़ी का भी ऐलान कर दिया गया और इन्हें इस हुक्म की सूरत में क़ुबूलियते तौबा की सनद अता हुई।

حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتۡ عَلَيۡهِمُ الۡاَرۡضُ بِمَا رَحُبَتۡ وَضَاقَتۡ عَلَيۡهِمۡ

*"यहाँ तक कि ज़मीन अपनी तमाम तर कुशादगी के बावजूद इन पर तंग पड़ गई और इन पर अपनी जानें भी बोझ बन गईं और इन्हें यक़ीन हो गया कि अल्लाह के सिवा कोई और जाए पनाह है ही नहीं।"*

اَنۡفُسُهُمۡ وَظَنُّوۡۤا اَنۡ لَّا

مَلۡجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيۡهِ ؕ

यह ऐसी कैफ़ियत है कि कोई बच्चा माँ से पिटता है मगर इसके बाद उसी से लिपटता है। अल्लाह के बन्दों पर भी अगर अल्लाह की तरफ़ से सख्ती आती है, कोई सज़ा मिलती है तो ना सिर्फ़ वह उस सख्ती को ख़ुशदिली और सब्र से बरदाश्त करते हैं, बल्कि पनाह के लिये रुजूअ भी उसी की तरफ़ करते हैं, क्योंकि उन्हें यक़ीन होता है कि उन्हें पनाह मिलेगी तो उसी के हुज़ूर मिलेगी, उनके दुखों का मदावा (ईलाज) होगा तो उसी की जानिब से होगा। अल्लामा इक़बाल ने इस हक़ीक़त को कैसे ख़ूबसुरत अल्फ़ाज़ का जामा पहनाया है:

*ना कहीं जहाँ में अमाँ मिली, जो अमाँ मिली तो कहाँ मिली*
*मेरे जुर्म-ए-खाना ख़राब को, तेरे अफ़्वे बन्दा नवाज़ में*

ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ

لِيَتُوۡبُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ

التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ۞ ١١٨

*"तो उसने उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमाई ताकि वह भी फ़िर मुतवज्जह हो जाएँ। यक़ीनन अल्लाह बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला, बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।"*

ताकि वह अल्लाह से अपने ताल्लुक़ को मज़बूत कर लें और अपनी कमज़ोरियों और कोताहियों को दूर कर लें।

# आयात 119 से 122 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوۡنُوۡا مَعَ
الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾ مَا كَانَ لِاَهۡلِ الۡمَدِيۡنَةِ وَمَنۡ
حَوۡلَهُمۡ مِّنَ الۡاَعۡرَابِ اَنۡ يَّتَخَلَّفُوۡا عَنۡ رَّسُوۡلِ اللّٰهِ
وَلَا يَرۡغَبُوۡا بِاَنۡفُسِهِمۡ عَنۡ نَّفۡسِهٖ ؕ ذٰ لِكَ بِاَنَّهُمۡ لَا
يُصِيۡبُهُمۡ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخۡمَصَةٌ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ
وَلَا يَطَئُوۡنَ مَوۡطِئًا يَّغِيۡظُ الۡكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوۡنَ مِنۡ
عَدُوٍّ نَّيۡلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمۡ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُضِيۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۙ﴿۱۲۰﴾ وَلَا يُنۡفِقُوۡنَ نَفَقَةً
صَغِيۡرَةً وَّلَا كَبِيۡرَةً وَّلَا يَقۡطَعُوۡنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ
لَهُمۡ لِيَجۡزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحۡسَنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۱﴾
وَمَا كَانَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ لِيَنۡفِرُوۡا كَآفَّةً ؕ فَلَوۡلَا نَفَرَ مِنۡ
كُلِّ فِرۡقَةٍ مِّنۡهُمۡ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوۡا فِى الدِّيۡنِ
وَلِيُنۡذِرُوۡا قَوۡمَهُمۡ اِذَا رَجَعُوۡۤا اِلَيۡهِمۡ لَعَلَّهُمۡ
يَحۡذَرُوۡنَ ﴿۱۲۲﴾ ع

## आयत 119

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾

*"ऐ अहले ईमान! अल्लाह का तक़वा इख्तियार करो और सच्चे लोगों की मईयत (साथ) इख्तियार करो।"*

यह गोया जमाती जिंदगी इख्तियार करने का हुक्म है। नेक लोगों की सोहबत इख्तियार करने और जमाती ज़िंदगी से मुन्सलिक (attached) रहने के बहुत से फ़ायदे और बहुत सी बरकतें हैं, जैसा कि इससे पहले हम सूरतुल अनआम की आयत 71 में पढ़ आए हैं: {لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۭ }। जमाती ज़िंदगी दरअसल एक क़ाफ़िले की मानिन्द है। क़ाफ़िले में दौराने सफ़र अगर किसी साथी की हिम्मत जवाब दे रही हो या कोई माज़ूरी (विकलांगता) आड़े आ रही हो तो दूसरे साथी उसे सहारा देने, हाथ पकड़ने और हिम्मत बंधाने के लिये मौजूद होते हैं।

## आयत 120

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا

*"अहले मदीना और इनके इर्द-गिर्द के बद्दू लोगों के लिये रवा नहीं था कि वह अल्लाह के रसूल (صلی اللہ علیہ وسلم) को छोड़ कर पीछे बैठे रहते और ना यह कि अपनी जानों को आपकी जान से बढ़ कर अज़ीज़ रखते।"*

يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ

गज़वा-ए-तबूक के लिये निकलते हुए मदीने के माहौल में "तपती राहें मुझको पुकारें, दामन पकड़े छाँव घनेरी" वाला मामला था। लिहाज़ा जब अल्लाह के रसूल ﷺ इन तपती राहों की तरफ़ कूच फ़रमा रहे थे तो किसी ईमान के दावेदार को यह ज़ेब नहीं देता था कि वह आपका साथ छोड़ कर पीछे रह जाए, आपकी जान से बढ़ कर अपनी जान की आफ़ियत की फ़िक्र करे और आपके सफ़र की सऊबतों पर अपनी आसाइशों को तरजीह दे।

ذٰلِكَ بِاَنَّھُمْ لَا يُصِيْبُھُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـــُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَھُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ۭ

*"यह इसलिये कि उन्हें प्यास, मशक्क़त और फ़ाक़े की (सूरत में) जो तकलीफ़ पहुँचती है अल्लाह की राह में, और जहाँ कहीं भी वह क़दम रखते हैं कुफ्फ़ार (के दिलों) को जलाते हुए और दुश्मन के मुक़ाबले में कोई भी कामयाबी हासिल करते हैं, तो उनके लिये इस (सब कुछ) के एवज़ नेकियों का अन्दारज़ होता रहता है।"*

अहले ईमान जब अल्लाह के रास्ते में निकलते हैं तो उनकी हर मशक्क़त और हर तकलीफ़ के एवज़ अल्लाह तआला उनके नेकियों के ज़खीरे में मुसलसल इज़ाफ़ा फ़रमाते रहते हैं।

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ۝١٢٠

*"यक़ीनन अल्लाह नेक लोगों के अज्र को ज़ाया नहीं करता।"*

## आयत 121

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ

*"और जो भी वह ख़र्च करते हैं कोई नफ़क़ा, छोटा हो या बड़ा और तय करते हैं कोई वादी तो (उनका एक-एक अमल) उनके लिये लिख लिया जाता है"*

لِيَجْزِيَهُمُ ٱللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝١٢١

*"ताकि अल्लाह बदला दे उन्हें बहुत ही उम्दा उसका जो अमल वह करते रहे।"*

## आयत 122

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ

*"और अहले ईमान के लिये यह तो मुमकिन नहीं है कि वह सब के सब निकल आएँ।"*

मदीना के मज़ाफात (आस-पास के इलाक़ों) में बसने वाले बद्दू क़बाइल का तज़किरा पिछली आयत (97) में हो चुका है। यह बद्दू लोग कुफ़्र व निफ़ाक़ में बहुत ज़्यादा सख्त थे और इसका सबब इल्मे दीन से इनकी नावाक़फ़ियत थी। इसलिये कि इन्हें हुज़ूर ﷺ की सोहबत से फैज़याब होने का मौक़ा नहीं मिल रहा था। अब इसके लिये यह तो मुमकिन नहीं था कि सारे बादिया नशीन लोग अपनी-अपनी आबादियाँ छोड़ते और मदीने में आकर आबाद हो जाते। चुनाँचे यहाँ इस मसले का हल बताया जा रहा है।

فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ

*"तो ऐसा क्यों ना हुआ कि निकलता इनकी हर जमात में से एक गिरोह ताकि वह दीन का फ़हम हासिल करते"*

यहाँ इस मुश्किल का हल यह बताया गया है कि हर इलाक़े और हर क़बीले से चंद लोग आएँ और सोहबते नबवी ﷺ से फैज़याब हों।

وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

*"और वह अपने लोगों को ख़बरदार करते जब उनकी तरफ़ वापस लौटते ताकि वह भी नाफ़रमानी से बचते।"*

यहाँ इस सिलसिले में बाक़ायदा एक निज़ाम वज़अ (set up) करने की हिदायत कर दी गई है कि मुख्तलिफ़ इलाक़ों से क़बाइल के नुमाइंदे आएँ, मदीने में क़याम करें, रसूल अल्लाह ﷺ की सोहबत में रहें, अकाबर (बड़े-बड़े बुज़ुर्ग) सहाबा रज़ि. की तरबियत से इस्तफ़ादा करें, अहकामे दीन को समझें और फिर अपने-अपने इलाक़ों में वापस जाकर इस तालीम को आम करें।

## आयात 123 से 129 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ
الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاَمَّا
الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى
رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ

اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا
يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ
سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ۭ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ
ثُمَّ انْصَرَفُوْا ۭ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ
رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ڶ لَآ
اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ۧ

## आयत 123

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ۭ

*“ऐ अहले ईमान! जंग करो इन काफ़िरों से जो तुमसे क़रीब हैं और वह तुम्हारे अन्दर सख्ती पाएँ।”*

इस हुक्म में इशारा है कि रसूल अल्लाह ﷺ की दावत के बैयनल अक़वामी (international) और आफ़ाक़ी

(universal) दौर का आग़ाज़ हो चुका है, अब इस दावत को चहार सू (चारों दिशा) फैलना है और दारुल इस्लाम की सरहदों को वसीअ (बड़ा) होना है। चुनाँचे हुक्म दिया जा रहा है कि इस्लामी हुकूमत की सरहदों पर जो कुफ्फ़ार बसते हैं उनसे क़िताल करो, और जैसे-जैसे ये सरहदें आगे बढती जाएँ तुम्हारे क़िताल का सिलसिला भी उनके साथ-साथ आगे बढ़ता चला जाए, हत्ता कि अल्लाह का दीन पूरी दुनिया पर ग़ालिब आ जाए। जैसे सूरतुल अनफ़ाल में जज़ीरा नुमाए अरब की हद तक क़िताल जारी रखने का हुक्म हुआ था: {وَقَاتِلُوهُمْ حَتّٰى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَّيَكُونَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ} (आयत 39) यानि जब तक जज़ीरा नुमाए अरब से कुफ्र व शिर्क का खात्मा नहीं हो जाता और अल्लाह का दीन इस पूरे इलाक़े में ग़ालिब नहीं हो जाता यह जंग जारी रहेगी। बहरहाल आयत ज़ेरे नज़र में गलबा-ए-दीन के लिये बैयनल अक़वामी सतह पर जद्दो-जहद के लिये अल्लाह का वाज़ेह हुक्म मौजूद है और इस सिलसिले में इस्लाम का चार्टर भी। इसी पर अमल करते हुए जज़ीरा नुमाए अरब से इस्लामी अफ़वाज जिहाद के लिये निकली थीं और फिर इस्लामी सरहदों का दायरा वसीअ होता गया।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۱۲۳

*“और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।”*

**आयत 24**

وَاِذَا مَاۤ اُنۡزِلَتۡ سُوۡرَةٌ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّقُوۡلُ اَيُّكُمۡ زَادَتۡهُ هٰذِهٖۤ اِيۡمَانًا‌ ۚ

*"और जब कोई सूरत नाज़िल होती है तो इनमें से बाज़ (मुनाफ़िक़ीन आपस में) कहते हैं कि इसने तुम में से किसके ईमान में इज़ाफ़ा किया?"*

इससे पहले सूरतुल अनफ़ाल (आयत 2) में अहले ईमान का ज़िक्र इस हवाले से हो चुका है कि जब इनको अल्लाह की आयात पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो इनके ईमान में इज़ाफ़ा हो जाता है। मुनाफ़िक़ीन इस पर तन्ज और इस्तहज़ा (हँसी-मज़ाक) करते थे और जब भी कोई ताज़ा वही नाज़िल होती तो उसका तमस्खुर (मज़ाक) उड़ाते हुए एक-दूसरे से पूछते कि हाँ भई इस सूरत को सुन कर किस-किस के ईमान में इज़ाफा हुआ है?

فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا فَزَادَتۡهُمۡ اِيۡمَانًا وَّهُمۡ يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ۝١٢٤

*"तो जो लोग वाक़ई ईमान वाले हैं वह उनके ईमान में तो यक़ीनन इज़ाफा करती है और वह खुशियाँ मनाते हैं।"*

अल्लाह का कलाम सुन कर हक़ीक़ी मोमिनीन के ईमान में यक़ीनन इज़ाफ़ा भी होता है और वह हर वही के नाज़िल होने पर ख़ुशियाँ भी मनाते हैं कि अल्लाह ने अपने कलाम से मज़ीद उन्हें नवाज़ा है और उनके ईमान को जिला बख्शी है।

## आयत 125

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝۱۲۵

*"रहे वह लोग जिनके दिलों में रोग है तो वह उन (के अन्दर) की गंदगी पर मज़ीद गंदगी का इज़ाफ़ा कर देती है और वह मरते हैं इसी हाल में कि वह काफ़िर होते हैं।"*

## आयत 126

اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ

*"क्या ये (मुनाफ़िक़ीन) देखते नहीं हैं कि हर साल इन्हें आज़माया जाता है एक बार या दो बार"*

क़िताल का मरहला हो या किसी और आज़माइश का मौक़ा, वक़्फ़े-वक़्फ़े से साल में एक या दो मरतबा मुनाफ़िक़ीन के इम्तिहान का सामान हो ही जाता है, जिससे उनकी मुनाफ़क़त का परदा चाक होता रहता है।

ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝۱۲۶

*"फ़िर भी ना तो ये लोग तौबा करते हैं और ना ही नसीहत अख़ज़ करते हैं।"*

## आयत 127

وَاِذَا مَاۤ اُنۡزِلَتۡ سُوۡرَةٌ نَّظَرَ بَعۡضُهُمۡ اِلٰى بَعۡضٍ ؕ

*"और जब कोई सूरत नाज़िल होती है तो ये लोग आपस में एक-दूसरे को देखते हैं"*

जब क़िताल के बारे में अहकाम नाज़िल होते हैं तो रसूल अल्लाह ﷺ की महफ़िल में मौजूद मुनाफ़िक़ीन कनखियों से एक-दूसरे को इशारे करते हैं।

هَلۡ يَرٰٮكُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ ثُمَّ انۡصَرَفُوۡا ؕ

*"कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा, फिर वह वहाँ से ख़िसक जाते हैं।"*

صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوۡبَهُمۡ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَفۡقَهُوۡنَ ﴿۱۲۷﴾

*"(दरअसल) अल्लाह ने इनके दिलों को फेर दिया है, इसलिये कि ये ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते।"*

इस सूरत की आख़री दो आयात क़ुरान मजीद की अज़ीम-तरीन आयात में से हैं।

## आयत 128

لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ عَزِيۡزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ

*"(ऐ लोगो देखो!) आ चुका है तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल, बहुत भारी गुज़रती है आप पर तुम्हारी तकलीफ़"*

हक़ीक़त यह है कि हर वह शय जो तुम्हें मुसीबत और हलाकत से दो-चार करने वाली हो वह उनके दिल पर निहायत शाक़ (कठिन) है। आप ﷺ तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों की हलाकतों और मुसीबतों से महफ़ूज़ और दोनों की सआदतों से बहरामंद देखना चाहते हैं।

حَرِيۡصٌ عَلَيۡكُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲۸﴾

*"तुम्हारे हक़ में आप (भलाई के) बहुत हरीस हैं, अहले ईमान के लिये शफ़ीक़ भी हैं, रहीम भी।"*

आप ﷺ की शदीद ख्वाहिश है कि अल्लाह तआला तमाम खैर, सारी खूबियाँ और सारी भलाईयाँ तुम लोगों को अता फ़रमा दे।

## आयत 129

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ حَسۡبِىَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

*"फ़िर भी अगर ये लोग रूगरदानी करें तो (ऐ नबी ﷺ!) कह दीजिये कि मेरे लिये अल्लाह काफी है, उसके सिवा कोई माअबूद नहीं।"*

عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَهُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ ﴿۱۲۹﴾

*"उसी पर मैंने तवक्कुल किया और वह बहुत बड़े अर्श का मालिक है।"*

अल्लाह तआला के अर्श की कैफ़ियत और अज़मत हमारे तस्सवुर में नहीं आ सकती।

بارک اللہ لی ولکم فی القرآن العظیم ونفعنی وایاکم بالآیات والذکر الحکیم۔

❀ ❀ ❀

# References:


(1) तखरीजुल किशाफ़ लिलज़ैली: 436/1. व तखरीजुल अहया अल इराक़ी: 79/4. व सिलसिलातुल अहादीस अल ज़ईफ़तुल अलबानी: 1166. रावी: अनस बिन मालिक (रज़ि०). अस्नाद हु ज़ईफ़.

(2) मसनद अहमद, ह, 23460, 24139, 24629.

(3) इसे हाफ़िज़ ज़ैनुल दीन अल ईराक़ी ने "तख़रीजुल अहया" (24/4) में, अल्लामा मोहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अल सखावी ने "अल मक़ासदुल हसाना" (ह 260) में, मुल्ला अली क़ारी ने "अल इसरारुल मरफ़ूआ फ़िल अख़बारुल मौज़ूआ" (ह 206) में और अल्लामा ज़रक़ानी ने "मुख्तसारुल मक़ासिद" (ह 467) में नक़ल किया है. इस हदीस के बारे में मुहद्दिसीन की आराअ का ख़ुलासा यह है: قیل لا اصل له او باصله موضوع. (मुरत्तब)

(4) सुनन अत्तिरमिज़ी, अबवाब सफ़हतुल क़ियामा वल रक़ाइक़ वल वरअ (قال الترمذی هذا حدیثٌ حسنٌ صحیحٌ). अल अरबईन अल नववी, ह 19.

(5) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी ﷺ. व सुनन अबु दाऊद, किताबुल मनासिक, बाब सफ़ा हज्जतुन्नबी ﷺ.

(6) सहीह बुखारी, किताबुल हज, बाब ख़ुत्बातु अय्यामे मिना. व सहीह मुस्लिम, किताबुल अक़सामते वल महारबीन वल क़िसास वल दियात, बाब तगलीज़ तहरीमुल दमा वल ऐराज़ वल अमवाल.

(7) सहीह मुस्लिम, किताबुल लिबास वल ज़ीनह, बाबुन्निसा अल् कासयात अल् आरियात अल् माईलात अल् मुमईलात। व मौता मालिक, किताबुल जामेअ, बाब मा यकरहु लिन्निसा लबिसह मिनल सियाब। रावी अबु हुरैरा रज़ि.

(8) सुनन अबु दाऊद, किताबुल लिबास, बाब मा जाआ फ़िल किबर.

(9) सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीम अल किबर व बयानहु. व सुनन तिरमिज़ी, अबवाब अल बिर्र व सलाह, बाब मा जाआ फ़िल किबर, वल अल्फ़ाज़ लहू.

(10) अरबईने नववी, हदीस:41, क़ाला अन नववी: हदीस हसन सहीह रवयनाहु फ़ी किताबुल हुज्जत बि अस्नाद सहीह. व मिश्कातुल मसाबीह, किताबुल ईमान, बाब अल ऐतसाम बिल किताब व सुन्नाह, अल फ़सल सानी.

(11) सहीह बुखारी, किताबुल ईमान, बाब हुब्बे रसूल मिनल ईमान. व सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, वजूब मुहब्बत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर मिनल अहली वल वलद, वल वालिद वन्नास अजमईन.

(12) सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सलाह, वल् आदाब, बाब तहरीमुल ज़ुल्म। रावी अबुज़र गफ़्फ़ारी रज़ि.

(13) सहीह बुखारी, किताबुल जिहाद वल सीर, बाब फ़ज़ल मिन इस्लाम अला यदय्ही रजुल, व किताबुल मुनाक़िब, बाब मुनाक़िब अली बिन अबी तालिब..... व किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वा-ए-खैबर. व सहीह मुस्लिम, बाब फ़ज़ाइलुल सहाबा, बाब मिन फ़ज़ाइल अली बिन अबी तालिब.

(14) रवाहुल बय्हक़ी फ़ी शौबल ईमान. मिशकातुल मसाबीह, किताबुल आदाब, बाब अम्र बिल मारूफ़, अल फ़सल सालिस.

(15) सही मुस्लिम, किताबुल इमारा, बाब क़ौलुहू ला तज़ाल ताइफ़तु मिन उम्मती ज़ाहिरीन अलल हक़.

(16) सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब अल् सब्र अलल बलाअ। व मसनद अहमद: 12725. यह हदीस सहीह मुस्लिम और सुनन अल् तिरमिज़ी में भी क़द्रे मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ वारिद हुई है।

(17) सहीह मुस्लिम, किताबुल ज़िक्र व दुआ व तौबा व इस्तगफ़ार, बाब इस्तहबाबुल इस्तगफ़ार वल इस्तकसार मिन्हु. व सुनन अबी दाऊद, किताबुल सलाह, बाब फ़िल इस्तगफ़ार.

(18) रवाहू अहमद व रज़ीन. मिशकातुल मसाबीह, किताबुल दुआवात, बाबुल दुआवात फ़िल अवक़ात, अल फसल अल सालिस. अन अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि.

(19) सहीह बुखारी, किताबुल ईमान, बाब बुनियल इस्लाम अला ख़मसिन. व सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयान अरकाने इस्लाम व दाइमहुल इज़ाम. वलिलफ़ज़ लिलमुस्लिम.

(20) सहीह बुखारी, किताबुल जिज़्या व किताबुल मगाज़ी व किताबुल रीक़ाक़, बाब मा याहज़र मन ज़ाहरतुद्दुनिया व तनाफस फ़ीहा. व सहीह मुस्लिम, किताबुल ज़ोहद व रक़ाइक़.

(21) सुनन तिरमिज़ी, किताब तफ़सीर अल क़ुरान, बाब व-मिन सूरतुत्तौबा.

(22) रवाहुल ब्यहक़ी फ़ी शौबल ईमान. मिश्कातुल मसाबेह, किताबुल इल्म, अलफसलुल सालिस.

(23) सहीह बुखारी, किताब बिदअल खल्क़ व किताबुल मगाज़ी व किताब तफ़सीरुल क़ुरान, बाब क़वलुहू अन इद्दतुल शहूर इन्दल्ल्लाह अस्ना अशर शहर फ़ी किताबुल्लाह.... व सहीह मुस्लिम, किताबुल क़सामत वल मुहारबीन वल क़िसास वल दियात, बाब तगलीज़ तहरीम अद्दमाअ वल ऐराज़ वल अमवाल.

(24) सहीह बुखारी, किताबुल अदब, बाब मा जाआ फ़ी क़ौलुल रजुल वयलक. व सहीह मुस्लिम, किताबुल ज़कात, बाब ज़िक्रुल ख्वारिज व सिफ़ातुहुम. वल अफ़ज़लुल मुस्लिम. रावी जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि.

(25) सुनन तिरमिज़ी, किताब तफ़सीरुल क़ुरान, बाब व मिन सूरतुल हिज्र.

(26) तखरीजुल किशाफ़ लिल ज़ेल-ई 395/2. (गरीब जदा)

(27) हुलयतल औलियाअ लि अबी नईम 282/2.

(28) सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र व सलात वल आदाब, बाब अल अरवाह् जुनूद मजनद.

(29) फ़तहुल बारी इब्ने रजब: 102/1. व मरासील अबु दाऊद 287.

(30) मज्मुअल ज़्वाइद लिल हैयसमी: 281/5. वल जामेअ अल सगीर लिल सयूती, ह: 2408.

(31) सुनन अबु दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िल नहा अनिल सियाहा. व सहीह अलजामेअ लिल अल बानी, ह: 2093.